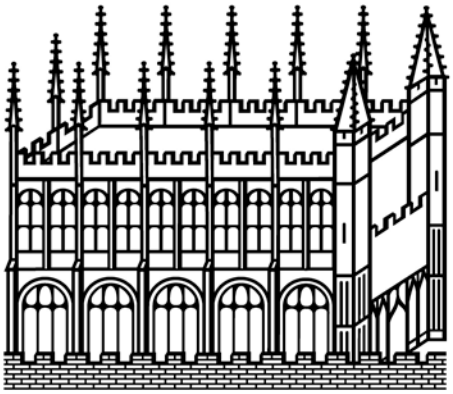


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

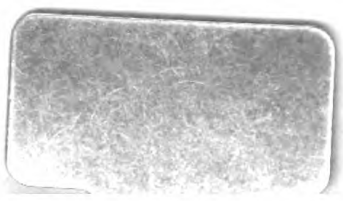
http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Vih I

13 C 117



G. E. Ward -

August 1898 -

Interleave Binding



बिहारीसतसई

بہاری ستسئی

INDIAN INSTITUTE LIBRARY

अर्थात्

बिहारी लाल कृत सातसौ दोहे पिङ्गल मात्रा वर्ण और कविताई सहित

जिसको

विद्वद्वृन्द शिरोमणि कवीन्द्र कल्प द्रुम श्री पण्डित कृष्ण दत्त कविने

सात सौ दोहे में प्रति दोहे पीछे उत्तम २ कवित्त और पिङ्गल शास्त्रा

नुसार दोहे कवित्त की दीर्घ लघु मात्रा वर्णादि संख्या अतीव विचारण

पूर्व्वक वर्णन किया है

वही दूसरी बार

सकल गुण ग्राहकों और विद्यानुरागियों व रसास्वादन स्पृहियों के

निमित्त

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापे खाने में छापी गई

Q. R. Wards

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् नवम्बर सन १८८० ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये हैं-यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिस को व्योपार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	५ उद्योग पर्व	सातोंकाण्ड	प्रेमसागर
महाभारत	६ भीष्म पर्व	१ बालकाण्ड	ब्रजविलास
१ हिस्सा में आदि पर्व	७ द्रोण पर्व	२ अयोध्याकाण्ड	ब्रज विलास छोटा
सभा पर्व वन पर्व	८ कर्ण पर्व	३ आरण्य काण्ड	कृष्णप्रिया
२ हिस्सा में विराट पर्व	९ शल्य पर्व, गदा पर्व,	४ किष्किन्धाकाण्ड	विजयमुक्तावली
उद्योग पर्व भीष्म पर्व	वैसौप्तिक पर्व मय यो-	५ सुन्दरकाण्ड	अनेकार्थ
द्रोण पर्व	षिक व विशोक व स्त्री	६ लंकाकाण्ड	छन्दोर्णव पिङ्गल
३ हिस्सा में कर्ण पर्व,	पर्व	७ उत्तरकाण्ड	कविकुलकल्पतरु
शल्य पर्व गदा पर्व	१० शान्ति पर्व राजध	रामायण शब्दार्थ को	रसराज
सौप्तिक पर्व, स्त्रीषिक	र्म व आपद धर्म व मोक्ष	श	सतसई सटीक बिहारीलाल
पर्व, विशोक पर्व, स्त्री	धर्म व दान धर्म	रामायण का इतिहास	सतसई
पर्व, शान्ति पर्व राज	११ अश्वमेध, आश्रम	रामायण मानसदीपिका	सभा विलास
धर्म आपद धर्म मोक्ष	वासक, मुशल पर्व,	रामायण कवितावली	तुलसी शब्दार्थ
धर्म	महाप्रस्थान स्वर्गा	रामायण गीतावली	भजनावली
४ हिस्सा में शान्ति	रोहन	रामायण गीतावली	प्रेमरत्न
पर्व दान धर्म, अश्व मे	१२ हरिवंश पर्व	विनय पत्रिका बा० मो-	युगलविलास
ध, आश्रम वासक पर्व	रामायण रामविलास	विनय पत्रिका बा० शि-	चित्रचंद्रिका
मुशल पर्व महाप्रस्था	रामायण तुलसी कृत	पुराण	बारहमासा बलदेव
नस्वर्गी रोहन पर्व हरि	रामायण सटीक आदि	देवीभागवत	मनोहर लहरी
वंश पर्व	तथा मये तसवीर	वेदान्त	गंगा लहरी
महाभारत पर्व अ-	तथा जिल्दबन्दी	योगवाशिष्ठ	यमुना लहरी
लेहदा २ भी हैं	तथा मोटे अक्षरों की	प्रबोध चन्द्रोदय ना०	जगद्विनोद
१ आदि पर्व	मय तसवीर	काव्य	राग
२ सभा पर्व	तथा मय क्षेपक	सूरसागर	राग प्रकाश
३ वन पर्व	रामायण तुलसी कृत	कृष्णसागर	साधनी
४ विराट पर्व		विश्रामसागर	शृंगार बत्तीसी

[illegible],

haràla fresh

misiem
vàti dyaivsa hon main rahai mānava ṭhika ṭhahaarāya
jete -augana ghuṇiṭhiye gunai hōtha para jāya
S rivasa hammsai jetau visesheti

hammsai A. hawas-
gunai gunahi

अथबिहारीसतसईसटीक॥

उदाहरण सहित लिख्यते

——oo——

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० मेरी भव बाधा हरो राधा नागरिसोय ।
जातनकीझाईंपरे श्यामहरितदुतिहोय ॥ १ ॥

यह मंगला चरण है तहाँ ग्रन्थ कर्ता कवि श्री राधिका जी की स्तुति करता है राधा और हू है यातें जातन की झाईं परै श्याम हरित दुति होय या पदतें बृषभानु सुताकी प्रतीति भई ॥ सवैया ॥ जाकी प्रभा अवलोकतही तिहूं लोक की सुंदरता गहि वारी ॥ कृष्ण कहैं सरसीरुह नैन को नाम महा मुद मंगलकारो ॥ जातन की झल-कैं झलकैं हरितद्युति श्याम की छात निहारी ॥ श्री बृषभान कुमारि कृपा कै सुराधा हरौ भव बाधा हमारी ॥ १ ॥ स्वकीया वर्णनं । नर अक्षर ३२ गुरु १४ लघु १८ ॥

दो० राति द्यौस हों मैं रहै माननठिक ठहराय ।
जेतो औगुन ढूंढ़िये गुनै हाथ पर जाय ॥ २ ॥

स्वकीया नायका है नायका को बचन सखी प्रति है नायक के औगुन हूं याको गुन भासत हैं ॥ सवैया ॥ जो हूं झकौं तौ खरोही लटूहवै करै मनुहार अनूठी अनूठी ॥ औगुन ढूंढे हूं हाथ न आवत सौगुन की रहै सिदुसी टूठी ॥ सील सुभाव सदा निवहै हंसि बोलै अमी बरषामनु बूठी ॥ हौं सखिये निस द्यौसरहै मन मोहन सों कब-हूं नहीं रूठी ॥ २ ॥ मुगधा पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नहिंपरागनहिंमधुरमधुनहिंबिकासयहकाल।
अलीकली हीसों बंध्योआगेकौनहवाल ॥ ३ ॥

यह दोहा यह नायका के तन में यौवन अवहीं आयो नाहीं अरु नायकको आशक्ति पहलेही अधिक देखीसो सखीसखीसों भ्रम को प्रसंग करि कहत है ॥ सवैया ॥ नाहिं पराग नहीं मकरंद अजौं प्रकटी नसु-बास विकासर ॥ जाने को आगे वाहूं है कहा गति ऐसो पर्यो अब-ही इकअ.सर ॥ फूलीघनी फुलवारी रमाल पैं काहूको मानत नेक न तासर । रीझरली मतिकंज कली पैं अली मंडरानो रहैनिस बासर ॥

दो० लालअलोलकलरकईलखिलखिसखीसिहाति ।
आजकल्हिमेंदेखियतुउरउकसौंहींभांति ॥ ४ ॥

यह नायका को योबन अंकुरित है सो सखी नायक सों निवेदन करतु है नायका अंकुरित योबना ॥ सवैया ॥ कैसी सुहाई लला लरकाई में योबन भांति ले सौंहीं भई है ॥ बाल बिनोदनते उचटी रुचि काम कला सुरसोंही भई है । बाही बिलोकि सिहात सखी दतियान की खान हमोंही भई है ॥ आजु ही काल्हिमें बाल बधूकी कछू छतियां उक सौंहीं भई है ॥ ४ । नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० हेरिहिंडोरे गगनतेंपरीपरीसीटूटि ।
धरीधायपियबीचहीकरीखरीरसलूटि ॥५ ॥

यह नायका मुग्धा है हिंडोरे तें नायकको देखि कैलाजके आधिक्य तें भाजिवे को भई सो टूटिपरी सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ बाल छबीली सखीन के संग बनी ठनी झूलति रंग हिंडोरे । नंदलै लखि ऊंचे तें टूट परी ज्यों परी अति लाजनिहोरे ॥ चाले की चूंदरी चारु कसुंभी सुगंध सनी दमकै तनगोरे ॥ प्राण पियारे ने बीचही धाय करीरस लूटि भई भरि कोरे ॥ ५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु ११ लघु २४ ॥

दो० भावकउभरोहोभयोकछुकपर्योभरुआय ।
सीपहराकेमिसहियोनिसदिनहेरबजाय ॥ ६ ॥

nahiṃ parāga, nahiṃ madhura madhu, nahiṃ bikāsa -ihi kāla
-ali kali hī soṃ bandhyo, -āge kauna hawāla

ihiṃ teṃ (forsoṃ)

-anyokti.
said to have been the first of the whole series in date.

lāla -alolaka laṛaka-ī lakhi lakhi sakhī sihāti
āja kalhi moṃ dekhiyatu -ura -ukasaumhīṃ bhāṃti
-alaulika larika-ī sihāṃti kālhi dekhiyata !!
-ankura a sprout

ćhāti -uthnekī rīti

lokokti -āykal.

swāsa voice

heri hiṃḍore gagana teṃ parī parī si ṭūṭi
dharī dhāya piya bīć hī karī kharī rasa lūṭi

1 rūpaka ? yamaka

ćuṃdar ćuṃdarī ćundri ćundṛi ćunrī ćunṛi a partycolored shawl.

bhāwaka -ubharo ho bhayo kaćhuka paryo bharu -āya
sīpa harā ke miśa hiye nisa dina herata jāya
1 antoro' nisi herata
harā ? laṛā myrtle-leaf or ivy-leaf sīpa'ivā
parjāyokti
bhāwak -ek bhāw soṃ ek laṛaṛ sa

2.

tāya tithi taruna kiśora'baya ṇumikāla sama jane
kahu tumina bā·iyale taisa sanihi sanśaru
" tarani punya dena punyani sankrona'!!

[illegible] explanation is idyllic - it tarani be read as ~~translation~~ opinion will be.
The sunshine of a girl's one day, and the season-giving ~~x~~ green ~~x~~ in a tree are both
of them connoters of [illegible] great value. Then together [illegible] coincidence
will not be obtained in the combination of these two connotations of time
what not ~~meaning~~ splendid meaning very splendid. [illegible] inexplicable
a tarani with kiśor,

ekuṭi na śuṇitā kī jhalaka jhalakyau yauvana-anga
dekhi leha ekha ekhima mili dekhati tāitā nayana

śuṇitā śeśava

lāekhalupta

& accurately expressed

-apana-anga ke jānikai yauvana nripati prabīna
sthana nava navarangā-nitamba kaū bare-ijāpiā hīna

jaoana [illegible] ekhā jaun kaun

a [illegible] Hemalgeuty [illegible] of Hari prati

यह नायका मुग्धा ज्ञातयौबना सखी नायक सों कहतहै सखी को बचन सखीसों है ॥ कवित्त ॥ प्यारे नंदलाल वह बाल अलबेली नव यौबन की जोति दिन द्वैकते भरति है। दंपति चरित्र चित्र दुरचित बन लागी कामकी कहानी कछू कानन धरति है ॥ रंचक उरोजन को कोर उकसोंही भई नै सकल ज्यौं ही सी चितौ निहूढरति है। सब की बचाय दीठि निज छाती बारबार गुंजहार मिसकरि हेरबो करति है ॥ ६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तियतिथितरुणकिशोरबयपुन्निकालसमदोनु ॥ 18 9
काहूपुन्निनपाइयतुबैससंधिसंक्रोनु ॥ ७॥

यह नायका लरकाई अरु तरुणाई वैसकी संधि है सो सखी नायक सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ उत सूरज राशितजै जबलौं नहीं दूसरी राशि दबावत है। तबलौं वह अंतर को समयो अति उत्तम वेद बतावतुहै ॥ इतहू जब बैस किशोर दिने शहुहू बय अंतर आवतु है। सूकृती कोउ पूरब पुन्निन ते बिबिसंक्रम को छनु पावत है ॥ ७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छुटीन शिशुताकी झलक झलक्योयौबन अंग ॥ 17 7
दीपति देह दुहून मिलि दिपति ताफतारंग ॥ ८ ॥

यह दोऊ बैस को संगम है सखी सखी सों कहति अथवा नायक सों सखी निवेदन करतु है ॥ सवैया ॥ बानि वहै बतियान के है पै कछूक हरैं मुसकान ढरी है। सूधी चितौन बिलोकति है परि लोलता रंचक जानि परीहै ॥ छूटी नहीं शिशुता की प्रभा नव यौबन की दुति आनि धरी है। संग दुहून के ताफता रंग दिपैतन की दुति रंग भरी है ॥ ८ ॥ मत्त कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अपनेअंगकेजानिकैयौबननृपतिप्रवीन ॥ 20 19
स्तनमननैननितंबकौबड़ोइजाफाकीन ॥ ९

यह नायका नव यौबन भूषिता मुग्धा सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ यौबन भूपमहा परवीन बिचक्षण ताइ हरी तटई है। राज

लह्यो नवला तन को कटि शत्रु की संपति लूटि लई है । दूरि किये मिथुता के सहायक चातुरता चित चारु भई है ॥ नैन उरोज नितंबन को अपने गनिकै बढ़वारि दई है । ६ ।पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

456

दो० अरतेटरतनवरपरेदईमरकमनुमैन ॥
होडांहोडीबढ़िचलैचितचतुराईनैन ॥ १० ॥

यह नायका को योबन आयो है ॥ सु चतु राई नेत्र बढ़न लागे ॥ सखी सखी सों कहतिहै । सवैया ॥ नैननि की बढ़वारि लखैं चित चातुरी की उमगी अधिकाई । चातुरी की अधिकाई लखीतब नैनन और गही सरसाई । कृष्ण कहैं वर बांध्यो दुहून इते परधौस मनोज की पाई । होड़ीये होड़ा चली बढ़ मानो बिलोचन औ चितकी चतुराई ॥ १० ॥ पयोधर अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

27

दो० निरखिनवोढ़ानारितनछुटतिलरकईलेस ॥
भौप्यारोप्रीतममनोचहतचलनपरदेश ॥ ११ ॥

यह नायका नवोढ़ा है या को योबन देखि सौति निराश भई है सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ कुंदनसी दिपै देहकी दीपति मैनु मनौ निज मोहनी घालतु । छूटतसी लरिकाई कछू तरुणापन रंगतरंग उछालतु ॥ बाल वधू तन यौबन आवत सौतिन के उरसूलसो सालतु । प्राणन ते अतिप्यारो लग्यो पति मानु कहो परदेश को चालतु ॥ ११ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

498

दो० गाढ़ेठाढ़ेकुचनुठिलिकोपियहियठहराय ॥
उकसोहैंइंतोहियेदईसबैउकसाय ॥ १२ ॥

यह नायका नवोढ़ा है नायक को वाही सों बहुत आशक्ति है सो सखी नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ पीन पयोधर भूधर सी तिय तो उर है परई है जबै । को बसि है पिय के हिय भामिनि सुंदर रूप अनूप तबै । नेक बिलोचन लोल भये नव यौबन ज्योतजगीन अबै ॥ तेउकसे उरजातनुही पियके हियते उकसाय सबै ॥ १२ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

-arate ṭarata na bara pare da-ī maraka manu maina
hoḍān hoḍī barhi ćalai ćita ćaturā-ī naina

tāṃ parain barh
maraka a contagious disease.
murakṇā to twist
? bara = bal twist
horāhorī competition hor a wager

ćit hī ćaturāī aur naina kī ćaturā-ī

śuddhāśuddhaheturāl prakāśa
hari prakāśa
-asīdī ādi etc

dekho kaṃjūṭī yāko nām maruh hari prakāśa

nirakhi naboḍhā nāri lana ćhuṭatī laṛaka-ī lesa
bhau pyāro prītama mano ćahata ćalana paradesa.

ćhuṭata laṛika-ī pyārau prītama tiyana mānahuṃ ćalatā bidesa VV

nirakhi i·e santina or tiyana. jab santon ne bikhā —
-unko prītam pyāro bhayo ki mano pardes.
jaya calat!

gāṛhe ṭhāṛhe kuća nuṭhili, ko piya liya ṭhaharāya ?
-ukasohaiṃ -ī to hiye da-ī sajai -ukasāya

ṭhiliyā waterpot.

L. gāḍhe gāḍhe kuća ni ḍhili piya liya ko ṭhaharā-i
-ukasaṃhaiṃ hī tau hiye sabai da-ī -ukasā-i

bārhata to -ura -uraja bharu bhara karuna-ī bikāsa
bojhana son tina kehiye -āvata nidhī -uvāsa
L. bhara- bojhanī santanike nūndha

bhar = bhār bikāsa-khilune ghūmtkar swās chehai
a.r.gali

X mānahu mukha dikharāwanī, dulahini kari -anurāga.
sāsa sarana, mana lalacha nīna, saulina dayo sohāga-
-sautini li dīyau suhaga

dulahini ko
kriyāvisheshan

deha dulahiyā kī cārhai jyon jyon yobana jyoti
tyon tyon lakhi saulina sabai baianamalina hoti
dulhaiya barhai jyaun 2 jobana tyaun sauten

-ullāsālankāra

jyon jyon ... jobana tyaun tyaun ... chehā pa-ati nīti ll alsa ... ita
mita nāmka ... kāini

दो० बाढ़ततोउरउरजभरुभरतरुणईबिकास ॥
बोझनसौंतिनकोहियेआवतरुधीउसास॥१३॥

यह नायका नवयौबना भूषिता है याको देखिके सौतिनके दुख होत है सखी नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ तोसी तुही रमणीकमनीय भये अति तो बस प्यारे बिहारी ॥ बैस बिलास जग्यो जबते तबते यह अद्भुत बात निहारी ॥ बाढ़तुहै नवनागरि तो उरमें उरजातनु को भरु भारो ॥ तामरि सौतिनसास उसासति पीरहि सौ हियहोत दुधारो ॥ १३ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० मानहुमुखदिखरावनीदुलहिनिकरिअनुराग ॥
सासमदनमनललनहूंसौतिनदयोसोहाग॥१४॥

यह नायका नवोढ़ा याको जोबन देखि नायक बस भयो अरु सौतिन हूं को सुहाग इन लोनी सो सखीसखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ गौन आई दुलहिनि लोने तब नवारी मानु जगर मगर होत भवन को भागु है ॥ विधिनै सुधारी गुन चातुरी की सींव जाकेरूप आगेरूप रतिको रती कहून लागु है ॥ मेरेजान मुख दिखरावनी को नेगुजानि आपहीने सौंप दीनीकोनो अनुरागहै ॥ सासुभवन दीनो प्यारेलाल मनदीनो अरु प्रीति मनदीनो सौतिन सुहागु है ॥ १४ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० देहदुलहियाकीचढ़ैज्योंज्योंयोबनज्योति ॥
त्योंत्योंलखिसौतिनसबैबदनमलिनदुतिहोति ॥१५

यह नायका नव यौबना प्रोषितानबोढ़ा है याको योबन बढ़त देखि सौतिन को मोह फीको होत है सखी सखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ मंदर गौनग है पदपंकज मतगयंदन दूखन लागे ॥ मैनके टोने सबैन भये तिन के सम उख मूखन लागे ॥ ज्यों वृषभानु ललीतनयोबन ज्योति के लक्षण से अब लागे ॥ त्योंत्यों बिलोकि भईमलिन द्युति सौतिनके मुख सूखन लागे ॥ १५ ॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० ज्योंज्योंयोबनजेठदिनकुचमातिअतिआधिकाति ॥
त्योंत्योंछिनछिनकटिछिपाछीनपरतानितजाति॥१६॥

यह नायका आरूढ़ यौबना है याको यौबन बढ़त है तैसें कुचबढ़त हैं तैसे कटि घटति है सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नैसक बोध भौकंज हिये जड़ता अलिनी मति रामन भागी । चंचलता तम शेष रह्यौ अरुणोदय लाज कलाचित जागी ॥ तारक जोति घटी नवला कटि चातुरता चकई अनुरागी ॥ यौबन भानुकी आमदनी शुभता रजनी तनु बीतन लागी ॥ १६ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ ॥ गुरु ६ लघु ३०

21 दो० नवनागरितनपुलकलहियौबनआमिलजोर ॥
16 घटिबढ़ितेंबढ़िघटिरकमकरीऔरकीऔर ॥ १७

या नायका के तनमें यौबन आयो अंग बढ़ि हैं सो घटिभये अंग घटि हैं सो बढ़ि भये यह आमिल को प्रसंग करि सखी सखी सों कहति है अरु नायक को बचन सुन सखी सो संभव है ॥ सवैया ॥ सोर परयो जु शरीर विषे निकसी सिरकारगई लरकाई ॥ ठौरहि ठौर भयो कछु और फिरी अंगअंग अनंग दुहाई ॥ आयगयो अफतालो दोऊ कुच छय धरे सिर श्याम दुहाई ॥ आलमें लाल रसाल की सों सिकदार भई तनमें तरुणाई ॥ १७ कछ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

146 दो० भेटतबनतनभावतोचिततरसतअतिप्यार ॥
धरतलगायलगायउरभूषणबसनहथ्यार ॥ १८ ॥

यह नायका मध्यालाज कामदोऊ समानहैं सखीसखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ प्यारीको नेह लग्योहरि प्यारेसों ध्यानमें प्राणरहे दिनराती ॥ भेटवे कोन उपाय बनै गुरु लोगनके उपहास सकाती ॥ जानके प्रीतम के तनके मिलके मिलबेको हिये उकलाती ॥ भूषणबास अवासके कोनमें बारहिबार लगावतछाती ॥ १८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

34 दो० छुटीनलाजनलालचौप्योलखिनेहगिरेह ॥
सटपटातलोचनखरेभरेसकोचसनेह ॥ १९ ॥

यह नायका मध्यालाज कामसमान है सखीसखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ माइ के मैं मनभावन को लखिप्यारो निशंक ह्वै देखि सकैना । देखि वेकौ तरसे हियरा दिख साध लगी चित चैन लहैना ॥ छूटै न

nava nāgari tana mṛdulaka lahi yobana-āmila jora

ghaṭi baṛhi teṇ baṛhi gāṭi rakama phaṛī -ora kī -ora -aura

jobana (naba) -amaki -ora

savishayasāvayavarūpaka

jor -apne bala se i.e zor se L.

-aur ki -aur hi kon ḍalī

L. kāma kī -or se jobau hākim ne -āya na-ī narī ćalurī kā sāth des pāy
jor se laṛkā-ī ko nikāl dinā kamar ko ghaṭāya -ānkh bāl chāl ćitavan ćalnā-ī
ko baṛhāyā -aur prakriti anhāw ćeṣṭā ćāl ko -aur kā-aur karḍiyā !

bheṭata banata na bhāva to ćita tarasata -ati tyara

ḍharata lagāya lagāya -ura bhīshana basana hathyāra

L tau dharatī -uṭhāya bhukhana

premōnmād ! ra

susrāl men
nāyak gayā hai
so nayakā kī kriyā

~~ati~~ ćhuṭī na lāja na ḍaraū pyo lakhi neha gireha
evidently misprint
saṭapaṭāta ḍhaū khare bhare sakeća sareha

L ćhuṭai pyau naihara gcha

pariyāyōkti !

samarasa samara sakoca basa bibasa na ṭhika ṭhahara-ya
phiri phiri -ujhakata phiri ḍurata duri ḍuri -ujhakata jāya

L ṭhiku haṭha nāya -ujhakati ḍurati
mispint? 2.

samarasa kahai samān hai guna

yamaka
lātanuprāsa

na-i lagani, kula kī sakuci, bikala bha-ī -akulā-i.
ḍuhuṁ -ora -aṁci phirai phiraki lauṇ ḍinajā-i

kuṭī anuvilāpa

-upamevalaṅkāra

ḍhaiā chabīle lāla ke navala neha lahi nāri
cāhata ḍiṁmata taya -ura bahirati ḍharati -utāri.

L. ḍhalā ḍhabīle ḍhaila kau navala neha-lahi nāri
ḍiṁmati ḍāhali tāya -ura paharati ḍhaurati -utā-i

ḍāhali
= ḍahiḍai

jāti ḍiṁdhai

लाज अछूटै न लालच लोक की लीक उलंघ परैना॥ तातें सकोच सनेह भरे अकुलात खरे जल जात से नैना॥ १६॥ बिल अक्षर ४५ गुरु ३ लघु ४२

दो० समरससमरसकोचबसविवसनठिकठहराय। 32
फिरिफिरिउझकतफिरिदुरतदुरिदुरिउझकतजाय२०

यह नायका मध्या है पूर्ववत॥ सवैया॥ आनन मांझ बसी पिय मूरति नैनन मांझ सकोचवे कौ। झांकि झरोखा दुरै फिर झांकै दुरै बहुरौं इहरात न एकौ॥ त्रासइते गुर लोगन को उत लालच मोहन के लखिवे को। लाज औ काम के बीचहु बीच परीयों चलाचलहाल हिये को॥ २०॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० नईलगनिकुलकीसकुचिविकलभईअकुलाइ। 284
दुहूंओरऐंचीफिरैफिरकीलौंदिनजाइ॥ २१॥

यह नायका मध्या है परकियाहू कहिये। नई लगनि कुच की सकुच यापद तें सखी सखी सों कहति है॥ अरु नायक हू सों सखी को बचन है॥ कवित्त॥ नई लगी लगन रसिक मन मोहन सों उर अभिलाषन की उमंग भरति है। कुंज की सम्हार की सुरति आये सीरी होत अति ही विकल जिय कल न धरतहै॥ देखिबे कौं ढरति डरति मनहीं मन मैं भरत उसास पै प्रकासन करति है॥ चाह कुल कानेवीचि फिर कीलों बाल बधू इतउत ऐंची ऐंची फिरिबो करति है॥ २२॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

another's mistress

दो० छलाछबीलेलालकोनवलनेहलहिनारि। 111
चाहतचूमतलायउरपाहिरातिधरतिउतारि॥२२॥

यह नायका को सनेह नायक में अधिक है सुवा के छला को पति मिलै को सो सुख मानत है लाजत मिले को भी प्रयास नाहीं करत। नायका मध्या परकीया हू होय सखी सखी सों कहति है॥ सवैया। नागर सों नव नेह लग्यो नव नागरआलिन हूं सों दुरावै। देखिबे को उकलात हिये अतिलाजन सों बन पै नहीं आवै॥ नंद

लला की छला लहिकै तकि ताहि रही न निमेष लगावै ॥ चूमति छावति आंखिन सों कबहू पहिरै कबहूं उर लावै ॥ २२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० चालेकीबातेंचलींसुनतसखिनकेटोल ।
गोयेहूलोयनहरतिबिहसतिजातकपोल ॥ २३ ॥

यह नायका मध्या सखी को बचन सखी सों कहति है ॥ सवैया॥ सोहै सखीन समाज में राधिका जाहिलखे रति रूप लजायो ॥ एक हीवैस सबे गुन आगरि चौपरि खेल भलो बनि आयो ॥ चाले की बात चली तबही सुनिके मुंहआंचर झीनेदुरायो।नैननि लाज कपोलनहांसी दुहूंमिलकैअतिरंग दिखायो ॥२३॥ मदकल अक्षर३५गुरु १३लघु २२ ॥

दो० वरउरझ्योचितचोरसोंगुरगुरजनकीलाज ।
बढ्योहिंडोरेसेहियेकियेबनैगृहकाज ॥ २४ ॥

नायका मध्या सखी को बचन सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ हरि मुख जोवत जरूरन सौं भय भीति नौल कंठ मैन को मरूरनि मरति हैं । बसन की बासनकी सुध परि हरी पुनिहरैं हरैदीरघ उसासनि भरत है ॥ मुरछित चेति परछितिपै परत नाहीं सरलों सम्हारि फेरि धीरज धरति है । बैठि बह राय रीझि जियतहराय फिर लाजहि बुलाय गृह काजहि करत है ॥ २४ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० सटपटातसीशशिमुखीमुखघूंघटपटढांकि ।
पावकझरासिझमाकिकैगईझरोखेझांकि ॥ २५ ॥

यह नायका मध्या लाज काम दोऊ समान नायक सखी सोंजैसी भांति देखि है तैसी अवस्था निवेदन करत है सखी सखी सों बचन कहति है ॥ कवित्त ॥ मोहनीमुरलीकी धुनि सुनि श्रवणनु ललकति आई शशि मुखी सट पट सों ॥ नैस कब झांकिआनि अवलोकवेकों उर दाब लीनो आनन लजाय पटपट सों । कहै कविकृष्ण बाल जानि कौं निकाई देखिवेकूं दृग आकुल मदन कि भरोखा झट पट सों ॥ २५ ॥ प्रौढ़ा वर्णनं । चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

ćāle kī bāteṃ ćalīṃ sunata sakhina ke ṭola
gaye hū loyana harati bihasati jāta kapola.

S sakhinī - hansatī bihasata.
sunatī

gownā tohide

svabhāvoktī

but is it possibly for go-īn a female companion or partner at a game - ćaupar
she withdraws her eyes even from her partner

ćitaćora
wara -urajhyo ~~bita ćor~~ a soṃ gura gurajana kī lāja
batyo hiṇḍore se hiye kiye banai grihakāja -

L -ura -urajhyau soṃ guru gurujana
ćaṛhe hiṇḍore
ćitalor = nāyak guru-lāj = baṛī lāj

utekāmpra ā e a

saṭapaṭāta sī śaśi mukhī mukha ghūṃghaṭa baṭa ḍhāṃkhī
pāwaka jhara sī jhamaki kai ga-ī jharokhe jhāṃkī

L saṭapaṭāti jharokhā

-āg kī jhāla sī śīghratā se kai ćamak ke gaī hai
khirkī meṃ dekh kar. bhinnopamālankāra

bihaṃsi halāya bilekhi-ati praṇihā bāyā rasa ghūmi
ṇaṇā ṇaṇiyā bīla ho piya cāmyan mukha cūmi

L bihasi -uta (for -ati) praṇihatiyā
-uta kahai nāyak kī -or rasa ghūmi, matta ho

accyth L sant ke bate.

-asamgati

koṭi jatana kījai ta-ū lana kī tapati na jāya
jaulaṇ bīje cīra jyon, rahai na pyau lapaṭāya

L kori jatana ko-ū karau, -jāya! jolaun! cīra laun! ~~tapatāya~~ !

-antaraṅginī rakhī ka bāhan rakhī se.
(-antah-anga intimate)

pūrṇopamā

chinaku -ughāṛata chīna chuvata rākhata chinaku chipāya
jo ha dīnu piya ālaṇila -ākara darapana dekhata jāya.

L chiṇcha -ughaṭī chuvatī rākhatī chiṇeka dina darpana

L mates sab dina nom to jāya anidekhata agu nā nayakā ko.

jāti-alaṅk
tātāṇ-prāsa

दो० बिहंसि बुलाय विलोकि अति प्रौढ़ पयार सयानि।
पुलकि पसीजति पूतकों पिय चूम्यो मुंह चूमि ॥ २६ ॥

यह प्रौढ़ा नायका है सुसनेह की अधिकाई सों पय ने चूम्यो पती पूत को मुंह चूमि आनंद मानत है। सवैया॥ प्रान प्रमोदित प्यारी फिरै सब मांझ हिये हुलसाती। पूत को आनन चूम्यो पिया तिय चूमत ताहि महा रस माती॥ चाहि उतै मुसकाय बुलाय हिये मुख पोंछ लगावत छाती। गात पसीज रोमांचित होति भई अनुराग के रंग में राती॥ २६॥ नर अक्षर ३० गुरु १५ लघु १८॥

दो० कोटि जतन कीजै तऊ तनकी तपति न जाय ॥
जौलौं भीजे चीर ज्यौं रहै न प्यौ लपटाय ॥ २७ ॥

यह नायका प्रौढ़ा है काम की अधिक है नायका को बचन सखी सों सखी कहति है॥ कवित्त॥ किये कोटि जतन न तन की तपत जाय अनत की पीर अति बरस रसाति है। टूटे विलोकै चित चौगुनो उमंगै चावडिग आये भेटवे की मति अकुलाति है॥ लीजिये भुजानि भर कीजिये न न्यारो कहू जीवन सफल जौलौं यौंही बिन राति है। आले पट की सी भांति प्राण पति आठौं याम रहै लपटानो छाती तोही लौं सिराति है॥ २७॥ मराल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६॥

दो० छिनकु उघारत छिनछुवत राखत छिनकु छिपाय ॥
सबदिनु पियरंवडित अधर दरपन देखत जाय ॥ २८

यह नायका प्रौढ़ा है नायक सों सनेह अधिक है या नायक रति सुरति के चिन्ह को मन लगावत है सखी को बचनसखी सों कहति है॥ कवित्त॥ रात रति रंग हरि संग मिल कीनो अंग अंग मनमथ की तरंग सरसै। भोर भये बाल सजनी गण में बैठिवे निसाकी बात सुमिर सुमिर जिय तरसै॥ प्यारे को गहन को अधर पर चिन्ह ताहि आरसी लै बार२ देखे रस बरसै। कबहूं कु उघार कबहूंक ढांकि राखै अनुराग में उमंग पान पल्लव सों परसै॥ २८॥ मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० दुखहायनुचरचानहींआननआननआन ॥
लगीरहतिटूकादियेकाननकाननकान ॥ २९

यह नायका प्रौढ़ा ॥ प्रौढ़ा नायका को बचन सखी सों परकीया हू हेय ॥ कबित्त ॥लाल मिलि भावन सों मिलि कर आपस के लेक मनोरथ बिबिधि बिधि मानहीं। कृष्ण प्राण प्यारो मेरो वीर ठरोता कूंच हरु मेरेई चवाइन को ठानहीं ॥ कुंज बन बीथी मोंया खिरकी किवार द्वार लागो रहै निस दिन ढूका दिये कान हो। देखा माई इन दुख हाइन के उलटि जुआनन आनन प्रति आन चरचा नहीं ॥ ३० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पहुंचतिझटिरनसुभटलौंरोकिसकैसबनाहि ॥
लाखनहूंकीभीरमेंआंखवहींचालेजाहि ॥ ३०

यह नायका प्रौढ़ा है परकीया नायका की चितवनि देखि सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ मान कियो तिय मानैन कैसेहूं आली रही बहु भांति मनाय कै। मोइ गई रिसही जिय में धरि सोय रह्यो दिग मोहन आयकै ॥ रोस हूं मैं सरसायो रहै कहते न बनै जु रही छबि छायकै। इंदु मुखी सुपने कै सुभाय रहो पियकै हिय सों लपटायकै ॥ ३१ ॥ करभ अक्षर ३१ गुरु १० लघु १४ ॥

दो० अपनीगरजनबोलियतिकहानिहोरोतोहि ॥
तूप्यारोमोर्जायकोमोजियप्यारोमोहि ॥ ३१

यह नायका प्रौढ़ा है सो नायक सो अपने जीवकी विवस्था कहति है कि तेरे बिना देखे मेरो जीव रहत नाहीं यातें अपनोउ राखिवे को तोसों बोलत हूं नायका को बचन नायक सों ॥ कबित्त ॥ अपने अपने प्राण सबहीं को प्यारे होत जात भांति राखिवो सबहि चाहियत है। एसो कछु बानि आनि परी मेरे प्रानन कूं तोहि देखो जोलों तोलों चैन लहियत है ॥ करत उपाव हौं तो तिनहीं के राखिबे को कृष्ण प्राण प्यारे कित न्यारे रहियत है ॥ तातें लाल बोलियत आपनोय गरजन ताको कछु तुम सों निहोरो कहियत है ३२ ॥

नर अक्षर ३३ ॥ गुरु १५ लघु १८ ॥

ṭhukā is appar
a misprint
for ḍhukā

other

tau other I swear
dukkha hāyanu ćaraćā nahiṇ -ānana -āna na -āna
lagī rahati ḍhukā diye kānana kānana kāna
ears
L dukkahāyanī | lagī phirati ḍhukā

ḍhukki ćhipkar dekhnā

ḍhukā crouching
peeping - platte

kān = modesty
also a husband
also one eyed
kānana wood = ban
ordeal place kānana kānana
vīpāla lankār
-ānana -āna na
ṇamak

quickly ćāra hero in n ai
pahuṇćati jhaṭirana - subhaṭa lauṇ roki sakai saba nāhiṇ
tākhana hūṇ ki bhūra meṇ -ānkha wahiṇ ćali jāhiṇ

L ḍaṭi (for jhaṭi) -āṇkhi

explained pahuṇćēti hai -aṭakke
jhaṭi seems better

viśeshokti
vibhāvana
pūrvarūpaṇā

-apani garaja na boliyati, kahā nihoro tohi ?
tū pyāro mojiya ko mojiya pyāro mohi

L garajanī boliyata nihoran pyāran kau jī pyāran V.V
nihora obligation.

kāvyalinga

jāla sayāva -ayāva hwai wai ṭhaga kāhi ṭhagai na
ko lalaćāya na lāla ke lakhi lalaćauhaiṃ naina.

we ṭhagaiṃ

kāhi kise

vyajastuli

ihi kāṇi mo paya nahiṃ tuṃ mara ja jiwāya
kāṭi ā āwala khila se mila ja ṭāyaṃ -āya
-iha kāṇṭe mo pāya lagi marati janāwati bhili soṃ
pūrwārdh meṃ nāyaka -uttārārdh meṃ sakhi

jī i ya hoṭika jatana -aba ha i hāṭhai ṭana a
ṭ ai a a a maiṃ i ṭa mili tuṃ ma i a ṭaiṃ a

kīnehiṃ kosika yatana gali

? i kiṃ = maiṃ

ṭaṃ ṭāṃ

kesara kesari insamake rahe anga lapaṭāya
lagai jāni nakha -anakhuli kila kalata -anakhāya

kesara -anakhaiṃ kata kalali
kroṣha kise
kesara ṭaṃ ṭ ā ja la nakha aula

vyāpi

दो० जातसयान अयानहवै बैठगकाहि ठगौन। 276
कोललचायनलालकेलखिललचौहैंनैन॥ ३२॥

यह नायका प्रौढ़ा है॥ सखी शिक्षा देतहै ताको उत्तर कहत हैं॥ कि ये नेत्र दीखके को तू ललचात नाहीं सहज को आधिक्य नायका को बचन सखी सों॥ सवैया॥ को नर है ठग मूरसी खाय के भूलत को न विवेक कलैं॥ काहि न धैं बिसरावैं सबै सुधि मोहन वे कहिका अबलैं॥ जीत सयान अयानसबै चतुराय अनेक न एक चलैं॥ आलोरी मोहन लाल के लोल विलोचन देखत को न छलैं॥ ३२॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० इहि काटैमो पाय नाहिं लीनी मरत जिवाय। 47
प्रीतिजनावतभीतसेमीतजुकाढ़्योआय॥ ३३॥

सवैया॥ जा दिन तें मिलि नैनकी मूरसी डारि गयो वह छैल बुलायो। ता दिन तें अकुलात हैं लोचन देखिबे कों कछू दाव न पायो॥ पोर पर्‌यौ मग में लगि कै इह कांटेने आज अमी बरसायो॥ प्रेम जनावत पै भय भीत सों मोहन मीत जु काढ़न आयो॥ ३३॥ नर अक्षर ३३॥ गुरु १५ लघु १८॥

दो० कीनेऊं कोटिक जतन अबकहि काढ़ै कौन। 280
भौमनमोहनरूप मिलि पानी में कोलौन॥ ३४॥

यह नायका परकीया नवोढ़ा॥ अपने मनकी आशक्ति सखी सों कहत है॥ सवैया॥ जा दिन से इन बानिक सों निरख्यो बल बीर कालिंदी के तीर में॥ ता दिन तें न सुहात कछू सुधि को लवलेश रह्यो न शरीर में॥ नैनन माझि बसी वह मूरति जाय परयो मन तो छवि भीर में॥ कोटि उपाय किये कढ़ै कैसे बिलाय गयो सखी लौन ज्यों नीर में॥ ३४॥ चल अक्षर ३० गुरु११ लघु २६ परकीया गुप्ता॥

दो० केसरकेसरिकुसुमकेरहेअंगलपटाय। 197
लगैजाननिखअनखुलीकृतबोलतअनखाय॥३५॥

यह नायका परकीया भूत मुरत गुप्ता॥ नायका को बचन सखी

सों जो नायक के प्रत्यक्ष सखी नायका सों कहै तो खंडिता हू संभवै है॥ सवैया॥ तोहि तो बान परी अनखैबे की ऐसे ही क्यों सतरा हठ ठानै॥ कीजिये तो निरधार कछू कियो भौंह चढ़ाय कौं बोल बखानै॥ केसर सों उबटयौ तनु सों कहु केसर ह्वै कर ह्वै लपटानै॥ आवरो तोहि दिखाऊं नजीक ह्वै बावरो तैं वे नख छूत जानै॥ ३५ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

45

दो० कारेबरनडरावनेकितआवतइहिगेह।
कैलालयौंसखिलखैलागेथरहरदेह॥ ३६॥

यह नायका परकीया हेत गुप्त नायककों देखि सात्विक भयेहैं॥ तिनकौं सखी सों दुरायबे कौं कहति है॥ कबित्त॥ आपु कार रंग रंगे छिरामि को छरा धरे चाँदिबेकौं कारी एक कामरियाही बिसाति॥ सीस पर फेंटा एक पीरोमे अमोठ बांध्यो तापे एक बिरही की पखोना पहरति॥ मटक चलत डर पवनो सों स्वांगु किये जब जब यहि ओर आवत अहीर जाति॥ तबतब देखि सखीकऊ वेर देख्यो यातें देखैं उरलागैं देह पुलकि घरहरति॥ ३६॥ परकीया वाक् बिदग्धा

2. 113 317 12

शार्दूल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० रह्योमोहुमिलनोरह्योयोंकहिगहेमरोर।
उतदेअलिहिउराहनोइतचितईमोबोर ३७॥

नायका परकीया वाक्बिदग्धा जुक्रय कार गई है सुनायक कौं सखी सों सखी कहति है॥ सवैया॥ ता दिनकी वहबालि गली में मिली हुती काल्हि गई चितचोरि कै॥ एकहि ठौरकरी इकठौरमनो विधिरूप की राशि बटोरि कै॥ छाड्यो मया करिबो मिलिबोउ परोसनो सों कह्यो भौंह मिरोरि कै॥ यों सजनो सों उराहनो दै पियो तन हेरि गई मुह मोरि कै॥ ३७॥ सद कल अक्षर३५ गुरु १३लघु २२।

347 387

दो० करि मंदरको आरसो सोते बिंब्योप्यो आय।
पीठादियो निधरकलखेइकैटकदीठलगाय ३८॥

the first kesara is for kesara filament, from kesa hair.

L kāre barana ḍarāwanau kata -āwata -ihiṃ geha
kai bā' lakhyau sakhī lakhai lagai Marāharī deha

vrajoktī

"rahyau mohu, milanau rahyau" yoṃ kahi geha maiora
-uta dai -alihi -urōjanau -ita cita-ī mo wo'a
L mohaḍ yau' gahaiṃ sakhi for ali' -ora.
gahai marora kiyā māna

gūṛhoktī anu
anyoktī

L kara muṃdarī ki -ārasī pratibimbyau pyau -āya
pīṭhi diye mōharaka lakhai -ikaṭaka dīṭhi lagāya
hāth ki -aṃgūṭhi

-ikaṭaka
v.l. 9-kuṃ

praiosi lai

Ļ pīsa māsa suni sakhini pai sāṇ-ī ćalata sawāra
gahikara bīna prabīna tiya rāgyau rāga malāra

-ahāi nishti muṇ yāhā nahīṁ hoti

Ļ kanja nayani manjana kiye baiṭhī byawati bāra
kaća-anguṛina bića biṭhi bai ćitawati nanda kumāra.

kanja nayanī, kamalanainī snān kiye baiṭhi sulajhātī hai bāl

Ļ nhāya pahiri paṭa -uṭhi kiyau baiṭhī misa kaṇ ćalī

Ļ piśhe kyaṇ rūkhī pauti sagabagarahi sancha

दो० पौषमास सुनिसासिनै सांझ चलत सवार ॥
लैकर बीनप्रबीणतिय गायो राग मलार ॥ ३९ ॥

नायका क्रिया बिदग्धा मुख्य तौ परकीया को भेद है स्वकीयाहू होय तौ होय ॥ सखी को बचन सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ शीत समय परदेश कौ पीय पयान सुन्यौ वह रिवन लागी ॥ याऋतु में हर क्यों हू रहै घर देवता पूजन मनावन लागी ॥ और उपाव तक्यौ न कछू तब साजिकै बीन बजावन लागी ॥ प्यारी प्रवीणभरे सुरमेघ मलार अलापिकै गावन लागी ॥ ३६ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मंजनकरि खंजन नयन बैठी व्यौरतबार ।
कचअंगुरीबिचदीठदै चितवतनंदकुमार ॥ ४० ॥

यह नायका क्रिया बिदग्धा जात वर्णन होत है सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ मंजु मुखीकरि मंजनु चंदन चौकी पै बैठी सनेह संचारति ॥ पंकज पांखुरी सौं अंगुरीन सों व्यौरत वार हियरसिया रति ॥ कुंतल औ कर पल्लव संधनि बीच तै दीठ इतौ तन टारति ॥ सुंदर श्री नन्दनन्दन को मुख खंजन नैन निशंक निहारति ॥ ४० ॥ बगज अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० न्हाइपहिरि पटुझटकियो बेंदी मिसिपरनाम ।
दृगचलायघरकोचलतबिदाकियेघनश्याम ॥ ४१ ॥

यह नायका परकीया बिदग्धा सखीको बचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ न्हाय पटु पहिरि मृग मछी चारु चारुरी सौं झटि मन भावन कौं मुंडि मुसकानी है ॥ कृपण कहैं बेंदीके सुधारिबे कौं मिस करि कीनौ प्राणपति अहित सुख सानी है ॥ कहा कहौं आली कछु कहती बनै न क्यों हूं जैसी वह सस्सनेही रीति ठानी है ॥ घर को चलतु चारुलोचन चला चल कैं चातुरी सौं चाहि बिदा कीनौं दधि दानी है ॥ ४१ ललिता मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पूछेक्यौंरूखीपरतिसगिबगिरैहीसनेह ।
मनमोहनछबिपरगटी कहैकटयानीदेह ४२ ॥

कटी

यह नायका लक्षिता है रुखाई करके सखीसों दुरावति है पै प्रीतम नेखि परगट करति है सखी को बचन नायका सों कहति है ॥ सवैया ॥ पूछत क्यों बहरावत बात कहां तैं अनोखो रुखाई तै ठानी ॥ प्यारे के प्रेम पै पागि रही अब होत कहा मुकरे हम जानी ॥ क्यों बर अंतर को दुरै प्रीत सनेह की रीत रही नहीं छानी ॥ तू मन मोहन की छबिपै जुकटीसुकहै यह देहकटानो ॥४३॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु २८

दो० औरेओपकनीनिकनिगनीघनीसिरताज।
मनीधनीकेनेहकीबनीछनीपटलाज ॥ ४३ ॥

यह नायका लक्षिता सखी को बचन नायका सोनायक को सनेह यातें अधिक है सोनेत्रनकी शोभा और भई है यामेंद तें प्रेम गर्बिगता होय ॥ सवैया ॥ केल किलोलके रंग मैं सुंदरि प्रीतम संगरमी रजनी है ॥ जेह सनेदरसाति भट्ट अरसात प्रभा सरसाति घनी है ॥ और इ-सोभयगंति ओप अनंतनि की सिर मौर गनी है ॥ कान्हके प्रेमकी सौ-हैं मनी पट लाज मैं चारु छनी सी बनी है ॥ ४३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० प्रेमअडोलैंडुलैनहिंमुहबोलेअनखाय।
चितवनकोमूरतिवसीचितवनमाहिंलखाय॥४४॥

यह नायका परकीया स्नेह लक्षिता है सखी को बचन नायका सों है ॥ सवैया ॥ बोले तू क्योंन कितो अनखाय कहो तू कहा अब साधे रुखाई ॥ तेरे हिये थिर प्रेमकी बानि सुजानि परी री दुरैनदुरा-ई ॥ तू हरि के हिय मांझि रहीखभि तेरोई नाम रटै सुख दाई ॥ प्यारे की मूरति तो चित मांझ बसी सुचि तैंन मैं देत दिखाई ॥४४ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० रुखरूखीमिसरोखमुखकहतरुखौंहेवैन।
रूखेकैसेहोतयेनेहचीकनेनैन ॥ ४५ ॥

यहनायका लक्षिता है परकीया रुखाईकरि सखीसों दुरावति है पै प्रीत केनेचदेखि सखीनायकासों कहति है ॥ कवित्त ॥ भकुटीमरोरे मुहमोर

kāvyaliṅgālaṅkāra
kaṭyāni deha me eneha dṛiṣh
samarthana kiyā,
kaṭyāni romāñc thari
kaṭila kaṭeyā prīchhe,
kaṭāyā ajānisāhark.

L. -aurai-opa kanīnakana gani ghanī siratāja
manī dhanī ke neha kī banī chanī paṭa lāja

kanīnikani the pupils of the eye -

-is se mañne tujhe ginī (? ginā) bahutanm kā sardār
piya ke prem kī manī (do-arth gain aur maṇi) sowahi lājrupī
paṭa meṇ chan nikalī hai tū leṇ meṇ chipālī hai tau bhī prgaṭ
hotī lai jaise nirmal manī kī kāntī basti meṇ bāṇdhe bhī chan
kar nikalti hai manipaṇa bleṣh bhedakātiśayokti
channā to find its way through chinks ie. the sunlight -

L. preema -aḍola ḍulai nahīṇ mukha bolai anakhāya
chita-unakī mūrati basī chitawani māṇhi lakhāya

-anumānālankāra

L rukha rūkhe misa rokha, mukha kahati rukhauhaiṇ [baina
rūkhe kaise hota ye neha chikane naina

kāvyalīṅ

bahake saba jiya kī kahati ṭhaura kuṭhaura ākhai na
ćhina -aurau ćhina -auro se ye ćhabī ćhāke naina

ṭ kahata gamaina V.

nayakā -aeana or khi se
naina ā nomi) kahata -

ṭhāṇeādīsayekī

nāṃra sunata hī huai gayau ṭana -aurai mana -ra
bebai nahiṃ ćita ćaṛhī rahyau -abai ćaṛhohai ṭyaura

nāma ćaṛhāye

ćita bar jo ćaṛhā rahā (? prema nāma or nāyaka) uṭh nahiṃ ḍabī
hai ṭyaurī ke ćaṛhāye se

bhāvakauṭī
che.

?

rahī muha pherakī hera -ila, hita samuhaṃ ćitā nārī
jīlbī parasa -uṭhī pīṭhī he pulake kahaiṃ pukārī

T.O.

? dīṭhī parama v Cem
prema S. certainly consciousness

रीसमिस करिऊपर रुखाईसाधि कहेरूखेबेनहै। अलिन कोयहैपनप्रीत ही कोधरे तनुकैसेजुदुरावौं कछुइनसों दुरैनहै। हरिकेसनेह सानिकैसे धीरहतिछानी कहैदेत प्रगटछबीली छविऐनहै। रूखोरुखकरि रुखीबानटानिबैठी परिरूखेकैसे होतनेहचीकने येनैनहैं ॥ ४५॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० वहकेसबाजियकीकहतिठौरकुठौरलखैन। 356
छिनऔरौछिनऔरसेयेछबिछाकेनैन ४६ ॥

यह नायका लक्षिता सखी नायका सौं कहति है ॥ जोनायक सौं कहै तो थिर नाहूहोय ॥ सवैया ॥ देखत नाहिं नैं ठौर कुठौर रहैं छिनहीनित चाहचके हैं। औरयरी पल औरही दीसत भूमतआरस मैं छियकेहैं ॥ लाज तजैं सियलाई गहैअपने वसनाहिंन यौं वहकेहैं। देत कहे जियकी सबबात बिलोचनये छबिछाकछकेहैं ॥ ४६ ॥ मरहल अक्षर ३४ गुर १४ लघु २० ॥

दो० नांवसुनतहीहवैगयौतनऔरमनऔर। 70 42
दबैनहींचितचढ़िरह्योअबैचढ़ोहैत्यौर ४७॥

यह नायका सखीसौं रिसके मिस करिकै स्नेह दुरावति है। येनाव सुनत चितकी रीति अरुक्रिया औरहीभांति भईयात सखीने नाकै करि जानी। नायका लक्षिता सखीकौ वचन नायक सौं ॥ सवैया ॥ नाव सुनही भयोमन औरही और भयोतन चेतन नैरे। नेहकी रीतियहै नव नागरि नेकलगै निवरन निबेरे ॥ क्यौं हमते सतराय बिलोकति हौत कहाअब त्यौ रतिरेरे ॥ ऐसोकियो कोहि कैसेदुरैहरि प्यारेको प्रेम चढ़यौ चित तेरे ॥ ४७ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० राहिमुहफेरकिहेरइताहितसमुहांचितनारि। 82
झीठिपरसउठिपीठिकेपुलकेकहैंपुकारि ४८॥

यह नायका परकीया है सखीदेखत पीठिदै बैठीदुरयवे कौं रोमांच पीठपै भये ते देखि सखी कहति नायका लक्षिता। कवित्त ॥ हितकौं निरखि यतु हरषैं हितूको मनुहसतो अगोई तनु प्रेमकी कलीनि कौं ॥

तिन्हैंतू भुरावांत है बात वह रावति है काहे कौं दुरावत नवेली नेह नीति कौं ॥ भावै इत हेर भावै रहि मुंह फेरि तेरेचित सनेह खीस बिमे रसरीतिकौं ॥ डीठिके परमहेते उठीयह पीठपै पुलकि गाते प्रगट कहत तेरी प्रीतिकौं ॥ ४८ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

329 दो० लखिलोनेलोइननुकेकोपनुहोयनआजु ।
कौनगरीबानिबाजबोकितुतूठ्योरितुराजु ४९ ॥

2. अलटा यह नायका कुटिला को नागरी बानिवाजिवो यापदतें बहुत नायकनुकी प्रतीति भई । सखी को बचन नायका सों जो नायका की सखी नायक सों कहत हू बनै । सवैया ॥ सरसी रुह खंजन मीन कुरंग प्रभाइनकी महजैं हरिबो । इतनें परचाह के चापनुसों चहुं वोर चला चल को करिबो । चित धोरति नाथ सनाथभयो वहको सुकृती जिह पैं ढरिबो । इनंदर लोचन कोरनिसों लखि कौन पैं आजुमया करिबी ॥४९॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

463 दो० फिरफिरदौरतिदेखियेनिचलेनैकरहैन ।
येकजरारेहौनपरिकरतकजाकीनैन ॥ ५० ॥

यह नायका परकीया कुलटा कौनपै करत कजाकी इतबहु नायकनसों प्रीत जानो सखी को बचन नायका सों ॥ कवित्त ॥ कानन के निकट निसंक ह्वै बिहारकरैं काहूतेनडरैं चितवित हरि लैनये । नृपत मनोजके प्रबल असि वाह कहैं घायल करत बर धर मधुरनये । घूघट की ओट गहैं घाट हेरि फेरि फेरि दौरतहो दखियत निचले रहैं नये । चंचल ढरारे अनियारे रतनारे कारकौनपरकरत कजाकी तरे ननये ।१ ॥ कवित्त ॥ यथा ॥ कजरा कव चहिये वरुनी कसर लीये भौहैं धनु कीये जेत वार जग ऐन हैं । इन की कजाकी आगे कजाको कछु न चले बहू मलैं हाथ येतो बाहू दुख देन हैं । बाकी सधी चितवनि दोऊ तरवारि साधैं करैं आधे आधे कहूं मारत डरैं न हैं । कहैं ऊधो राम सजे बजे रहैं आठों जाम मैन बादशाही के सिपाही दोऊ नैन हैं । ॥५०॥ मदकली अक्षर ३४ गुरु १२ लघु २२ ॥

L. rahī pheri mukha, hera-ita! hita sammukhai ćita, nāri
"diṭṭhi parata,-uṭhi pīṭhaki pulakaiṃ kahata pukāri

-anumāṃ

L lakhi lauṃ ~~loyanāṃke~~ loyana hoya na-āja ?
kauṃna garība niwāji bau kita tuṭhyau rati rāja

L ó explanation is quite unintelligible unless yana = lo.
why should not lakhi = lakshya a target. ~~To anything is no mark for~~
~~the corner of your~~ lakshmi-dekhaki lākh dekh ko-ina kaun-inki bas)

lakhi lauṃ loyanāṃki
ko-ina ho-e na-āj

L phiri phiri dawata dekhiyata nićale naiku rahai na
ye kajarāre kauṃna para karata kajā ki naina ?

L s explanation unintelligible

kajarāra = black without painting. Platts. bin kājal kā jal diye se
kajāki ? qazāqi ? ~~L daur~~ L dauṛ

L khidana sikha-e, ali, bhale ćatura-akeri māra
kānana ćārī naina mriga nāgara narini sikāra

-akeri ghe'tsman
-ak'je

rūpaka alesha āvishka

māra = kāmeso

he sakhi bapa ithur shikārī mār ne-is kananacarinaina mriga
ko nagara narini ke sikar kākhelia sikhaya.

kānana ćārī naina mriga - the doe whose eyes reach her ears
or the forest haunting gaze of her eye.

L ćalata deta-ābhāra sumi wahi parārsini nāha
ćasi tamase ke digana hāusi-āsusmi māha.

sona sikhyau, bilyau kanay, -ikhau ta-i -ukhāri
-ai- hari -arsana ayau, ćari ćara hariiya nāri
I sikyau kanay -ikhau harihai ithe thanaya hiya

dharahara, ithar hai accept pledge
or ithar - dhiya firmly. ithar hara
unfirmly

L ira ... ...

sa in sura haca sa ete ... ...

L ... ...

दो० खेलनसिखयेअलिभलेचतुरअहेरीमार। 458.
काननचारीनैनमृगनागरनरनुशिकार॥ ५१॥

यह नायका परकीया कुलटा सखी को बचन नायका सों है। नागर नरनु सिकारया पदतै बहुत नायकन की प्रतीति भई। सवैया। कानन चारी कहावै इते पर दौर करै पुर में मृगया ये। ओट अमेडि अचूक हनैं मुनि आगर नागर मारि गिराये। घायल कौं फिरि लेत सुध्यौन पलो न थकै अति कौतुक छाये। नीके मनोज प्रबीन करो लये खेलनि नैन कुरंग सिखाये। ५१। मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० चलतुदेतआभारसुनिवहीपरोसहिनाहिं। 139
लसीतमाशेकीदृगनिहांसीआसुनमाहिं॥ ५२॥

यह नायका परकीया मुदिता है चाहयतो बात भई जानि प्रसमता की हांसी भई सखी को बचन सखी सों। सवैया। देखि परोसी की चीकनी चाहिनिप्यारीहिये परप्रेमकीफांसी। त्यौंपिय जातबिदेशलख्यौ बिलखो बिरहातुर सासबसांसी। वाहो परोसीसों बोलिकही पति हैं इत तोसौं हमारी निसांसी। त्यौंलसी अंबुज नैनीके नैनन आंसुनमाँझत मासे कीहांसी। ५२। अनुष्टयना मदकल अक्षर३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० सनसूरव्यौवीत्यौबनौईखौलईउखारि। 97
अरीहरीअरहरअजौंधरिधरहरिजियनारि॥५३॥

यह नायका अनुसयानो संकेत को ठौरजाति जानिशोच करति है सोसखो समाधान करतहै प्रत्युत्तर। सवैय। बोननफूल सहेलीकेसङ्ग चलो मृग लोचन मोद भरी है। केशिल जोवज्रो अबलोकि वसांस भरी अलि सौंब चरीहैं। बीत गये बन सख्यौ सनौं अरु ऊखौं उखारी लईसगरीहैं। यौंहहरो मतिधीर धरोअब होतौ अराहर प्यरीहरी हैं॥ ५३॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० फिराफिराविलखीहैलखतिफिराफिरलेतउसास। 96
सांईसिरकचस्वेतज्यौंवीत्यौचुनातिकपास॥ ५४॥

यह नायका अनुशयना सहेट को ठौर बीते जानि बिलखति है सो सखी सखी सों कहति हैं ।। कवित्त ।। बालम के सिरके सिरोरुह ज्यौंसेतऐसे लेत चुनिचुनि शिरधुनि मुरझाति है । बीरनि है टूलऐ पै शूलसेसलत हिये मानि दुख मूलफूल जिमि कुम्हिलाति है ।। बारबार कहत अली सों कैसो भली रति केलके विलासथल लयों चलि जाति है । बिलखि बिलखि के उसासैं लेतबालबधू लखिबन बीत्यो मन अति अकुलाति है।। ५४ ।। नायका अनुकूला।। पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२लघु २४॥

341 दो० नहिंहरिलौंहियराधरौनाहिंहरलौंअरधंग ।
एकतहीकरराखियेअंगअंगप्रतिअंग ॥ ५५ ॥

यह नायका अनुकूला है ।। सुनायक के मन को विचार जानिये।। सवैया ।। जोअबके मिलिपै तो रहो मलि को भरै बादि वियोग वृथा हीं । न्यारोन कीजिये ताहि कहू पलु लीजै छिपाय मिलै छतियांहीं ।। बारही बार विचारतहूं चित और कछू जिय आवत नाहीं । राखियैकै हरलौं अरधंगकि राखियै ले हरिलौं हियमाहीं॥ ५५ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

10 दो० गोपिनसंगनिशिशरदकीरमतरसिकररास ।
लहाछेहअतिगतिनुकीसबनुलखेसबपास ॥ ५६॥

यह नायका कुदक्षिणा है सुरास मंडल में अपनोचतुराई करिके सब की प्रसन्न राखिएक के आधीन काहू नैन जान्यो सखीको बचन सखो सों । कवित्त ॥ यमुना की पुलनि सुहाई छवि छाई तैसीशरद रैनि जोन्ह विमलविलास हैं । गोपिका निसंग रस रंग की उमंग रमैं रसिक मनमोहनु रमतरसरासहै॥ अबला अनेकन में कन्ही नंदलाल कछू अद्भुत चातुरी की कलायों प्रकास हैं । सबही की बांह गहि सबही के संग नाच्यो सबनु बिलोक्यो कान्ह सबहीके पासहैं । ५६ । नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

177 दो० वेईगडिगाडैंपरीउबट्योहारहियैन ॥
आन्योंमोरिमतंगमनुमारगुरेरनमैन ॥ ५७ ॥

nahiṃ hari lauṃ hiyarā dharau, nahiṃ hara lauṃ -aracanga
-ekatahī kara rākhiye -anga -anga pṛati -anga.

Dakshina nāyakavarṇana ?

gopina sanga nisi śaṛda kī ramata rasika rasa rāsa
lahā́cheha -atī gatinu kī sabanu lakhe saba pāsa

lahā́cheha?
śarada autumn
the two months succeeding
the rains.

nisi saraḍa ramati gatina sabana

ramati se kahaiṃ nāyaka sarasa (-anurāg se) gopiyoṃ ke
maḍhya krīṛā karte lahā́cheha kahai śīghratā se -atigatina
kahai bahut gatauṃkī se sabana lakhe saba pāsa kahai sab
ne dekhā sab ke nikaṭ srikrishnjī ko
lahā́cheha ko sangīt meṃ -uraplurap kahaiṃ hain nāone ke prakaran
meṃ viseshālankār

2. we-ī gaḍa gāḍaiṃ parī -upaḍyau hāra hiyai na,
-ānyau mori matanga manu māri gareri maiṃ

Explanation mumkin hai
-ekatrā or ... be removed.

Serfoa nàwaka vangana

bàla, kahi èili bha-è koyana koyanu mànha ?

bala bilàne dègana kè pari sègana men èhànha

kahà (or kàhi) koyana

-uttaè'uhare
èhekàmprèsa

यह नायक मठ है। बिनु गुनहार के बिहन मीठीबात कहि दुरावत है नायक को बचन नायका सौं कहै तो खंडिता हू होय॥ कबित्त॥ आज मनमोहन मय कैसेरे आये लालन सोहतु सिंगार चारु मेरे मन मान्यो है। आलिस बलित दृग घूंमत ललित अति शिथिल कलितरूप मोहनी सो मान्यो है॥ कृष्ण प्राणप्यारे उरमें उबट रहौ यह बिन गुनहार प्रगट जातजान्यो है। बेई गड़िगाड़ें परी सुमनमतंग मानौमदन गुरेरतैं मारिभोर आन्योहै॥ ५७॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० बालकाहिलालीभईलोयनकीयनुमांह॥
लालतिहारेदृगनकीपरीदृगनमैंछांह॥ ५८॥

यह प्रत्युत्तर नायक षठ नायका खंडिता॥ सवैया॥ चारु निकाई लखे जिनकी दृलागत ओ परतो पलकोहै। प्राण पियारी कहा इन नैननु आजु ललाई इती ललकीहै॥ लोचन लाल तिहारे लखैं तिनको इत आनि प्रभा झलकीहै॥ ५८॥ यथा सवैया॥ कवि पंकज चंदन चंदन कंचन रंचन रोचन हूं कं बची। कहिये केहि कारण कोप ते लायक कापर भामिनि भौंह नची॥ बन मानतु हो अंखिया लखि लाल येनाहिंनै रातिकि रोखरची। तनु रे बियोग तचगौतरुणीतिन मानहुमो हियमांहितची॥ ५८ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० सकतननुबतातेबचनमोरसकोरसखोय॥
खिनाखिनओटैखीरत्योंखरोसवादिलहोय॥ ५९॥

यह नायक षठ सापराध आयो है॥ नायका क्रोध तें कटु बचन कहतिहै। ताकों मीठी बात कहि कोप निवारण करत है नायका अधीरा जानिये। नायक को बचन नायका सों॥ कबित्त॥ मोते तो कछु न अपराध पर्यो प्राणप्यारी मनकर रही योंही काहे को अरसतैं। लोचन चकोर मेरे होतहैं सीतल तेरे तरुण उदित मुख चंदके दरसतैं॥ कहैं मतिराम रूठ लागि कंठ मेरे कांत करति कठोर मनु आनंद बरसतैं। कोपे तें कटुक बोल बोलत तहेतऊ मोकों मीठे होत अधर सुधारस सरसतैं॥ ५९॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

436 दो० मारोमनुहारनभरीगारयौखरीमिठाहि ॥
वाकौअतिअनुखाहटौमुसकाहटबिनुनांहि ॥ ६०

यह नायका धृष्टै नायक को बचन सखी सोंहै याते गुण कथनमें नीके संभवतु है । वाको यापदतैं परोक्षकी प्रतीत भई ॥ सवैया ॥ मारेतौ फूलन की छटिकासौं तऊ मनुहार अनेक जतावै । गारिओदेय कहा कहिये मधुराई इनेक सुधाकित पावै ॥ वारति मूरतिको सतराहटु मैं रहिये अतिमोद बढ़ावै । घैल सुभाय सुहागल को रसहू रिमहू हसिही हसिआवै ॥ ६० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

283 दो० लरिकालेवेकेमिसनुलंगरमोढिगआय ॥
गयोअचानकआंगुरीछातीछैलछुवाय ॥ ६१ ॥

यह नायक धृष्ट नायक की करतव्यता नायका सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ गोरस के मिस रोक रहैं बन गैल न छांड़त छैल चवाई । भौनभरे मैं कहाकहौं जैसीकरी यशुदाके लला लंगराई ॥ मो ढिगआय हरैंईहरैं कछू कीनी सनेह सनी चतुराई । छोहरोलेयबे कैं उठिलानि अचानक आंगुरी छाती छुवाई । ६१ ॥ यथा सवैया ॥ खेलत में बृषभानु सुता कहूं धाय धसी बनकुंजन म्हैं । डारसौं हारतहां एरझौ सुरझाय रही कबि देव सखीह्वै ॥ तौलगि आय कहूं ऊततैं सुनजीक परयौचित बीच परयौह्वै । छोहर बाहर बाहर बायदै छेरिदयेछलसौंछति-यां छ्वै । ६१ । चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ । यत बय यति ॥

548 दो० कुंजभवनतजिभवनकोंचलियेनंदकिशोर ॥
फूलतकलीगुलाबकीचटकाहटचहुंओर ॥ ६२ ॥

यह नायकास्वकीयाहू हैयनायका कोबचन नायक सौं ॥ कवित्त मुकलित कली जलजात की कछूक भई भौरन की गुंज मंजु श्रवण धारिये ॥ पुलित गुलाब कलिकान की सुगंध पौन चिटका सबद मृदु मोद बर धारिये ॥ कलि धुनि करत अनंदखग वृंदनि अनंतछबि लसत बिहारीयौ विहारिये ॥ आगम बिभास को बिलोकिये छबीले लालसुंदर

dhrishṭa nāyak

māro manu hārana bharī gāryau kharī miṭhāhi
wākau -atī -anukhāhaṭau musakāhaṭa binu nāhi -
māryau manuharani

larikā lewe ku misanu langara no ḍhiṅa -āya
gayo -aćānaka -āṅguri ćhātī ćhaila ćhuwāya
laṅgara ṅaṅcu.

parapayokti

prabhāta varṇana

kunja bhawana taji bhawana kanu ćaliye nanā kisora
phūlata kalī gulāba āī ćalakāhaṭa ćahuṅ -ora

kākokti

1 'ćiriyāṅ bo...
wind rustling

rahi kafū kwoni, kalakuuu, kabi waka kala ampa;
kitau mithāsa dayau, ka-ī'-ite salone rūpa

kauu = ī.

dūti katama
rūpai si

viročālkiņš

mahi kharosa rijhikauu -ujhaki jhānki-ikakāra
ruļa rijhāvanakāra waka yaka naina rijhavāna

samālaukiņš

ka ģilā kabni rijhi ke chakihi ekakile kāka
kauujuki ji kela uti mitā mitā kuļuvāka
kauu rūpā

kaugunikauda
kaugu ekakeeuuiu
kauujuki uka kauu
y viņa - mitā jhuni
uti ūti kuļuvāyi ka
mitāki kaua - y ka
kauujuki ka ka
weauuiu

निकुंजतजि सदनु सिधारिये ॥ ६२ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ अथ रूप निवेदन नायका को नायका सों ॥

दो० रहीलटूहवैलालहौंलखिवहबालअनूप ॥ 332
कितौंमिठासदयौदईइतेसलोनेरूप ॥ ६३ ॥

यह नायकाको रूपसखी नायका सों निवेदन करत है सलौने रूप में मिठास यह अद्भुत है ॥ कवित्त ॥ जैसो जहां चाहियत तैसोतहां बनोबिधि चूपैधुनि आखर के न्याय बनिआईहै ॥ सुखद सुहाई कापैबरनि बताई जातिरतिहू नेज्ञाकी तिलु समतानपाईहै ॥ बालछबि छाय तामें कैार अधिकाई दई दई यालुनाई मांझ कितनी मिठाईहै। सुंदर कन्हाई हौतौ निरखि बिकाई वहरूपकी निकाई मानोदेहधरि आईहै ॥ ६३ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥ यह नायकाको रूप निवेदन नायक सों ॥

दो० मोहिभरोसोरीझिहैंउझकिझांकिइकबार ॥ 339
रूपरिझावनहारवहयहनैनारिझवार ॥ ६४ ॥

यह नायक को रूप सखी नायकासों निवेदन करतु है सखीको प्रयोजनप्रीति करायबो ॥ सवैया ॥ सुंदरजो कहियेतो तिहूंपुरमेंइक नंद दुलारोइहै। यामें कहा कहनावतिहै कछु प्रेमको पंथ निरारोइहै। नेक झरोखा ह्वै झांकी बुलायल्यौ मोहिं भरो सो तिहारोइ है ॥ रिझबार हैंतो दृग रीझहंगे वहरूपरिझावन हारोइहै ॥ ६४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु २० गात वर्णनम् ॥

दो० होरीझीलखिरीझिहोछबिहिछबीलेलाल ॥ 335
सौंनजुहीसीहोतदुतिमिलतिमालतीमाल ॥ ६५ ॥

यहगात वर्णन नायकाके अंगकी छबि नायक सों निवेदन करति है सवैया ॥ नीकोलसैं वृषभानललो नवयोबन ज्योति जगीअंग अंगहि। ताहि विलोकिलला मनमेरो मोह रह्यो अति रीझ तरंगहि ॥ छैलछबीले लखैं छबि रीझिहैं क्यौंन हिये रसभाव उमंगहि ॥ मालती माल तनदुति सों मिलि सों नजुहीके प्रकाश तरंगहि ॥ ६५ ॥ यथा सवैया ॥

चौसर चारु चमेलीके फूलनि को सिखयानि संवारिके आन्यौ ॥ मो पहिरयौ गुन गौरि धुरंधर कंचन सेतनमें मन मान्यौ ॥ ह्वैगई सौनजुही कीसी माल तुअंगके रंगमें भेद नजान्यौ ॥ दंतनकी दुतिसों मुसिकाय कै फेरचंबेलिहीकोंठहरान्यौ ॥ ६५ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

529 45

दो० अंगअनंगनजगमगातिदीपसिखासीदेह ॥
दियाबढ़ायेहूंरहैबढ़ोउजारोगेह ॥ ६६ ॥

यह नायकाकी छवि देहकी दीपतिसखी नायक सों निवेदन करति है ॥ कवित्त ॥ दीपकीसी लोयऐसी दूसरो नकोई रही दृगनि समोय मानो मोहनी लसति है ॥ जटित जवाहरके भूषण ललित अंगअंग न मिलत जगा जोतिसी जगति है ॥ दीपक बढ़ोहू भयेदेहके उजास होत बढ़ाई प्रकाशक चौंधसी लगति है ॥ दीपतिकी दुति भरिभवन अखिल जाल रंध्रनिहूवे बाहिरको वोरबहलति है ॥ ६६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

578

दो० वाहिलखैलोयनुलगैकौनजुवतिकीजोति ॥
जाकेतनकोछांहढिगजोन्हछांहसीहोति ॥ ६७ ॥

यह नायकाकी दीप्ति सखी नायक सों करति है जो नायक सखी सोंकै तो गुणकथन हूं संभवतु है ॥ कवित्त ॥ जोवनको जोति जगै तनकी दमक कीनी हीरन कनक छवि महल बिलंद को ॥ ललित बिलास कोटि मंद मृदुहास मति राम अंग बासु मृगमद बासु मंदको ॥ मदके मदनवन मद नैनमन्दिर से गति गरवीली मः मौकल गयंदको ॥ अधिक अंध्यारी मैं उजारी होति चंदकी त्यों चंदको उजारो में उजारो मुख चंदको ॥ ६७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

500

दो० भईजुतनछबिबसनामिलिबरनसकैसुनिबैन ।
अंगओपआंगीदुरीआंगीअंगदुरैन ॥ ६८ ॥

यह नायकाको शोभा सखी नायकसों निवेदन करति है ॥ सवैया ॥ हरि कंचन बेलीसी बालकी देहकी दीपतिको घरनै कविहै ॥ अरुताहि मिली दुति कंचकी की अनूपम वापरही फबि है ॥ कछुजात कही न हं अंग प्रभा अरचीर मिलै जुभई छबिहै ॥ वह आंगी गई दबिअंग की

-anga -ananga na jagamati dīpa sikhā sī ćeha

diyā baṛāye kuṇ rahai baṛo -ujāgaro geha

I -anga -anga naga

-anuguna aur pūrnopamālankār

wāhi takhai, loyanu lagai kauna juwati kī joti ?

jāke tana kī ćhāṇha ḍhiga jonha ćhāṇha sī hoi

juvati a young woman

vyangotpreksha

bha-ī ju tana ćha-i basana mili barana sakai sunibai na

-anga -opa -āṇgī durī, -āṇgī -anga durai na

I read -āṇga -opa -āṇgī durī -āṇgī -o,ja durai na

I gives barani sakai su nabaina

but explains koi barnana na kar sakai

so banai nahīn barnana karte

is nabaina misprint for banai na

barana sakai su na baina even

vibhāvanalankār

saṃnaiṭhē [illegible] L. pēta jūki yellow jasmine
banoṭī
banauṭ [illegible] L. banauṭi rang kapāe kephūl ke
rang ko katte lain. L. that is yellow.

L maker dutī lapatanē (pl. agre with karati L pata petaku ka chint,
he also makes dekhē agre with anga which is impossible.

L dīthi na parata saniana inli kanaka kanaka se gāta
bhinkhana kara kara kasālagata, parasi pichāne jāta

gahe lath men lagane se karkasa lagan lum

karkaś hard

-ālā

-āchi

L kanalu malina -āchi chabilii kanalu ju sahaja bikās a
-angaūja -angaūi lagai jiyeu -āmvi -uvāsa

औप में कागेमें अंग कहा दाबहै ॥ ६८ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० देखी सौनजुही फिरति सौनजुहीसेअंग।
दुति लपटनु पटसेतहूं करतबनोटी रंग॥ ६९ ॥

यह नायकाके अंगकी गुराई सखी नायक सों निवेदन करति है ॥ कबित्त ॥ सहज सिंगार दुति लसति अपार लखि मुनिहूंके मन भाव उपजै अनंगको ॥ अति सुकुमार यातें लचकत लांकुभार सहिन सकत बिबि टरज उतंगको ॥ रूपकी रसाल तुम देखी सो नवाल लाल कहा कहौं बनक बरनु वाके अंगको ॥ चारु तन सुखपट पहिरत नखवाहि तनदुति मिलि होतुकेसरिया रंगको ॥ ७१ ॥ कछु अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२

दो० दीठिनपरतुसमानदुति कनकुकनकसेगात।
भूषणकरकरसकलगतपरसापिछानेजात॥ ७२ ॥

यह नायकाके अंगकी दीप्ति सखी नायका सों कहति है। नायकहू सखी सों कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ औप अनूपम आननकी कछु अंबुज नैननु अंजनु आनै ॥ देखतही मनही मनसों चित आजु कहा जमु भूषण ठानै ॥ ऐसेमें आयगयो रिझवार सुडीठ परे तब घूंघट तानै ॥ भूषण जानि परै न सखी ब्रज भूषण देखत भूषण जानै ॥ ७२ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० करतुमालिनआछीछवहिहरतजुसहजबिकासु ॥
अंगरागुअंगनलगोज्योंआरसबिसासु ॥ ७३ ॥

यह नायकके अंगमें केसर लगी है नायकका इतनाहू अंतराय सुहातु नाहीं यह जानिसखी नायकसों कहति है जोनायक नायका सों कहै तो रूप गर्विता होय ॥ सवैया ॥ मैनको मोहनो सोलोख न्यय ही मोहन रोझ रहे रसपागैं ॥ योवन रूप सुहाग सनो लखि सोतिनु के उरदाहनि दागैं ॥ ऊजरो लागैन और कछू नवनागरि तेसे गुराईके आगैं ॥ केसरि लागैं तै अंग लखात ज्यों आरसि देखैं बसामके लागैं ॥ ७३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

526 दो० पहिरनभूषनकनककेकहि आवतुयाहिहेत।
दरपनकेसे मोरचे देहदिखाई देत ॥ ७४ ॥

यह सखी नायकाके अंगकी निकाई कहतहै जोभूषणहूको अंतराय जानि नायकासों कहैं तो बनतु है ॥ कवित्त ॥ हितकी तोबात हित हुसौं कहि आवैतिहि तातें तोसों कहत छबीली प्रेम पागि कै ॥ तेरी समता कौंरति रंभा उरबसी है न तेरे अनुराग प्यारी रह्यौ अनुरागि कै। लौनौ तेरो तन तामें सोनेके गहने तूलो पहिरति इन्हें अबही दे त्यागि कै। नीके नीके तनपर फीके फीके लागतहैं मेचा रहै हैंमानों मुकर में लागिकै ॥ ७४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २३ ॥

522 दो० कंचनतनधनबरनबररह्यौरंगमिलिरंग।
जानीजातसुबासही केसरि लाई अंग ७५ ॥

यह नायकाके अंगकी गुराई सखी नायकासों कहतिहै अथवा लेचलवे कीउतावल करिअंगरागुकोनिवारनुकरतु है अंतराय जानि नायकनायकासोंकहतु है ॥ सवैय। ॥ जोकछु तो तनमें तरुणी सुरतीन लहैं रतिरूप निकाई। तापर योबन जोतिजगैं कविको बरनैछबिको सरसाई ॥ रंगमें रंग समोयगयो जब कंचनसे तनमेंघसलाई। अंगसुगंधनिकीनलहैं सरकेसरि बासुहो तैं लखिपाई ॥ ७५ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

523 दो० ह्वैकपूरमनमेंरहीमिलितनदुतिमुकतालि।
छिनछिनखरीबिचच्छनौंलहतिछायतिनुआलि ॥ ७६ ॥

यहअंगदीप्ति कीनिकाई सखी नायक सों कहति है ॥ कवित्त ॥ कुंदनसे गात जलजातसे नयन जाकी दीपति जुन्हाई सोभवन मांझवै रही। कंचनकी चौकीपर बैठि बरबाल साजैसकल सिंगारज्योति जगमग ह्वै रही ॥ मोतिनकी मालसजनी तैं पहराई सुतोतन दुतिमिलित कपूर कोसोह्वै रही। एकअली चतुरजकी सोचकि रहीएक करिबेकों निहचे तिनूको हाथलेरही ॥ ७६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

535 दो० केसरिकेसरिक्योंसकैचंपकाकिताकिअनूप।
गातरूपलखिजातदुरिजातरूपकोरूप ॥ ७७ ॥

pahira na bhūshana kanaka ke, kahi -āwatī yahi hela
darapana ke se moraće deha dikhā-ī dita.

bhukhana -ithiṁ darpana

morća rust.

P. lit. a small ant. ? a speck. the trail of an insect.

I explains kahi-āwatu by
kuchne mein -ātā hai.
but kahī -āti hiṁ seems
more probable.

vrishchanā bichchūa

kanćana tana dhana barana bara rahyau ranga mili ranga
jāni jāta subāsa hi kesarī lā-ī -anga

I thani | jāti kesara.

I hwai kapūra mani manja rahī mili tana dhuti mukutāli
chinachina kharī bićaćchanau lakhati chwāya tina -āli?

kaōgum aur bhrāmti

kesarī kai sari kyūṁ sakaiṁ ćampaka kitaki -anūpa

I kesara kaisara kyaṁ sakai ćampaka kilika -anūpa,
gāta rūpa lakhi jāta dhirā jāta rūpa lai rūpa

barana bāsa sukumārata saba bīčī rahī samāya
pakhurī lagī gulāba kī gala na jānī jāya

milta

I sohati ōhaṭī seta mem kanaka barana bāla
   sārasa bāraka bījurī bhārata kī jaya bāla.

bāraka ka sārasa clouds

? bhī light rahā jāyala ka bāraka.
this is the explanation given by Akbar

I kahā kusuma kaha kaumudī kitika -ārasī ju-ī
jākī -ujarā-ī lakhe ā-kha -ujārī ho-ī

kaumudī moonlight ju-ī jasmine

यह नायकाके अंगकी दीप्तिसखी नायक सों निवेदन करति है॥ कवित्त॥ चंपकचमकचारु कुंदनमें कहाओजु केसरि कुसमकी जुसंधकरैं गतकी। कोकिलाकी कूकहूतेपाँव पियूषहूतें मधुर मयूषहूतें मधुराई बातकी॥ मैनकाहूं मैनछवि मैनदुति रहोदबि मन गिरधर ऐसी नैन बनितातकी॥देखिदृग भासमृगजात पछितात मन जलजात लजिजात जलिजात जातको॥ ७७॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २२॥

दो० बरनवाससुकुमारतासबाबिधिरहीसमाय। 476
पखुरीलगीगुलाबकीगातनजानीजाय॥ ७८॥

यह नायकाकी सहज सुगंधयौबनकी अरु नाई सुकुमारता सखी नायक सों निवेदन करत है जो नायक के सेजके पांखुरी जानि सखी नायकासों कहैती लक्षिता होय॥ सवैया॥ बानतिफूल भरेघर फूल प्रभातसमैसुख सेजतेंजागी। आयोतहां मनमोहिनप्यारो प्रभा लखिरीझि रह्यो अनुरागी॥ वैसोई रंगसुगंधहै वैसोई वैसोहो कोमलता रसपागी। कौनहूं भांति सों जानि परैन गुलाबकी पांखुरीगात सींलागी॥ ७८॥ मदकल अक्षर ३५ लघु २२ गुरु १३॥

दो० सोहतधोतीसेतमेंकनकबरनतनबाल। 334
सारदबीरदबीजुरीभारतकोजतिलाल॥ ७९॥

यह नायकाकी गुराई सखीकहतिहै नायकसों॥ कवित्त॥ कंचन बरनतन बनक अनूप मानों रूपकी अवधि मनमथकी रसालहैं। एक धोतीसेतमें अनेकछविदेती बाल मानोंहंस मंडलीमें चंपककीमालहैं॥ सरदघटानि मधिदामनी लसति किधों छीर सिंधुमांझ बड़वानल की ज्वाल हैं। सुरसरि सोतमें सुधानिधिकी कला किधों शंकरके अंगलसैं पारवती वालहैं॥ ७९॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० कहाकुसुमकोकौमुदीकितकआरसीजोति। 519
जाकोउजराईलखैं आंखऊजरीहोति॥ ८०॥

यह नायकाकी उजराई सखी नायकसों कहत है नायकहू कहैतो संभवहै॥ कवित्त॥ देखीसुनी कोतकहू रंभम रसमकोऊकरा कैसोयो

कमाईमदु मूजरी। इंदुहोहु बदितन कहाहोहु बदितकहाऊ ऊजरी पैन पून्योंकी सीपूरण प्रकाशपावै दूजरी ॥ उबटि अन्हाय औ अगोछनि अंगोछो तनरहोउ अछन अछबाई आछी गूजरी। लाखकरो कोऊपट तरवाकी पूजतिन जाको उजराई देखेंआंख होतऊजरी ॥ ८० ॥ छंद काल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २२ ॥

532 दो० रंचकलखिपतिपहरियोंकंचनसेतनबाल।
कुम्हिलानीजानीपरतिउरचंपेकीमाल ॥ ८१ ॥

यह नायकाकेअंगकी गुराईऐसीहै जुचंपेकी मालाजानिनाहीं जाति सुमखी नायकसोंकहति है ॥ सवैया ॥ लाईबनाय प्रबीनअलीनवचंपकमाल सुगंधभरीहै। लैअपनेकरमें नवनागरिकृष्णाकहैं उरमेंपहरीहै ॥ कंचनसे तनकीछवि मांझगईमिलि रंचनहींउघरी है चाहिरही सजनी चकसी कुम्हिलायगई तबजानिपरी है ॥ ८१ ॥ चलअक्षर ३० गुरु २२ लघु२६॥

169 दो० सघनकुंजघनघनातिमिरुअधिकअंधेरीरात ॥
तऊनदुरिहैश्यामयहदीपसिखासीजाति॥ ८२ ॥

यहनायका के अंगकोप्रकाश सखीनायक सों कहति है जो संयोग समैगुरुसखी कहै तो शिक्षाहू संभव है परकीया ॥ सवैया ॥ याके समीपन होउदुरैलखि लेतवै दूरहीते बपहांसी। कीजे कहाअबतो कहि जोबिधि याबिध दीपति ही परकासी ॥ काहूकि आंखिनमंदन जानि तहौंबलिजाउं नहूंजिवदासी। ल्याऊं सकेसें जुरातिअंधेरी उजेरी जुना गरि दीपशिखासी ॥ ८२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु१२ लघु २४ ॥

534 दो० लिखिनबैठिजाकीसखीगहिगहिगरबगरूर ॥
भयेनकेतेजगतकेचतुराचितेरेकूर ॥ ८३ ॥

यहनायका की निकाई सखीनायक सों कहत है कि वाहि देखें भ्रांतिकभावहोत है याते चितेरेऊपर क्योंलिखत बनैनाहीं ॥ कवित्त ॥ रूपकीअवधि ऐसीऔरनव नाई बिधि जाको लिखवे कों लालदेवता मनाइवो। ताकीशोभा लखिवेको बैठतिगरब करिआनतहो मनहोत घूमघननायबो ॥ ऐसीभांति आपआप कूरकहवायगये चतुरचितेरेतिन्हें

I rañca na lakhiyata pahcarè yaun kañcana se tana bālā
kumbhilānī jānī parai -ura ćampe kī māla

saghana kunja ghana ghana timiru -cidhika -andherī rāta
ta-ū na duri hai śyāma yaha dīpa sikhā sī jāti.

I likhana baiṭhī jākī sabihi gahi gahi garaba garūrā
bhaye na kete jagata he. ćatura ćitere kūra.

ćiterā a painter sabhī P. ghabīh
? kūr P. blind.

jā for yā

कहालौंगिनायबो। कृष्णप्राणप्यारे वहिचित्रनी बिचित्रगति काहूपैन
वान्योंवाके चित्रको बनायबो ॥ ८३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अंगअंगछबिकोलपटउपटतिजातअछेह ।
खरीपातरीहूतऊलगेभरीसीदेह ॥ ८४ ॥

यहनायका की नाजुकताई अरुदीप्ति सखीनायका सों कहति है ॥ सवैया ॥ कंचनकंज कुरंग कलानिधि कंचुकीसोभा सुभायरहीसी । ता नवनागरि की निशिद्यौसरहैं नितिनैननि मांझधरीसी ॥ अंगनि अंग-उमंगअछेह प्रभाकी तरंगसुरंग खरीसी । पातरि वाकी अंगेठतऊ छबि पुंजनलागति देहभरीसी ॥ ८४ ॥ मदकल अक्षर ३१ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अंगअंगप्रतिबिंबपरिदरपनसेसबगात ॥
दुहरोतिहरेचौहरेभूषणजानेजात ॥ ८५ ॥

यहनायका के अंगकी उजराई सखीनाय सों कहेहै सखीसों नायक कहै अरुनायका सों कहैसो सबभांति संभवतिहै अरुनायका सखीसोंकहै तो रूपगरबिताहोय ॥ कवित्त ॥ बदनविलोकिशशिसमतालहैनक्यों हूं लोचनबिलोकि जलजातहू लजातहै ॥ नागर नवेली नखसिखलौं निकाई भरी बानकबिचित्र लखि लोचन सिरात है । कृष्णप्राण प्यारे अति उज्जललसतनाके मुकुरसेगात महा शोभा सरसात है ॥ अंग अंग प्रति प्रतिबिंब परिकेऊ ठौर एक एक भूषण अनेक जाने जात है ॥ ८५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० वालछबीलीतियनुमेंबैठीआपुछिपाय ॥
अरगटहीफानूससीपरगटहोतलखाय ॥ ८६ ॥

यहनायकके अंगकी दीप्ति सखीनायकसों निवेदन करत है नायक हू कहै तोसंभव है ॥ कवित्त ॥ चंदकी कलासी चपलासीतिय सेना पति वालमके बरबोल आनंदिके बोलि है । जाकेअंगैकंचनमें रंचकनपैयेदुति मानौंमनमोतीं लालमाल अंगैपोति है । देखीप्रीति गाढ़ीमहिने तनमुख छाढ़ी जोरजोबन को बाढ़ीछिनछिन औरेहोति है ॥ गोरीदेह झीने बसनमें झलकत मानौं फानुस के अंदरदिपति दीप जोतिहै ८६ ॥ मदकल अक्षर ३१ गुरु १३ लघु २२

दो० मानहुंबिधितनअच्छछबिस्वच्छराखिबेकाज ॥
दृगपगपोंछनकोकियेभूषणपायंदाज ॥ ८७ ॥

यहनायका के तनकीछबि सखीनायकसों कहत है। अरुसखीको बचन नायका सों होत है ॥ कबित्त ॥ तूहीतीनों लोक को लुनाई लूटल्याई देखैंरूपकी निकाई नंदलाल ललचायेहैं ॥ तेरोदुति आगेआलो कंचनके गहने ये फीके फीके लागैं ऐसे मात छबि छाये हैं ॥ दीठि के परसहीते मैले होत अंग ऐसी दुज्जनता सहित बिरंचि नेबनाये हैं ॥ तिनकी निकाई स्वच्छ राखिबे के हेत येतो दृगनकों मानो पग पोंछना बिछायेहैं ॥ ८७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० लीनैऊंसाहससहसकीनेजतनहजार ।
लोयनुलोयनुसिंधुतनपैरिनपावतपार ॥ ८८ ॥

यह नायका के अंग अंगकी सुंदरता देखिकै तहां नायकके नेत्र तहाईं थकितहूवै रहतहैं शोभा एकसखीसों कहतहै ॥ सवैया ॥ जातनको छबिको कवि कोविद केलकि तीर प्रमाण बतावत ॥ तातनकी छबि देखिबेको तब नैनलगे व्रत ध्यान लगावत ॥ साहसको रसयान बहु भांति अनेक उपाय बनावत ॥ शोभाके सागर मांझपरे अब पैरत कैसहू पार न पावत ॥ ८८ ॥ स्वपनदर्शन नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० देखोजागितबैसखीसांकरलगीकपाट ।
कितहूवेआवतजातभजिकोजानेकिहबाट ॥ ८९ ॥

यह स्वप्नदर्शन नायका सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ रंचक नींद परे जबहो तबही हिय आनिटिकै खगिकै ॥ हेरि हसैं रसको बरसैं बतरात महाहित सों पगि कै ॥ जागो तो डीठ परैनकछू अरु त्योंहीं कपाट रहे लगि कै ॥ इह जानि कौ आवत धौंकितहूवै पुनि जातकबै कित हूं भगिकै ॥ ८९ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० सोवतसुपनेश्यामघनाहिलिमिलिहरतवियोग ।
तबहींटारिकितहूंगईनींदौनींदनयोग ॥ ९० ॥

mānahuṃ bidhi tana-aćća ćhabi swaćća rākhibe k
driga paga poćhana ko kiye bhūshana pāyandāja

L panniśhana kaun bhūkhana

phalotpreksha
-asiddhāspada

L ai explanation good.

L. tine hu sāhasa suhasa kine jatana hajāra
lo-ina lo-ina sindhu tana pairi na pāwata pāra

tine kine bāra-ika yā teṃ ćhekaun prāsa
lo-ina lo-ina yamaka driga lāwani-artha prakāsa

sāhasa violence
valour
courage

dekhau jāgi tabai sakhi sānkara lagi kapāṭa
kita huwai-āwata jāta bhaji ko jāne kiha bāṭa

L jāgata waisiyai
waisiyai waisehi

sowata supane śyāmaghana hili mili harata biyoga
tabahiṃ ṭari kitahuṃ ga-i nīṃdau nīṃdana yega

L sapane

vipāritya lańkā

ḷaṭakī laṭakī laṭakaṭu ċalaṭa jhaṭuṭa muḳaṭa ā ī ṁāṁha
ċaṭaka bhāryau naṭu mili gayau -aṭaka bhaṭaka baṭa māṁha

1 ḍaṭaṭa muḳuṭa baṁa pr baṭa

1 hamwlaṭa ḍaṭeṭa by dwhlā ā ṁa u huk in my gwshmaṭa
jhaṭaṭa might mean losing

ċmarī ċ jāma ċaṭāra naḅha muḳa vāsī ā -amuṭārī
neha ċaḅāvala nīṇa ḷaṇ niraḷeḳī nīvā ē nārī

यह स्वप्नदर्शन नायका सखीसों कहति है नींदकी निंदा करति है ॥ सवैया ॥ आलीबिछोहुभयो तबते जबते छतियांबहुभांतिबियोग बईरी । आजुलला मन मोहनसों सपनेमें अचानक भेंट भईरी ॥ मेसबिथाबहरा-यत्रिको हिलिकै मिलिकै रसकेलि ठईरी ॥ नींटहूं नींद बिलायक ह्वै तबहीं कहुं भाजि गई सुगईरी ॥ ९० ॥ यथासवैया ॥ आवतमें हरि को सपने लखि नैस कुवाट सकोचनिछोड़ी। आगेहू आड़ेभये मतिराम ओलीने चितै चखिलालची वोड़ी । वाढ़नुको रस लैनको मेरो गहोकर कंज निकंपत ठोढ़ी॥ और भटून कछू भइ बातगई इतनेहीमें नींद नि-गोड़ी ॥ ९० ॥ अहिबर अक्षर ३४ गुरू ५ लघु २९ ॥ साक्षात दर्शन नायकको नायकाको ॥

दो० लटकिलटकिलटकतुचलतझटतमुकटकीछांह । १२२
चटकभरचौनटुमिलिगयोअटकभटकबटमांह॥९१

यह साक्षात दर्शन जैसो छबिसों देखो है नायक तैसे नायका स-खीसों कहति है ॥ कवित्त ॥ लटकि लटकि चलि निरखतु बार बार फेरि फेरि ग्रीव छाह मंजुल मुकट की ॥ केसर की खोरपरि कलित रुचिर भाल कुंडल ललित सोहै बनमाला ठटकी ॥ ह्वै गई बिप-नै मग अटक भटक भेंट तबहींते नैनन में खुभी सोभा नटकी ॥ भूली सुधि घटकी री लोक लाज सटकीरी अटकी हिये में पहरानि पो-रे पटकी ॥ ९१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरू १२ लघु २४ साक्षात् दर्शन नायकको नायका को ॥

दो० चुनरीश्यामसतारनभमुखशशिकीउनहारि ॥ ३/४
नेहदबावतनींदलौंनिरखिनिशासीनारि ॥ ९२ ॥ ४५

यह साक्षात दर्शन जैसे नायका देखी है तैसेही नायक सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ उन्नत पीन उरोजन कौंजुगु कोकनुकी छबि पावतहै ॥ मुख सोहत सोमुजुह्वै याहसो दुति दीप कुमोद बढ़ावतु है ॥ यह जामिनिसो गजगामिनि देखत नींद ज्यौं नेह दबावत है ॥ ९२ ॥ छद्मानुराग नायक को त्रिकाल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

328 दो० सनिकंजालचखझखलगनउपज्यौसुदिनसनेह ।
क्योंननृपतिहवैभोगवैलहिसुदेशसबदेह ॥ ९३ ॥

यह दृष्टानुराग है नायका के नेत्र अंजन सहित देख नायक के अनुरागउपज्यो सोसखी नायका सों कहति है नायका परकीया ॥ कवित्त देखो एक बनिता बिचित्र बर बानिक सों जाको जोतिही सों जग मांग रह्यो गेहु है । बिह सिख हंसि मृदु बोलत सरस बानी बरसत अमी मानों बूंदनको मेहु है ॥ कहैं कबि कृपा क्यों न भूपति हू भोगकर रजधानी सकल सुदेश पाय देहु है ॥ नैनमीन लगतपै अंजन लसतु सनो ऐसशुभयोग समै ऊपज्यो सुनेहु है ॥ ९३ ॥ दृष्टानुराग नायककको ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

266 दो० मोहूसोंताजिमोहदृगचलेलागवाहिगैल ।
छिनकुछायछबिगुरुडरीछलेछबीलेछैल ॥ ९४ ॥

यहदृष्टानुराग है नायककको देख नायकामें अनुराग उपज्यो है सोनायका सखीसों कहति है ॥ नायका परकीया प्रौढ़ा ॥ कवित्त ॥ जाघरी ते मोहनीको मंत्र डारि दीनों उन रूपको मिठाई ताघरीते कलमने हैं ॥ ज्यों ज्यों हठि करि रोकरही बोट अंचलमें त्यों त्यों अतिबल करिदृगहीको छले हैं ॥ मोहूसोजहूतो नतो पलकमें करि हातो छोड़ि सबतातो वाकी गैल लाग चले हैं ॥ नंदको कुंवर आलीवीस बिसु ठगुहैरो देखतही देख मेरे दीऊ नैन छले हैं ॥ ९४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

319 दो० फेरिकछूकरिपीरितैं फिरचितईमुसकाय ।
आईजामनिलैनजियनेहेगईजमाय ॥ ९५ ॥

यह नायका परकीया जुचेष्टा याकी देखी है सुनायक सखीसों कहत है ॥ कवित्त ॥ केसरि बरन सबरमहू बरन जीत्यो बरनी नजातिअबरन बानबेगई ॥ कहत बिहारी सुनसरस पियूष मीठी मति बैनरानिचितै गई ॥ मोहनि चढ़ाई चाई मृदुमुसिकाय नेकु चंचल चलाय चखचोराचित कैगई ॥ लीने कर बेली अलबेली अकेली तिय जोबनको आई जिय जोबन सो देगई ॥ ९५ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

L sani kajjala ćakha jhakkhalagani -upajyau sudina sanchi
kyauna nripati hwaiti~~gawai~~ bhogawai lahi sudesa saba dehā
kyauṉ na

sani Saturn jhasha Pisces (also Kāmdeva)

sudina kendrawartti kahaiṉ -uccavaittī -anubhū śubha graha
jāniye L.

L mohū cauṉ tajī moha driga ćale lāgī -uhi gaila
ćhiněka ćhwāya ćhabigura ḍarī ćhale ćhabēle ćhaila

ćhabi gura ḍali
ćhale Ṭhagiṉ (-ankhen)
tajī moha? L mujhse bhī, ćhoṛke moha -anubh mere ćalī

2

L phenukaćhū kari pauri teṉ phiri ćita-ī musakāya
-ā-ī jāmana lena kauṉ nchai ćalī jamāya

-asangati aur paryāyokti

(phenu means jackall) phiri letter
pauri gate
jāman sour milk

Ļ čitawani bhore bhāya kē gori munha musakāni
lagani laṭaki -ālī garai čita khaṭakati nīti -āni

bhōrē bhāya
laṭaki -ālī garai ghoṭhaṇi

Ļ khaṛē bhaṛē hīe bhēčikai kitahiṅ huvai -ila āya
bhiraī ōṭhi jurī ōṭhi ṇa saba kē ōṭhi baṁāya

vibhāna

Ļ gaṇī kuṭuma kī bhīra meṇ rahī baiṭhi ōai pīṭhi
ta-ū ļalak bore jāli -ula salaja hasauhiṅ ōṭhi

hiṭiya vibhāna

Ļ rahiṅ naṁāya čitavati ēriṇī nahiṅ šōlati musakāya
jyaṇ jyaṇ nahiṅ ēi khaṇḍavati tyaṇ tyaṇ čita čikanāya

vibhāna

दो० चितवनभोरेभायकीगोरेमुहमुसकानि। 312
लागनिलटकीआलिगरेचितखटकतनितआनि ९६

यह नायकाकी चेष्टा नायका सखीसों कहतहै पूर्वानुराग द्योतहै॥ कवित्त॥भूलतन क्योंहू बृषभान तन्याकी बानि वह अंगिरान अंगुरिन चटकाय कै। वह गोरे बदनकी मुसकानि वह चहचही चितवनि भोरे भायकै॥ घूंघट करनि कर कमल उसारि वह लटकि मिलनि सजनीसों लपटाय कै॥ ऐसी भांति जबतेमैं निरखी है तबहीतें पलपल मांझ खटकत चितनाय कै॥ ॥ ९६॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० इतीभीरहूभेदिकैंकितहूंह्वेइतआय। 57
फिरैडीठिजुरदीठसोंसबकीदीठबचाय॥ ९७॥

यह नायकाके चितैवेकी चतुराई सखी सखीसों कहति है। नायक हू सखी सखीसों कहै तो होय नायक परकीया॥ सवैया॥ बैठी सखीनकी सामें सभा सबहीके सुनैनन मांहि बसैं। पूछेतें बात बनाय कहै मनको मनके सब दोस हसैं॥ खेलतहैं इतखेल उतै पियाचित्त खिलावत योंबिलसैं॥ कोउजानै नहीं दृगटारि कबै कितहूं पिय आनन छ्वै नीकसैं॥ ९७॥ सदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० गड़ीकुटुमकीभीरमेंरहीबैठिदैपीठि। 438
तऊपलकपरिजातुइतसजलहसोंहींदीठि॥ ९८॥

यह नायकाके सनेहकी निकाई अरु चितैवेकी चतुराई नायकक्कों कहति है नायक परकीया॥ सवैया॥ प्यारी प्रवीण सनेह सनी नखते सिखलौं सुखकी निधि त्योंहीं॥ कैसेहुं मोबरते नटरै जुचुभी चितचाहनि नेह निचोहीं॥ बैठी बधू गुरु नारिनमेंजऊनारि नवाय खरीमकु चोहीं॥ लाज पगी पलएक तऊ परिजात इतै वह दीठि हसोहीं॥९८॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० नाहिंनचाइचितवतिदृगानिनहिंबोलतमुसकाय। 106
ज्योंज्योंरुखरूखोकरैत्योंत्योंचितचिकनाय॥ ९९॥

यहनायकाकी चेष्टानायक सखीसों कहतहै कियह रुखाई मेरेचित को चिकनावनु है ॥ कवित्त ॥ जो रतन लोचन नचाइ नेहचाई भरे मृदु मुसकानि कोनभाव दरशाति है ॥ बोलत नकबहूं मन मोहन मधुरबैन मोरातन भृकुटीमरोर तनगातहैं ॥ कहैं कविकृष्ण वाकी गरबीलीबानि कछूसहज बसीकर कोमंत्र जान्योंजातहै । ज्योंहोज्यों रहत प्यारोराधा रूखरूख कारत्योंहीत्यों खरोई खरोचितु चिकनातुहै ६६ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० चितईललचौहेंचखनडटघूंघटपटमांहि ॥
छलसोंचलीछुवायकैछिनकछबीलीछांह ॥ १०० ॥

यह नायका परकीया है चेष्टा करिगई है सुनायक सखी सों कहत है ॥ कवित्त ॥ पूरण सुधा निधसों वदन दिखाय फिर घूंघटकी ओट कीनी कछुक लजायकैं । घूंघटके पटमें ह्वै निरखि निशंक चितवनि ललचोहों चाह चोकनों जतायकैं ॥ कहैं कविकृष्ण मृदुमुलकि अलीकी ओर चली काहू छलसों छबीली छवाह छाइकैं । हाहा कहिकोही जाहिएतो छबि सोही वेहमोही तेनटरत रहोजु रीझिछायकैं ॥ १०० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० त्रिबलीनाभिदेखायकरिशिरढकिसकुचसम्हाहि ॥
गलीअलीकीओटह्वैचलीभलीबिधिचाहि ॥ १०१ ॥

नायका परकीया की चेष्टा देखी है सुनायक सखी सों कहत है । ॥ कवित्त ॥ भोरेबिस इंदुमुखी साँकरी गलीमें मिलि सुंदर गोबिंदको अचानकही आयकैं । कालिदास जगैजब अंगनि जवाहिरकी प्राहिरह्वै फैली चांदनीसी छबिछायकैं ॥ नेरोगह्यो श्यामसोहै बिहंसि बिलोकी बाम हेरगोतिरछोहैं नारिनैंमुक नवायकैं । गोरतनुचोरे चितजोरे हगुमोरे मुखथोरे बीच कोरे लागिचली मुसकायकैं ॥ १०१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० डककुडगतिसीछैवचलीदुकचितचलीनिहारि ॥
लियेजासचितचोरटीइहैगोरटीनारि ॥ १०२ ॥

ćita-ī lalaćauheṇ ćakhana ḍaṭa ghuṇghaṭa paṭa māṇhi
ćhala soṇ ćalī ćhuvāyakai ćhinaka ćhabīlī ćhāṇhi

ćeshṭā striving - gesture
having made her beautiful shadow touch me

ćāuh ćhulāne kā heta yah ki maiṇ tumhāre sāth ćhaṇh
samān hūṇ -
swabhāvokti

1. tribalī nābhi dikhāyakai sira ḍhaki, sakući, samāhi,
gali -alī kī -oṭa hvai ćalī bhalī bidhi ćāhi.

2 ḍagaku ḍagaṭi sī ćali ṭhaṭhaki ćita-ī ćalī nihāri
liye jāti ćita ćoraṭī wahai goraṭī nāri ??

swabhāvokti

यह नायका की चेष्टा नायक सखीसों कहत है ॥ सवैया ॥ भानुसुता जल न्हान नहीं जात सुजानु सखीनमें आनंदबाढ़ो। पीछैतें आय सुनाय कछू कहिबतियां छतियां करिगाढ़ो ॥ यौंपलुकैं पलकैं चितई सुचि तो-ढिगच्यार रही फिरठाढ़ो ॥ १०२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मोहऊंचीआंचरुउलटिमोरिमोरिमुहमोरि ॥
नीठिनीठिभीतरगईडीठिडीठिसोंजोरि ॥ १०३ ॥

यह नायका की क्रियाजु देखीहै सुनायक के चितमें बसीहै बारबार सखीसों कहतहै नायका परकीया ॥ कवित्त ॥ रूपको अपार राधा ठाड़ीनिज सइार जाकी छवि परि रतिवारिये करोरिकै। मोहिदेखनैकं लजाय कै दृढ़ाय भौंह बाजी चितवनि मांझि लीनों चित चोरिकै ॥ मोरिमतरे मोहजमुहान अंगरानी पुनिआलस बलितनैन बटुरारे ढोरिकै। नीठनीठि गईभौंन भीतरि सरोजमुखी डीठिसों मिलाय डीठिनीकैनहु जोरिकै ॥ १०३ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० ऐंचतसोंचितवनिचितैभईओटअलसाय ॥
फिरउझकनिकौंमृगनयनदृगनलगनियांलाया १०४॥

यह नायका की चितवन नायक के चितमें बसीहै सुनायक सखीसों कहतहै। वैसेही फिरचितवै यहअभिलाष ॥ कवित्त ॥ खिरकी उघारि नव नागरि निहारि इत ठाढ़ो बनवारो मनमथ छबिछायकै । बिहंसि विलोकि शशिबदनो लजायकै सुऐंचत सो मनुभईओट अलसाय कै ॥ लगनलगाई चितलैगई चुरायकै बिहारीलाल रह्योठगकोसो मूरिखायकै। उतचितवत सबकाज बिसरायकै सुफिर अवलोकिवेको आसउरलायकै॥ १०४ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० वेठाढ़ेउमदाहउतजलनबुझेबड़बागि ॥
जाहीसौंलाग्योहियौताहीकौहियलागि ॥ १०५ ॥

यह नायका परकीया को प्रकाश चेष्टा है नायक को देखि कैसखी कोआलिंगन करत है सुसखी प्रगट कहतहै ॥ कवित्त ॥ मेरो मुंह

चूबे हेरी पूजी साध चूमिबे की चोरे ओस अनुक्योंमिरत प्यास डाटे है । छोटेकरमेरे कहाछवावतिछयोलीछातिछ्ववो जाकेछ्वायबेकोंअभिलाष बाढ़ेहै ॥ खेलनजो आयेहो तौखेलो जैमखेलियनकेसोराय कौसौंनिये कौन खेलकाढ़ेहैं । फूलफूलभेदति हैं मोहिकहा मेरीभटूभिटैकिन जाय वेजुभेटबे कौठाढ़ेहैं ॥ १०५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

44 दो० देख्योअनदेख्योकियोअंगअंगसबैदिखाय ।
पीठतसीतनमेंसकुचिबैठीचितैलजाय ॥ १०६ ॥

यह नायका परकीया कै चितै कैं लाजकरिबो देखो सुनायकैं सखी सोंकहतहै ॥ कवित्त ॥ मोहतस्वरूप मनीबैठीहो छबीलीराधा होहूं तहां निकस्यौ अचानक होआयकै । मेरी ओर देखउन देखो करिसकानिअंगअंग सकल सुनन्दर दिखायकै । पीठतसी तनमें सकुचातन रोंचतसी चितवन चाहबैठी सिमट लजायकै । वहमुसकान चितवन सकुचनि क्याहूं टरतनरहो मेरीहियमें डराय कै ॥ १०६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।

3/4 दो० चिलकचिकनईचटकिसोलफातिसटकलौंआय ।
नारिसलोनीसांवरीनागनिलौंडसिजाय ॥ १०७ ॥

यह नायका की सांवरी मूरत देख आशक्तभयो सोसखीसों कहत है ॥ कवित्त ॥ चिलकति चारु चिकनाई कीचटकि भरीचलति फलति जेमलंग चलकति है । सांवरी सलोनी कांतिलोनि अजौंहीनी वैसप्रेमा मनोसी समनि सहत लसति है ॥ कुटिल सुभाई चितवनि प्रेमविषभरी नागनज्यों यह व्रजनागरि बसतिहै । मनको डसति अकतनकी लहरि आवै लागत नयंत्र मंत्र अदभुत गतिहै ॥ १०७ । करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

257 दो० मैंहौंजान्योंलोयेननुजुरतबांटिहैजोति ।
कोहोंजानतुडीठिकोंडीठिकिरकटीहोति ॥ १०८ ॥

यहनायका अपनेनेत्रनकी आशक्त सखीसों कहति है अकयह प्रगट करतिहै किजबते वेआंख देखीतबते औरकछु सुझतनाहीं ॥ कवित्त ॥

dekhyau -anadekhyau kiyau -aṅga aṅga sabai dikhāya
piṭhati sī tana meṇ sakuci baiṭhī citai lajāya.

2. saba-i paiṭhati citahi

swabhāvoktī

!.

cilaka cikana-ī caṭaki so laphati saṭaka lauṇ -āya
nāri saloni sāṇwarī nāgani lauṇ ḍasi jāya

saṭaka a switch or thin rod, a small snake

laphati ?
cilaka brilliance

2. maiṇ ho jāṇyau loyanani jurata bāṛhi hai joti
ko ho jānata diṭhi kauṇ dīṭi kiraṇiṭī hoti

kiraṇiṭī a mote in the eye

vishamā bandhā

L. lyaṃṃ lyaṃṃ pyāse-ī ṣahiala jyaṃṃ jṇaṃṃ pīyala -aghā-i
-saṇṇa -salaume -ziupa kaṃṃ jiuna ćakhatikkhā bujhā-i

-uklaṇuna śeśhe-ī

1.

L. -ali -ina loyana saraṇikau kliarau viśkama saṇćāra
lage lagāye -eka se Enhuuwana kanata su māra

viśkama
nuleu

-asungali
? -uuchhiuata naina
jampati -uaina

1

L irigani uyala bhīṣala bīyau bikala kanala -aṃga -āna
ye tare se la en bikkama -ieekaya ieeilana bāna
-ieekanatiekana bāna

naimaṇi-ieeilā

-

तादिनानें आली तै कहीकि मनमोहन केलोचन मलोने देखे अतिहित बाढ़ि है। तादिना तें मैंहूं यहजानी चारिनैनभये जोतिकी प्रकाशकछू अधिकाई चाढ़ि है॥ जोरत ही नैन बिथा तनमें बिगरिगई मदनहुता-सन बरत जाढ़ि जाढ़ि है। कौनयह जानहोडीठिही कौ डीठि बोरहोत किर कटी कोऊ सकतन काढ़िहै॥१०८ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु२०॥

दो० त्योंत्योंप्यासेहीरहतज्योंज्योंपियतअघाय। 533
सुगनसलोनेरूपकोजनचषतृषाबुझाय॥ १०९॥ 83

यह नायका के नेत्रलगे हैं सुसखी सों कहत है॥ कबित्त॥ हेरि मुखचंद त्यों चकोर ह्वै रहति जानि लोचन कमल गत भौंरकी गहत हैं॥ देखतहू देखतरहत दिखसाध लागीहोत अनमेष यौंविशेष रमतहैं। टोनेकछू प्राणप्यारे कौ सलोनो रूप तातेनेक नबुझात तृषाकल नलहतहैं॥ तृप्तनहोति क्यों हू माईरी नयन मेरेपियतअघाय त्योंत्यों प्यासेईरहतहैं॥१०९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० अलियनलोयनसरनुकोंखरोबिषयसंचार। 260
लगेलगायेएकसेदोउनकरतसुमार॥ ११०॥ 126

यहअपने नेत्रकी अवस्था सखीसोंकहतहै अथवा नायककहै॥ कबित्त॥ सरजाके लागै ताहि सुधि नरहतकछू जोहनतताके उर रंचक विथानहैं॥ तिनते अधिक कुसमायुध के पांचों बान जिन के लो तेटरैं मुनिन केध्यानहैं॥ कृष्ण प्राण प्यारे की दुहाई जियजानो अलो सबहीतें बिषमबिशेष नैन बानहैं। दुहुन बिकलकरै जतन लगैन आनदुहूं भांतिलगेहू लगायेहू समानहैं॥११०॥ त्रिकल अक्षर३६ गुरु६ लघु ३०॥

दो० दृगानिलगतबेधताहियहिबिकलकरतअंगआन। 462
येतेरसबतेंबिषमईछनताछनबान॥ १११॥

यह नायका के नेत्र देखि नायक कोबिकलताई भई सुसखी नायक सों कहतिहै॥ सवैया॥ भौंह कमानबिनाजिहतछुटितेढ़ेचलैं दुहूं ओरअनेर। ननुआनिअचूक लगै हिय बेधत क्योंहूं फिरैनहिं फेरे॥ और सबैअंग व्याकुलहूं सरसातबिथा घहलात घनेरे। रीतिगहैं सबतै

बिषमै बिषमै सरई छन तीछन तेरे ॥ १११ ॥ मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

401 सो० कोड़ाआंसूबूंदकसिसांकरबरनीसजल ॥
कीनैंबदननिमूंददृगमलंगडारेरहत ॥ ११२ ॥

यह नायका देख नायक के नेत्र विवस भये हैं आंसूपरत हैं मूंदे रहतहैं सुसखीसौं सखीकहतिहै ॥ सवैया ॥ तेजव्रतेवृषभान सुता हरि के दृगनैक निहारहरे हैं । वे तबतैं न हले न चले रहेवाहि चितौनकी चाह भरेहैं ॥ कोडाकिये असुवानकी बूंदजंबीर बड़ी बरुनी जकरैहैं। नेक अबैं उनकी सुधिलेहु मलंगमनों मुंहमूंदपरै हैं ॥ पुनःकवित्त॥ तपैं बिरहानलमैं पलकउठायें भुजा ध्यानलीन मनोनिसबासर बिहातहै। डोरे लाल मेलीसाज असुव फटक मालकोये सोये बसन भगोहैं दरसातहैं ॥ आठौ जाम जागैं अंग विभूद बिभूतभरे बोलत न मुख दुखसहैं सीत बातहैं । तेरे मिलबेके वे योगी दोनहेत राधेयोगी युगलोचन वियोगीके लखातहैं ॥ ११२ ॥ घाटूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

264 दो० कहतसबैकविकमलसेमोमतनैनबखान ॥
124 नतरुकुकतइनबिपलगतउपजतबिरहकृशान ॥ ११२ ॥

यह नेत्र लगनि है आंखलगते बिरह रूपी अग्निहोत है यह बचन नायक कहै तो बनै ॥ कवित्त ॥ बरनि बरनि दृगकहत सकल कबि कमल कुरंगमीन खंजन समानहैं । कहैं कबिकृष्ण रचिपचि चतुरानन नैं लोचन ये पाहनबनाये मेरे जानहैं ॥ कमलसों कमललगाय देखैं कैयौ बेर एक आंक क्यें हूं उपजतु न कृशानहैं । लागतही तिय नैन तब ही उपजिउठैं लगनि अगनिय तें प्रगट प्रमानहैं ॥ ११३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

56 दो० सबहीत्यौंसमुहतिछिनुनचलतसबनदैपीठि ॥
किब वाहीत्यौंठहरातयहबिकलनुमालौंडीठि ॥ ११४ ॥

यह नायका लक्षितादै सखीनायकसों कहतिहै सखीको बचनसखी हूसों बनै ॥ कवित्त ॥ लाल मनमोहनको छबिपर ततो बलि रीझि

koṛā -āṇsi būnda kari śaṅkara barani sajala
kināiṇ badanā ni muṇḍa driga malanga ḍāre rahata
kaṇḍā barani badana namuṇḍ ḍāre rahaiṇ

rūpakālaṅkāre

1 kahata sabai kari kamala se mamata naina pakhāna
nataraka kata-ina viyalagata -uṭhajata viraha kiśāna ?

? tamhe:la tara koka

1. nataraka dubichā ki bāt nahiṇ
2 for nātarakai (yah ṭhoṛe:ṇār deś ki bhāṣhā hai = nāhiṇ to
no explanation of viya.
? na taru kuka tai (tai for te) nariya lagalā = not from the ~~earliest~~
vegetable latrises coming newly together arises the fire of separation
ie. when two stones strike each other kaṭhorā bhūmi ṭhārk

1 sabahi tana samuhāli chana ṭalati sabani ṭan piṭhi
wāhi tana thahariti yaha ṇalati numa ha. ē



ḍharu ḍ̀hāra lenhī ḍharati dīje ḍ̀hāra ḍharai na
kyaṃ ho ānana āna sauṃ nainā lāgalā naina.

Ś harichabī jala jabalau pare tabalauṃ chīna nibarai na
bharata ḍharata būrata tarata rahata gharī lauṃ nāṃ.

talana lunhāre nīje kī kahau nīti yaha kauna
jā sauṃ lāgata be ...pale lāgala palaka palau na
ś tala filāre lāgaiṃ imbetiṃ

रही मोहि बहरावतिहै भोरी ज्यों। प्रीति डर अंतरकी प्रगट विलोकि प्रति सोहकिये कैसे निबहत चोरी चोरी ज्यों॥ सब त्यों लखित मिले काहूसोंन तेरी डीठिप्रीठिदै चलति पुनि सबही की ओरी ज्यों। इतउत हेरि चित चोरही की ओरआई रहतहै ठहराय मंत्रकी कटोरी ज्यों॥ ११४॥ करभ अक्षर ३१ गुरु १० लघु १४॥

263
112

दो० ढरेढारतेंहीढरतिदूजेढारढरैन॥
क्योंहोंआननआनसोंनैनालागतनैन॥ ११५॥

यह नायक अपने नेत्रनकी आशक्ति कहतु है अरु नायका के भ्रम है। किनायकऔर सोंआशक्तिहै नायकाके भ्रमहैसुनायकनायकाकोभ्रम दूर करत है। जो नायकसों कहेतो उराहनौं हू संभवहै॥ सवैया॥ और ते बानपरी सुपरीन टरै वह कोटि उपायकिये हूं। कृष्णकहैं जिहरीझि रचे तितते नलचैन कहूं ललचेहूं॥ त्योंहीढरे जिहढार ढरेनहिं दूसरे ढारढरे सपनेहूं। आनकिये कहूं आनन आनसोंने दृगनैकन लागत केहूं॥ ११५॥ कछ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

258

दो० हरिछबिजबजलतेंपरैतबतोंछिनाबिछुरैन॥
भरतढरतबूड़ततिरतिरहतघरीलौंनैन॥ ११६॥

यह नायका अपने नेत्रनकी आशक्ति सखीसों कहतिहै। कवित्त आजु निरख्यो मैं बृजराजको कुंवर कान्हजाके अंग अंग आलो मनहो हरतु है। कृष्ण रागा यारको दुहाई वा निकाई देखे कोरि रतिपति अति लाजानि मरतु है॥ ताकी सोभा सलिलमें जबतें नयनपरे तबतें घरीलौं छिनहू न बिछुरतु है। ऐसे भये रचतहीं करत अनेकभाइ भरत ढरत पुनि बूड़त तिरतहै॥ ११६॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

350

दो०ललनतुम्हारेरूपकीकहौरीतयहकौन।
जासोंलागतपलकपलुलागतपलकपलौन॥११७॥

यह नायकाकी अवस्था सखी नायक सों कहति है किजबते तुम देखोहोतबते वाके पलकहू नाहिं लागत नायका हू नायक सों कहेतो संभव है॥ सवैया॥ बारक देखेमुध्यौ नरहै दिखसाध लगैकुलकानि

भगैं। मोहनी रीतिकछू मनमोहन रावरे रूपकीयों उमगैं॥ कौनठगौरी लहीकितकीहू रमानोंबमी करमंत्रपगैं। जाकीकहूं पलयेक लगे पल ताकी पलौंपलकै नलगैं॥ ११७। मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

274 दो० हैहियरहतहईछईनईजुगतजगजोय।
डीठिहिडीठिलगेदईदेहदूबरीहोय॥ ११८॥

यह नायका के नेत्रनायक कोदेखके लगे अरु देहदूबरी होतिहै। सुनायका सखीसों कहतिहै सखी सखीहूंसों कहैतोवैने अद्भुतहू है॥ सवैया॥ देखतदेखतहू नलहै कलप्रेम मरूरि उठैअति भारी। देखे विना नसोहाय कछूपुनहार रटैअति होतदुखारी॥ व्याकुलहै अकुलाय महामुरि झाय रहै निसनींद विसारी। नैनलगैं तनदूबरो होयकनीखी सनेह कोरीति निहारी॥ ११८॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

42 दो० देखतकछुकौतुकइतैदेखौनेकनिहारि।
कबकीइकटकडटिरहीटटियांअंगुरिनफारि॥ ११९॥

यह नायका कहति है नायका कों देखति है सुसखी नायक के चाव बतावतहै। सखीको बचन नायक सों प्रीति करायबो प्रयोजन॥ कवित्त॥ मैनहूंतें ऐनमन मोहन तिहारो छवि नैननमैं खुभी बृजबाल रिझवारिकैं। वगरको वासु सामुनद को तिरासात तै निरखि सकैन प्यारो वदन उघारिकैं॥ बिनदेखें कलन परत यातें दरिखबे कौंकरो है उपाउ दखौं इतधा निहारिकै। कबको निमेष भूललोचन लगायहत उठि रहीटाटीकर पल्लवसों फारिकैं॥ ११९मरालअक्षर ३५ गुरु१४ लघु२०॥

270 दो० इनअखियांदुखियानकोसुखहीसिरज्योनाहिं।
देखेंबनैनदेखिबोबिनदेखेअकुलाहिं॥ १२०॥

यह अपनेनेचन कोलगनि नायका सखीसोंकहतिहै प्रोढ़ापरकीया॥ कवित्त॥ आपहीतें लागेंयेतो कहेका हूं कैनलागें रैन दिन जागें हैं वियोग आगिधखियां। रूपमाधुरी कोज्यों ज्यों पीवैं त्यों त्योंभूखी रहैं हों हिन अहूखीये विदूखी सदालखियां। लपटनिपट पटसंपुटनरोंकी रहै

hai hiya rahata ha-ī ćha-ī na-ī jugata jaga joya
ḍiṭhi hi ḍiṭhi lage da-ī deha dūbarī hoya

L rahatī |yukti yahajo-ī| -āṃkhina -āṃkhi lagī rahaī - ho-ī

L dekhata kaćhū kautuka -ihaī dekhau neka nihārī
kabakī -ikaṭaka daṭi rahī ṭaṭiyāṃ -aṃgurimī phārī
-ika ṭaka one otare. (-ikṭak)

L -ina dukhiyā -aṃkhiyāni kauṃ sukha sirajau hi nā-ī
dekhaī banaī na dekhataiṃ -anaćkhe -akulā-ī

sirajau
brahmā ne banāyā hi nahīṃ

viśvakarmā

dekhnabantā nahīṃ lokon ke doṣhate lāyse

ćaki jakī sī luvai rahī būjhe bolala nīṭhi
kahuṃ diṭhi lagī lagī kai kāhū kī diṭhi

sa-belā'anka'

nehu, na nainana ke kaṭhiṃ -upajī barī balāya
nīra bhare nita ṭrati rahaiṃ ta-ū na ṭyāsa bujhāya

L -ali-ina toyana kaun ćaṭiṃ nīti

jaiṭhāṃ ćaṭala-iliṃ gali rahyau ćalāya ćalaina
ćaṭasamāhī jāmai bahai ṭūṭhi rahula ra naina

अकुलाय ढहैं जायमधुवो समधियां ॥ चैनहैन आठौंजाम इनहीं कौं ऊधेराम सुविहायो तनुतामैं दुखिहाईं अखियां ॥ १२० । सेनक अक्षर २६ गुरु १६ लघु १६ । 10

दो० चकीजकीसीहवैरहीबूझेबोलतनीठि । 429
कहूंदीठलागीलगीकैकाहूकीदीठि ॥ १२१ ॥

यह नायकी लक्षिता है सखी नायक सों कहति है । सखीहू सों कहति है ॥ सवैया ॥ आजचकीसी जकीसी कहाकछू आंग सम्हार हिराइगीहेरी । बूझैहूं नींठकहै मुखबैन हलैनचलै जनुचित्र नबेरी ॥ मेरी लखेयह नैननई गतिमोमति पोच समूहन घेरी । दीठिलगीकिन्धौंकाहू कीतोहिकि दीठ लगी कहूं काहूं सोंरी ।१२०॥ मराल अक्षर ५५ गुरु १३ लघु २२ ॥

259
दो० नेहुननैननकोकछूउपजीबड़ीबलाय । 260
नीरभरेनितप्रतिरहैंतऊनप्यासबुझाय ॥ १२२॥

यह नायका अथवा नायक अपने नेत्रनकी आशक्ति सखीसों कहे हैं सखीसखीसों इनकी विवस्था कहे तऊ संभवहै ॥ सवैया ॥ एकपलौं नलगे पलकै ललकैं लखिवे केहि लागीचटी । नीरभरी निमद्योस रहैं न मिटैं तऊभूरी तृषा उपटी । आठहूजाम तपैं तरफैं उपचार हूं सौं नघटै नघटी । यह प्रीतिलगी नहीं आंखिन कौंकिऊ पावक व्याधिप्रलै प्रगटी ॥ १२२ ॥ मराल अक्षर ३३ गुरु ११ लघु १८ ॥

343
दो० केवाआवतयहगलीरहैचलायचलैन ॥
दरशनकीसाधैंरहैसूधेहोयननैन ॥ १२३ ॥

यहनायका अपनेनेत्रनकी दशासखीसों कहतिहैयहनायक मध्यधरकीया है॥ सवैया ॥ कान्हअलो बहुबेरगलीमहं आवतचारुसिंगारकियें । हूं । देखिबेकों तबहूं तब हीं ललचाइ रहैंनचलायचलेहूं ॥ लाजअचानक आयचहै पछितयहै अपने जियमैंहूं । सोंहैं चितवेकों साध रहै वरमधो विलोचन हो तनके हूं ॥ १२३॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १० लघु १४ ॥

दो० साजैमोहनमोहकोमोहींकरतकुचैन ॥
कहाकरौंउलटेपरैंटोनेलौनेनैन ॥ १२४ ॥

यहनायकाप्रौढ़ापरकीयानायकाकोदेखनेत्रयाकेअकुलातहैंसुसखीसखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ बूझतहौं सतभायसखी यहसीखइन्हैंसिखईकहि कौन । मैंसजे मोहन मोहिबे कौं बहुअंजनसाज बनायसलोने ॥ देखतही ललचायरहे अरुयेअपने सपनेहुन होने । मोहींकोदैन लगे दृगनैन येज्यों उलटे परिजातहैं टोने ॥ १२४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मोहूंसौंताजिमोहदृगचलेलागिउहिगैल ॥
छिनकछ्वायछबिगुरुडरीछलेछबीलेछैल ॥१२५॥

यहनाका अपनेनेत्रनकी आशक्ति सखीसखीसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ जाघरीते मोहनीको मंत्रडारदीनों उनरूप कीमिठाई ता घरीकलमलेहैं । केतोहठ करिरोकि हारीओट अंचल की त्योंत्यों अतिबलु करि उतही कोंहलेहैं ॥ मोहूंसौं जुहूतौनातो पलकमैं करिहौंतौ छोड़िसब तातौ वाकीगैल लागिचले हैं । नन्दको कुंवर आलीबीस बिस्वेठगुहैरी देखतहीदेख मेरे दीऊनैन छलेहैं ॥ १२५ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० लोभलगेहरिरूपकेकरीसाटजुरिजाय ॥
हौंइनबेचीबीचहीलोयनबड़ीबलाय ॥ १२६ ॥

यहनायका अपनेनेत्रन की आशक्तिसखीसों कहतिहै ॥ सवैया । नंदकिशोर की मोहनीमूरती देखतही अतिमोमन भाई । तोलगि लोभलगे दृगआगेई जायामिले मिलिसाद मिलाई ॥ आपनोस्वारथ साध्यो सबैबिधि होईनबीचही बेचरी माई ॥ कैसेकरौंन कछू बनिआवत नैननकेमत मैंतो ठगाई ॥ १२६ ॥ चलअक्षर ३०गुरु ११ लघु १६ ॥

दो० यशअपयशदेखतनहींदेखतश्यामलगात ॥
कहाकरोंलालचभरेचपलनैनचलिजात ॥१२७॥

यहनायका सखीशिक्षा देतहै तासों अपने नेत्रन की आशक्ति कहतिहै ॥ सवैया ॥ सासुरिसातिभखैननदी जनि तूसिखवै सखिसीख

I sāje mohana moha kaṃ mohī karata kuśaina
kahā karaṃ -ulaṭe pare ṭaune laune naina

viṣhamālankāra

com. unintelligible

mohī saṃ taji moha driga śale lāge -uhi gaila
śhiṅeka śhevāya śhabi guraḍarī śhale śhabīle śhaila

gur ki ḍalī

lobha lage harirūpa ke karī sāṇta jurī jāya
haṃ -ina beī biśa hī loyana, barī balāya

yasa-apayasa ekhata nahiṃ ekhila śyāmala gāla
kahā karaṃ lālaca bīra śaḍola nāma śali jāla

1 nainā naiku na mānahiṉ kitau kahiyau samajhāya
tanamuna hārchū haṉsaiṉ tinasaṉu kahā basāya

hāruee. kyā bascāle
viseheli

I vahai ṣatāya na laṇḍāiraha nisi dina sarasa sancha
wahai nahai lāgi ḍriguni vīparikhā si deha

loja lagāna na mānahiṉ nainā me tasi nāhiṉ
ye muhajar turanga laṉu -aiṉcata hū ḷoli jāhiṉ

I vīpari ina utahi rahata ṭūṭi loja ki lāja

केबैना। हैबृज्बास चवायभई चहूं ओरचले उपहासकी सैना॥ देखत सुंदर सांवरीमूरति लोकअलोककी लीकलखैना। कैसीकरौं हटकेनरहैं चलिजात तऊलचिलालची नैना॥ १२७। नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० नैनानैकनमानहींकितोकह्योसमझाय॥
तनमनहारेहूंहंसैंतिनसोंकहाबसाय॥ १२८॥ 262

यह नायका अपने नेत्रन की आशक्ति कहति है॥ सवैया॥ सहिये जगके उपहासनितें रहिये गुरुलोगन मांझगसें। डरआनियहै अपने उरहीं समझाय रहीनहिंनेकचसें॥ अरुरंचक मेरोकह्यो न करैतन हूं मनुहारें तऊहुलसें। यहनेमगह्यौ सजनीइन नैननु पैहरिहेर हंसेई हसें॥ १२८॥ अलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० सकेंसताइनतमबिरहनिसादिनसरससनेह॥
रहैवहैलागिदृगनिदीपसिखासीदेह॥ १२९॥ 725

यहनायकाकोध्यानहूं करत है तऊ बिरह घटतनाहिं सुनायकसखी सोंकहतहै॥ सवैया॥वामृगलोचनिके बिछुरेजु भईगति सो नहिंजात उचारी॥ शुद्धदशा परिपूरननेह निबातथलीउरअंतरधारी॥ यद्यपि दीप सखासमनैननु लागिरहै तनकी दुतिप्यारी॥ तद्यपिसूझे हिये न कछूभरि पूररह्यौ बिरहा तम भारी॥ १२९॥नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० लाजलगामनमानहींनैनामोबसिनाहिं।
येमुहजोरतुरंगलौंऐंचतहूचलिजाहिं॥ १३०॥ 269

यह नायका सखीसों अपनी आशक्ति नेत्रनकी अवस्था कहतिहै॥ सवैया॥ देखत वा नट नागरि की छबि फांदिपरे हटके न रहाहीं॥ लोचन लोल तुरी मुह जोर सुलाज लगाम कौ मानत नाहीं॥ ऐंचत हौं अपने इतकौं बलिये बलकैं उतही चलिजाहीं॥ कैसी करौं नहिं मो बस ये कुल कानके चाबुकतें न डराहीं॥ १३०॥ अथ चितलगनि॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० फिरिफिरिचितउतहीरहतटुटीलाजकीलाव।
अंगअंगसबझोरमेंभयौभौंरकीनाव॥ १३१॥ 281

यह नायका के अंग की छवि पै रीझो है सु अपने चित की आशक्ति सखी सों कहत है ॥ कवित्त ॥ यौवन महा नदमें रूपको सलिल भरयो तरल तरंग हाव भावन को भावहै ॥ अंग अंग छबिको उमंग भर भरो भौंर चपल कटाक्षत तहां फस्यो चित नाव है ॥ चलिपै नसकत भ्रमत रहै वाही ठौर तरकि तनूका जिम टूटी लाज लाव है ॥ लागत नक्यौं ह्वैं कुल कानि की बिशाल बली धीरज प्रबल पतिवारो कौन दावहै ॥ १३१ ॥ चिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

286 **दो० इततेंउतउततेंइतेंछिननकहूंठहराति ।**
जकरनपरचकरीभईफिरिफिरिआवतजात १३२ ॥

यह नायकामाया परकीया है सुयाकी विश्वस्यासखीसखीसों कहत है जो सखी नायक सों कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ जबते अटकी नट नागर सों तब तें न कहूं मन लावतहै । ठहरात नहीं छिन एक कहूं निस बासर ज्यों बहरावत है ॥ कबहूं इतते उत धावत है कबहूं उतते इत आवत है ॥ चकरी जिम आवत जातबधू पलकौंमकहूं कलपावतहै ॥ १३२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

271 **दो० कोजानेहवैहैकहालूजउपजीअतिआगि ।**
मनुलागेतनुनालगैचलेनमगलगिलागि १३३ ॥

यह नायक अथवा नायका के दृष्टानुरागते बिरहभयो है सो बिरह की आग सों मन व्याकुलहै सो सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ दीसैन धूमबरै बिन ईंधनउन्नत ह्वै प्रगटे न सिखाहै ॥ नैसक नैननुलागत ही मनु आगिलगे सब आंगनदाहै ॥ लोचन नीरढरैं न बुझै उपजीब्रिज में कोउ आग महाहै । देखहूं दीठपरै न कछू अब जानेथौं आगे को ह्वै है कहा है ॥ १३३ वारम अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० डरनटरैनींदनपरैहरैनकालबिपाकु ।
277 **छिनकछाकुउछकैनफिरखरोविषमछबिछाकु १३४**

यह नेत्र लगनि है सुनायका अथवा नायक सखी सों कहै है कि छबिको छकु छकोखरो बिषम है सुनिषमताचरनन करै है ॥ कवित्त ॥

-iṭaṭeṇ -uṭa -uṭaṭeṇ -iṭeṇ ćhina na kahīṇ ṭhahrāṭī
jakarana para ćakarī bha-ī phirì phirì -āwaṭa jāṭa

ćakarī something round
jakara? something tight

jakaṛnā to pinion, put in the stocks

jakaṛband i.q. stiff neck crippled with rheumatism -

L jakana paraṭī caka-ī bha-i phirì -āwaṭī phirì jāṭī
kal nahīṇ paraṭī / caka-ī hwī) for jak v 244 - (538)

L ko jāne hwai hai kahā jaga -upajī -aṭī -āgì
mana lāgai nainani lagai ćalai na maga lagi lāgi

but this explanation
as usual is unintelligible

L ḍara naṭarai, nīṇḍa na parai, harai na kāla vipāka
ćhina ćhākai -nćhakai na phirì kharau viṣhama ćhabi ćhāk

samay pīrā honese



सुधि जानबरे नींद मैस कोन परे महाभयतें न टरै मुख निकरैन चाकु है। कहैं कोन कृष्ण क्यों हूं एक बेर छकै मूंतो उछकैन नेको म समै को परिपाक है॥ सीरो लागे वरनिश दिन तरफैं पलकनि गतिहरै धरै काहू कोन धकु है। और मतवारे ते तौ मेरे मतवारे यह सबही ते विकट बिषम छबि छाकुहै। १३४॥ मराल अक्षर३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० उडीगुडीलखिललनकीअंगनाअंगनमाह। 255
बौरीलौंदौरीफिरतछुवतिछबीलीछांह॥ १३५॥

यह नायकापरकीया प्रौढ़ाहै सनायकको चंगको छांहछुयेतेंमिलेही को सुख मानतुहै सखीसखीसोंकहतहै। सवैय॥नन्द ललानवनागरिपै निजरूप दिखाइ ठगोरी सोनाई। बाहरजात बनैगृहते न बिलोकिबे कों अतिही अकुलाई॥ प्यारकोचंग इतेमेंउडो लखिमोद भरीनिज आंगन आई। होती गुडीको जितैजित छांह तितैतित छोबेकों डोलतधाई॥ १३५॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० चलतघेरघरघरतऊघरीनघरठहराय। 246
समझउहींघरकोचलैभूलवहीघरजाय॥ १३६॥

यह नायका प्रौढ़ा परकिया है जहांचित लाग्योहै तहांजातहै सखी सखीसों कहतिहै॥ कवित्त॥ निधरक भईआनि गावतहै नंदघर और ठौर कहूं डोलैचून अहटातिहै। पौरिपाछे पिछवारे देहरी उसार हरे आंगन अटारी इहीबीच मंडरातिहै॥ हरि रसराती मेरु नकहूं नहाती होति प्रेम रसमाती न गनति दिनरातिहै। जबजब आवतिहै तबकछू भूलिजात भल्योनेन आवतहैफेरभूलि जातिहै॥ १३६॥ मरकट अक्षर ३८ गुरु १७ लघु २१॥

दो० ह्यातेहवाहवातियहानकोथिरतनधीर। 417
निसदिनडाढ़ासीफिरतबाढ़ीगाढ़ीपीर॥ १३७॥

यह नायका के चितमें लगन लगीहै सयाकी मन कहूं कल पावतु नाहीं यकादशी सखीसखी सों कहतिहै॥ कवित्त॥ सोभा मनमोहन कोपरम रसालचैन चुभि वृजबालकैमैं छिन बिसरै कहूं। बरसत जल

तरसत दृग देखिबेकों कहोऐसी लगनि दुरायेहूं दुरैकहूं ॥ घरते बगर आवै बगरते घरधावै फिरैज्यों बिकल पल कलनलहै कहूं । बाढ़ीमन मथबीर नैसको धरैनधीर डाढ़ीसोफिरत ठाढ़ीछिनुन रहैकहूं ॥ १३७ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

69 दो० पलनचलैजकसीरहीथकसीरहीउसास ।
अबहोतनुरितयोंकहौंमनपठयोकिहिपास १३८ ॥

यह नायका को प्रीति लगीय लगीहै सुरति वहां ना है सुयाकी दशा देखि सखी कहति है ॥ कबित्त ॥ सासन उसासति है बासकी सम्हार हैन ऐसी ह्वै कै कौनकेधौ हितमैं हितैरही ॥ कितु हैरी तेरो मनु रीतौ सौं लगत तन अबही तू सुधबुध कहि क्यों बितैरही ॥ चित्र कीसी लिखी डरी जकित अचेत भई पलकन लगत भूल चकित चितै रही ॥ काहू हेरि हरीमति बिसरी सबै सुरतिहोतौ तेरी यहगति देखि थकितै रही ॥ १३८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

154 दो० ज्योंज्योंआवतनिकटनिशत्योंत्योंखरीउताल ।
झमकिझमकिटहलेंकरैलगीरहचटैंबाल ॥ १३९ ॥

यह नायका प्रौढ़ा है सु सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ गौनोभये दिनकेउ भये हियमें हरि हेतकी जोतिसी जागी ॥ बासर ज्यों बहरावतनीठि बिधीच सकैं रसमें अनुरागी ॥ आवत ज्यों ज्यों नजीक निशा तिय त्योंत्यों उछाह उमंगनि पागी ॥ सत्वर काजकरै घरके रवनी रति केलि कै लाहक लागी ॥ १३९ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

414 दो० भृकुटीमटकनिपातपटचलतलटकतीवाल ।
चलचखाचितवनचोराचितालियोबिहारीलाल १४० ॥

यह नायका प्रौढ़ा है नायक की प्रोभा देखि मोहित भई है सु अपने चित्त की वृति सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ बनते निकस्यौ बनमालगरै बनिता मृग वा गुरिसें दृग कीनें ॥ फेंटकसे कटि पीतपटी उघटी छबि सिंधु सुधा रस भीने ॥ कैनटु नागर चेटकसों चलचाह निहो

1 pala na ćalai jaki ci rahā thaki si rahi -usāsa
-abahi tana ritayau, kahā mana paṭhayau kihiṃ pāsa.

1 jyauṃ jyauṃ -āvati nikaṭa nisi tyauṃ tyauṃ kharī -utāla
jhamaki jhamaki ṭahalaiṃ karai lagī raha ćaṭe bāla
lagī -apne manorath kai ćaske se.

v660

1 bhrikuṭī maṭakani pīta paṭa ćaṭaka laṭakati cāla
ćala ćakha ćitawani cori ćita tiyau bihārī lala.

L chuṭana na paiyata chinika basi nela nagaia ,aha cāla
māriyau phiri phiri māriyai ākhinī bhirala chuṛiyāla

L kyaun basiye kyaun nibāhiye nili nchapura nāhin
lagā lagi loyana karain nāhaka mana laṛèka jāhin

L ,agi ìa,hati -utarali -aṭa naiku na thākati èka
bāi rai nataìau baṭā -ijaiī ni,i nela

चितु गोसंग लीनें ॥ लीनों सो कौन किशोर कन्हा मुरलीकर मोर पखा सिर दीनें ॥ १४० ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० छुटननपैयतुबसिछिनकुनेहनागरयहचाल । 353
मार्योफिरफिरमारियेखूनीफिरैखुस्याल॥१४१॥

यह लगन को वरननहै जाके जाके लगति है ताकों अधिक दुखहै जाकीलगतिहै ताके कछूमनहूं में नाहीं आवत सुनायका अवस्था सखी सों कहतिहै सखी सखीहू सों कहै तो बनै ॥ कवित्त ॥ छिन बसे छूटिये न विन बसे बनपटी नेह नगरि में यह अटपटी रीति है लीजत छिड़ाय मनु रतन जतन नाहिं अतनु महीप तहां अधिक अनीतिहै ॥ मारेही को मारियतु खुनी भये खूनीफिरैं जीतेहीको हारि अरु हारे ही की जीतहै। सरबसु दीजे तऊ परवस परियतु जहां कछू लोकपर-लोककीन भीतिहै ॥ १४१ ॥ मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० क्योंबसियेक्योंनिबहियेनीतनेहपुरनाहिं । 275
लगालगीलोयनकरैनाहकमनबंधजाहिं ॥१४२ ॥

यह लगनहै नेत्रन केलगेमनबंधतुहै ॥ यहअद्भुत अनीति हैसुनायका अथवानायक सखीसों कहेहै ॥ कवित्त ॥ पावक प्रचंढ यातेंभागैहूं नछूटियतुवरियतु ज्योंज्यों उपचार कीजियतु है। प्रबलकजानुपै मगनचलतपै ये चितावितु दीजैतऊहित भीजियतुहै ॥ ऐसे प्रेमपुर कैसबसिये निबहिये क्यों देखेयअनीति छिनुछिनु छीजियतु है। लागनिकरत धायनैन मैन मतवारे नाहक बिचारोमनु बांधिलीजियतु है ॥ १४२ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० झमकिचढतउतरतअटानेकनथाकतदेह । 285
भईरहतनटकोबटाअटकीनागरिनेह ॥१४३ ॥

यह नायका प्रौढानायक कीशोभा देखि आशक्तिभई । सुदेखिबेको चढ़ति उतरतिहै। सुयाकी व्यवस्था सखीसखी सोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ कान्हरकी बनक बिलोकिकै बिकानी बाल तादिनते देखबे को यतन करतु है ॥ सुरभी चरायबूज आइबेकी बेरजानि सरबसहीतगृह काज

बिमरत है ॥ सांकिगुरुजन सांकहू नटाढ़ीर है छिनइतु छिनउतयाबिधि ढरति है नटकेनटी ज्यों नटनागर केनेह पागीऊंचे अटाकमकि चढ़ति उतरति है ॥ ५४३ ॥ पयोधर अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

229 दो० नैंतोसेकैबरकह्योंतूजिनइन्हैपत्याय ।
लगालगीकरलोयननुउरमेंलाईलाव ॥ १४४ ॥

यहलगनहै नायकाअथवा नायकअपने मनसों कहै है सखीसों कहिबो संभवित नाहीं ॥ कवित्त ॥ तोसोंमैंकहीहो केउबेरसमझाय इननैननके मतलागे भारीखता खायबो । तबतोन सिखमानी इनहींकी मतिठानी अबकहा होतपर बस पछतायबो ॥ लगालगी इनकीनी टरकी लगाय दीनी लगनिअगनिताके कहांभगिजायबो । कीजत यतन सीरो त्योंत्यों होत दुखनेरो निशदिन अनत अनंग का सतायबो ॥ ५४४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

464 दो० सारीडारीनीलकीचोटअचूकचुकैन ।
मोमनमृगकरबरगह्योअहेंअहेरीनैन ॥ १४५ ॥

यहनायकाकेनअदेख नायककोमनहाथरहत नाहींसोसखीसों कहै तो हूबनै ॥ कवित्त ॥ आइचढ़े जोबन केवनमें बिहारकरैं काहूकेनरोंके रहैंविक्रम अकथके । भकुटी कुटिलचाल अंजनअसित बांसतरल कटाच्छ गहैंआयुध सहथके ॥ सारी नीली टाटीवोट आवत अचानकही करत अचूकचोट रहत नथथके । मोमनकुरंग को येकरलेत हथाथके राखेतिरे नैनयेअहेरी मनमथके ॥ १४५ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

470 दो० जेतबहोतदिखादिखीभईअमीइकआंक ।
गैतिरछीदीठनिअबेहवैबीछीकेडांक ॥ १४६ ॥

यह परवान रागजोचितवन संयोगमेंसुख दीन्हींतबियोगमें क्रुधआयो सालतहै सोसखी नायका अथवानायक सखीसों कहै है । बिरहकीदशा अवस्थानमें सुमरन कहिये ॥ सवैया ॥ रंगरलीमें भलीबिधि सोंबहु भांतिनके सुखदेतहै जेई । तेइनकेज भयेप्रतिकूल बिलोक हियेदुखसूल सलेई ॥ नेहकआदि रसीलो चितोनहुतो इकआंकअमी समतेई । बीस

L maiṃ tosauṃ kaiwāṃ kahyau tu jina -inhen paṭyāya
lagālagī kari lo-inani -ura meṃ lā-ī lāya

L sārī ḍārī nīla kī -oṭa -ācūka ćukai na
momana mriga karabara gahai -ahe -aherī naina

-ācūka as s.m. = a dead shot.
kalwal = affliction or kara = hand vara? L says hāthon hāth

L je taba hota dilehā dikhī bha-ī -anī -ika -āṅka
dagai turichī dīṭhi -aba huvai bīchī kau dāṅka

-ika -āṅka
= nisca!!

बिम्बे बिष नायक ह्वै उरमालत बांकी बिलोकनि बेई॥ १४६ ॥ मर लघ्वक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नेकोवहनिजुदोकरीहरषजुदीतुममाल । 338
उरतेबासछुट्योनहींबासछुटेहूलाल ॥ १४७ ॥

यह पूर्व्वानुराग है नायककी प्रीति सखी नायकसों कहति है तातुमसों कहा कथनहीं ॥ सवैया ॥ जादिन बाही अलीनको देखत रीझि हिये हितुमनकी भारी ॥ आपनेही ते उतार दई तुमफूलकी माल बिशाल बिहारी ॥ तादिन तें वहबारिकवार को प्रानहूंते लगीआति प्यारी ॥ बासगई कुंभिलाय गई पैकरीनतऊ उरतें छिनु न्यारी ॥ १४७॥ पर्य्यधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० खिनखिनमेंखटकतसुहियखरीभीरमेंजात । 313
कहजुचलीबिनहीचितैंवोठनहींमेंबात ॥ १४८ ॥

यह नायका परकीया है कहींभीर में नायक देखोहै सुबानैं सुक्रियो कीनों सुइन देखी पैबात न सुनी सोसखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ आजामिली वृजबाल अचानक मोमति वाके समेह गईहै ॥ गातीहुती अतिभीरमें सुंदरि मोतन हेरि हियो उमहीहै ॥ लाजने पैन विलोकि सकी बनकीनि हऊ रसरीति सहीहै ॥ ओठनहीमें गईजु कछू कहि मैन सुनी पछतावो यहीहै ॥ १४८ ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० बानितनुकोनिकसतलसतहंसतहंसतइतआय । 272
दृगखंजनगहिलैगयोचितवनिचोपलगाय ॥ १४९

यह नायका प्रौढ़ा है जैसी छबिसों श्रीकृष्ण देखतिहै तैसेही अपने नेत्रनिकी लगनि सखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ आज कछू बनको इतहूं बनि बानिकसों यदुनंदको कन्हाई । मोर किरीट लसै मुरली लकुटी अरु पीत पटी छवि छाई ॥ मोहिग आय भरयो रस भाय हेरमुसकाय पुरीं सखताई ॥ कपिकी चाहम चोप लगायके लेगयो नैन में मोलिनमाई ॥ १४९ ॥ मरुकल अक्षर ३१ गुरु १३ लघु १८ ॥

410 दो० जबजबवहसुधिकीजितुरतयसबहिंसुधिजाहि।
आखियनआखिलागीरहैंआंखौलायतनाहिं॥ १५०

यहपूर्व्वानुराग नायका अथवा नायक सखीसों अपनी बात कहै है ॥ सवैया ॥ यह प्रीतिकी रीति अनोखी लखी कछुजानि नजात कहागतिहै ॥ चितचाहकी चौंप चढ़ीयेरहै अरु प्रेम विथा उरपागति है ॥नितआंखिनसों वेई आंखिलगी रहैं आंखिन कैसेहू लागतिहै जबही जब वे सुधकीजतहै तबही सबही सुध भागतिहै ॥ १५० ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २० ॥

412 दो० जहांजहांठाढ़ौलख्यौश्यामसुभगशिरमोर।
बिनहूंउनछिनुगहिरहितदृगनअजौंवहठौर१५१॥

यह पूर्व्वानुरागहै जहां श्रीकृष्ण देखेहैं तेई ठौर श्रीराधाकी भावना करिकै नेत्रनको आग्रहन करतुहै सुनायका सखीसों कहै है॥ कवित्त ॥ केलि सुखसागरमें झेलि रंगरली परि पूरन विविध करती मनरथनु ॥ तनमन बाढ़तो उमगि अनुरागु भागु आगतहो मघवा सचीको अन हूतेअनु ॥ कृष्णप्राण प्यारेकी दुहाई अतिछबि छायो जिनजिन कुंजनि मिलत हेरी श्यामघनु ॥ तेईतेई कुंज अबडीनहूं बिलोकैं बिनुमाई गहि राखत घरीकलौं अजौं दृगनु ॥ १५१ ॥ बारनु अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

411 दो० सघनकुंजछायेसुखदसरसिजसुरभसमीर।
मनहवेजातअजौंवहैउहियमुनाकेतीर॥ १५२ ॥

यह पूर्व्वानुरागहै सुयमुना केतीर संयोगमें जुचित की वृत्ति होतही सोवही भावना करिवो सही होतिहै सोनायका सखीसों कहति है ॥ कवित्त ॥ सघनानि कुंजछाये सुखर सुहाये अरु मंडित सरस गुंजपुंज मधुपनकी ॥ प्रफुलित मंजु अरि बिंदनके बृंद आवैं विविध बयारिलै सुगंध कुसमनकी ॥ लतिका ललित छबिबलि तलहल होति जेहूती बिहार भूमि नंदके सुमनकी ॥ कृष्ण प्राणप्यारेकी सौ वेई यमुनाके तीर अजहूं निरखिवहगति होति मनकी॥ १५२॥ मसालअक्षर३४गुरु१५लघु२० ॥

1 jaba jaba we sudhi kījiye taba taba saba sudhi jāhiṃ
-āṃkhaṃi -āṃkha lagī rahaiṃ -āṃkhaiṃ lāgati nāhiṃ

1 jahāṃ jahāṃ ṭhāṛhau lakhyau syāma subhaga siramaura,
-unahūṃ bina ćhina gahi rahata drigani -ajauṃ waha ṭhaura

1 saghoma kunja ćhāyā sukhada sītala manda samīra
mana huvai jātu -ajauṃ wahai wā jamunā ke tīra

samīr wind.

2 phiri biiri bajhati, kahi, kaha kalyan sanwara gaila?
kaha kanala, jo. le kalian, -ali, iali dyaun bala?

meri bal dyuvla. sati nayak ke pas.

1 mana na chiarati meran kalyan tu -apane sayana
-ahe parani bari prema ki bana hatha parana prana

-ari barani men par prem ki pai paraye hath dalemat jew

if pari, whynot pāri
& if para as in text whynot pāra

1 eita vila baeala na, hamata hathi talanaingavava jora
savaichana ke bataparā ye jagata ke cora

दो० फिरिफिरिबूझतकाहिकहाकह्योसांवरेगात ॥
कहाकरतदेखेकहाअलीचलीकह्योंबात ॥ १५२ ॥

यहनायका अधिकआशक्तहै सो सखीको बेरबेर वाहीको बातबूझति है ॥ कवित्त ॥ कबहूंक आलीपर अंगिराय डारेंअंगु दिनबहरावे क्योंहूंकलनपरति है । ऊतरसहेली लायउनके संदेशासनि सनिते प्रसिद्ध मनरीसिये अरति है । हाहाकहि कैसे गई कैसोकैसो बातभई कहाहै लालन मन धीरन धरतिहै । एकबेर बूझिफिरि बूझिऔरो बूझि फेरि फेरि२ वहैबात बूझिवा कहति है ॥ १५२ ॥ पयोधर अक्षर३२ गुरु १२ लघु ८४ ॥

दो० मननधरतमेरोकह्योतूआपनेसयान ॥
अहेपरनिपरप्रेमकेपरहथपारिनप्रान ॥ १५३ ॥

सखीनायका सों कहति है कि प्रीतिके प्रसंगति प्राण पराये हाथ परतिहैं सतमति करै तो यह प्रसन्न है कि सखी प्रीतिकरति मनै क्यौं-करतिहै सो मनो नाहि करति प्रीति दृढ़ावति है कि प्राण पराये हाथ परगे जो तोहि कहतिा है तो करि मानवतीके प्रसन्न सखी नायका सों कहै तो येहू बनैको प्रेमको पराग में तपर अरु प्राण जुहैं नायक ताहि पराये हाथमतिपरै ॥ सवैया ॥ तनहीमानत मेरोकह्यो अपनेमन मान सयानपभारो । देखवे को ललचावति ज्यों कछु द्योस नितै यह रोस निहारो ॥ नेहकहू नदनन्दन सों लगि जैहै तो फेरिन ह्वै हैरारो ॥ बेंचत प्रानुनु क्यों पर हाथकसे मति प्रेमकंदा बृजनारी ॥ १५३ ॥ पयोधर अक्षर ३२ गुरु १२ लघु ८४

दो० चितवतबचतनहरतहठिलालनदृगबरजोर ॥
सावधानकेबटपरायेजागतकेचोर ॥ १५४ ॥

यहनायक के नेत्रन पै आशक्त सो नायक के नेत्रयाके मनको जोरा वरी हरिहरिलेत हैं सो नायका सखीसों कहति है ॥ कवित्त ॥ राखत सलूक मिले मदन महीपतिको सुतनुसर कि जात कानन को वीरहैं । चपरि हरति ब्रजबालन कोमन धनुमरति मरे रभरेयोबन मरोरहैं ॥ जागति हूं मुसै सावधान को बिबुध करै चपल चितोनि सरबेधतसजोर हैं । मोसों

कहि आली ब्रजलाडिले के लोलदृग ठगहैं कजाकहैं डकैतहै किचोरहैं ॥
॥ १५४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

238 दो० नावकसरसेलायकैंतिलकुतरुनिइततााकि ॥
पावकझरसीझमाकिकैगईझरोखाझांकि ॥ १५५ ॥

सवैया ॥ साजे सिंगारभरोछवि भारहिये बिरहागिनि बारगई है ॥ चोपभरीकछु ओखे सों ओदर झरोखे हू नेकनिहारगई है ॥ पावक झ बालसी बालिबिलोकिकै नावक तीरसे मारिगई है । झांकतबांक लखी नवते तबतेसुधिमोहिं बिसारिगई है ॥ १५५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥ नायकको ध्याननायका की

67 दो० कबकीध्यानलगीलखौंयहघरलगिहैकाहि ॥
डरियतुभृंगीकीटलौंमतवहईहवैजाहि ॥ १५६ ॥

यहनायकानायकके ध्यानमें लीनहूरहो है सोसखेसखी सोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ ठाढ़िबिलोकतिहौं कबहीं यह पूरन प्रेमहिये ढरिबो । पाँहनको पुतरो ह्वैरही बिसरयो उर अंचल को धरिबो । ध्यानहि ध्यानमैं जोकबहूं यह होय वही तो कहाकरिबो ॥ याकोघरा अबलागि है काहि कहागति ह्वैहियहै डरिबो ॥ १५६ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ।

139 दो० सरसतुपोंछतुलाखिरहतुलगिकपोलकेध्यान ॥
करलैयोंपाटलबिमलप्यारीपठयेपान ॥ १५७ ॥

यहनायका की आसक्ति नायकमें अधिकहै सो वाके हाथके पान देखि जो चेष्टाकरतुहै सो सखीसखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ प्राणपियारे तिया पठयेकरहेत हियेमरमें परसें। पाटलपानखरे सुथरे जिनकी छबि देखि हियोतरसें । पोंछत हैं पटलेकबहूं कबहूं दरसेंकबहूं परसें । ध्यान कपोलनको कबहूं करचुंबत यों रसको बरसें ॥ १५७ ॥ बारम अक्षर ३८ गुरु १७ लघु २१ ॥

6 दो० अधरधरतहरकेपरतिवोठदीठिपटजोति ।
159 हरितबांसकीबांसुरीइंद्रधनुषरंगहोति ॥ १५८ ॥

L nāvaka sara se lāyakai tilaka tarunī -ita tāki
pāvaka jhara sī jhamakakai ga-ī jharokhā jhāṅki

L kabakī dhyāna lagī lakhaṁ yaha ghara lagi hai kāhi
ḍariyata bhriṅgī kīṭa laṁ jina waha-ī huvai jāhi

L parosata pamichata lakhi rahata laga kapola ke dhyāna
karalai piya pāṭala vimala pyārī paṭhayo pāna

smriti alankāra

mural varnana

-adhara dharata hara ke parati vo?ta diṭhi paṭa joti
harita bāṇsa kī bāṇsurī -indra dhanusha raṅga ho
hari[parata[-oṭha[bāṇsu[dhanukha[? ?
dhanus se pajan.

kitīna gokula kula baāhī? kāhi na kahi sikha dīna ?
kaune tajī na kula galī, -hvai murali sura līna ?

kihiṇ ka kahi
kisne na kise sikhā di

vishesha bhi

ta-ī saṃjha -si sunana kī, taji murali dhuni, -āna
kiye rahala īna rāta dina kānana lāge kāna
rahali nili rāti

lupta pakshi

-ura līnai ati ātapati sunī murali dhuni, dhāya,
kaṇa nikasī hulasī, su tana gai hula si -ura lāya

hula jo jul a sha

यहनायकामुरली बजावतदेखि रीझीहै सोवहशोभा भांतिभांतिकर कहतिहै। सखीसखीसोंकहति है॥ सवैया चलिदेखिरी बानकसोवनि कैव्रजराजकोलाडिलो आवत। मुखचंदकी चीरमरीचन सोंवलिनैनचकोर सिरावतहै॥ जबदोठिकोवेठन कोपटको मुसकानको रंगमिलावत है॥ तो बांसुरी बांसहरेकी लला सुरचापके रंगदिखावतहै॥ १५८॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० कितीनगोकुलकुलवधूकाहिनकहिसिखदीन। 7 386
कौनेतजीनकुलगलीहवैमुरलीसुरलीन॥ १५९॥

यहमुरलीकी धुनिपैरीझीसों सखीशिक्षादेतिहै तासों वामुरलीकोमो हनताकहतिहै॥ सवैया॥ कौनठगोरीभरीहरी आजबजाई है बांसुरिया रसभीनी। तनसुनी जिनहीं जितहीं तिनहीं तिन लाजविडाकरदीनी॥ घूंघरवारीखरीनंदके बारनवीनीकहाअरु बालप्रवीनी। याबृजमंडलमेंरस खानसुकौनभटूभलटू नहिंकीनी॥ १५९॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० लईसोंहसीसुननकीतजिमुरलीधुनिआन। 309
कियेरहतदिनरातदिनकाननलागेकान॥ १६०॥

यहमुरली सुनोहितवतेऔर कछूसुनतनाहीं सोसखीसखीसों कहति है॥ सवैया मोहनको मुरलीकी अलीजबतें मधुरी धुनिकान परीहै। बालभई तबहीतें लटू इहकाज समाज सबै बिसरी है॥ काननकानन वेरकियेरहैं कामखरी कलकानकरी है। बातसुहातनहोत कछूसुनिबे की मनो मनआनिकरीहै। १६८ पयोधर ३६ गुरु १२ लघु २४।

दो० उरलीनैअतिचटपटीसुनिमुरलीधुनधाय। 310
हौंनिकसीहुलसीसुतोगोहुलसिउरलाय॥ १६१॥

यह मुरलीसुनि सबकामछांडि हुलसीनिकसे वहनदेख्यो तबकछू अवस्थाभईसोसखी सोंकहतहै। सवैया॥ भौनकेकोनमें बैठीहुती हौंकछूगृह काजके साजपगीरी। बरकान्हकरीतबही मुरली धुनिप्रानन आनखगीरी॥ हौंलखिवेको रुछाहभरीनिकसी वहदोठपरीनटगीरी।

नैननकोअरुकाननको मनकोतबतेतलावेलीलगीरी ॥ १६१ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ।

466 दो० फूलेपदकतलैफरीपलकटाक्षकरवार ।
करतबचावतवियनयनपाइकधाइहजार॥१६२॥

यहदोनोंकेनेत्रआपस मेंकटाक्षनकीचोट करतिहैंऔरनकी दृष्टिबचावतहैं सोसखीसखीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ अंजनुअंगअछेक छनीसिखयेन वयौवननायकहैं । फांदतफूलेनसांक गहिकर बालकटाक्ष सहायकहैं ॥ आंटेकोढ़ालकरी पलकैं ललकैंअति जोमसों लायकहैं । बिपलोचनचोट बचावतहैंतिय नैनकिमैनकेपायकहैं १६२ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३०

58 दो० कहतनटतरीझतखिझतमिलतखिलतलजिजात ।
भरेभौनमेंकहतहैंनैननहींसोंबात ॥१६३॥

यहदोऊभरेघर में नेत्रनुहीं मेंसबबातकरत हैं सोसखीसखीसों कहतहै ॥ सवैया ॥ जानतलालकी जानतबालसखी हूंकहू नलखी अनखाते । नीचेहूंनारिनिहारि प्रसिदुभौमानु वसीठदुहूकोदिखाते ॥ चोरिहीमोचित चोरवीजोहनिनैन निहोरिखोनेहकीघातें । रीझिरिसानिहसी हठसोंहम नैननुहीनिवही सबबातें ॥ १६३ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

59 दो० डीठिपरतबांधीअटानिचढ़िध्यावतनडरात ।
इतेंउतेंचितदुहुनकेनटलोंआवतजात ॥ १६४ ॥

यह दोउनके चितलगे हैं सुपरस्पर अपनें अट परते नशंक देखत हैं सोसखीसखी सोंकहत है ॥ कवित्त ॥ नैनकेझरोखेआनि डीठिनुपरत बांधिगाढेसुत जोरतेतनाव करारखेहैं । अनमिल्यौतनमिले इमकरभाष तहै ऐसीमनमिले मिलबेनअभिलाषे हैं । नटकीअटकी कहूं नटकीक लाकत ताऊपर दौरिदौरि दीऊरमचाखे हैं । बड़े बंसबीच रसरितन सों बांधिराखे चढिउतरते तौउतरतभाखे हैं ॥ १६४ । पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

61 दो० जुरेदुहुनकेदृगझमाकिरुकेनझीनेचीर ।
हलकीफौजहरौलज्योंपरतगोलपरभीर ॥१६५॥

phūle phadakata kui pharī pala kaṭāṁcha karawāra
karata baṁcāwata viyanayana pāyaka ghāya hajāra

Dampati ke nehon ko -aurkī drishṭi baṁcāya -āpas meṁ ćot karte dekhi
sakhi kā baian sakhi se.

~~padaka a badge - an ornament for~~ the neck -
pharī ? shield
viyanayana ?

he she he she she he she
kahata, naṭata, rījhata, khijhata, milata, khilata, laji jāta,
bhare bhauna meṁ kahata hai naimana hīṁ soṁ bāta
? karata I chaiṁ

pur vārdh nem kāraka dīpaka
aur utarārdh men vibhāwana

note there is neither gender
nor number in the participles -

I dīṭhi barata bāṁdhī -aṭani ćaṛhi -āwata na ḍarāta
-ita -uta teṁ ćita dehunā ke naṭa laun -āwata jāta.

I jure dehunī ke driga jhamaki, rukī na jhīne ćīna.
halakī phanj haraula jyoṁ paiṭhī gola para bhīna.

Drishṭānta
example

x

l ōīrau khare ṣaṃīṭa ṣau maṇa leṭa maṇamèa
hoṭa ṣuhuṃi ḷe ṣ'ṇaṇa hiṃ ṣaṇaṣa haṃsī biṃcèa.

l -umi haraki haṃsikai -utai, -ina ṣaṃpī muṣihāya
naina mile maṇa milaṇayaṃ ṣe-ī milaṇaṭa gāya

l ṇiṣṇi ṣaṇāyaṃi ṣihaṃi ṣaṭaṭi ṣaṭiṃiṣá ṣaina
ṣaṃpi na ṣhàṃṇaṭa ṣ ṣhuṃihi haṃsi raṣile naina

यह दोउनके नेत्रयूं घटको ओटपेलकैमिलगये हैं सो सखीसखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ बैठीअलीगनमें नवनागरि आयोतहां चलिप्यारो बिहारी॥ लालकोदीठि बचायबेकों मुखघूंघटओट करयोंनिहारो॥ नैनमिनैनउमंगमिलेनरहैं पटओटकितो पचिहारो। रोकिसकैनहरौलकी फौजज्योंगोल पैआनिपरैभरुभारो॥ १६५ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३लघु २२

दो० दूरयोखरोसमीपकोलेतमानिमदमोद। 64
होतदुहुनकेदृगनहींवतरसहंसीविनोद॥ १६६॥

यह दोऊनेत्रनहीं में बातकरतहैं मिलबेको सोसुख मानत है सो सखीसखीसों कहतहै॥ सवैया॥ प्रेमप्रभावदुहून के कैसेहू मोपैबनै नवखानत हैं। चारुकलीचितचारुरीकी रसभाइभरी उरआनतहैं। यद्यपि टूरखरे उतऊचे समीपहींकों सुखम नतहैं॥ १६६॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० उनहरकेहंसिकेइतैइनसौंपीमुसकाय। 288
नैनमिलेमनमिलगयेदोऊमिलवतगाय॥ १६७॥

यहदोऊगाय मिलवति मनमिलगये सोसखीसखी सोंकहतिहै नायका परकीया॥ कवित्त॥ उनहंसिहांकिये यहांकी हैनईसीगाय सोपैनधरति का लहकेते दुखदयेहैं। इनमुसकायकहो भकटीनचाय येतोगाइहैं हमारीहीलेगेरमोबनाये हैं॥ कहैं कविकृष्णामिले बैनासोहैन अरुनैनन सों नैनरोझिरसवसभयेहैं॥ १६७॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० यदपिचवाइनुचोकनीचलतिचहूंदिशसैन। 65
तदपिनछांडतदुहुनकेहंसीरसीलेनैन॥ १६८॥

यहनायका परकीयाहैसोदोऊन कोनेदेखतहैं तबहंसतहो हैं सोसखीसखीसोंकहतिहै॥ सवैया॥ नेहकीघातलगी जबतेतबतेरहरीति रहैनहिढांको। देखतहींउरमेदभरै उरकोनकरैकुलकानकहांको॥ यद्यपिसैनचलायवसो उपहाससमेत चलैचहुंघांको। तद्यपिछांडनैनदुहूंकेरसीलीहसीरावलो कोनिबांको॥ १६८ करभअक्षर ३२ गुरु १२ लघु २०॥

461. दो० झूठेजानिनसंग्रहेमनमुहानिकसेबैन ।
याहीतेमानोकियेबातनकौबिधिनैन ॥ १६९ ॥

यह दोऊआपसहीमें बातकरतहैं सोसखीसखीसों कहतहै कबिकी उक्तिहूहोय ॥ कबित्त ॥ इतब्रजराजके कुंवर रस राशिउत बीनवृषभानकीकुंवरि वरयानिकै ॥ टाढ़ेहितवाढ़े आपअपनेअटानिपै करत कटाक्षमन मथकोकलानिकै ॥ बदनतेनिकमे तेभूठेहात मेरेजानबैननु कोसंग्रह हू करयोनयहजानिकै । परमप्रबीन दोऊयाहीतेपरसपर लोचननुहीमें बत रतसुखमानिकै ॥ १६० । पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

51 दो० घितवतजितबतहितहियेकियेतिरीक्षेनैन।
भीजेतनदोऊकंपतक्योंहूंजपानिवरैन ॥ १७० ॥

यह दोऊपरसपर आशक्त हैं सो जपकरत देखत हैं सखीसों सखी कहति है ॥ कबित्त ॥ यमुना के तीरनरन रिन की भारीभीर तदपि निरख बिनुहरषे रहेन हैं ॥ कहैकबि कृष्णचित चौंपसों सुमतअनुराग सोंपगत उमगतमनमैंन हैं ॥ ये हींदिनबितवति हियहितजितवत चितवत चायसोंतिरिछे कियेनैन हैं ॥ भीजेपटकंपतन काहूते चपत दोऊ अधिक जपतक्योंहोंजपनिधरे नहैं ॥ १७० ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ।

48 दो० घामघरीकनिवारियेकलितललितअलिपुंज ।
यमुनातीरतमालतरुमिलतिमालतीकुंज॥ १७१ ॥

यहनायका परकीया वाग्विदग्धा स्वयंदूतीनायका केबचननायका सों ॥ सवैया ॥ चारुतमालकलिंदी केतीरउसीर सुगंधसमीर हरैमन॥ मालतीमालनिकुंजनि मेंमिलगुंजत मत्तमधुव्रतकेगन ॥ फूलनिकेभरि झूमलतेरही बेलिलगी लपटाय तमालन ॥ कीजेबिराम घरीकइतै यह आतपनेकनिवारिये लालन ॥ १७१ ॥ पयोधरअक्षर २६ गुरु १२ लघु २४

225 दो० छवैछिगुनीपहुंच्योगिलतिअतिदीनतादिखाय ।
बालिबावनकोधौतसुनिकोबलितुम्हैंपत्याय १७२

यह नायक के चितको वृत्तललचौं देखि नायकाप्रीति बढ़ायबे को

mana na saṅgahe the mind does not accept

1. jhūṭhe jāni na saṅgahe mana muṅha nikase baina
yāhī te mānau kiye bātani kauṇ bichi naina -

bichi Brahma.

1 citawata jitawata hita hiye kiye tiriche naina
bhije tana do-ū kaṇpaiṇ kyauṇhū japa nibarai na.

jitawata = barhāte haiṇ.

1 ghāma gharika niwāriyai, kalita lalita -alipunja.
jamunā tira tamāla taru milati mālati kunja

1 chwai chigunī, pahuṇcau gilatā, -ati dīnatā dikhāya;
bali vāmana kau byaunta sunī ko bala tumhaiṇ patiyāya

kauṇ -ajī tumhārā viswās kare

byaunt = bawa-o

gilata sabda aru byaunta ye lok kathani hai jāni

ल ल्या-ई लाल बिलोकुया, जिया की जीवनमणि,
राधी भ्रमण के काम मन वृन्दावनजली से फूली
डाली डर डाल

ल राधी डाली किसी जी माय दिनी तुम्हारा मिलाया
गोविन्द वृन्दावनमाला [illegible] डर डाल तपलाया
डाली डाली प्रेमसे

[illegible] फूल भ्रमर डाली [illegible] के [illegible] काम ना
[illegible] डर डाल [illegible] लाल गोविन्द नीलवर्ण डाल

कहतहै ॥ अरसापराध देखिखंडिता हूकहैसंभवहै ॥ कवित्त ॥ झूठकाजकोबनाय मिसहोसौं घरआयनेना पतिग्यामघतियानि उघरतहैं ॥ आयकै समीप करहंमी सुसयानहीं सोहसिहसि बातनहीयाहकोधरतहैं ॥ मैतौसघरावर केबातजिय में कीजानिजाके परपंचयते हमसों करतहैं ॥ कहाँ ऐसी चतुराई पढ़ीआपयदुराई अंगुरीपकरि पहुंचेको पकरति हैं ॥ १७२ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो लाईलालबिलोकयेजियकीजीबनमूल । 340
रहीभौनकेकोनमेंसोनजुहीसीफूल ॥ १७३ ॥

यहमायका कोंसखीलेआईहै सनायक कोकहति है ॥ सवैया ॥ जाहिबिलोकि कैप्यारबिहारी सम्हार तुम्हैसबभूल रहीहै आई सजीवन मूल बिलोकियेतो हितसों अनुकूलरही है ॥ बैठीदुकूलमें अंग दुरायत ऊतन कीदुतिफूलिरही है ॥ चौंयत लोचनभौनकेकोन मेंसोनजुहीमनों फूलरहीहै १७३ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १२ लघु २० ॥

दो रहीपैजकीनीजमेंदीन्हीतुम्हैंमिलाय । 342
राखहुचंपकमालललौंलालहियेलपटाय ॥ १७४ ॥

यहसखीनायका कों लैआईहै सोनायक सों कहत है ॥ कवित्त । नैननकेतारेनमें राख्योप्यारेपतरी कै रली ज्यों लायराखोदृगन बसनमें । राखोभुजबीचघनमाली बनमालाकरि चंदनज्योंचतुर चढ़ायर खोतनु में ॥ केशिराय कलकंठरखी बलिकंठुलकै करमकरम क्यों हूआनीहैभवन में ॥ चंपककली सी बालपंथिमेंघिरतासीलेहु प्यारेलाल इनहेंमेलिराखो मनमें ॥ १७४ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १२ लघु २३ ॥

दो०अथसमागम+दोऊचाहभरेकछूचाहतकह्योकहैन । 236
नहिजाचकसुनिसूमलौंबाहरानिकसतबैन १७५॥

यह प्रथमदरशनागम मेलाजकेअधिक दोऊकछूकहसकत नाहीं सो सखीसखीसों कहतहै ॥ सवैया ॥ आजदुहूं मिलिकै सजनीमनमोहन सोंमनसाकरिखोर मिलायो । ठाढ़ेठगेसे रहैंटकलायकै नेहकोमेह तहीं बरसायो । चाहभरे दोऊ चाहकछू कछू बोलनयोंसुख आवनपायो ॥

सूमज्यौंआवै नभौंनते बाहिरद्वारसनै जबैयाचक आयो १०५ ॥ एयेधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।

443 दो० करसमेटकचभुजउलटिखयेसीसपटुडारि ।
काकोमनबांधेनयहजूराबांधनहारि ॥ १७६ ॥

यह जूराबांधन नायकानायक नदेखीसोसखी कहतहैजाति बरनन होय ॥ कबित्त ॥ नैनऐनमैन केनेचानखर सानधरेआनन की चोपकछू जैसोचन्दपूरैकी । कनक लतासी भुजदंडनउतंग गोरेखलिसु भी कंचुकी सबज रंगरुरैकी ॥ कहैंकबिकृष्ण सटकेलीचाक चितवनचटकीली चूनरी चटक चोखेचूरैकी । सीसपटुडारि भुजउलटि समेटि कचक्योंनमन बांधे बांकी बांधनिजूरैकी ॥ १७६ ॥ मच्छअक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

440 दो० सहजसचिक्कनश्यामरुचिशुचिसुगंधसुकुमार ।
गनतनमनमथअपथलखिबिथरेसुथरेबार ॥१७७॥

यह नायका के केशनकी शोभापैआशक्त नायकहैसोसखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ निंदतहैतमपुंजप्रभा जिनकीछबिहेरि थिलीमुखहू रे। श्यामसुगंधसुभाय सचिक्कनसोहत सुंदरलांबेलछारे । मैनमनोंअपनेकरि कै मखतूलकेचोर बनायसंवारे । देखतहीमनथाकि रह्योनबनागरिकेशसु देशतिहारे ॥ १७७ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

495 दो० बेईकरब्यौरनवहैब्यौरौकौनबिचार ।
जिनहीउरझ्योमोहियोतिनहीसुरझेबार ॥ १७८ ॥

यहनायकको आशक्तनायका के हाथनपहुंचु बारब्यौरत देखनाय-कसखीसोंकहतहै ॥ सवैया ॥ पानलनेसरसी कहसतिनऊपर मोहग भौर भयेहैं । कोलपिरी सी खरी तुथरी अंगुरीनख चंदप्रभानिछयेहैं ॥ वेही हैं हाथवेई चलबो कहियामे विचारकहा धौंठये हैं । मेरोहियो उरझ्यो जिनसों तिनब्यौर नहीं सरझेकचये हैं १७८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ ॥ लघु २० ॥

441 दो० छुटेछुटावतजगततेसटकारेसुकुमार ।
मनबांधतबेनीबंधेनीलछबीलेबार ॥ १७९ ॥

jūṛā barnan

L kaća sameṭi, kara bhuja -ulaṭi, kha-e sīsa paṭa ḍāri,
kākau mana bāṇdhaï na yaha jūṛau bāṇdhani hāri ?

khayā shoulder.
jūṛā = jūṛā or jūḍā
d

jātyalankār

naturally bright glossy black clean sweat soft
L sahaja sacikkana, syāma ruci, suci, sugandha, sukumāra,
ganata na mana patha -apatha lakhi bithure sutkare bāra

patha the partings. čarhibe kaun tribali patha lai

jati

L we-ī kara byaurani wahaï, byauran kauna bičāra ?
jinahuṅk -urajhau mohiyau tinahī surajhe bāra.

byauranī = jhārna (L) samwārnā (haripriyākās)
byauran = bhed-
hp. explains that the nāyak had come behind & taken the sakhi's place
as she was doing the nāyakā's hair.

L čhuṭe čhuṭāvaiṅ jaṛata teṅ saṭakāre sukumāra
mana bāṇdhata benī baṇdhe sīsa ikabīlo bāra.

saṭakāre
čharī si

x

I [illegible] bhuṭā [illegible] bahi gau -ikau -uṅā
baṅka [illegible] bāṅī dela jaṇa [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Ekaṅī panāca, thribuṭī kaṅuka, bāṭhika samara taji kāṅā,
[illegible] lagumaṇiga [illegible]



[illegible]

[illegible]

यहनायकाके बारपैंनायकको मनरीझ्योहै सोनायकसों कहतिहैअथवासखीसोंकहतिहै कबिहूकोउक्तिहोय ॥ सवैया ॥ सोहतहैसुकमार महा उपमा की सिवारन लागत नेरे । मेचक लांबे सुगन्ध लसैं छबि देखत नैदफिरैं नहीं फेरे ॥ छूटेछुटावत हैं जगतें इनके काछु कोटिक टोनासेहेरे । नीरजनैनीकहा कहियमनुबांधत बेनीबनेकबतेरे ॥ १७९ ॥

प्योधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कुटिलअलकछुटिपरतमुखबढिगोइतोउदोत । 442
बंकबिकारीदेतज्योंदामरुपैयाहोत ॥ १८० ॥

यहमुखपैबार छूटेतेशोभाअधिक भईहैसोसखीसों कहतहैसखीनायक सोंकहैंनायका सोंकहैकबिकी उक्तिहोय ॥ सवैया ॥ मानभुजंग निकंज चढीमुख ऊपरएकछुटी अलकैयौं । कारीमहासट कारोहैसुंदर भीजरही मिलसोधेनहींयौं ॥ लटोलटबाड़लकी ढिगबोरगईबढिकै छबि आननकीयौं ॥ आंकवहीदिये दूजबेकारिकै होतरुपैयनतैं मुहरैं ज्यौं ॥ १८० ॥ अठिषरअक्षर ४३ गुरु ५ लघु ३८ ॥

दो० खोरिपनचभृकुटीधनुषबधिकुसमताजिकान । 453
हनततरुनमृगतिलकसरसुरकभालभरितान ॥१८१॥

यह नायका कुलटाललाट शृंगारहै सो सखीनायक सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ कुंचितभौंह कमानकसे तिहकों जिहके सिरखोरि बनाई ॥ ताकुंलैतीर करयौ तिलहैं सुरकै गहितापर भाललगाई । खेलतयोबनके बनमेयहसाज सिंगार मनोजअठाई । हेरिहनैंजुप्रबीन कुरंगनहीं न दया उरकै कठिनाई ॥ १८१ बारन अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नीकोलसतालिलाटपरटीकोजटितजराय । 444
छबिहिंबढ़ावतरबिमनोंशशिमंडलमेंआय ॥ १८२॥

यह लिलाट परटीको है ताकीउपमा सखीनायकसों कहतिहै कबिकी उक्तिहू होय ॥ सवैया ॥ योवन ज्योतिजगामगहोति सिंगारप्रभा सरसावतिहै। रीझिरहैलखिलाल के लोचनमोदहिये भरआवतहै ॥ सोहत टीकोजरायजरयो तियभालमहाछ बिछावतहै । मानहुं चंदके मंडल में

दिननायक शोभाबढ़ावतहै । १८२ पयोधरअक्षर३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

482 दो० झीनेपटमेंझलमलीझलकतिओपअपार ॥
सुरतरुकीमनुसिंधुमेंलसीसुपल्लवडार ॥ १८३ ॥

यहझुलमलनि को वर्णनहै सो षमासखीनायकसों कहैसखीमेंकहैकबिकीउक्ति ॥ कवित्त ॥ जाके करनाभरन वृषकेदिवाकरमे नयनदीबिरनकीछबिसरजातहै । अधर सुधाधरसुधाधर से बदनमें किलकति ललित कपोलनकीकांतिहै । अंतर ललित झीनेबसन में झुमलोकहैं कबिकृष्णाझलकतऐसीभांतिहै ॥ मेरेजानस गर में डारकलपद्रुमकी पल्लवनि सहित प्रगटदरसातिहै ॥ १८३ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

448 दो० तियमुखलखिहीराजरीबेंदीबढ़तिबिनोद ॥
सुतसनेहमानोंलियोबिधुपूरनबुधगोद ॥ १८४ ॥

यहनायकाकेभाल हीरकीबेंदीहै सोसखीशोभाउपमा नायकसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ कनकदर तन जगरमगरहोत वापउपजबास भौन आसपासकीनोहै । सकलसकील रूपाबरचि चिरंचबाल खीन कटिकठिन उरीजजुगपीनोहै ॥ ललितललाट परहीराकी लसतबेंदी कहै कबिकृष्णा देखेमनुनेहभीनोहै । मेरेजानमोदभार अधिकसनेहकार पूरनमयंकभरि अंकबुधलीनोंहै ॥ १८४ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

445 दो० कहतसबैबेंदीदियेआंकुदसगुनोंहोत ॥
तियलिलाटबेंदीहियेअगनितबढ़तउदोत ॥ १८५ ॥

यहबेंदीदिये ते मुखकीसोभा अधिकबढ़ीहै सो नायकसखीसोंकहै अथवासखीनायकसोंकहै कबिकोउक्तिहोय ॥ कवित्त ॥ योवनमोमिलिजगमगत अपारओप महामनिहू कोमनदेखि रसभीत है । कहैकबिकृष्णा छबिपुंजनसोंछाजिरह्यो सरसमि गार बरसतसुधासोतहै । सबको ऊसेहीकहत मोहिमडलमें बेंदीकेदियेते आकदशगुनोहोतहै । बहनर नागरिकेलिलतालिलारपर बेंदीलगीयहीअगनितसु उदोतहै ॥ १८५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

jhīne paṭa meṃ jhulamulī jhalakatī -opa -apāra
suratarū kī manu sindhu meṃ lasati sapallava ḍāra
jhulamulī kahaṁ paupala patte neither in Platts Dic.

tiya mukha lakhi hīrā jarī baiṇḍī barhai binoda
suta saneha mānau liye bidhu pūrana budha goda

kahata sabai baiṇḍī diye -āṅka dasa guṇaṃ hota
tiya lilāra baiṇḍī diye -aganita barhata -udota
baiṇḍī dot- -aganita -anginata.

upamā-vakrōkti-alaṁkār

ऽ pañcānga rāja bāṇī bānī khaṛī-uṭhī mukha jotī
pahirai cīra cīrnautiyā cāṭaka cāṅgnī hoti

ऽ bīra cīra bāṇī, lalāna, ālīlāla tāke birāji
ūrdhvāla kuja nayī nayī manau rāhabhaya bhāji

kuja mangal
(5 veli kibudi

ऽ bhaia lāla bāṇī jiye chuṭe bāṇa chedi sīta
[illegible] rāhu-ali [illegible] khari nayī sīra samuha

[illegible]

ऽ [illegible] bīra cīrnaudi sasi sukha pūrī sara ~~ārā~~ tīra guru,
-īra nadī tahi sanga rasamaya kiyā locana jogata

jo nara ei cāritra bīra kā ehi sīmā [illegible] kahiya tahi jaṭhyog
hota hai
[illegible]

452
462

दो० पचरंगरंगबेंदीखरीउठतऊगिमुखजोति ॥
पहेरेचीरचुनौठियाचटकचौगुनीहोति ॥ १८६ ॥

यहनायकानायकने जैसीछबिदेखीहै तैसीभांतिसखीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ बेंदीललारलमें पचरंगलसैबिडरे कचकुंचितभौंहै। अंजन रंजितदीरघ सैनबड़े गथकेमुकता नथसोहै ॥ चीरचनी ठियामें चमकैं कछुगोरो अगो दिहरोजउठौहै। भेदकीबातलखो बतरातपरोसिनि सोहै कपोलहंसोहै ॥ १८७ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

446

दो० भाललला बेंदीललनअक्षतरहेबिराज ॥
चंदकलाकुजमेंबसीमनौंराहुभयोभाज ॥ १८७ ॥

यहसिखनखमेंललाटबेंदीआखतनकी शोभाहै सोसखीनायकसोंकहत है अरुकविहूकीउक्तिहोय ॥ कवित्त ॥ उदयसमै के राकाचंदसोबदन तसोइतरुनकी उमंगगोरेरंगमें। कंचनकीनारी बारीकाकरेजसेरी तामें दुरयोदरसतु कंचबृंदउतमंगमें ॥ भालपररोचनकोबिंदुछबि देतातामें अखललसैज्योंगंगसरसतीसंगमें। चासुमानितमकोसुधाकरकीकलामानौं वसी हैनिशंक अवनिसुतअंगमें ॥ १८७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

449

दो० भाललालबेंदीछयेछुटेबारछबिदेत ॥
गह्योराहुअतिआहकरिमनुशासिसूरसमेत ॥ १८८ ॥

यह नायका के ललाट पै बेंदीहै अरु तापर बार छूटे हैं सो शोभा सखी कहत है नायकसों अथवा सखीसों कबिहू की उक्तिहोय ॥ सवैया ॥ रंकरुचिसों रातसंपति दंपतिकान्ति दुहूं की तहां सरसी ॥ वृष भानसुता घनमें जिमिदामिनि श्यामकेसंग सुरंगलसी ॥ क्रीड़त बारछुटे इकबार तिरयोंनाढिपै मुखशोपगसी ॥ मनोरोससों दोऊगहे सुरभान अचानक आनिकै मानससी ॥ १८८ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३०

451

दो० मंगलबिंदुसुरंगमुखशशिकेसरआडगुर ।
इकनारीलहिसंगरसमयकियलोचनजगत १८९॥

यहसखनखमें ललाटशृंगार है सोसखी सखीसोंकहत है॥ सवैया ॥

मंगल बिंदु सुरंग बिराजत भामिनि भालमहा छबिछायो ॥ आननचंद कलापरि पूरनकेसरि आड़मनोंगुरआयो ॥ कृष्णकहैं इकनारीमें आईमनो परिपूरन योगलखायो नैनभरे रसकीबरषा करि चैन समूह हिये उमगायो ॥ १८६ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

372 दो० हाहाबदनउघारिदृगसफलकरैंसबकोय।
रोजसरोजनकैंपरैंहंसीससीकीहोय ॥ १९० ॥

यहमुख बरननहै सोसखी नायकासौं कहै है नवोढ़ाके प्रसंगमें बनै मानछुड़ायबेकों कहैतो बनै ॥ कबित्त ॥ लोचन लहैकोफल सफलहमारो करि प्यारोप्रान प्यारेकों सनेहरस लीनकरि ॥ तैहींपाई परमनिकाईकी अवधिअब येतोबृषभानको कुवरि अरबीनकरि ॥ टारिघट घूंघटको हाहा हेउघारि मुखनिजछवि पानपमें पीकेनैक मीनकरि ॥ कंजछबि छीनकरि शशिहि मलीनकरि सौतिकको दीनकरि प्यारेको अधीनकरि ॥ १९० ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ डिठोना बरनन ॥

477 दो० लौंनेमुंहडीठनलगैयोंकठिदीनोंईठि।
दूनीह्वैलागनलगीदियेंदिठौनाडीठि॥ १९१ ॥

यहडिठोनाको बरनन नायक सखीसों कहै नायकासों कहैसखीसों कहै ॥ सवैया ॥ तोहिलखेंरतिकी दुतिलाजत राजतआप सिंगार किये तें ॥ भौंहनकी बरनीन परै छबिमोहन न्यायही नौलियेतें ॥ सुंदर आनन डीठिनलागे कह्योअलियों हितमानहियेतें ॥ तोमुखतें अबलागन लागीरिटूनी ह्वै डीठि डिठोना दियेतें ॥ १९१ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु १३ लघु २६ ॥

488 दो० सूरबिदितहूमुदितमनमुखसुखमाकीओर।
चितैरहैचहुंओरतेनिहचलचखनुचकोर॥ १९२ ॥

यहमुख बरननसखी नायकासौंकहै ॥ कबित्त ॥ सुखको समूहबृषभानकी कुवरिरे मुखको प्रकाश जगमगतअमंदुहै ॥ याहितें बिलोकि छबिहरषि लटूह्वैभटू भांवरो भरतफिरै प्यारोनंद नंदुहै ॥ द्यौसहू निसाकौरहै बिधिनबिनान कछूदेखेउमगत अतिआनंदकोबृंदुहै॥ सकलबिलास

L hāhā, badana -ughāsa, driga saphala karaiṃ sabaloi
roja sarojana kai parai hansī sasī kī ho-i

roj aur rojrā śok ko kahle haiṃ (lamentation Pl)

hā -itī khede -atī khed karkar kahti hai. Su mukhi ! ho !
khed karna hbewail (better to implore hariprakāś)
santeṃ terī karmalimukhī ! dain terā niān chuṭne se -unkai sok pareśā
au candramā kī hansi hogi

L lanne mukha dīṭhi na lagai, yaṃ kahi, dīnau -īṭhi
dīnī huvai lāgaṇī lagī diye diṭhaṇmā dīṭhī

diṭhanna a pateh - put on the forehead to guard against the influence
of the evil eye -
lāgaṇī ? lagnewali

L sūra -udita hū mūdita mana mukha sukhamā kī -ora
citai rahata cahuṃ -ora teṃ nihcala cakhani cakora -

1 jāya tiya sau bansikai śabuau lakhai śiṭṭhannā dīna
caṇḍamukhī, mukha caṇḍa tau bhaiau caṇḍa sama kīna

vyaliśekālaṅkār
contrast

? [illegible] beautiful [illegible] like the moon
[illegible] you have unfaltering [illegible]

7

1 chapyauchā ilau mukha śobai nīle aṅcalā cīra
manau kalāṅkī jhalamalai kālindī ke nīra

x

1 kiya hāyala cita cāwa lagi baji pāyala tuwa pāya
[illegible] mukha nachura chuni kyaun na lāla lalacāya

? A nā-il
[illegible] bhalā kahau nāyaṇa cita he cāwa he lagke baj he pāyeb ne
[illegible]

[illegible] ? in hāyal for A-hā-il frightening
or? [illegible] like nāyal [illegible],
[illegible]

1 [illegible] jaulagi [illegible] bataraṅga
-ulha mahukha pyālha hī [illegible] bhakha na jāya

[illegible] pyaleh milk

छोड़िएक आधलगेर है मौर जानें कमल चकोर जानें चंदहै ॥ १९२ ॥
करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० पियतियसोंहसिकैकह्योलख्योडिठौंनादीन । 478
चंदमुखीमुखचंदतेंभलोचंदसमकीन ॥ १९३ ॥

यहडिठोना बरननानायक नायकासों कहैअथवा सिंगारकरता सखी सोंकहै । सवैया ॥ प्यारीको चारुसिंगार निहारिहियेपतिके अतिमोद भरयोहै । चाहिचषोड़ाकहीमुसिकाय सहीविधिरूपसकेलधरयोहै ॥ जामुख को अकलंक प्रभासकलंक मयंकखरो निदरयोहै ॥ सोमुखतें बैडिठोनादे आजुभलोयहचंद समानकरयोहै ॥ १९३ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० छप्यौछबीलीमुखलैंसनीलेअंचलचीर। 490
मनौंकलानिधिझलमलैकलिंदीकेनीर ॥ १९४ ॥

यहनायकाके मुखकोबरनन सखीनायक सोंकहै है नायकाहूसोंकहै ॥ कवित्त ॥ भावतोंतिहारो कोगाईहोलैद गिरधारीताहि देखेमेरोमन परयोछबिभीरमें । कृष्णगानप्यारेकी लुनाईहोत जगरमगर बाकेसोनेसे शरीरमें ॥ खंजनभवर बिंबकीरकी प्रभानिदरबदन दुरायबैठीझीने नीले चीरमें ॥ मेरेजानपूरनकलानिसों झलमलात परदसुधानिध कलिंदजाकेनीरमें ॥ १९४ ॥ मछअक्षर ४१ गुरु ० लघु ३४ ॥

दो० कियेहायचितचारुलागिबजिपायलतुवपाय । 510
पुनिसुनिसुनिमुखमधुरधुनिक्योंनलाललललचाय १९५

यहनायकाकी आधत्ताजानिसखी नायकसोंप्रीत बढ़ायबेको कहतिहै बानोबरनन । कवित्त ॥ गजगतितेरी हेरीलटूतबही भयोतापै सुनीपायलकीझनक सुहाईरी । तबहीतेवाके उरलागीअति चटपटीतुव मिलबेकोंललकनुहै कन्हाईरी ॥ बीनाकेसुरनहूतें मधुरसरसधुनि कालिकहूंतेउनबानी सुनिपाईरी । काहेतेनवाके उरमदनमरूरिउठैं कहोसेहो कहनजकरतोसों आईरी ॥ १९५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छिनकुछबोलेलालवहनहिंजौलगिबतरात । 336
ऊखमयूषपियूषकीतौलगभूषनजात ॥ १९६ ॥

यहनायका केवानको मधुराईसखी नायकसों कहति है ॥ सवैया ॥ जाकेसुनेधुनवीन कहागहिलाजपिकी बनभागत है ॥ जासुनिके कबिकृष्ण कहैं सुनिकोमनसा अनुरागत है ॥ जौलोंछबीले ललातुमसोंबह बालनबातनपागत है ॥ तौलोंमहूप पियूषको ऊषकोभूषन कूस हूं भागत है ॥ १९६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

491 दो० जरीकोरगोरेबदनबढ़ीखरीछबेदेखि ।
लसतमनोंबिजुरीकियेशारदशशिपरिबेख १९७॥

यहनायकाके मुखपैकिनारी कीशोभा नायक सखीसों कहत है ॥ ॥ कबित्त ॥ पून्योंसीतिहारो लालप्यारेमें निहारोबह तारेसमोतिन केसिंगारही साजिकै ॥ झीनोंपट गावत चांदनीसो अबदात जाललोचन चकोरनको देखे दुखभाजिकै ॥ सेनापति तनसुखसारीको किनारीबिचि नरोकेबदन अछिछबिरही छाजिकै ॥ परनशरद चंदाबिंबताके आसपास रच्यो है अखंड मानोंमंडले बिराजिकै ॥ १९९ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

454 दो० नासामोरनचायदृगकरीककोंसोंहि ।
कटिसीकसकतहियेगड़ीकटीलीभौंहि ॥ १९८ ॥

यहनायकाकी भौंहनचायवेकी चेष्टादेखि नायक सखीसोंकहत है ॥ ॥ सवैया ॥ मोतनहैरिपरोसन सीतर तकछू बनतेरसछाकी ॥ येकर तीरतिकोदुतिहीतन वाकोंनिकाईलखे समताकी ॥ न कचढ़ाई उचायके औरनकू यकरी इगसोंहक काको ॥ वाछवि कोबेकट लोसो भौंहकरे नेनोंमूलनी सालतवाको ॥ १९८ ॥ मदकल अक्षर ३१ गुरु १३ लघु २२

469 दो० वारोंबलितोहगनपरअलीखंजमृगमीन ।
आधीडीठिचितैनजिहकियेलालआधीन १९९॥

यहनायकाके नेत्रनको अध खुलो चितवन देखिनायक आधे नमयो सोसखीनायकसों कहै ॥ कबित्त ॥ कोरझपकोरतनोरआनियोरे सो हैंनहजढ़ारे मनमथमत वारेहैं ॥ लाजभरिभारे मरिचुपले निहरितारे सांचेकैसे ढारेप्यारेरूप केउचारेहैं ॥ आधीचितवन होमें आधीनकिये तें

kinārī barnan

1 jarī kora gore badana baṛhī kharī ćhabi dekha
lasati manau bijurī kiye sārada sasi pari bekha.

kora f. edge jarī? jewellod bekha? for bhes. 1 mandalāī halo
vastūtpreksha

1 nāsā mori, naćāya driga, karī kahā kī saṃnha-
kāṃte laṃ kasakati hiye gaṛī kaṭilī bhaṃnha

nāyak kā baćan

swabhavokti
pūrnopamā

wāraṃ bali to drigani ṭara -ali, khanjana, mriga, mīna,
-ādhī dīṭhi ćitanni jihi hiye lāla -ādhīna

pratīp [illegible]
invited comparison -
vyatireke
confused

[illegible] cancacanāta cancala nayana bica ghuṅghaṭa paṭa jhīna
nānahuṅ suvasitā vimala jala-ubhaiata juga mīna
suvasitā [illegible] juga pair cancanāta canakta
[illegible]

[illegible] kare cāhavaṅ cuṭaki kai khare urojanhai nainā
tōja navāye tarapharata kavala āsuṅaṅ sī nainā

khuṅga gīgha kapōla kāne lola lolai khuṅgana kuṇḍala
[illegible] = tarpata ortaraptā

[illegible] kāyaka canca māyaka nayana raṅge biriṅci raṅga gāta
jhakhaṅ bilakhī duri jāi jaba takhi jāja jila lajāta

nawaja maja ananāi gīva nayanaka kāra
[illegible]
[illegible] sel syam kāl

[illegible]
[illegible] jīti jilawala ika bāra
[illegible]
[illegible]

हरिटोनेसे बसकरकेलोने येनिहारेहैं ॥ कमलकुरंगमीन खंजनभंवर वृष
भानकोकुमारितेरे नैननपै वारेहैं ॥ १९९ ॥ मछअक्षर ४० गुरु ० लघु ३४

468

दो० चमचमातचंचलनयनबिचघूंघटपटझीन ।
मानहुंसुरसरितावि मलजलउछलतजुगमीन२००॥

यहनायकाके नेत्रनको शोभा सखीनायकसों कहै । नायकहूनायकासों कहै सखीसखीसों कहै छंदउपजाति ॥ कवित्त ॥ रूपको रसाल आज देखी बृजबालयेक केती सोभासनी वाकेसो नेसे शरीरमें । टारेनेन टरतवह भावमोहिये मेंक्यों हूंबैठी खढ़ाकि गुरुलोगन को भीरमें ॥ कहैं कविकृष्ण अतिचहलबिशालबांके लोचनयुगल झलकत झीनेचीरमें । क्यों न मनहोय छबिनिरखि अधीरबिव मीन उछलत मानो सुरसरि नीरमें ॥ २०० ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु ॥ २० ॥

33

दो० करैचाहसोंचुटकिकैखरेउडोहैंनैन ॥
लाजनवायेंतरफरतकरतखुदीसेनैन ॥ २०१ ॥

यहनयकाके नेत्रलाज अरुचाहदो उनके वसखुदीसोकरतहैं सोसखी सखीसोंकहतहै नायकाहूसोंकहै ॥ कवित्त॥ नैननवनागरिकेतल तुरंग अंगछबिकीतरंग रंगनधरंधरैं । मदनप्रबीनतिन्हे फेरिबोसधावतहैं घूंघट को चौट ऐसे कौतुक करैकरैं ॥ कोनेचाहआंवगोसों चूकिकै चपल जात खरोई उडोहैंनेउमंगसों भरैभरैं । लाजबागवसतरफत ताइमरेकरतखुदी सीपगधरत हरैहरैं ॥ २०१ मच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

459

दो० सायकसमनायकनयनरंगेत्रिबिधरंगगात ॥
झखौबिलखिदुरिजातजललखिजलजातलजात२०२॥

यहनायकाके नेत्रनको शोभासखी नायक सों कहै ॥ कवित्त ॥ सायकसेघायक हैं तीखनतरलदृग सेतश्याम अरुनासितबिधरंगगात हैं । कहैं कविकृष्ण जाकेउरमें भिदततादि सुधिनरहतगात घूमघननातहैं ॥ येनेपरभौहैं येबिषमबिषअंजन सों याहीतेबिशेषबिथा उरमरसात हैं । मफरीबिलोकिजलबिलोखि दुरितमृगभटकत बिनलजातजलजातहैं ॥ २०२ मछूकअक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

दो० बरजीतैंसरमैनयेऐसेदेखेमैन ॥
हरिनीकेनैनानुतेयेहरिनीकेनैन ॥ २०३ ॥

कवित्त ॥ चीरेकीनेखंजनकसेरेकीनै कंजपुंज उपमाको नेरे अलि रंचकलगेनहैं। सोहतबिसाल येरसालसाल सौतिन के देखेमनु हरतकर तचितचैनहैं ॥ चपलकटाच्छ बरजीततमदनसर सुखकेनिकार पार देखेऐसे नैनहैं। कामदुखदन्दनीके वृषभान नन्दिनीकेहरिनके नैननतें हरिनीके नैनहै ॥ २०३ पयोधरअक्षर ३५ गुरु १२ लघु २३

दो० रससिंगारमंजनाकियेकंजनभंजनदैन ॥
अंजनरंजनहूंबिनाखंजनगंजननैन ॥ २०४ ॥

यहनायकाके नेत्रनकीशोभा सखीसोंनायकके है नायहूसोंकहै नायकानायकसोंकहै सखीसों कहै ॥ सवैया ॥ कंजकुरंग गुमान नुगंजन पीमनअंजनहैं अनियारे। खंजनमीननकेमद भंजनअंजनहू बिनये कजरारे ॥ लाजसमाज सुशीलहसीरसरंगभरे बिधिमैनसुधारे। कृष्ण कहा उपमाकहिये तियया जगमें दृगतेरे उजारे ॥ २०४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० जोजुगगतसिखयेसबैमनोंमहामुनिमैंन।
चाहतापियउद्वैतातासेवतकातनुनैन ॥ २०५ ॥

यह नायकाके नेत्रनकी शोभाअरु तरुनाईको बिलोकिपियकी चाह सखी नायकसों कहतिहै सखीसखीसों कहै ॥ कवित्त ॥ लीनोउपदेश महा मुनिमनिकेतको योगकला कुशलबिमल बिलसतहैं। तनमनमोहन सों एकभयोचाहतहै काननको सेवतजगतजोतिवंतहैं ॥ कृष्णप्रानप्यारेकी दुहाई जिन्हैं देखतही बिरहकलेश दुखसकल निहसंतहैं। सरलसुभाई उर मांझधरे श्यामछबिप्यारी तेरे नैनमनहरन महंतहैं ॥ २०५ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० सबअंगकररासीसुथरनायकनेहसिखाय ॥
रसजुतलेतअनंतगतपुतरीपातुररााय ॥ २०६ ॥

bara jīte sara maina ke -aise dekhe main na
harinī ke nainānī ten, hari, nīke ye naina

nhāke
rasa singāra manjana kiye kanjana bhanjana dain
-anjana ranjana hī binā khanjana ganjana naina

kamal ke bhanjana (kahain tiraskār karne wāle) hain (daina?)
censure

ganjana contempt

✓ yoga jukti sikha-i sabai mano mahāmuni maina
cāhata piya adhairatā kāmana swata naina

✓ thupra

sabbhedse
sabaa -anga kari rākhi singhara nāyaka neha sikhāya
rasajuta leti -ananta gati pūtanī pātura rāya

nāyaka the instructor
pātura raya chief courtesan

rasa juta -anurāg ke sāth

hari prakash
netra rūpī nāyak

I lāgata kuṭila kaṭāchha sara kyaun na hoya behāl
bacata ju hiye dwāra lāgè ta-ū rahata naṭasāla

naṭasāla ṭūṭi kāṇṭe kī bhāṇti bhaṭakai hain

यह नायका की पुतरीनकी शोभाअरुनेहकी अधिकाईसखी नायक सोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ चारुप्रभा पलकैंझलकैं मृदुपीतपटीप हरेसुथरी हैं । नावकनेह सिखायसबैरस भेदसुधायप्रबीनकरी हैं ॥ कृष्णकहैं अतिचा- इनसों गतलेतमनो बहुभायभरी हैं । लेतरिझाय मनैं अतिचातुरपातरदाय किधौंपुतरीहैं ॥ २०६ ॥ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० लागतकुटिलकटाक्षसरक्योंनहोहिबेहाल । 330
कढ़तजुहियेदुशालकरतऊरहतनटशाल २०७ ॥

यहनायकाके नेत्रनायकके हृदयमेंखुभेहैं सोसखी नायकासोंकहतिहै नायकसखीसों कहतहै नायका सखीसोंकहै ॥ कवित्त । भिदेसुधेतोरते तौतनकोबढ़ावैं परजानियह बातजिय सकलडरातहैं ॥ लागेब्रजनागरिके कुटिलकटाच्छ सरक्योंन होहिबिकल बिहालसबगातहैं ॥ बिक्रम निधान अतिपारथके बानहूते मेरे जान इनकेअनोखे उतपातहैं ॥ देखिये नघाइ उरकट दुसालकर येते पर देखेनटसाल रहिजातहैं ॥ २०७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ नासा वेध वर्णन ॥

दो० बेधकअनयारेनयनबेधतकरननिषेध । 47'
बरबटबेधतमोहियोतोनासाकोबेध ॥ २०८ ॥

इस नायका की शोभा नायक नायकासों कहत है ॥ कवित्त ॥ अनियारे नैनबेधतबिराने मन कोअचरिजपैन सहजसुभायकै ॥ तोहिनिरखतबृषभानकी कुंवरिअद्भुतकी तरंगरही मेरेउरछायकै ॥ सोहैं किधौं नेहकी निकाई को निकेत किधों सुखमधुकरने सुचिरुकीनों आयकै ॥ बरबट मेरोहियो बेधतहै प्यारीतेरी नासिकाको बेधमनरहै क्योंधरायकै ॥ २०८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बेसरमोतीदुतिझलकपरीअधरपरआय । 242
चूनोहोयनचतुरतियक्योंपटुपोंछ्योजाय ॥ २०९

यहनायकाके ओठ ऐसेउज्ज्वलहैं जोमोतीकी झलक ललाईके मध्य स्वेतझलकतिहै सचचूनों जानि पूंछतहै सखीयाकी भ्रांतिदूर करत है अथवा नायका झलक देखिनिश्चै करतहै सोसखी कहतहैं जोनायका

सखीसों कहै तोरूप गर्विताहू होय ॥ सवैया ॥ आजुसिंगार बन्योतिय तेरो जगमग जोतिसमूह करै ॥ देखत आरसी बारहीबार हिये हरिको कहिक्योंन हरै ॥ बेसरके मुकताकी प्रभाअति उज्ज्वलआनि परीअधरै ॥ होयनचूनों लग्योमृग लोचन क्यों पटसोंअब पोंछपरै ॥ २०६ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

474 दो० इहद्वैहीमोतीसुगथतूनथगरबनिशांक ।
जोहिपहिरैजगदृगग्रसतिलसतहसतसीनांक २१० ॥

यह नायका कनथकीशोभा सखी कहतहै अन्योक्तिकवित्तहूमेंबनै ॥ कवित्त ॥ सुरनसमेत नाकहीते कहति मुकतानियुत मुक्तिपुरीमों दीसतिहै ॥ कहैंकविकृष्ण मनमोहनके मोहिबेको मोहनीकोसिंधमान शोभासरसतिहै ॥ तोहिपहिरतें जगनयन ग्रसति अतिछवि बरसत मानों नासकाहसतिहै ॥ अहेनथउरमें निशांकतूमरब कारिहैहो मुकताकेमोल महतिलसतिहै ॥ २११ ॥ बारनअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

472 दो० जटितनीलमनिजगमगतिसीकसुहाईनाक ।
मनोअलीचंपककलीबासिरसलेतानिशांक २११ ॥

यहनायका कोसीकपहिरेते सशोभा भई सो उपमा सखीसखी प्रति कहतु है सखीनायक सोंकहतिहै नायकाहूसों कहै ॥ कवित्त ॥ पूरन मयंककेकि अंकमेंलसत किधौंनैकानिरखतहो हरतचितचेतहै ॥ प्रफुलित पंकजपै सोहैकरहाटु किधों तिलकोसुमनु सखसौरभ समेतहै ॥ नीलमनि जटितछबीली तेरीनाकपर सोकयोंलसति महाशोभाको निकेतहै ॥ मेरे जानमुकलित चंपककीकलिकापै बैठ्योअलि सोकुनिशांक रसलेतहै ॥ २११ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

473 दो० यदपिलौंगललितौतऊतनपहरइकआंक ।
सदाशंकबाढ़तिरहैरहेचढ़ोसीनाक ॥ २१२ ॥

यहनायकाकीनाक मैलौंगहैताकर नाकचढ़ोसोदीखतहै सोसखीनायकासोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ किधोंहबदनछबि दीपकोसमेरजाकी जगरमगरजोतिपूरन प्रकाशिका ॥ किधोंकविकृष्ण चारुचंपककी कलिका

besari motī dutī jhalaka parī -oṭha rasa -āya ;
ćūnau hoi na, ćatura tuya kyaṃ pata pannćkau jāi

bhrāntyapanhuti
The tip is so brilliant that the pearl by contrast appears to be a bit of lime.

-ihiṃ dwaihī motī sugatha tū, natha, ṣarala nisāṅka
jihiṃ pahire jagadriga grasatī hansalī lasalī sī nāka

sugatha -aćhe dravya se kai guthnese
jagadriga syāma

jaṭita nīla mani jagamagatī sīṅka suhā-ī nāka
manau -alī ćampaka kalī basi rasa leta nisāṅka

vastvalankeka

yadapī lauṃga lalitau, ta-ū tū na pahari -ika -aṅka
sadā sanka barhujai rahai, rahai ćaṛhī sī naka

nisćayakar .ik-aṅk

vastvalankeka

mān ka hīrava ! sī hai

śālati hai ratasāla sī kyaṃ hūṃ nikasati nāhiṃ
mana-matha reja nauka sī khubhī khubhī mana māhiṃ
khubhī jāṇa jāṇa hūṃ-hau

है ससजमुगंध निकसतजाते स्वासिका ॥ तदपिलंग अतिललित लसत तऊ मतपहरि डरपति उरदासिका ॥ मानके भरमभूलि मोहनबिलो-किरहै मृगनैनी निरख चढ़ीसी तेरीनासिका ॥ २१२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सालतहैनटशालसीक्योंहूंनिकसतनाहिं। 481.
मनमथनेजानोकसीखुभीखुभीजियमाहिं २१३॥

यहनायकाके खूबीकी शोभानायक सखीसों कहतहै ॥ सवैया ॥ राधिकाप्यारीके आननपैछबितीनहूं लोककी आनि गुभीहै ॥ मैंनिरखी जबतेतबते मनमेरो लुभाइतहाँही चुभीहै ॥ रूपके वोहथ कानमैं वाके विराजत ओपअनूप खुभी है ॥ सालतहैजु मनोजकेनेजेकी नोकमनोटर माफखुभीहै ॥ २१३ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लसतसेतसारीढप्योंतरलतरयोंनाकान। 479
परयोमनोसुरसरिसालिलरविप्रतिविम्बविहान२१४॥

यहतरयोंना वर्णन सखीकोवचन नायकहू को वचनकविहूको उक्ति होय ॥ कवित्त ॥ सुंदरसुकुमार बालचलातमराल चालअंग अंगभूषन समूह बरसतहै ॥ कंदरपदरपन लसतकपोल फलबलदेव सुखमा समूह बरसत है ॥ नगमनि जटित जरायकोतरोना तामैताकी झलकनि ऐसो भाउपरसतहै ॥ सुरकांतिमणिको मयूषनसोंमिल्योएक प्रभाकरमानोप्रति विंवदरसतहै ॥ २१४ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० तरवनिकनककपोलदुतिबिचबीचहीबिकान। 93
लाललालचमकतचुनीचौकाचिन्हसमान॥२१५॥

यह तरवनिकी शोभा सखी नायकसों कहै तोसुरत गोपनाहोय ॥ ॥ कवित्त ॥ आजकोबनक बरनतनबनेत तेरोछबिकोछटानको घटासी उमगतिहै ॥ दमकतसरसासिंगार कोअपारओपयोबनको कांतिजगाजोति सीजगतिहै ॥ कनक तरवोननुको ललितकपोलनिकी दुतिमें समायगयी अदभुतगतिहै ॥ कृष्णभणप्यारेकोसो चारुचमक तयेतो लाल लालचुनी चौकाचिन्हसोलसतिहै ॥ २१५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० लैसमुरासातियश्रवणयोंमुकतनदुतिपाय।
मानोपरसकपोलकेरहेस्वेदकनछाय ॥ २१६ ॥

यह मोतिन को मुरासाको वर्णन करिकहै तो लक्षिता जानिये ॥ कवित्त ॥ आजनौनागरी कीआगरीविलोकी छविदेखबे कोनैननललचाय ललकतहैं ॥ कहैं कविकृष्ण वहीबानिकविलोक ठगेरीझिपगेतबतैं लगत पलकतहैं ॥ आननकीछविलखि चन्द्रद्युति मन्दहोत ताइपै अनोखेचिन्ह अतिसरसत हैं ॥ मेरेजान परसकपोल इनहूंके उरलक्ष्योप्रस्वेद तेईबूंद झलकतहैं ॥ २१६ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नखसिखरूपभरेखरेतोमांगतमुसकानि।
तनतनलोचनलालचीयेललचेंहीबानि ॥२१७॥

यहनायकाअथवानायक मुसकानदेख्योचाहतहै सो अपनेनेत्रकी आशक्तिकहतहै ॥ सवैया ॥ देखतहीअनमेखरहे उमड़ेसे परेन बिचारत गोहूं ॥ रावरेरूपअनूपसों पूरिरहेहैजऊ नखतेसिखलोहूं ॥ मागतहैइत नेपरतोमधुरीमुसकानि अघातनत्योंहूं ॥ नैनभयेअतिलालचीये ललचान कीबाननछांड़तक्योंहूं ॥ २१७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेकहसोंहींबानताजिलख्योपरतमुखनीठि।
चौंकाचमकनिचौंधमेंपरतचौंधसीदीठि ॥२१८॥

यहअकारण हसीजानिगुरुसखीनायकासों शिक्षाकेप्रसंग मेंचौंकाकी चमककी बड़ाईकरे अथवा नायकहू नायकासों कहैतोसंभवहै ॥ कवित्त ॥ तैसीयेजगत जोतिसीससीस फूलनकी चिलुकतातिलक तरुनितेरेभाल को ॥ तैसीयेदशनदुति दमकतकेशोराय तैसोईलसत लालकंठकठ माल को तैसीयेचमक चारुचिबुक कपोलनको झलकततैसोनकमोती चलचालको। हरेहरेहंस नेकचतुर चपल नैनचितु चकचौंधे मेरे मदन गुपाल को ॥ २१८ ॥ मरकट अक्षर २२ गुरु १० लघु १५ ॥

दो० ठोड़ीगाड़बर्णनंडारैंठोडीगाड़गहिनैनबटोहीमारि।
चिलकचौंधमेंरूपठगहांसीफांसीडारि ॥ २१९ ॥

यह ठोडीकी गाड़को वर्णन नायक नायका सों कहै ॥ सवैया ॥

Y

Lasai murāsā tiya sravana yaṃ mukutani ḍuli pā-i
mānau parasa kapola ke rahe sweda kana ćhā-i.

murāsā tarakī

Y

nakhasikha rūpa bhare khare, ta-ū māṅgata musakāna;
tajata na lōćana tālaćī ye lalaćauhaiṃ bāna

bāna subhāva -

viśeshokti

daśana varnan (teeth)

Y

naiku hansaunhi bāni taji, lakhyau paratu mukha nīthi
ćaukā ćamakani ćaunḍha men parati ćaunḍha sī dīthi

note in the one before, this edition has bāni & L bāna, whereas here this edition has bāna & L (or Grierson) bāni.

ćaunḍh dazzlement -

sakhi ke nāyakā se; nayak ke sākshāt

kāvya linga

Y

ḍāre ṭhoḍhī gāḍa gahi naina baṭohī māri
ćilaka ćaunḍha men rūpa ṭhaga hāsī phāsī ḍāri

ćilak brilliance.

rūpa ṭhaga naina baṭohi ko ćilak cauni men hāsi ṭhāsi ḍāle aur mār ke
thodhī ke gāḍa men gahi ḍāre.

baṭohī pot'ikar ke

gāṇā kannan

kalila syama tila kalana cañci cibuka chabi dina
madhu chākyau mañchhana paryau manau gulāba prasūna
cibuk the chin cubuk a [illegible]
prasun kl [illegible] a [illegible]

grīva kannan

khari kasali gore gareu dhasali pāna ki pika
manau gulūlau ra kāl kī, kāla, kāla anti lika
a disgusting idea -

×

[illegible] cañci [illegible] kalila kuan cali dikhi mukhacāṛ
[illegible] na tarī paryo rahi tarī cibuka ka gāṛa -

mukha cāṛ = [illegible]
cāṛ = a lever a [illegible] ? wrestling plan

paryai [illegible] kī

केशनके बनके उपकूलतहँ भृकुटी गिरवोटविचारै ॥ चारु लिलार सिंगार कोचौंधमें देतप्रचंड दगानहिं हारै ॥ फांसीगरे मुसकानको पारिकैठोड़ी कीगाड़ कुबांगहि डारै ॥ प्यारीमहा ठगतेरो स्वरूपदयातजि नैनबटोहिनमारै ॥ २१६ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु ७६ ॥

दो० ललितश्यामलीलाललनबढ़ींचिबुकछविदून। 487
मधुछाक्योमधुकरपर्योमनोगुलाबप्रसून२२०॥

यहनायकाकी ठोढ़ीपै लीलाकी शोभा सखी नायकसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ कुंकुम गारिकियो मनुतेह महासुकुमार सुगंध को भौना ॥ रूपसुधा भरयोचंद सोआनन लाल लसैमनको ललतौना ॥ ठोढ़ीकीगाड़ मेंश्यामल बिंदु निहारतवाहि थकेमनुगौना ॥ कैमधुपान गुलाबकेफूल मेंमतपर्यो मनोभौंरको छौना ॥ २२० ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० खरीलसतगोरीगरेधसतिपानकीपीक। 492
मनोगुलीबंदलालकीलाललालदुतिलीक २२१॥

यह कंठ वर्णनहै सुकुमारता सखी नायकसों कहै ॥ सवैया ॥ प्यारेमें पियारी तिहारीलखी नखतेसिखलौं सुनिकाई भरीहै ॥ केसरि कीसुकुमारि मनोछविपुंजसों धैपबिरंचि करीहै ॥ गोरीके गोरे गरेमनु मोहतिसोहति पीकलीलिक खरीहै ॥ चीरगुलीबंदलालकी लाल मनौ दुतिकी प्रतिलीक परीहै ॥ २२१ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० कुचगिरिचढ़िअतिथकितह्वैचलीडीठमुखचाड़। 484
फिरिनटरीपरियेरहींपरीचिबुककीगाड़॥२२२ ॥

यह अंग देखत देखत दृष्टि ठोढ़ी की गाड़ में जाय परी सो टरति नाहीं सो नायक अपनी अवस्था नायका सों कहै अथवा सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ दीठि नदी चिवली तिरनीट रुमावलि कानन ते निकरी है। पीन उरोज पहार चढ़ी अति थाकि तऊ न वहां ठहरी है ॥ चाहि चली मुख मंडल को छवि बीचही ले बिधि ऐसी करी है। ठोढ़ी की गाड़ गढ़े में परी सुपरी ये परी न तहां ते टरी है ॥ २२२ ॥ त्रिकल अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

497 दो० चलननपावतनिगममगजगउपज्योअतित्रास ।
कुचउतंगगिरिवरगह्योनैनामैंनमवास ॥ २२३ ॥

नायक नायका सों कहै सखी कहै तौऊ बनै ॥ सवैया ॥ लूटत माल मुनिंदन के मन ज्ञान बिसांत लेको निवह्यो है । बेद को पंथ चलै कहि कैसे सबै जगमें अति त्रास चह्यो है ॥ कृष्ण कहै त्रिबली सरिताऊ मिली बन पास गढ़ा सुलह्यो है । ऊंचे उरोज पहार के छोर मनोज महीप मवास गह्यो है ॥ २२३ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

409 दो० दुरतनकुचबिचकंचुकीचुपरीसारीसेत ।
कविआंकनकेअरथलोंप्रगटदिखाईदेत २२४ ॥

यह कंचुकी के बिच कुच शोभाय मान हैं तिनकी प्रभा देख नायक नायका सों कहै सखीनायकासों कहै नायकसोंकहै ॥ कवित्त ॥ कंचनबरनमनहरन अडोलगनवैमगोलगोरेश्रीसपयोमताधरतुहैं। इनवकरे रेखरेचिकने सुनाईभरेमदन वसीकरमे मनकोहरतु हैं ॥ ऐसे कुचझीनो सितकंचुकीतलांछी माफप्यारीये दुरायेनदुरत उघरतहैं । कहैकविकृष्ण जैसे सुकविके आंकनमें अरथउमंग डीठिप्रगटपरतु हैं ॥ २२४ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

502 दो० उरमानिककीउरबसीडतटघटतदृगदाग ।
लछकतबाहिरभरमनोंतियहियकोअमुराग ॥ २२५ ॥

यहउरबसीकीशोभा सखीनायकासों कहीयाकेअनुराग की पूर्णतापग टकरतिहैजोसखी नायकासोंकहैतोंतियपदतेसंबोधन होय नायकालक्षिता ॥ कवित्त ॥ हियआलबालतें प्रगटकोकनदफल्यो किधोंअनुराग आभाउमगिहैसरवर । ईश्वरसुमतिकिधों भोरहीउदितभानुबैठीचक्रवाकनकेमकोप्रगटकर ॥मोतिनकीमालसोहै गंगाजूकीधारातामध्यानलाय तीसरोनयनखोलि दीनोहर । मानकोनियमकुच अग्रउरबसी मोहैमंगल मुदितमानोमेरुके शिखरपर ॥ २२५ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

494 दो० बडेकहावतआपसोंगरबेगोपीनाथ ।
तोबदिहोंजोराखिहोहाथनुलखिमनुहाथ ॥ २२६ ॥

ćalana na pāvatu nigama maga jaga -upajau -ati trās
kuća -utanga giri vara gahyau mīna maina mawās

mawās asylum mīna robber.
nigama veda

dwatī na kuća bića kanúuhī ćuparī sārī seta
kavi -āṇkani ke -artha lauṇ pragaṭa dikhā-ī deta

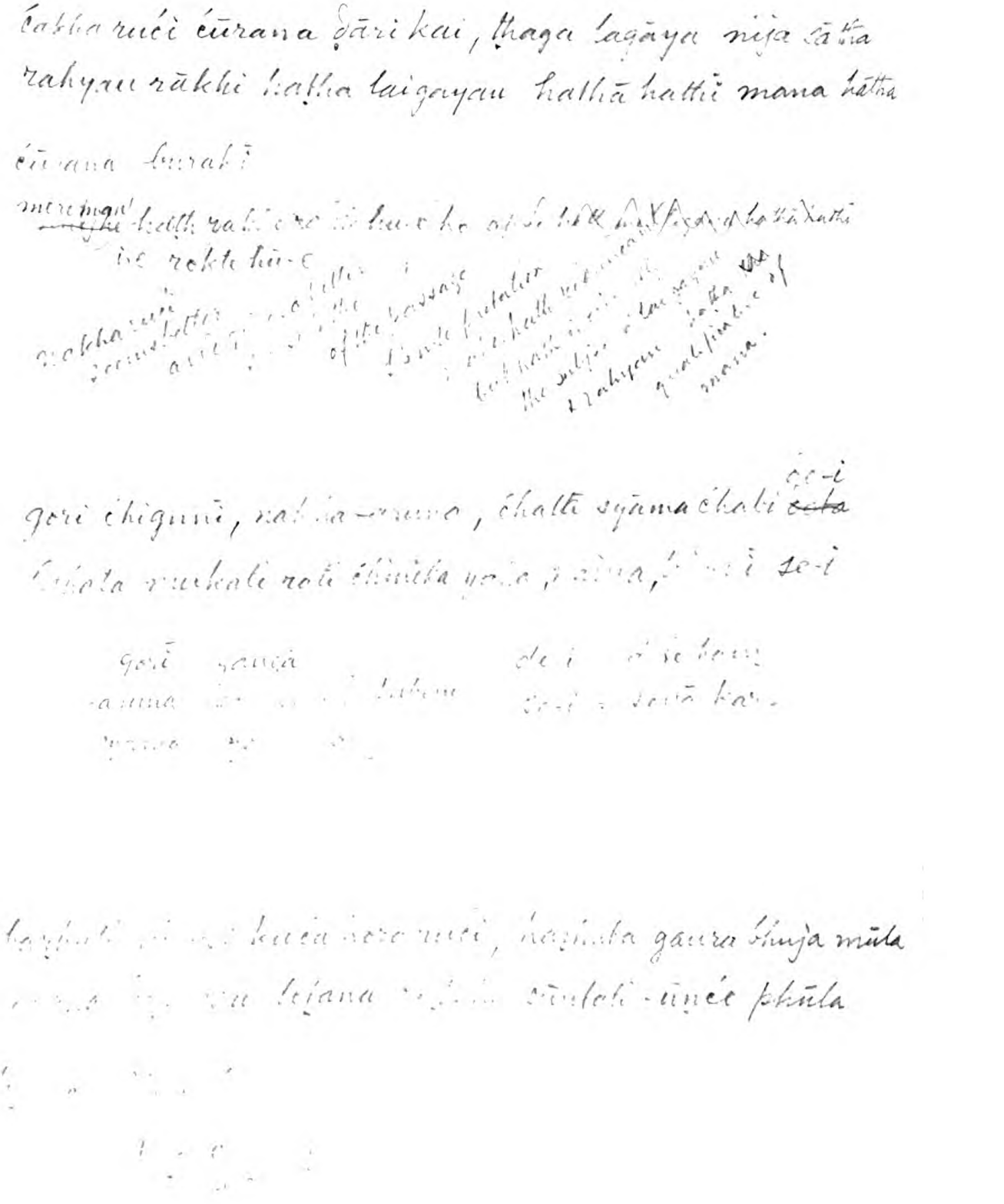
ćupari ? glistening.

-ura mānika kī -urabasī ḍaṭata ghaṭata drigadāga
jhalakata bāhira karhi manau piya hiya kau -anurāga

-urbasī an ornament worn on the breast. apparently dhugdhugī
mānik ruby

drigadāg the fire of the eye denoting longing for an absent person
ḍaṭna to be checked
to remain
tiya (sambodhan) seems better than piya
according to ḍaṭata = mukur karti i.e denies that the jewel was given by her lover- rejected

bare kahāwata -ićpa hī garuwe gopī nātha
tau badi hauṇ jo rākhi hau hāthani la khi mara ūṇcai



यह नायकाके हाथकीशोभासखी नायकसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ सिंधुमथिशशि शंभिमथिनखवाके नेहीकीनेहैंसुरतिकहै कविप्रतियाइ है॥ चोरकेकलपतरुको येअंगुरीनिक री म नहोतबहि मनचितेफलपाइ है ॥ कमलाहियेकेकंज दलकीहथेरी की मीतापर भवरभयेभावरे हीखाइ है। हौंतोत्रिभुवननाथ जानिहौपैऐसेतिय हाथनिरखिजब हाथनिबिकाइ है॥ २२६ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नखरुचिचूरनडारिकैठगुलगायनिजसाथ। 279
रह्योराखिहठलैगयोहथाहथीमनुहाथ ॥ २२७॥

हाथकीशोभादेखि नायककीमनुयाकेहाथनाहींरह्यो सोनायक अपनेमनकीगतिसखीसों कहतहै नायकाहू सों कहै ॥ सवैया ॥ बूंदलसै मेहदीकेसुरंग उहींअरुनायकरंगरचेकै। रेखबसीकरमंत्र दिखायकेसाथ लगायलियोअपनेकै ॥ चारुनखादुतिचूरन डारि अधीनकियो बहुभांति मुरेकै। राखेहूंपैनरह्यो ममहाथहथाहथी हाथगयोमनुलैकै ॥ २२० ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० गोरीछिगुनीअरुननखछलाइयामछविदेय। 496
लहतिमुकतिरतिपलकुयहनैनत्रिबेनीसेय ॥ २२८॥

यहनायकाकी अंगुरीकीशोभा नायककहत है ॥ सवैया ॥ कोबरीगोरीलसै छिगुनी अरुलालप्रभानख कीरुखदेनी ॥ तापरश्यामछला कीफबीछविनैननको लखिलागतऐनी ॥ लोचनसंतलहैरति मुक्तनि मेघकदेखतही मृगनैनी। तोकरमांहिंबराजत है यह तीरथराजकी रीति त्रिवैनी ॥ २२८ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० बढ़तानिकसिकुचकोरुचिकढ़नगोरभुजमूल। 536
मनुलुबिगौलौटनुचढ़तचौंटतऊंचेफूल ॥ २२९॥

यहनायका जाछविसोंदेखीहै सोनायक सखीसोंकहतहै ॥ सवैया। बनआजुलखी बृषभानु सुताजगजोति रहीचहुंकूलनकी। चिहुटीचितमें उकसायेभुजाबहचौंटनि ऊवतफूलनकी ॥ बढ़तीकढ़निकुचकोरनकीरुचि

चारु आभाभुजमूलनिकी ॥ लटिगोमनुलौट विलोकतहीछविमोहनकैसेहूं भूलतिकी ॥ २२९ ॥ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

503 दो० फरउठायघूघटकरतउसरतपटगुझरोट।
सुखमोटैलूटीललनलखिललनाकीलोय॥२३०॥

यहनायकाकी लौटकीशोभा नायकनेदेखीहै सोसखीसखीसोंकहतहै ॥ सवैया ॥ जातिहोबालगलीमें अलीसंगआवत मोहनदेख्योअगोढ़ैं ॥ ज्योंकियेघूंघटहाथ उठायकैत्योंउसरी पटकीगुझरोटैं ॥ सोछविमोपैक-हीनपरै कछुकौरिनकोर लुटीसुखमोटैं ॥ लाललह्यो अतिमोद हियेनव नागरिकी निरखीजबलोटैं ॥ २३० ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ कटि वर्णम् ॥

505 दो० लगीअनलगीसीजुबिधिकरीखरीकटिखीन।
कियेमनोवेहीकसरिकुचनितंबअतिपीन २३१ ॥

यह नायकाकी कटियोबनके आयेतेघटबढ़ ह्वेगईहै सोसखी नायक सों कहतिहैकविहूकी उक्तिहोय ॥ कवित्त ॥ रूपसांचेढारे रचिपचिकै सधारेबिधि अंगअंगसकल सुदेशरस भीनेहैं ॥ तापैतरुणाईने बनाई कछु औरैबिधि खीनकरेपीन अरुपीन करे खीनिहैं ॥ छोलि छोलि ठाकुरति सूछमकैराखे ताहिलचकत जानिकैयतन ऐसेकीनेहैं ॥ कनिहांकी कृश ताकीसाधिकैं कसरमानों उरज नितंब अतिपीनकरि दीने हैं ॥ २३१ ॥ छल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

504 दो० लहलहाततनतरुनईलचिलगलौंलफिजाय।
लगैलांकलौइनभरीलोइनलेतलगाय २३२ ॥

यह नायकाकी जोशोभादेखीहै सोनायक सखीसों कहतहै अथवा सखीनायकासों कहैतो संभवहै ॥ कवित्त ॥ लकलकेतनमें लहलहाति तरुनाईताकी नईअरुनई रहीछविछायकैं ॥ कुचनके भार चपल गलौं लफतिजब चलतिगयंद गतिसहजसुभायकैं ॥ कहैकविकृष्ण नखसिखलौं लुनाईभरी मानौंमहा मोहनीने देइधरी आइकैं ॥ सूछिमलसत अति

bibalī varnan

kara -uṭhāya ghuṃghaṭa karata -usarati paṭa gujharoṭa
sukha moṭaiṃ lūṭī lalana lakhi lalanā kī loṭa

usarnā to recede
gujharoṭa explained by saiwaṭ a crease
sukhamoṭaiṃ sukha kī gaṭhriyāṃ

nitamba varnan

lagi -analagī sī jo ~~bidhi~~ kaṭi kari khari bidhi chīna
kiye manau wāhī kasari kuca nitamba -ati pīna

lagī na lagī
lagī may mean a little pole. something to catch hold of

kaṭi varnana

lahalahāti tana taruna-ī laci, lagi laum, laṭhi jā-i
lagai lāṃka loyana bharī, loyana lūti lagāṃi -

lagi = a wand
loyana bharī lavanya

laṭhi jāi jhuk jāe

pronounced
yaun ak.

buddhi-anumāna, pramāna śruti, kiye nīthi ṭhaharāya i
śuddhama gati para brahma kī -alakha, lakhī nahi jāya i

buddhi-anumāna process of reason pramāna śruti authority of revelation
sabda brahma nāyaka hi kahi -
apparently kahi is understood as
subject, lakhī nahi hi i anumanalankāra
repetition

[illegible]

[illegible]

[illegible]

चारुको सोभाकुएसे लगैलांकचारी लेतलोयन लगाइकै ॥ २३२ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० बुधिअनुमानुप्रमानश्रुतिकियेनीठठहराय । 680
सूक्षमकटिपरब्रह्मकीअलखलखीनाहिजाय २३३॥

यह कटि बरनन सखीसखो सोंकहै नायकसों कहै नायका सखीसों कहैनायक सोंकहै कबिहूकी उक्तिहोय ॥ कबित्त ॥ सुमनमें बासजैसे सुमनमेंआवे कैसेनाहीं नाहींकहो जातिहांकहां चलतिहै ॥ सुरसरिसू-रतनयामें सुरसती जैसेबेदके बचनबांचे सांचेनिबहतहै ॥ बुधिअनुमानते प्रमान पारब्रह्मऐसे कामिनीकी कटिकबिमोरन कहतहै ॥ परिवाकेअधि कीकलाज्योंहै अंबरमेंपरिवाको अच्छपरतच्छन लहतहै ॥ २३३ ॥ प-योधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जंघयुगलजोइननिरेकरेमनोबिधिमैन । 506
केलितरुनदुखदैनयेकेलकलासुखदैन २३४ ॥

जंघकी शोभानायक सखीसोंकहै सखीनायकसोंकहै ॥ कबित्त ॥ कारेकरेरे कुरुपकरोकर क्योंसमहोत प्रभाइन कोके ॥ सोहतसुंदर पोन सचिक्कन सोहनहैं मनमोहनपोके ॥ केलिकलोल कलाकेनिधान महा-दुखदायक हैं कदलीके ॥ तोजुगजंघ बिरंचि मनोज बनायकरे निरलोय नहीं के २३४ ॥

दो० रह्योढीठढाढसगहैशाशीहरगयोनसूर । 507
मुरयोनमनमुरवानिचुभिभौचूरनचपिचूर २३५॥

यहमुरवानिको शोभामें नायकको मनचुभ्योहै सोसखीसों कहत है नायका हूसों ॥ सवैया ॥ प्रान पियारीके पाइनऊ परिपुंजप्रभाको परे उमगोई ॥ देखतही अति रीझके चायसों जायतहां मन मेरोलग्योई ॥ सरह्यो अतिसाहसकै कबिकृष्णाकहै नडराय भग्योई ॥ चूरभयोचपिचूरन सोपैतऊन मुरयोमुरवान पग्योई ॥ २३५ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० पायमहावरदैनकोनायनबैठोआय । 508
फिरिफिरिजानिमहावरीयेड़ोमिड़तजाय २३६ ॥

90.

यह नायनकी सहसअरुनाईको अधिकसखी सखीसों कहति है नायकहूसों कहैतो संभव है ॥ कवित्त ॥ मंदहूखपैते चंदबधूके बरनहोत प्यारीकेचरननवनीतहूंते नरमें ॥ सहजललाईकाश्रीराम बरनीनजायजिनके निहारेंकबिहूकीमति भरमें ॥ येड़ीठकुराइनकी नायनिगहति तब ईंगुसोंरंगदौरिजात दरबरमें ॥ दीनीहैकिदैवोहै निहारेसोचेबारबार बावरोमहूं रहीमहावरलेकरमें ॥ १३६ ॥ मरकटअक्षर ३१ गुरु १० लघु १४ ॥

509 दो० कोहरसीयेडीनकीलालीदेखिसुभाय ।
पायमहाबरदेनकोआपभईबेपाय ॥ २३७ ॥

यहनायकाकीयेड़ीनकी शोभासखीनायक सोंकहै ॥ कवित्त ॥ कोहरूकहाहैबन्धुजीव कोबिलोक्योचाहै लाजनतेकमलमुदित फूलिफूलिकै ॥ मानिकपबारीबिंबकैसे पटतरहोतऐसोदुति सहजउठतिउलिउलिकै ॥ चाहूनसोंपाईनमहावर लगायबेको आई ठकुराइननिकट अनकूलिकै ॥ कहै कविकृष्णचारुबदन बिलोकतहीनाईन बिचारीगईसबसुधिभूलिकै ॥ २३० ॥ मत्तअक्षर ४१ गुरु ८ लघु १४ ॥

512 दो० अरुनबरनतरुनीचरनअंगुरीअतिसुकुमार ।
चुवतसुरंगरंगसीमनोघपबिछियनकेभार २३८ ॥

यहचरनांगुलीनकोशोभा नायकसखीसों कहत हैनायकाहू सोंकहैसखी सखीसोंकहै कविकीउक्तिहोय ॥ कवित्त ॥ मन्दगतिहरैकलहंसन लहत कलसमदगयंदनकोगरबगरतहै ॥ कृष्ण गनत्यागेचारुचरननिहारेधोकेजलन समूह जिमलाजहिधरतहै ॥ अतिसुकुमारतरुनीकोपगअंगुरीनऐसीअरुनाई कोउजासउघरतहै ॥ मेरेजानपरतोबिछियानको अपारभारताहीसोंउमंगरंग निझरोपरतहै ॥ २३८ ॥ मरालअक्षर ४२ गुरु ० लघु ३४ ॥

513 दो० पगपगमगअगमनपरतचरनअरुणदुतिऊलि ।
ठौरठौरलखियतउठेदुपहरियासेफूल ॥ २३९ ॥

यहनायकाकेचरननमें अरुनताकीअधिकताई सखीनायकसोंकहैनायकनायकासोंकहै सखीसोंसखीनायक सोंसखीसोंकहै ॥ कवित्त ॥ प्यारीके पगनपायऐसो अरुनाईतातेसुगंधि बधूनदिनमांझकरभाख्योहै ॥ बागहूके क-

eṛi barnan

pāya mahāwara dena kaun nā-ini baiṭhi -ā-i
phiri phiri jāni mahāwari -eṛi miḍati jā-i

in 422 miḍe is used/ kusum
hāth ke masale phūl kī

bhrānti alankār

kohara sī -erīni kī lālī dekhi subhā-i
pāya mahāwara dena kaun -āpa bha-ī bepā-i

kohara -indrāyan (colocynth)
ke phal
subhā-i natural-
bepā-i nirbuddhi

-aruna barana tarunī caraṇa -angurī -ati sukumāra
cuvati suraṅga raṅga sī manau cāpi bichiyana ke bhāra

cuvati
distils

hetūtpreksha

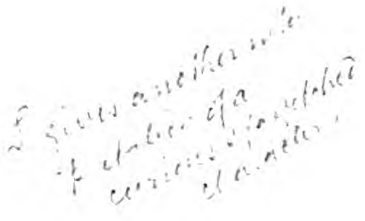
gati barnan

paga paga maga -agamana paraṭi carana -aruna dauti jhūli
ṭhaura ṭhaura lakhiyata -ulhe dupahariyā sī phūli

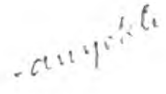
sī ka-ari: ka! jhul? owayns

dupahari
purloined phoenicia

sohala aṅguthā pāyake anawaṭa jaḷita jarā-i,
jītyau tariwani duti, su ḍhari paryau tarani manu pā-i
tarani the sun.



sarasa kusuma maḍiyāta-ali, na jhuki jhapaṭa lapaṭāta
sarasale eti sukumāra taina parasata mana na patyāta



Mukhana tira sambhāri nai kyaun-ini taina sukumāra
jē bic tira na ḍhara sakata sobhā-ē he bhāra



ढ़तथा केमिमिरलुभानहूमें किसलैअलीतोरबेकौअभिलाष्योहै ॥ चिन्तामनिचांदनीबिछौनापर आवैलाल मखमलकी बिछौनामनु नाहिंनाख्योहै ॥ चरनधरतवाके आंगनपटिक बन्धमानौ लालबिद्रुम दलनिबांधि राख्यो है ॥ २३९ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० सोहतअंगुठापायकेअनवटजरयोजराय । 511
जीत्योतरवनिदुतिसुढरपरयोतरनिमनोपाय २४०॥

यहनायकाकेशृंगारका आरम्भ है सोएकहैं अनवटपहरनोहै ताकोउपमासखीनायकासों कहतिहै ॥ सवैया ॥ प्यारीसिंगारसबांरन बैठीअचानक आयोतहांदधिदानी ज्योहुती त्योहींरहीनवनागरि नन्दकिशोरकेरूपलुभानी ॥ नीकौअराव अनेटलसे पगकेअंगुठा उपमा सुबखानी ॥ पायपरयौ है मनोरबिआयकै तेजकीहरि तरयोनासोमानी ॥ २४० ॥ वाधक अक्षर ४३ गुरु ४ लघु ४०

दो० सरसकुसुममडरातअलिझूकिझपटिलपटात । 633
दरसतअतिसुकमारतनपरसतमनुनपत्यात २४१ ॥

यह सुकुमारताविशेष है अरु कोऊकसखी नायका सों अनभिज्ञजानतहैसुनायककीसखीभ्रमरकेप्रसंगकरि अन्योक्तिमेंवाकोभ्रम निवारनुकरत है ॥ कबित्त ॥ सुखकोअंगारउपवन कोसिंगारचारुसौरभ बिबिधसमगत जाकोगातहै ॥ सरसकोसुमनु सरसअतिशोभासन्यो निरखिलुभानोअलिटेखेनअघातहै ॥ कहैकविकृष्णअति रीझिपर्योआसपास रहैमडरानोनझपटिलपटातहै ॥ दरसचचाकोतनअति सुकमारतातेंपरसत वाकोमन क्योंहूंनपत्यातहै ॥ २४१ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० 537

दो० भूषनभारसम्हारिहैक्योंयहतनसुकमार ।
सूधेपायनपरतधरशोभाहीकेभार ॥ २४२ ॥

यहसुकुमारता हैसखीनायक सों कहति हैं किभूषन पहिरत बिकल होयगातबेगचलै ॥ कबित्त ॥ बोलनि चलनि चतुराई चितवनि तन चाहिनाहिंचित और तौरठहरातुहै ॥ वाको अंगटबटि जुओपोतियमनछबिनिउपमादैऔरसुकबिसिहातहै ॥ करतानिहारिसुकमारजो बिचारि

यहकीने विनभूषनहि भूषन सोगातु है ॥ सकिहै सम्हार कैसे आभरन भार पाई आभाहूको भारनसम्हारयो तन जातुहै २४२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

540 दो० मैंबरजीकैबारतूइतकितलेतकरोट ।
पंखुरीलगैगुलाबकीपरिहैगातखरोट ॥ २४३ ॥

यह नायका बिश्रब्ध नवोढ़ा है सपने में थिरता नाहीं याते सखी डरदिखाय सयनकरावतिहै ॥ सवैया ॥ मैंबरजीबहुबार अहैनाहिमानत तूसोकहांधौं करेगी ॥ लेतकरौटइतै मुरक्यो करवौटर कोलौं इतैक धरैगी कोमलआपमे अंगनिहारितबैसुकुमारसु क्योंसम्हरैगी ॥ पांखुरीगात गुलाब कीज्यों गड़िजैहैकहूं तौखरौट परैगी ॥ २४३ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥ यह नायकके हृदयमें नायका बसै ॥

538 दो० नजकधरनहरिहियधरेनाजुककमलाबाल ।
भजतभारभयभीतहवैघनचंदनबनमाल २४४ ॥

यह नायकके हृदयमें जोनायका बसति है ताविपरीति को अधिक सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ निजभक्तनकेहितको कमलापति संततचित्तविचारकरैं ॥ अतिचंदनअंग लगावैंनहीं बहुफूलनकी नहिंमाल धरैं ॥ अरु जोकबहूंक सिंगारसजैंयाबिकृष्णतऊ कलकैसेपरैं ॥ यहसोच हियेनिशि द्यौसडरैअतिनाजुक श्रीमतिभारभरैं ॥ २४४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

539 दो० छालेपरिबेकेडरनिसकतनहाथछुवाय ।
झिझकतहियेगुलाबकेऊमाझमयतपाय २४६ ॥

यह नायकाके चरणनको सुकुमारता सखीनायकासोंकहतिहै सखी हूसों कहै ॥ सवैया ॥ पौनलगैअलि पंखेकोहोति चलाचलकैसे बयार करैं ॥ कृष्णकहैं कहुंकेशरिअंग लगैयेतौसौतिउछाहभरैं ॥ प्यारीकेना- जुक पायनिहारिकै हायलगावत दासोडरैं ॥ धोवतफूलगुलाबकेलेपैत झझकैमतिछालेपरैं ॥ २४५ ॥ मराल अक्षर३५ गुरु १३ लघु २२ ॥ शिखा

maiṃ barajī kai bāra, tū -ita kita leṭī karāuṭa ?
pakhurī garai gulāba kī pari hai gāta kharauṭa

kharauṭ a scratch. karauṭ = karwaṭ

garai for garaai

na jaka dharata hari hiya dharai nājuka kamalā bāla
bhajata bhāra bhaya bhīta huvai ghana ćaṁdana banamāla

jaka ćaiṁ ghana camphor

2 gives 5 interpretations

1. hari sambodhan | dharai ghanake | sakhi to nāyaṭe
2 bāla sambhodan sakhi to nayaṭeā nayaṭebirahe
3 harā sambhoćan nayaṭeā birahe bhār fumace
4 dhīrādhīra nayakā kā baiom
5 paramārath

je hari hiyahiṁ dhare seṭe jak nāhanat sōi jo
bhajate malayabarna pauṭhi jahaṁ -ahibhaya jaya
na koi

ćhāle pari be ke ḍarana sakai na hātha ćhuwā-i
jhajhakaṭī hiya hī gulāba ke jhaṁvāṁ jhaṁvāwaṭī pā-i

jhajhakanā to wince. jhaṁvāṁ jhāṁwā jhāmā something used for cleaning the feet (Pasmievenie) (vile-fiedbrich) ct

lagyau cumana, huai hai cubhala, -ātafa rosa nibāra
bārī, bārī -āpanī sīnca cuhrida tā bāra

aillā mau bāpāl ho-ā accha thal hua; se ēhū prūpī krodh se
usko bacā-e lehārī -apnī bārī ko cuhridā tā bār se sīnē
cuhridatā ek'elum bār tarvāra = pānī

sumana sleek

or huai hai su phala
if the flow. begins Rosa thornell be fruit

Jē rahā cau ē, hamu hī bol hamu, carhāna -afā, bali, bāla
bina hi -ige sasī samujha dai hain -agha -akāla

pamyāpelī pamphranii

bali ne kaṭā sīn ēnghmal

dīpun -arauha, pūchā calau - sankafa bhāne jāya.
sucitī huai -mau sagai sasiku bibekain -āya

sankaf hoisa sankaf bhāne jā-e = breakyon bot
hashf ke terain jake tatparya
yih ko dusil dha - layen

sucita = abreuve
allthethen sa e cuntin se
me ni thin su hai
ta ni dekhu jai

kahā ta-e dūga ha-e? pa e lāla behāl,
kahun mwali, kahun bāa kafa, kahun muhufa banamāla.

a lejā = ja se ēja - tazwīj

दो० लग्योसुमनहवैहैसफलआतपरोसनिवारि। 223
बारीबारीआपनीसींचसुहृदतावारि ॥ २४६ ॥

सखीको वचन नायकासों हेशिक्षारूप ॥ कवित्त ॥ वारीहैन बावरी तूदेत लडवावरी ज्यौमानकरिबेकी उरमेंसरबिचारिये ॥ अबहीतो नेह बेलिनवल लगाईताहि जतनजतनदृढ़करिपोषि पारिये ॥ लाग्योहैसुमन सुतोहोहिगो सफलअब कहैकविकृष्ण रिसआतप निवारिये। सीखमानि मेरीमति सौतिनुके बौनेकरे प्यारी प्रीत रसहीसों सींचि हित वारिये ॥ २४६ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तूरहिहोंहीसखिलखोचढ़नअटाबलिबाल। 232
सबहिनुबिनहीशशिउदैदीजतुअरघअकाल२४७॥

यह नायकाके मुखकी शोभा अधिकायहै सोसखीनायका सोकहति है। सवैया ॥ हौंहि अटाचढ़िहौं शशिदेखनतूसजनी रहिआंगनही तिन ॥ औरकितेक व्रतीबनिता सबदेखतचंद उदो छिनुही छिन ॥ तो मुखदेख उछाहभरी सबदेहिंगी अर्घमयंक उदैबिन ॥ औरनको व्रतभंग करैमतिहोहिगो पातकुमान कछूोकिन ॥ २४७ ॥ करम अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० दियोअरघनीचेचलोसंकटुभानोजाय। 233
सुचतीहवैऔरौसबैशीशविलोकेआय ॥ २४८ ॥

नायका के मुख की शोभा सखी कहति है ॥ सवैया ॥ पूजि-निशाकर अरघदियो अवनीचें चलोबलि संकटभाने ॥ औरनको दुचिताई मिटैजिन साधउपास मनोरथठाने ॥ चंदउतै इतनोमुखचंद कितैबिनवैं चितसोच समाने। वैअपने व्रतपूरेकरैं जुरहीचकि आउरजै बरआने ॥ २४८॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कहालडैतेदृगकरेपरेलालबेहाल ॥ 227
कहूंमुरलिकापीतपटकहूंमुकटबनमाल ॥ २४९ ॥

यहनायका के नेत्रदेखि नायककी जोदशाभई सोसखी नायकासों कहतिहै प्रयोजन कि तेरी चाहहै तूचल ॥ कवित्त ॥ कहूं बनमाल

कहूंगुंजन की मालकहूं संगसखाग्वाल ऐसेहाल भूलगयेहैं । कहूं मोर चंद्रिका लकुट कहूं पीतपट मुरलीमुकटकहूं न्यारे डारिदयेहैं ॥ कुंडल अडोलकहि सुंदर न बोलैंबोल लोचनहैं लोल मानोंकाहू हरिलयहै । घूंघटकी ओट ह्वैकै चितई की चोटकरि लालनको ताघरीतें लोटपोट भयेहैं । २४९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पियमनरुचिह्वैबोकठिननरुचिहोतासिंगार ॥
लाखकरोआंखिनबढ़ैबढ़ैबढ़ायेबार ॥ २५० ॥

यहनायका शृंगार करिकै बिलंब करतहै सोसखी नायकसों कहति है अथवातियको शृङ्गारदेखि याकेईर्षा भई सोसखीसों कहतिहै यतें प्रेमगर्विताहोइ ॥ कवित्त ॥ बैठयोकुंजसदन बिलोकतिहै तुवमग तेरो नाममोहन रटतवार बारही । उठचलि हिलमिल मानिरंगरली अली मेरो कह्योमान अनगवति कहरही ॥ पियमन बसिकरिबे यहकठिन अरुतनदुति सरसतिसाजेहू सिंगारही । कहैकविकृष्ण कीजैलाखकयत-न तऊ लोचन न बढ़त बढ़ाये बढ़ै बारही ॥ २५० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० गहलीगरबनकीजियेसमैसुहागहिपाय ।
जियकीजीवनजेठसोंमाहनछांहसुहाय ॥ २५१ ॥

यहसखीको शिक्षाहै अरुजेष्ठाके भेदमेयासों नायककोहितु अधिक जानिकै तिहूकोकहबो संभवहै ॥ सवैया ॥ अलिहौं समझावत तोहि यहै तजिमान हहा सुख देहहमें । फलक्योंनकहै बलियोबनको मनमोहनसोंमिलि क्योंनरमें ॥ लड़बावरीपाय सुहागसमो जियपैतो गुमानधरै जियमें । सबकोवह जेठमेंजीवनि मूरिसुछांह सुहायन माहसमें ॥ २५१ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सघनकुंजघनघनतिमिरअधिकअंधेरीराति ॥
तऊनदुरिहैंश्यामयहदीपाशिखासीजाति ॥ २५२

यहनायका नायक सघनकुंजमें निशशंकबैठेहैं सोगुरुसखी नायकसे नायकाकी दीप्तिको वर्णनकरि शिक्षाकरतिहै अरु नायकसखी सोंकहैहै

piya mana ruci hvaibo kaṭhina tana ruci hoti siṅgāra
tākha karau, -ānkhi na baṛhai, baṛhe baṛhāye bāra

dṛishṭāntalaṅkār
exemplification

gahali, garaba na kījiye samaiṁ suhāga hi pāya;
jiya kī jūvani jeṭha so māha na chāṇha suhāya

gahali = bāvali
māh = māgha

saghana kunja ghanaghana timira adhika andhiyī rāti
ta-ū na duri hai syāma yaha dīpasikhā sī jāti

saghana nividā

phūlī pīlī pīnūla sē phūlati je bimala bikāsa
bhor barāiyan haṃhigī calala tohi piya pāsa
[illegible]

[illegible]
bana bhūkhana, anjana dhiyani, pagani mahāura ranga,
nainu sobha kaun vāṇyata, lalabe hī kaun -anga

[illegible]

[illegible]

[illegible]
bāṇī bhāla, talola munila sīsa silasile bāra
[illegible]

[illegible]

वानायक कोजेआव अथवाकुंजमेंलै चलितहौं सखीको कहबो संभवहै ॥ सवैया ॥ वाकेसमीप नहौंहूंदुरौं लखिलेत बेदुरहिं तेउपहासी । कीजैकहावसुहै कछुजो बिधियाबिधि दीपतिहै परकासी ॥ काहूकी आंखिनमूंदिन जानतहूं बलिजाऊंनहूं जेउदासी । लाऊंसकौंसे अंधेरहूं मांकउजेरीजू नागरिदीप सिखासी ॥ २५२ ।मरालअक्षर३४ गुरु१४ल.घु२० ॥

दो० फूलीफालीफूलसीफिरतजुबिमलबिकास ॥ 155
भौंरतरैयाहोहुतेचलततोहिंपियपास ॥ २५३ ॥

यहनायकी सखीनायकसों कहतिहै ॥ कबित्त ॥ निरखिनिकाई तेरीहौंतीहौं बिकाईबलि तूहूअलबेली कछूमेरोकहयो करैगी । तेरीतन दुतिआगें रतिनरतीक लागै सांचीकहिकोलो ऐसोहठउर धरैगी ॥ फूलो फालो फिरतसिंगार मजैसौंतितेरी तिनके कुमानकहि तूधौंकब हरैगी भौंरकीतरैयासमदेखियेगी प्यारीसबहिनूकरिजब तूपियाकी बोरडरैगी । २५३ शृंगारअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।

दो० तनभूषनअंजनदृगनपगनमहावररंग । 514
नहिशोभाकोसाजियतुकहिऐहीकोअंग २५४ ॥

यहनायकाकेअंग कीस्वाभाविकशोभा सखीनायकासों कहतिहै ॥ कबित्त ॥ सहजअरुणगुल फनतेंउठतछटा तिनकेनिकट कहाजावक करंगुहै । गातकीगुराई आगेकंचन के आभूषन फीकेमेलगत रंचशोभा कोनसंगु है ॥ अंजनहूंआंजेबिन नैनकजरारेदेखै खंजनअनेकन कोहोत मानभंगुहै । तोतनशृंगारकछू शोभाकौनसाजियतु अबैअजानअहवातही कौअंगुहै ॥ २५४ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बेंदीभालतमोरमुहसीसासिलसिलेवार । 252
दृगआंजैराजैखरीएहीसहजसिंगार ॥ २५५ ॥

यहनायकाकी सहजकी शोभासखी नायकसोंकहतहै ॥ कबित्त ॥ केशरकेबेंदी भालभ्राजत हैंसुरंग कपोलतिल सोहतअपारहै । पानभरेआननकटाच्छ दृगकाननलौंसोहै कचश्यामसुख तूलकसेतारहै ॥ बेसरकी मोतीछवि नेहउझकावनकी भरमें सुकविअंगअंग सुकुमारहै ।

लाखहीकीचूरीयह लाखनुलहतिअरु सादगीकीसादगी सिंगारकोसिंगार है २५५ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

367. दो० खरीपातरीकानकीकौनबहाऊबान।
आककलीनरलीकरैअलीअलीजियजान २५६॥

यह नायकाकी अन्याशक्तिजानि नायकके मनमें भ्रमभयो है सखी निवारनकरत है ॥ सवैया ॥ बोलसिरोरुख बंधननाहिनैगंध सुहातन गंधफली को। आरतिमालतिकीनर तेलबलेसनभावत है लवलीको ॥ बारही टूपन देनवकैं वसिकौन कहाऊंकै नैरकली को ॥ माधुरी की मधुराई बंध्योनचलैचित अंकाकी ओरअलीको ॥ २५६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

368 दो० तोरसराच्योंआनबसकहैंकुटिलमतिकूर।
जीभनिबोरीक्योंलगैबौरीचाखिअंगूर ॥ २५७ ॥

नायकाकी अन्यशक्तिनिश्चय जानिनायका सखीसों कहैता सखीभू मुनिवारनुकरतिहै ॥ सवैया ॥ तेरोहीध्यानधरैं नंदनंदनकाननहूंसुनेतेरी कथाहै। तोरसरंगमेंपागि रह्योनिशिबासरतेरोई रूपसराहै ॥ ताहितूऔर सोंराच्योकहैकहि मोसोंहहामन आयकहाहै। बावरीदेखु बिचारहिये कोटदाखहिंखयनिवेरहिचाहै ॥ २५० ॥ मंडूकअक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ नायककीचेष्टा ॥

337 दो० डोरीलाईसुननकीकहिगोरीमुसकात।
थोरीथोरीसकुचसोंभोरीभोरीबात ॥ २५८ ॥

नायका प्रौढानेनायक की चेष्टादेखी है सोसखीसखी सोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ जादिनतेंवहसांवरो ननसोंननमिले सुसकायगयोहै। तादिन तेंकविकृष्णकहैं मनवाहीकेहाथ बिकायगयोहै। थोरीसीलाजगहैहित चीकनीभोरीसी बातबनायगयो है। काननकोअबवे बतियांसनिवेहीकी डोरीलगाय गयोहै। २५८ बारनअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

104 दो० जौलौंलखोंनकुलकथाबिकसौलौंठहराय।
देखैआवतदेखहीक्योंदूरह्योंनजाय ॥ ३५९ ॥

chharī pātarī kāna kī, kauna bahā-uṇ bāni ?
-āka kalī na ralī karai -alī, -alī jiya jāni

pātarī halkī L.
ralī bihār -

·alijī
? alījiya, jāni i.e jāṅkeṇ ralikai
or -alī jiya jāni i.e -alī tai jīnun,

to rasa rāćyau -āna basa kahyau kuṭila matī kūra
jībha nibaurī kyauṇ lagai, baurī, ćākha khajūra

arthāṇtaranyāsālaṅkār

ḍhorī lā-ī sunana kī kahi gorī musakātā
thorī thorī sakuća sauṇ bhorī bhorī bāla

ḍhorī eagerness lā-ī lagā-ī

ćhek vīpsa

jaulauṇ lakhauṇ na, kulakathā taulauṇ ṭhīka ṭhaharāta
dekhe -āvata dekhabau kiyauṇ hūṇ rahyau na jāta

ślaṣṭāsaṅkīrṇa

लाखहीकीचूरीयह लाखनुलहतिअरु सादगीकीसादगी सिंगारकोसिंगार है २५५ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

367. दो० खरीपातरीकानकीकौनबहाऊबान ।
आककलीनरलीकरैअलीअलीजियजान २५६॥

यह नायकाकी अन्याशक्तिजानि नायकके मनमें भ्रमभयो है सखी निवारनकरत है ॥ सवैया ॥ बोलसिरीरुख बंधननाहिनैगंध सुहातन गंधफली को । आरतिमालतिकीनर तोलबलेसनभावत है लवलीको ॥ बारही टूपन देनवकैं वसिकौन कहाऊंकै नैरकली को ॥ माधुरी की मधुराई बंध्योनचलैचित अंकाकी ओरअलीको ॥ २५६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

368 दो० तोरसराच्योआनबसकहैंकुटिलमतिकूर ।
जीभनिबोरीक्योंलगैबौरीचाखिअंगूर ॥ २५७ ॥

नायकाकी अन्यशक्तिनिश्चय जानिनायका सखीसों कहैता सखीभू मुनिवारनुकरतिहै ॥ सवैया ॥ तेरोहीध्यानधरैं नंदनंदनकाननहूंसुनेतेरी कथाहै । तोरसरंगमेंपागि रह्योनिशिबासरतेरोई रूपसराहै ॥ ताहितूऔर सोंराच्योकहैकहि मोसोंहहामन आयकहाहै । बावरीदेखु बिचारहिये कोउदाखहिंखयनिवेरहिचाहै ॥ २५० ॥ मंडूकअक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ नायककीचेष्टा ॥

337 दो० डोरीलाईसुननकीकहिगोरीमुसकात ।
थोरीथोरीसकुचसोंभोरीभोरीबात ॥ २५८ ॥

नायका प्रौढानेनायक की चेष्टादेखी है सोसखीसखी सोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ जादिनतेंवहसांवरों ननसोंननमिले मुसकायगयोहै । तादिन तेंकविकृष्णकहैं मनवाहीकेहाथ बिकायगयोहै । थोरीसीलाजगहैहित चीकनीभोरीसी बातबनायगयो है । काननकोअबवे बतियांसनिवेहीकी डोरीलगाय गयोहै । २५८ बारनअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

104 दो० जौलौंलखोंनकुलकथाबिकसौलौंठहराय ।
देखैआवतदेखहीक्योंदूरह्यौनजाय ॥ २५९ ॥

kharī pātarī kāna kī, kauna bahā-ūṃ bāni ?
-āka kalī na ralī karai -alī, -alī jiya jāni

pātarī halkī L.
ralī bihār -

·alijī
? alijiya, jāni i.e jānke nahi
·ralī hain
or -alī jiya jāni i.e -alī tu -a
jīmun jā

to rasa rāćyau -āna basa kahyau kuṭila matī kūra
jībha nibaurī kyaṃ lagai, baurī, ćākha khajūra

arthāntaranyāsālaṅkār

dhorī lā-ī samana kī kahi gorī musakātā
thorī thorī sakuća sa ṃ bhorī bhorī bāta

dhorī eagerness lā-ī lagā-ī

ćhek vīpsa

jau lauṃ lakhauṃ na, kula kathā lauṃlauṃ ṭṭhika ṭhaharāla
dekhe -āvata dekhabau kiyauṃ hūṃ rahyau na jāta

saṃbhāsa-Jealousy

rahi na sakyau kasa kari rahyau basa kari tinau māra
bheda āusāra kiyau kiyau tanāduli bhedī sāra

[illegible]

kasakau bal'bas hāra

-lo lana avali -rūpa rūpa lāgyau saba jagatakau
mo riga lāge rupa drigani lagi ali ćatapatī

-āīnāramālāśambāś

-ika ika āīnā kramu māla achana se ćāhi
lana neu rūpa, su rūpa mu dhriga, riga ćatapati āhi

gali -au-rī sāuśarī tinau bhata bheran -āni
pare huchāne pa asalana de-ie paiasi piśhāni

-[illegible]

यहनायकाप्रौढ़ा अपनीदृढ़ता सखीसोंकहतिहै अरुनायकाकोस्वरूप ऐसोसुंदर है॥ जुदेखतेक्योंहूंनाही रह्योजातुनायका को बचनसखीसों सखी कोवचननायकासोंसंभवहै कितादिदेखत नाहीं तौलौंकुल कथा दृढ़देखेतेक्योंहूंरह्योनजायगो ॥ सवैया ॥ जोलौंनडीठिपरैमनमोहनहौं न बदौंसखितौलौंसयानहि । ठीकजुठानि पतिब्रतकौकरिलेकुलकानकथा के बखानहिं ॥ लोचनक्योंहूं नरोकेरहैं जबदेखतिवामृदुमूरति कानहिं । देखेबिनानरह्योपरै कैसेहूं मेंरोकह्योकिनसाँचकैमानहिं॥ २५२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ लघु २४ गुरु १२ ॥

दो० रहनसक्योकसकररह्योबसिकरलीनौमार । 521
भेददुसारकियोहियोतनदुतिभेदीसार ॥ २६० ॥

यहनायकाकी तनदुति सखीनायक सोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ राधिका रंगभरीको मनोबिधितीनहूं लोकके रूपदियोई । ताहिअली अबलोकतही बियनैनन प्रेमपियूष पियोई ॥ यद्यपिकेतो रह्योकसकै धरिकैअतिधीरजमेरो हियोई । तद्यपिवातन कीदुति भेदकसारने भेददुसार कियोई ॥ २६० चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ नायकाकोबचननायकासों ॥

सो० तोतनअवधिअनूपरूपलग्योसबजगतको । 536
मोदृगलागेरूपदृगनिलगीआतिचटपटी॥२६१॥

यहनायकाके रूपसों नायकके नेत्रलगेहैं सो अपने नेत्रनकी तलफनि कहतिहै नायकको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ सुंदरताकी तुही पर मावधितैं रतिकीदुति पायतुपेली । कोरमनी रमनी पतिहूपुरराधिके तो समहोय जुहेली ॥ तोतनसोहै लुनाईकी खानिलग्यौ तिहूलोकको रूप नवेली । त्योंतिहरूप लगेममनैन लगीममनैननित्यों तलबेली ॥ २६१ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ आलंबनिभाब

दो० गलीअंधेरीसांकरीभोभटभेराआन । 221
परेपिछानेपरसपरदोऊपरसपिछान ॥ २६२ ॥

यहअंधेरीगलीमें जाभांतिभेटभईसोसखीसखीसोंकहतिहै सपरस्परका पहिचानिबोदोउनको आगम मिलापहै यहव्यंगनायका परकीया ॥ सवै-

या ॥ रैनअंधेरीघने घुमड़ेघन भूमिमहातम पुंजछयेहैं । तैसीयेसांकरी लावीगली भटभेरअचानक दोऊभयेहैं ॥ गातसोंगातहीं लागतहीजियजानि गयेलपटाय गयेहैं । राधिकामाधोजू माधोजूराधिका आपहीते पहिचान लयेहैं ।। २६२ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरू १२ लघु २४ ॥

237 दो० उयोशरदराकाशसीकरतक्यौंनाचितचेत ।
मनोमदनक्षितिपालकोछांहगीरछबिदेत ॥२६३ ॥

यहमानवती सोंसखीकोबचन नायकासोंमान छुड़ायबेको प्रयोजन ॥ सवैया ॥ बलियाजु सुहानीराका कीरैनबिहार समोसुख साजतहै । वहदेखरी इंदुउदोतभयो अरुनाईगहे छबिछाजतुहै ॥ अबलोकत नाहि रिसैलतियान कोमानकहूं डर भाजतहै । यह मानोमंजु महा क्षितिपाल कोमानिकछत्र बिराजतहै ॥ २६३ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरू १२ लघु २४

661 दो० डिगतपानडिगलातगिरिलखिसबब्रजबेहाल ।
कंपकिशोरीदरशकेखरेलजायेलाल ॥ २६४ ॥

यहसात्विकभाव सखीकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ लोपसुन्योबलि कैमघवातव कोपिकैमेघ सबैमुकलाये । गोधनकान्ह धरयोतबहीं सबकेडर कैभयभूरि भगाये ॥ पानडरेडगु लातलख्योगिरि लोगसबैब्रजके अकुलाये गोरीकिशोरी निहारिकै कंपतिगात खरेनंदलाल लजाये ॥ २६४ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरू १४ लघु २० ॥

311 दो० सुरतिनतालनतानकीउठ्योनसुरठहराय ।
येरीरागबिगारिगोबैरीबोलसुनाय ॥ २६५ ॥

यहसात्विक भावनायकाको बचनसखीसों अरुसखीको बचननायका सोंहोयसो लक्षितासखी सखीहूसोंकहै तासंभवहै परकीया ॥ सवैया ॥ लैकरबीन प्रवीनतिया सुरसाधिकैगानकौठाटठयोहै । द्वारपैआयकै ताहीसमैमनमोहनकाहू कोनाचलयोहै ॥ तानकहूं अरुतालकहूं सरतोकछू औरतें और भयोहै । वैरी अचानक बोलसुनायकै नंदको राग बिगारि गयोहै ॥ २६५ ॥ पादूलअक्षर ४२ गुरू ६ लघु ३५ ॥

-uyau sarada rākā sasī, harati kyaṃ na cita ccta ?
manau madana chiti pālakau chāṇhagīra chabi deta

-uyau has risen rākā sf. the day of the full moon
chāṇhagīra chātā
chabi deta sobhāyāmanakai

This is an example of uddīpan vibhāva
vastūtprekshālankāra

ḍigata pāni ḍigalāta giri lakhi saba braja behāla
kampa kisorī darasa kai kharе lajāne tāla
ḍignā to quake ḍigalāta ? govardhana parbata
kisorī rādhā

surati na tāla ru tāna ki -uṭhai na sura ṭhaharāya
-e rī rāga bigārī gau ¿bairī, bola sunāya.

bairī lokoktī

nāyakā ko swabhang sātttvika huā -is se gala bigarā au
bacan sun nāyak thakā rahā. -is se bairī kahā

dhyāna -āni hiya prāṇapati mūrila rahati dina rāti,
kala kaṇṭhati, pulakati palaka, pāraka pasijati jāti.

[illegible]

[illegible]
śuchi śalila romāṇcha kuśa gahi dulahi aru nātha
hiye diyo saṅga sātha ke hatha lewa hi hātha
[illegible] - diye hiyau saṅga nātha ke hātha hiyehi hātha

rūpaka lankāra
[illegible]

hasiyau -āṇcha -ala-bihala ki rahyau prema rasa bhija
nainani ke nīra jala sahari hiyau pasija pasija.

[illegible]

yaha mōra hāṁ mau tohi bhakti-apūraba, bāla,
tohi [illegible] nātā [illegible] lana nā nāra hi māla

[illegible]

[illegible]

दो० ध्यानआनदिगप्राणपतिमुदितरहतिदिनराति। 348
मुलकिकपतिपुलकतिपलकुपलकुपसीजतजाति २६६

यहनायकाविरहनी ध्यानकरमिलेसे तबहीसात्विक भावहोतहैसोसखीसखीसोंकहतिहै सखीनायकासोंकहै तोहूसभवहै ॥ सवैया ॥ बाहरिकेबिछुरेगति ऐसीभईसुबखान कहांलगकीजै। ध्यानही ध्यानमेंचंदमुखीमिलिप्रानप्रिये रसरंगमेंभीजै॥ रैनदिनारहैमोदभरी वहैकोहबियगनिक्योंतनछीजै॥ कंपितहूं कबहूंललकैं कबहूंपलकैंकबहूं कपसीजै २६६ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० स्वेदसलिलरोमांचकुशगहिदुलहीअरुनाथ। 14
हियोदियोसंगसाथकेहथलेवाहीहाथ ॥२६७॥ 640

यहबिवाससमय दोउनकेअतिसनेहके आधिक्यतें सात्विक भावभयो सोसखीसखीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ मंडपमंडलतीरथ साधिकैवेदबिधान सोंदानदियोहै। स्वेदभयोसोईनीर नयोउलहैफलकै कुसपुंजलियोहै ॥ मैनमुनिंदप्रयोगपढ्यो रतिकोलहिये अभिलाषकियोहै ॥ दोउनलों अपनो अपनो योहियोहथलेबाई हाथ दियोहै ॥ २६० पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तच्योआंचअतिबिरहकीरहेप्रेमरसभीज। 428
नैननकेमगजलबहैहियोपसीजपसीज २६८ ॥

यहनायका अथवानायक वियोगतें असुवा बहतहैंतिनको उत्प्रेक्षा करतहैसखीसखीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ जादिनतेंब्रजनागरिकोमननंदकिशोरकेनेहनच्योहै। आंचतच्यो विरहानलको हितकेरस मेंअतिभीजिरच्योहैतामेंतरंगउमंगउठ्यो तेहिऊपरप्रेमनागरच्योहैतातेंपसीजपसीजहियोबियनैननकेमगनीरबच्योहै॥२६८ ॥मरालअक्षर ३४गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मैंयहतोहिमेंलखीभक्तिअपूरबबाल। 74
लहिप्रसादमालाजुभौतनुकदम्बकीमाल २७९॥

यहसात्विकभाव सखीको बचन नायकसों परकीया लक्षिताहाय ॥ सवैया ॥ कोरिकवारिन प्रेमपगोरंगलालनके रंगलालभईहै। कानछ-

कीछबिदेखिगुपालको कोवनितान बिहालभईहै ॥ मैनिरखीयहतोतन - आजअपूरबभक्ति रसालभईहै । मालप्रसादकीपावत हीसबदेहकदंबकी मालभईहै ॥ २६६ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

357 दो० नेकउतैउठिबैठिएकहारहेगहिगेहु ।
छुटीजातनुहदीक्षिनुकमहदीसूकनदेहु ॥२७० ॥

यहनायकको देखिनायकाको सात्विकभाव भयोहै सो सखी नायक सोंनिवेदनकर तहैनायकाहूसनेहके आधिक्यतेनायकसोंकहतिहैं ॥ सवैया ॥ आजलोंकैसेहूं जानिपरीनचली जबते रसरीतिचला । देखितुम्हैं उमग्यो अबहीकर पल्लवछोरन स्वेदजला ॥ बैठहुनेकइतैउठि कैउघरी यहआवतिप्रेमकला । जातछुटीअबही नुहदीमहदीछिनु सूकनदेहुलला ॥ २७० मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

413 दो० पहरतहीगोरिहिगरेयौंदौरीदुतिलाल ।
मनोपरसिपुलकितभईबोलसिरीकीमाल२७१ ॥

यहनायककीमालास्पर्शतेनायकाके सात्विकभावभयेहैसोसखीनायकसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥मोरभसहित चुनिचुनिकैकुसुमचारु अपनेकरन मनमोहन गुहीबनाइ । मैतौजायदीन्हीउन लीन्ही अतिआदरसोंपहिरी हियेमें प्रानप्यारी हितसरसाइ ॥ कृष्णप्रानप्यारे के गोरेगोरे ताहिंपन उपजीनबल दुतिरही ऐसी छबि छाइ ॥ मेरेजानि लालबीर सिलीकी ललितमाल पुलकितभई वाकेतनको परसपाइ ॥ २७१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

303 दो० हितकरतुमपहियौंलगेयाबिजनाकीबाय ।
टलीतपतितनकीतऊचलीपसीनौन्हाय ॥ २७२ ॥

यहनायकके बीजनाकी बयारलगे नायकाके सात्विकभाव भयोसोसखीनायकसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ मोरपखाउनको रुचिकै हितकेपठयो तुमप्यारे बिहारी ॥ ताहिबिलोकतही तियकी तनताप टरी उमग्यौ मदभारी ॥ हौं तोविलोकि अचंभैरही अबलौंनकहौं गतिऐसीनिहारी ॥

naiku -utai -uṭhi baiṭhiye, kahā rahe gahi geha ?
ćhuṭī jāti nahadī, ćhiṅēka mahadī sūkhane deha

sakhi to nāyak

vakrokti -alaṅkār ṭerhe bhāva se bole

apparently nuha dī = nuha meṇ dī hu-ī mahdī

naha or nuha = the nail of finger or toe -

paharata hī gore gare yaṇ dauṛī duti, lāla,
maman, parasi, pulakita bha-ī, maulasirī kī māla

dauṛī for dauṛī ? Benade

hita kari tuma paṭhayau, lagaṅ wā bijanā kī vāya
ṭari tapati tana kī, ta-ū ćalī pasīnā nhāya.

bijanā fan. vāya wind.

vibhāvanā!

वाबिजनाको बयारलगेवह न्हायपसीनाके नीरमेंनारी ॥ २७२ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० सहितसनेहसंकोचसुखस्वेदकंपमुसकानि । 240
प्रानपानकरिआपनेपानधरेमोपानि ॥ २७३ ॥

यहनायकाको पानदेत नायकाके सात्विक भावभयो अरु नायकके प्रान वा बिहसनि को देखिबाकेबस भयेसो सखीसों नायक कहतहै ॥ सवैया ॥ वा मृगलोचनिके सबअंग अनंग बिलास बसी करहेरे ॥ स्वेद संकोच सुनेकाबिकृष्ण सनेहभरे सुखपुंजघनेरे ॥ कंपतगात कछू मुसकात चढ़ायकैभौंह बिलोचनफेरे ॥ मोकरपान दयोहितसों उनप्रानलये अपने करमेरे ॥ २७३ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यहबसंतनखरीअरीगरमनशीतलबात । 89
कहिक्योंझलकेदेखियतपलकपसीजेगात २७४॥

यह सात्विक भाव देखि सखीनायकासों कहतिहै परकीया लक्षिता जानिये ॥ कबित्त ॥ सोहत समान मे यह तो बंसतऋतु नाहिनै गरम अरुधीरकानि अतिहै ॥ कहैकवि कृष्ण बलिहम सोतो सांचीकहि काहेतें छबीलीभई तेरीऐसीगतिहै ॥ कबहूंतपत गातकबहूं पुलक होत कबहूं पसीज आवै कबहूं कंपतिहै ॥ जानिहैरीजानी हितसानीअरगानी रहि देखिदधिदानी प्रेमरसमें प्रगतिहै २७४ ॥ मच्छअक्षर ४१गुरु०लघु ३४॥

दो० ऊंचेचितैसराहयतुगिरहकबूतरलेत । 73
झलकतदृगमुलकतबदनपुलकितहैकिहिंहेत २७५

यह नायकको कबूतर देखि नायकाको सात्विकभाव भयोसो सखी नायकासों कहतिहै परकीया लक्षिता ॥ कबित्त ॥ अंबरमें शोभासाजि उड़तकपोत येतो बाजीकरैरंगमें गिरह आछी लेतहै ॥ तिन्हें सबैकोऊ नैन ऊंचेकर चाहत है रीझरीझ सुघर सराहत सहेत है ॥ चाहिबो सराहिबो बिसरगयो तोहि प्यारी देखतही देखिरहीतेरे चितचेत है ॥ झलकतनैन मुलकितहैं अधरतेरे साचीअंग पुलकनुसो किहहेतहै ॥ २७५ मंडूक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

122 दो० रहौगुहीबैनीलखैंगुहिबेकेत्योंनार ।
लागेनीरचुचानजेनीठसुकायेबार ॥ २७६ ॥

यह नायक सखी भेदहूँ के नायका को शृंगार करनलागी बेनी गुहति सात्विक भाव उपज्यो सब नायका ने जान्योसो नायक सो कहतिहै ॥ सवैया ॥ गोपीको बेष बनाय गुपालजू श्रीवृषभान सुता ढिग आये ॥ ह्वैसजिजानत नीकेसिंगार कहैसुकरौं कहि बैन सुनाये ॥ बैनीगुहावत प्यारीगह्यो मुसकायइतै कितने तुमपाये ॥ नीरचुचानलगे अबही सटकारे से बार जेनीठि सुकाये ॥ २७६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

245 दो० राधाहरिहरिराधिकाबनिआयेसंकेत ।
दंपतिरतिबिपरीतसुखसहजसुरतहूलेत॥ २७७॥

यह लीला हावभाव रति बिपरीत समय सखी सोंकहै ॥ कवित्त देखिरेकोदेह द्वैपैएक मनएक प्रानरूप बोल बैसगुन चातुरी समेतहैं ॥ जैसेदोऊ सांचेबनेचेरगटी तरंगमन आजलौंन देखेकहो ऐसेहियहेत हैं ॥ राधामाधो मावोराधा अदलबदलबेष बनिबनिआयेकेलि केलिकेनिकेत हैं ॥ कहैंकबिदृष्णा दोऊसहज सुरतिकरि रतिबिपरीतके बिबिधसुखलेत हैं ॥ २७७ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ११ लघु ३० ॥

421 हो० तजीसंकसकुचानेरहतिबोलतअतिबकुबाकु ।
दिनक्षपदछाकीरहतिछुटतनछबिकीछाकु २७८ ॥

यह नायका को छबिका गर्वहै सो सखीसखीसों कहतिहै मदहवजो नायकको छबिछाकुसखीकहै तोलाजिताहोय ॥ सवैया ॥ कछूबूझत बातही ऊतरदेतनलाइ टकी अनमेषतकैं ॥ अरकानि करैनअलोनहूं को तोजलाजभरोखन ह्वै उझकैं ॥ सबशंकतजी सकुचैनाहिये मुहचावैसबाकु कुबाकुबकैं ॥ रहैरैनदिना बृषभानसुताछबि छाकछकी नछिनौं उछकैं ॥ २७८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

241 दो० रहीदहेड़ीढिगधरीभरीमथनियांबारि ।
फेरतकरउलटीरईनईबिलोवनिहारि ॥ २७९

यह नायकाको बिभ्रमदेखि सखीनायक सों कहतिहै सखीसखीहूसों

rahau, guhī benī lakhe guhibe ke tyaumāra -
lāge nīra ćućāwane niṭhi sukhāye bāra -

sakhi or nāyakā to nāyak who
has taken the sakhi's place

tyaumāra ḍhang
niṭhi kaisehū (hariprakās
niṭhi apparently means "only just"

guhnā gūṭhnā to plait or braid.

rādhā hari, hari rādhikā bani, -āye saṅketa
dampati rati viparīti ~~sukha~~ naukha sahaja surata hū leta

līlā hāva kāmalinga pativaireasora

nāyakā nāyak sambhog-ulaṭe kā sukha sahaj ke sambhog men bhi lalala

taji sanka, sakućati na ćita, bolati vāka kuvāka;
dina ćhinadī ćhākī rahati, ćhuṭata na ćhina ćhabi ćhāka.

pralāp unmād dasā viraha nibedan
vyāticrek ālankār

ćhākī matta sanka ḍar
ćhāka mada

vibhrama hāva [illegible]

rahī dahaiṇḍī ḍhiga dharī, bharī mathaniyā vāri
kara pherati -ulati ra-ī, na-ī bilowani hāri!

ra-ī churning staff.
dahaiṇḍī dahī ke hāṇḍī

bhrāntyālankār

lahi sūne ghara kara ghāyau bikhāchikhī ṇai ithi
ghāī su ithe nāhī karaṇa hari lalachaṇhi dīṭhi

jal jalaṇdai

kuḷgaṇṭa ghaṇi upaṇe

karakhī naṭhī, lokhī karaṇa ...i-aṇila saṇga vāṭha
āṇbāṇa hī ... ghāī, bhoyau ... ghara ...

...

...

lahī ...ṇa ...ghara, ṇamala saṇ ... ṇuvāyau ghāma
hari ...ṇi ṇai ... ... ghāī-ī vāma

...

कहैतौहूसंभवहै ॥ सवैया ॥ पासदहेड़ीधरीयेरहीजलसौं भरिकैजुमथा-
नीलईहै। थंभसोंनैनतोलिपेटदईलटीकर फेरतेतामेंरईहै ॥ मोहिंतोलागात
नीकोमहाउर परनप्रेमकी रीतिठईहै ॥ सांवरी मूरतिकी रिझवार नईतू
बिनोधन हारभईहै ॥२०६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ कुट्टामत

दो० लहिसूनेघरकरगहतादेखादेखीकीईठि। 321
गडीसुचितनाहींकरतकरललचौहींडीठि ॥ २८० ॥

यह सुरतांतरसमैं नायकाकी जोचेष्टादेखी सोनायकसखीसों कहतहै परकीया कुट्टामत हाव ॥ सवैया ॥ देखादेखीकीईठ अचानक डीठ परी अकलीगृहमाहीं ॥ साहसकै अपनेउरमें अति मोढिगजाय लईगहि बांहीं। लैसिसकीझहराईकरै उनतछननैनकियेचहुघाहीं ॥ कैललचौ-वनडोठिकरी वहनाहींयेभटै अबनाहीं ॥ २८० ॥ बारनअक्षर ३० गुरु १० लघु २० ॥

दो०हरषिनबोलीलखिललननिरखिअमिलसंगसाथ ॥ 49
आंखिनहीमेंहंसिधरयोशीषहियेधरिहाथ॥ २८१

यह बोधक हाव नायका प्रौढ़ा परकीया नायकको देख चेष्टाबनीसी सखीसों सखीकहतहै ॥ सवैया ॥ ऊखल साथिमें दखिगुपालहिं गोप कुमारकरी चतुराई ॥ बैनकछूनकहे मुखतलखिफूलिमनो निधिनवनिधि पाई ॥ हाथपरयो हियपैपहिलेपुनि शीशढुयो रसरीति बढ़ाई ॥ आंखिन हीमें कछूबिहसो पियको जियको सबबात बताई ॥ २८१ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लखिगुरजनाविचकमलसौंशीशछुवायोश्याम ॥ 256
हरिसनमुखकरिआरसीहियेलगाईबाम॥ २८२ ॥

यह नायका परकीया प्रौढा दुहुनजोचेष्टाकीन्ही सोसखीसखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ आजदुहू मिलिकै सजनी कछुसैननहीं समझ्यो समझायो ॥ गोरीलखीगुरजानमें सरसकहे मुखसरश्याम छुवायो ॥ सोल खिकै बृषभानसुता दियोउतरमेदनकाहुनपाय कृपाकहैहरिकेसमुहै कर दरपन बामहियेसो लगायो ॥ २८२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० किल किंचित ॥

दो० सुनिपगधुनिचितईइतैन्हातदियेहींपीठि ॥
चकीझुकीसकुचीडरीहसीलजीलीडीठि ॥ २८३ ॥

यह नायका जासमैं नायकने देखी तासमय की जोचेष्टा उनकीसो नायकसखीसों कहतहै ॥ सवैया ॥ कामकीबामहूं तेंअभिराम लसैं दुति यौबनकी रससानी ॥ न्हातहीपीठ दियेअकिली सकिली धुनिमो पगकी पहिचानी ॥ जाछबिसों चितईयहिं औरसुकैसेहूं मोपै न जातबखानी । चौंकीचकी सकुची डरपी करिडीठिलजौहीं झुकी मुसकानी ॥ २८३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बालमबारेसौतिकेसुनिपरनारिबिहार ॥
भौंरसुअनरसरिसरलीरीझखीजइकबार ॥ २८४

यहनायककीबहु नायकतासुनिकै नायकाकेदुःखभयो सोसखी सखी सोंकहति है सवैया ॥ बैठीसखीजुसमाजमें प्यारीसिंगारकेसाजन सों सर मानी । काहूकहीतुवसौतिके बासरेआनिबधू केगयोदधिदानी ॥ सोसुनि कैकबिकृष्णकहैं रहसीबिलखीहुलसीउकलानी ॥ एकहीबेरलखीमृगलोचननीझिखीजो मुसकानीरिसानी ॥२८४॥ मरालअक्षर३८गुरु१०लघु २८

दो० पतिरतिकीबतियांकहीसखीलखीमुसकाय ॥
करिकैसबैटलाटलीअलीचलीसुखपाय ॥२८५ ॥

यहनायकानायकसोसुरतारंभसमयजानिसखी कछूमिसकरिउठिचली सखीकोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ चौपरिखेलखगीबनिता व्रजराजबिलोकतहीललचानो । सैननमेंकछुकेलि कलोलकीबातकहीमनमेंन भुलानो प्यारीअलीनकीओर लखीहंसियोंरस भावहियेसरसानो ॥ देखिसबैसुखपायचलीअपने अपनेगृहऊठि मुठानो ॥ २८५ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० लखिदौरतपियकरकटुकबासछुडावनकाज ॥
बरुनवनागाढ़ेदृगनरहीगुढ़ौकरिलाज ॥२८६ ॥

सवैया ॥ रतिमंदिरमें नवनागरिकान्ह मिले रसरंग हियेहरिकै ।

kilakiñcit hāv

sunī paga dhunī ćita-ī itaī nhātī diye hī pīṭha
ćakī, jhukī, sakućī, ḍarī, hansī, lajilī diṭha-.

nāyak speaks

ćamkī nihurī

samuććaya yālankāra
coincidence

madhyamā bavan

bālama bāre santi ke suna paranārī vihāra
bhau rasa-anarasa suraṅgarali, rijha khijha-ika bāra

dīpakālankāra

mūna lajja madhyā bavan

pati rati hī batiyāṅ kahī, sakhī lakhī musakāya
kai kai sabai ṭalā ṭalī -aliṅ caliṅ sukha pāya.

paryāyokti

Lakhi dauvata piya kara kaṭaka bāsa churāvana kāja
barunī bana driga gaṣhani meṅ rahī guṛhau kari lāja

kaṭaka bashkan
bāsa thau an bastra

barunī sohai bava driga ga.hani meṅ lāj gūṭhau kari
rahī gūṭhau mo vās

sahuca surata-[illegible] bichuri lāja lajāya
[illegible]harake [illegible]ara dhuri [illegible]ica [illegible]ha-i dhittha dhitthā-ī -āya
lāja [illegible] lāje lajjala[illegible]e sahuca [illegible]uri judā hu-ī
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]

bhamuhani [illegible], mukha nalati, -ānkhani soṇ lapalāti
~~-aiṇeha~~ -aiṇeṇa dhuṇuvati ~~kāma~~ varga, -iṇi -aṇ -uvati jāti
[illegible]
pa[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

दलुदौरतदेख्यौ तहांपियकोकरबास छुड़ावनकोचरिकैं ॥ कविकृष्णकहैं ठहरातनहांनसको रहिधोरजकोधरिकैं ॥ गहिओटघनेबरुनी बनकीरहो नैननलाजगुढ़ोकरिकैं ॥ २८६ ॥ सार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० सकुचिसुरतिआरंभहीबिछुरीलाजलजाय ॥ 37
ढरकिढारढुरढिगगईढठिभईढिगआय॥ २८७॥

यहप्रौढ़ानायकाकीसुरतसखीसखीसोंकहतिहै॥ कवित्त॥ अतिअभिरामश्यामरतिमंदिरमें बिहरतिरंग अनंगरंगभरिकै। नखदानरददानचुंबनअधरपान आलिंगनकरत अनेकभायभरिकै॥ सुरतकेआरंभहीलाजवतीसखीनिपटलजाय जियगईकहूं ढरिकै। ढाढ़सुहियेमेंगहिनिधरकह्वैलज्जैआय ढाढ़ीभईनिपट ढिठाईढीठढरिकै॥२८७॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० भौंहनत्रासतिमुहनटतिआंखनसोंलपटाति ॥ 43
ऐंचछुटावतकरइचीआगेआवतिजाति॥ २८८ ॥

यहसुरतारंभके समयप्रौढ़ानायकाकी जो चेष्टाहै सो सखीसों कहतिहै नायकसखीसोंकहैतोहू संभवहै ॥ कवित्त ॥ प्यारेपानगह्योआनि भौनमेंअकेलीजानि नैननचढ़ायकैसलोनोसासेरतहै। नैननहूसोंहौं डीठि राखतसोहै मुसकायकैलजोहीं अंगअंगठहरातहै ॥ भयेमनभायोज्यौं सुरसुखपायोहिये आनंदनबढ़ायोनेकनेकनिडरातहै। झटाकिछुटावैबांह मिल्योचाहै मनमांहकरैं नाहींनाहींयाही मिसनियरातिहै॥ २८८ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० दीपउजेरेहूंपतिहिंहरतिबसनरतिकाज ॥ 31
रहीलपटछबिकीछुटननेकोछुटीनलाज॥ २८९॥

यहसुरतवर्णन नायकके तनकीछबिको अधिक सखीको बचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ तैनोप्रकाशरति मंदिरकोदीपनकोतसोहीं समूह जगमगतरतन को। तैसीयेसुधानिधिमुखकी निरखिजाति मोहनके मनभाव उमग्योअनंग को ॥ प्रीतमबिहारी लाल लेवे को सुरतसुनि निजकरबसन झटकिहरयोतनको। छबिकीछटान हींसोंरहीलपटाय राधे मान्योउनहून

कीछूटी नलाजतनकी ॥ २८६ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु१३ लघु २२ ॥

दो० यद्यपिनाहिंनहींनहींबदनलगीजकजाति।
तदपिभौंहहांसीभरिनुहांसीहियठहराति ॥२९०॥

यहसुरतारंभनायका प्रौढासखी कोबचन सखीसों ॥ सवैया बैठी सिंगारसजेवृजनारि अचानकमोहन आयतहांहीं। पानिगह्योअविलोकि अकेलोअलोकिककेल कलाचितचोहीं ॥ यद्यपिबानव नागरिकेमुखलागी यहैजकनाननानाहीं। तद्यपिहांसीभरी भृकुटीनमेंबीसबिसे ठहरात हैनाहीं ॥ २९० मच्छअक्षर ४१ गुरु ० लघु ३४ ॥

दो० चमकतमकहांसीससकमससझपटलपटानि।
येजिहरतिसौरतिमुकतिऔरमुकतिअतिहानि॥२९१॥

यहसुरतवर्णन नायकाको बचन अथवा कविकोउक्ति ॥ कबित्त ॥ किलकिनमुलकिनहेर निहारनुचितुचमकति झमकतिधनिमुसकानिहै ॥ लसनिमिलनि आरसभरी कमकनिससक मसकझपटानि सुखदानिहै ॥ लटकनिमटकनि दुरनिमुरनिकलि कुंजनिललनि ललकनि लपटानिहै ॥ ऐसीरीतिरतिसोई मुकतिकहावतिहै मुकतकहावैऔर सोतोअतिहानिहै ॥ २९१ ॥ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥ सुरतांत वर्णन ॥

दो० सकुचिसरचिपियनिकटतेंमुलकिकछुकतनतोरि।
करआंचरकीओटहवैजमुहानीमुहमोरि ॥ २९२ ॥

यहसुरतांतनायका प्रौढासखीकोबचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ केलि कलाकुशल कुरंगनैनी पिकबैनी जाकीछबि परसौति वारिएककोरिकै ॥ सैनसोपागीअनुरागी पतिसंगजागी मैनकेबिलासन सों लेतचितचोरिकै ॥ सरकीसकुचिमन मोहनकेनिकट कछुक मुलकी अंगरानीतन तोरिकै। शोभावहमोपैक्योंहूं जातनवखानीकर आंचरकीओटजमुहानी मुंहमोरिकै ॥ २९२ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३०

दो० लखिलखिअखियांअधखुलनआंगमोरअंगराइ।
आधिकउठिलेटतिलटकिआलसभरीजंभाइ ॥२९३॥

यहसुरतान्तनायका प्रौढासखीकोवचनसखीसों॥ कबित्त॥सैनसुखपा

jadapi nāhiṅ nāhiṅ nahiṅ badana lagi jaka jāti
tadapi bhaṃuha hāṃsi bhariṃe hāṃsī yai ṭhaharāti

hiya is better than yai.
but perhaps hāṃ sī hī

kriyākriyā virodhālaṅkāra

ćamaka tamaka hāṃsī sisaka masaka jhapaṭa lapaṭāni
-e jihiṅ rati so rati mukati -aura mukati -ati hāni

vyatirek

sakući saraki piya nikaṭa teṅ mulaki kachuka tana tori
kara -aṅćara kī -oṭa hari jamuhāni mukha mori.

moṭṭāyita hāva mute expression-

mulaki kachukalana ki
muskurāke angadāī lī
kara lāthee

svabhāvokti

tan torinā to sholaki ithe hoi.

lakhi lakhi -ankhiyani -ādhakhulini -anga mori -aṅgaraya
-ādhika -uṭhi luṭati -laṭaki -ālasa bhari jaṃbhāya

-ādhi -ek

svabhāvokti

nīṭhi nīṭhi -uṭhi baiṭhī hū̃ piyu piyārī pavalhāta
do ū nīṇda bhare kharī gare lāgī girī jata

parbhāt fr prabhāt morning.

pvalhāvelli

nīṭhī kaiveu

[illegible] piya hiye lagi jagi so sāṭi
paiṇa kāiṇu para ṭhaṭhakī hai -aiṇa ṭhaī -aiṇāti

[illegible]
ṭhaṭhā stopping
aiyā stopping

[illegible]

kharaṭe a bolṇ'ā

[illegible] nīrā-ī, do-ī, kusuma de gāla
kara ṭhiya [illegible] -aiṇu ra-uakau jāta

[illegible]

गात्रअनुरागीहरि संगजागीशोभा सरसानीअरसानीजमुहातहै । बिथुरीअ-
लकझुकीआवतपलकै मनमथकीझलकैअतिरसबरसातहै ॥ ललितकपो-
लपैलसतनीकीपीकलीक दोऊभुजजोरीमुहमोर जमुहातहै ॥ अधखुली
आंखिनसोंआलीतन अवलोकि आधीउठि सेजहीलटकिलटि जात है ॥
२९३ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नीठिनीठिउठिबैठिहूंप्यौप्यारीपरभात । 208
दोऊनींदभरेखरेगरेलागिगिरजात ॥ २९४ ॥

यहसुरतान्तनायका सखीकोवचनसखीसों ॥ सवैया ॥ वृषभानल-
लीब्रजराजलालरति संगरमेंनिशिसंगजगे । कविकृष्ण कहैंकुल कामकला-
बहुभायबिलासहियेउमगे ॥ उठिबैठिनिमेजपै नीठितऊउठिपै नसकैअति
प्रेमपगे । अतिनींदभरेसरसातखरे बहुरयोंगिरजात गरेहीलगे ॥ २९४ ॥
पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रंगीसुरतरंगपियहियेलगीजगीसबराति । 92
पैंड़पैंड़परठठकिकैऐंड़भरीएंड़ाति ॥ २९५ ॥

यहसुरतांतसखी कोबचनसखीसों जोसखीनायकसों कहैतोलौंचला।
होय॥ सवैया ॥ सबरैनजगीहरिकंठ लगीरतिरंगरंगी अलसातखरीहै -
डगएकचलैफिरिकै चितवैमुरिकैअंगरात मरोरभरे है ॥ बिथुरीअलकैंझ-
लकैंअमवारिझुकीपलकैं मुखढारढरीहैं । लगिपीककीलीककपोलननीक
लसैअतिसारी सलोटपरीहै ॥ २९५ ॥ चल
अक्षर ३० गुरु ११ लघु १९ ॥

दो० यौंदलमलियतनिरदईदईकुसमसोगात । 228
करधरदेखोधरधराउरकोअज्योंनजात ॥ २९६

यहनायका सुरतसमैमर्दित अतिबिकल भईहैसोसखी नायकसों कह
तिहै ॥ कवित्त ॥ सुखहैंसखीनबिच देखेमोहधायवैखवायकछु चाइबर
कीनोबसुवसुहै ॥ कोमलमृनालिकासी मल्लिकाकी मालिकासी बालिका
जुड़ाहों मंडिमानसकिपसुहै ॥ जानेनबिभाति भयेकैसेबसुनेकोवात देखो
आयगातजात भयोकधौंअसुहै ॥ चित्तसीजुराखी यहचित्तनो बिचित्रगति
कहो नयेरसिकधौंयामें कौनरसुहै ॥ २९६ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११लघु१९॥

437 दो० लहिरतिसुखलगियेहियेलखीलजोहींनीठि।
खुलतनमोमनबंधिरहीवहैअधखुलीडीठि ॥ २९७

यहसुरतांत नायकाकी वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ केलिकला सुख झेलिप्रभात लसीपर्य्यंक पैराधिका प्यारी ॥ अंकलगी तऊनाज पगी रही नारिनिवाय महाछविधारी ॥ सोहैंचितैवेको मोहुहयौतव नैसकभौंहउचायनिहारी ॥ सौवनिदीअंखियां अधखोलीचितौ नहियेतटरै नहींटारी ॥ २९७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

209 दो० बिनतीरतिबिपरीतकीकरीपरसपियपाय।
हंसिअनबोलेहीदियौऊतरादियौबताय ॥ २९८

यहरति बिपरीति है सोसखीकोबचनसखीसों ॥ कबित्त। केलिकला कुशलकुरंग नयनीकेअंग अंगकीनिकाई दुतिरतिकी रतिकरी ॥ बहिरत अंतरबिहरेबिहरे बिबिधि मदन महीपकी बिभूतबढ़तो करी ॥ तैहौंरति मंदिरमें राधेके परसपगि रतिबिपरीतकी पियारेबिनती करी ॥ प्यारीमुसकाई अनबोलेंही बतायो दिया प्रीतमकेजीकी चाहयाहीमें सहीकरी ॥ २९८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

207 दो० परयौजोरबिपरीतरतिरमीसुरतरणधीर।
करतकुलाहलकिंकनीगह्योमौनमंजीर ॥ २९९

यह बिपरीत वर्णननायका प्रौढ़ा सखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ श्रीवृषभान सुतातन योवन जोतिजगे रतिलाजनलागी ॥ भौंह बिलासनिहासनिकै हरिसाजनको सुखसाजनलागीं ॥ धीरमहा रति संगरमेंबिपरीतरची रतिराजनलागी॥ मौनगह्यो बिछयांनतहो रसनारसही रसबाजन लागी ॥ २९९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

90 दो० मेरीबूझतबाततूकतबहरावतबाल।
जगजानीबिपरीतरतिलखिबिंदुलीपियभाल ३००॥

यह नायका प्रौढ़ारति बिपरीतकोनी सखीसोंदुरावतिहै सोप्रवीनसखी जानिलई सोनायक सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ हौंहितूके बलबूझत हूं तू बहरावत बातहो मेरी ॥ पून्योंको चंद उदोतकरेतब कैसे दबैकिये ओट

lahi rati sukha lagiyai hiye lakhī lajāunhiṁ dīṭhi
khulati na mo mana bandhi rahi, wahai -adhkhuli dīṭhi

khulati - khuṭṭi
dīṭhi can hardly be right in both places
ceshṭā - uski chuṭṭi nahin

binatī rati biparīta kī karī parasi piya pāya
hansi -anabole hī diyau -ūtara diyau batāya

paryau jora biparīta ratī rūpī su rata rana dhīra
karati kōlāhala kinkinī gahyau mauna manjīra

mere būjhe bāta tū kaha baharāvati bāla
jaga jānī biparīta ratī lakhi bīdulī piya bhāla

.ammāṇāl

ramana sahajam hansi ramani ramam ratibhavanila bilāsa
citavi hari harana sahara sagarabha, salaja, sahāsa,

bhakunit hara

haja kī ghiga bala ghanapiyata sobhita subhaga subekha
bada nana thana thati bhibhiyata sona rana chana kī rekha

= hanji rana

ghiga f.= side.
sada fresh turtha recent.
hai for A have expression in-

-aja kachu-unai hiaye, hiaye naye thika thai na
cita ke hita ke ciguna ye niti ke hamuya na naina

ratibhavanila bilāsa

ratibhavanila bilāsa

ratibhavanila bilāsa

अंधेरी ॥ तेहिंरिसोंबिपरीत करोरतिक्यों दुरिहै अबतौ हमहेरी ॥ नीको हैजानिपरोसबको पियभाललखो बिंदुली तियतेरी। ३०० ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु० लघु ३४ ॥

दो० रमनकह्योहठिरमनसोंरतिबिपरीताबिलास। 210
चितईकरलोचनसतरसगरबसजलसहास ॥३०१

यह नायकने रतिबिपरीतकी बातसुनाईनै चितवनमेंचेष्टा कीनीसोसखीसखीसों कहति हैं ॥ सवैया ॥ बृषभान सुता नदनंदलला रसकेलि कलानप्रवीण खरे ॥ रतिमंदिरमें अतिप्रेमपगे रतिकंतबिलासके रंगढरे ॥ रतिकी विपरीतकरै रमनी हंसियोंजब प्यारे निहोरकरे। तबप्यारी किये लखि नैन तिरीछे गुमान भरी अरुलाज भरे ॥ ३०१ ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ११ लघु ३० ॥ सखीनको लखिबो ॥

दो० पट्टकीढिगकतढांपियतसोहतसुमगसुभेष। 94
हदरदछदछबिदेतईहसैदरदकीरेष ॥ ३०२ ॥

यहसुरतिको चिन्हनायका दुरावतिहै ॥ सोसखी नायकासों कहति है ॥ सवैया ॥ आजभटूरतिरंग के मंदिर तू मनमोहन केसंगजागी। केलिबिलासनि केबड़िभागिन तैंरिझयोफल लेअनुरागी ॥ ढाँकतक्यों पट कीढिगसों अतिसोहति चारुप्रभान सोंपागी। देतमहाछवि कीहृदयौंयह रेखरदच्छद कीसंदलागी ॥ ३०२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० आजकछूऔरेभयेठयेनयेठिकठैन। 187
चितकेहितकेचुगलयेनितकेहोहिंननैन ॥ ३०३ ॥

यहनायका केनेत्रसुरत चमकतदेख सखीनायकसों कहै तोसछताइय नायकासोंकहै तोखंडिता ॥ सवैया ॥ आलसकेरसमें बिथकेरंग लाल केरंगमुरंग भयेहैं। देतकहैंचितके हितकोचुगली ठिकठैननयेई ठयेहैं ॥ निंदतहैं अरबिंदप्रभा अनुरागपराग मेंपागिगयेहैं। हेाहिंनयेतिनके सजनी दृगआजअपूरब ओपछयेहैं ॥ ३०३ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सुरतदुराईदुरतिनहिंप्रगटकरतरतिरूप। 91
छुटपीकऔरउठेलालीओठअनूप ॥ ३०४ ॥

यहसुरतकेचिन्ह देखसखीनायक सोंकहतिहै ॥ परकीयाजो नायका सखीसोंकहै तोअन्यसंभोग दुःखिताहोय ॥ सवैया ॥ भूषणचारु बनाय सजे कचफूलगुहे रुचिआड़बनाई । हातकहापलटैं पटराधिकेलीक कपोलन पोंछिकैआई ॥ देतकहैंरति रंगकीभांति अनूपमकांति दुरैनदुराई । पानकीपीक छुटैअधरान पैओरकछू प्रगटीअरुणाई ॥ ३०४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

86 दो० मोसोंमिलवतिचातुरीतूनाहिंभानतभेउ ।
कहैंदेतयहप्रगटहींप्रगट्योपूसपसेउ ॥ ३०५ ॥

यहनायका श्वेतलखिसखी सुरतभयोजानि कहतिहै लक्षिताजानिये ॥ सवैया ॥ आजपगीसुख पुंजमेंप्यारी निकुंजमेंकेलि करीमनभाई । पीकगईछुटि ओठनपै प्रगटीमुखमंडलपै अरुणाई ॥ भेदकीबात कहैकिन भामिनी मोसोंचलावत क्योंचतुराई । तोतनदेतकहै प्रगटैयह पूसकेमास पसेउमेंन्हाई ॥ ३०५ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

85 दो० नटिनशीससाबितभईलुटीसुखनकीमोट ।
चुपकरियेचारीकरैसारीपरीसरोट ॥ ३०६ ॥

यह नायका लक्षितामरगजी सारीदेखि सखी नायकासों कहति है ॥ कवित्त ॥ रसकीटमंगभरी रंगभरीसोहतिहै अंगकीशिथिल द्युति अमिजलछाईहै । झूमतिझुकति अंगरातिजमुहाति मुसकाति अरसाति सरसात्यों मुनिकाईहै ॥ मोटेलूटी सुखकीप्रगटभई तेरेमीसक्यों तूमुकरति मनमथकी दुहाईहै । चुपक्योंनकरै बलियेईतोकरत चोरीजेतआज सारी में सरोटपारि आईहै ॥ ३०६ ॥ मरालअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

11 दो० मोहिंकरतकतबावरीकियेदुरावदुरैन ।
कहेंदेतरंगरातकेरंगनिचुरतसेनैन ॥ ३०७ ॥

यहनायकाके नेत्रदेखिसखी कहैतोलक्षिताहोय । जोनायकके विधमाननायकको सखीसों नायकाकहै तोखंडिताहोय । कवित्त ॥ सुरति के चिन्ह चतुराईसों लुकायौतनभूषण बनायसजेबसन तुरतहै । कृष्णप्राण प्यारेकेसनेह सरसानीतातें गातअरसानेरस उमगिदुरतहै ॥ काहेकोसया

moson milavatī ćāturī tū nahin bhāṅatī bheda
kahai deta yaha pragaṭa hī pragaṭyau pīsa prasveda

ćāturī ćaturā-ī bhāṅatī /shoṣaṇī
sakhi h rajekā nibhāvanāl

naṭa na, īsa sābita bha-ī, luṭī sukhana kī moṭa.
ćupa kariye ćārī karatī sārī parī saroṭa

īsa sābita lokokti
ćupkī yaha ćuglī khāti hai &c

kāvyaliṅga -anumānāl.

ćatha nāyaka varṇana
mohi karata kata bāvarī kiye durāva durai na
kahen deta raṅga rāta ke raṅga nićurata se naina

kahai V.

kāvyaliṅg raṅga nićuṛata hue nehra ne
rāt kā rang dṛiṣh kiyā

kata kyūṅ

[illegible] -ārasa -umage bhau naina musakāta
nāti rami nati deti hahi -aurai prabhā prabhāta

[illegible]

kori jatana kijai ta-ii , na jai, neha ûurai na
kahai deta ûita ûikanau na-ī ûukhā-ī naina
[illegible]
na-ī kajal u[illegible] or na -ī "nor is this"

[illegible] rangīle ale jaya jaje baje subha ûaina
-ulasaun hain saunhain kaun kahain hainsāhain naina
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नं मोहिंबावरी करतअबकियौ तैंदुरावकाहिकैसे कै दुरत है। प्रगटपुकारै रंगरातकेकहत येतोलोचन युगुलमानेरंगनिचुरत है ॥ ३०७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरू १२ लघु २४ ॥

दो० लाजगरबआलसउमगभरेनैनमुसकात। 84
रातरमीरातिदेतकहिऔरैप्रभाप्रभात ॥ ३०८ ॥

यह नेत्रनकोभाव देखसखी नायकसों कहै तोलक्षिताहोय जो नायका नायकसों कहै तोखंडिताहोय ॥ कवित्त ॥ सारसतैंसरस लसत भरे आरसमहारस मगनहेरि हियेहरिलेतहैं ॥ लालडोरेरातहैं औरउपसाजतहैं फूलेमुसकातहैं निकाईके निकेतहैं ॥ मैनकीउमंग भरेयौबनके रंगभरेलाजकी तरंगभरेगरब समेतहैं। सेनसुखपागे मिमजागेदृगतेरे बाम रातरमिरतको प्रभातकहेंदेतहैं ॥ ३०८ ॥ नरअक्षर ३३ गुरू १५ लघु १८ ॥

दो० कोटियतनकीजैतऊनागरिनेहदुरैन। 75
कहेदेतचितचीकनोनईरुखाईनैन ॥ ३०९ ॥

यह नेत्रदेखसखी नायकासोंकहै लक्षिताहोय ॥ सवैया ॥ तोमन मोहनसों मिलयोंमनमें तवहींछबिही लखिपाई ॥ बूझततोहिहिये हितु मानिकै मोसोंचलावत तूचतुराई ॥ कोटिउपायकरै किननागरि नेहकी डीठि दुरैनदुराई ॥ नैननमांझ रुखाईनई यहदेतकहेचितकी चिकनाई ॥ ३०९ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० सहीरंगीलेरतिजगेजगीपगीसुखचैन। 87
अलसौहैंसौहैंकियेकहैंहसौहैंनैन ॥ ३१० ॥

यह नायकाके नेत्रनको भावदेखि सखीकहै लक्षिता ॥ सवैया ॥ मोमोंछबीलो छिपावकहापरतच्छही छातीसोंछैल लगाईहै ॥ देवकहै अलसौंहीं हसौंहींसी आईंरिसौंहीं हियेउमगाईहै ॥ प्यारेपिया पर्य्यंकपै पारिकैप्रेमपियूष पियायपगाईहौं ॥ कामकलोलनि कामनिआजुकी जामनिचारहूं जामजगाईहौ ॥ ३१० ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ० लघु ३४ युगल दरशन ॥

दो० नितप्रतिएकतहीरहतवेसबरनमनएक।
चहियतयुगलकिशोरलखिलोचनयुगलअनेक३११॥

यह युगलकी शोभाअरु दोउनके हितकी अधिक सखीको बचन सखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ नितश्री वृषभान सुतानंदलाल बिराजत हैं छबिपुंजछये॥ कविकृष्णकहैं मनसोल वहीक्रम बातरताइक रंगरये॥ सुखदेखिसिहात सबैसजनीविधिसों विनवैं अभिलाखभये॥ यहरूपबिलोकि वेकौं तनमेंप्रतिरोमनि लोचनक्योंनभये॥ ३११॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० मिलिपरछाहींजौन्हसोंरहैदुहुनकेगात।
हरिराधाइकसंगहीचलेगलिनमेंजात॥ ३१२

यह दोउनको मिलबो गलीमेंजात एकही जानिपरतहै॥ कवित्त। दोऊरसभीजे रूपरीझे तनुनाई भरेदुहुनके सनेह उमगत गातगात हैं॥ दंपतिकरतिचतुराईके चरितचारु औरकौन जानेये प्रवीननकी बातहैं॥ जहांपरछाईतहां प्यारी यौंबिलोकियति जौन्हको प्रकाशतहां कान्हहीं लखातहैं॥ कहैंकविकृष्ण कुंजकेलिकौंनिशंक भयेदोऊएकसाथही गली मेंचलेजातहैं॥ ३१२॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० तजितीरथहरिराधिकातनदुतिकरिअनुराग।
जेहिव्रजकेलिनिकुंजमगपगपगहोतप्रयाग३१३॥

यह युगल वर्णन॥ कवित्त॥ तीरथनि सटकतकाहेकौं भटकत क्यौंन अटकत व्रजशोभाकी हिलगमें॥ राधाबनमालीकी सरसगोर श्यामदुति सकलनिकाईकी लसतसारसंगमें॥ तासोंकरिप्रीतियह निगमप्रसिद्ध बिधि सिद्धिबिधि शंकरसे तिनहूंते अंगमें॥ डगडग प्रतिहोत प्रगट प्रयागपग जिनकेपरतिकेलि कुंजनकेमगमें॥ ३१३॥ मरालअक्षत ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० उनकोहितउनहींबनैकोऊकरैअनेक।
फिरतकोकगोलकभयोदेहदुहूंज्योंएक॥ ३१४॥

यह दोउनके हितकी अधिकाई सखीसखीसों कहतिहै॥ कवित्त।

-anukūla nāyaka varṇana

nitā prati -ekata hī rahata vesa barana mana -eka
ćahiyata yugala kisora lakhi locana yugala -aneka

niti | baisa | jugala kisora | jugala | VI.

baisa = -āyu
baran kahaiṇ -akshar ćai stuti — samālankāra
-akshar syāma syāmā.
stuti kyaṇki donaṇ pratāpawān haiṇ

mili paraćhāhiṇ jonha saṇ rahē duhuni ke gāta
hari nādhā -ika saṇga hiṇ ćale gali meṇ jāta

jaise jhonha se parchā-in milti
mīlitālankāra

hari prakās nāyaka syāma hai so nayakā kī parchā-in son milyo
nāyakā jonha saṇ miliṇ

taji tīratha, hari rāćhikā tana duti kari -anurāga
jehi braja kelini kunja maga || paga paga hota prayāga
nikunja = arbour aswellas kunja — planet prayāga

srikrishn kā sole syāma so-ī ramania aur rādhā kī sone jaisī
so gangā aur unke pimeī ! ī mahāvāt kahi ćhor ke anurāga se
saraswati

-anugyālaṇ lāī acceptance

another reading taja tī ra[illegible] saṇ t-ya man wholai sonā braj[illegible]

-unakau hita -unahiṇ baṇe, ke-ī karau -aneka -
phirata kāka [illegible] ika, bhayau duhuṇ ćhika jiyau -ek-

jiyau jīva
golaka the socket of the eye

tuma, sautiņā dekšala, ōaī -apiņ ķiye tuŋ, šāla,
pāirali zabzaņ ne - ņahaņahī -uhai ņaņogaji māla

आधे आधे कहिबेको राधे माधो लहिबे को आधोछिनु राधाते न माधो बिछुरतहैं॥ ऐसोकछू निमगह्योमनमें न भेदरह्यो दुहुन के प्रेमबढ़योकह्यो नपरत है॥ पलकमेंआय इतपलकमें जायउतपलक नचायनटबिद्यासी धरत है। राजाराम मेरेजान दुहूतन एक प्राणकागट्ठग पूतरीन फिरबो करत है॥ ३१५॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० बियसौतिनदेखतदई अपनेहियसोंलाल।
फिरतसबनमेंडहडहीउहोंमरगजीमाल॥ ३१६॥

यहनायकाकी मालापायबहुतप्रसन्न भई है सोसखीनायक सोंकहति है प्रेमगरबिताहोय॥ कवित्त॥ सौति केलखतमन भावनमया के दीनी एरतेउतारि परगटकीनीरति है। तबहीतेंरहसति बिहसति हुलसतिविलसतलसतगुमानभरी अति है॥ मनमेंमुदितफूली तनमेंसमात नाहिंचल चितबृत अनुराग उझलतिहै। मरगजीमालाउहोडर धरैबालाबहडहडही आलिनकेभुंड मेंफिरतिहै॥ ३१६॥ मारालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० अपनेकरगहिआपहीहियपहराईलाल।
नीलसिरीऔरचढ़ीबोलसिरीकीमाल॥ ३१७॥

यहनायकने अपनेहाथ बनाय बोलसरी की माला पहिराईताहि पाइयाकीशोभा अधिक भईसोसखी नायकसोंकहति है॥ सवैया॥ आपनेहाथ नबीनके फूलबनाईगुही मनलायकन्हाई। मालसुबोलसरीकीरसालसुगंध भरीअतिही छबिछाई॥ आलिनकेगनमें लसिकैहंसिकै हठिप्यारीहिये पहराई। ओपअनूपलही तरुनी बरनी न परै अनुरागनिकाई॥ ३१७ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० तीजपरबसौतिनसजैभूषनबसनशरीर।
सबैमरगजैंमुहुकरीउहीमरगजेचीर॥ ३१८॥

यहनायका प्रेमगरबिता मरगजेचीरता को गरबभयो तातेंसिंगारन के योसोसखीकोवचन सखीसोंकहतिहै॥ कवित्त॥ सौतिनहुलसिगनगौरिकेपरबसाधि भूषनबसनबहु भांतिनसुधारेहैं। तिलकतमोरबेंदी बेसर तरयौनासजिअंजनसोंआंजे चारुलोचनअन्यारेहैं॥ कृष्णप्राणप्यारेकारिझाइ

बेकोहेाड़ीहेाड़ाचपल कटाच्छहायभाइन सोंढारेहैं । उहींसकरातिमरगजे चीरहीसोंसबहीके नीकेमुखअतिफीकेकरि डारेहैं ॥ ३१८ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

81 दो० औरैगतिऔरैवचनभयौबदनरंगऔर ।
द्यौसकतेंपियचितचढ़ीकहैचढ्योंहैत्यौर ॥ ३१९ ॥

यहनायकानायकके प्रेमगरबितैंकाहू कौमनआनत नाहींसोसखीसखी सोंकहै ॥ सवैया ॥ औरहीचाल बिलोकनऔरही देखोयों आननहूं रंग औरही। बोलतआनही भांतिगुमानसोंज्योंनिधनी निधिपाइकै बोरही ॥ बूझेहूबातकेउतर देतनडीठिकहूं ठहारातनठौरही । ह्वैकदिनातैंचढ़ीहरिकेचितप्यारेचढ़ायेही राखत न्यारेही ॥ ३१९ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

108 दो० कियोजुचिबुकउठायकैकंपितबरभरतार । ?का
टेढ़ीयौंटेढ़ीफिरतटेढ़ैतिलकललार ॥ ३२० ॥

॥ सवैया ॥ ठोढ़ीउठायकरयो चितचायसोंनंदलला अतिहीअनुरागे। भाललगावतही अंगुरीकर कंपभयो अतिहितसों पागे ॥ आनेनआनेमनै तबतेंनगनैंकछुआपने प्रेमकेआगे । टेढ़ीयेटेढ़ीफिरैमृग लोचनिटेढ़ोईटीको लिलार पैलागे ॥ ३२० ॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

113 दो० सुघरसौतिबसपियसुनतदुलहनिदुगुनहुलास ।
लखीसखिनसोंडीठकरिसगरबसलजसहास ॥ ३२१ ॥

यहनायकागुन गरबिताआपने गुनकेगुमाननेसौतिनके आगमकोदुख नाहींमानतिप्रसन्न भईसोसखीतिन चितवतिहै सोसखीसखी सोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ रूपकीरासि सखीन समाजमेंसोहै सिंगारसजे ब्रजनारी । काहूकहो सुघरायन कैतुवसौतिनैलीनौं रिझायबिहारी ॥ यौंसुनकैअति हीहुलसैगुन चातुरी कोपरमा वधिप्यारी । लाजगुमानभरी मुसकायकै रंचक डीठिअलोतन डारी ॥ ३२१ ॥ वारनअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

112 दो० दुसहसौतिसालीसुहियगननननाहिंबिहाय ।
धरेरूपगूनकोगरबफिरतअछेहउछाय ॥ ३२२ ॥

-aurai gatī, -aurai baćana, bhayau badana raṅga -aura
dyausaka teṉ piyu ćita ćarhī, kahaiṁ ćaṛhaubhaiṁ tyaura

bhedakātisāyokti

kiyau ju ćibuka -uṭhāya kari kampata kara bharatāra
ṭeṛhiyai ṭeṛhī phirati ṭeṛhe tilaka tilāra

ćibuka the chin.
bhartār husband

ṭeṛhiyai ṭeṛhī phirati she goes about coquettish with pride because he has ~~mar~~ placed the tilak crookedly on her forehead in consequence of his hand trembling when he touched her chin

ṭeṛhiyai from S. f. ṭeṛhī vanity
ṭeṛhī from ṭeṛhā perverse

sughara sauṅtī basa piya sumata dulahinī deṛgeṇa hulāsa
lakhī sakhī tana dīṭhī kari sagaraba salaja sahāsa

sakhī tāna apparently sakhī kī ṭaraf
? does sughara agree with sauṅtī or dulahinī

dusaha, sauṅti sālai ju hiya, ganati na nāha biwāha
dharai rūpa guṇa kau garaba phirai -ácheha -uchāha

-ácheha -uchāy ? -anaṅta -ānand se

x

khalā-barha-ī baṅkari khake, haṭai na kubati kuṭhāra-
-ālabāla-ura jhālari khari premataru ḍāra

-ālabāla = basumpa[illegible]-ranne [illegible]-ţ-bee
jhalari [illegible] jhalarua [illegible] kemba jhāṅa-ru
[illegible] [illegible] khari ā aneiteeneeng le-pani
kubati [illegible] [illegible] premataru jara kaṭṭā nahin kubalā ke
[illegible] jar-ta-jāl-ţ.

karata jāta jeti kaṭani baṛhi rasa saritā sota
-ālabāla-ura premataru śilauliṭau dṛiḍha hota.

kaṭani cutting (generally for harvest) jalakaṭani apparently means
cutting off the supply of water. kaṭani also means consuming love

यहनायका आपरूपकेगुनके गरबतें औरकोचितमें आनतनाहींसोसखी सखीसोंकहति है॥सवैया॥ नाहकेब्याहमेंप्यारीअछेहउछाहभरीपटभूषन ठानत। जानतहैनिहचै अपनेजिय कोबनिता करिहै नहिहांनत॥ रूपके यौवनकेगुनके अभिमानतेंआनहींनामनआनत॥ यद्यपिसौतियासालतऊ उरमेंवृहतीनरतीदुखमानत॥ ३२२॥चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० खलबढ़ईबलकरिथकेकटैनकुवतिकुठार। 294
आलबालउरझालरीपरीप्रेमतरुडार॥ ३२३॥

यहप्रेमकीदृढ़ता सखीसोंनायका कहैअथवानायककहै॥ कवित्त॥ देखतहीमूरति मधुरमनमोहनकी नैननकेमिलेंमिल्यो मनअवदात है॥ आलबालउरतेप्रगट भयेप्रेमतरुदिनदिन झालरतुअतिसरसातहै॥ ताछिदूरिकरबेकों कितने लखनखगि कुवातकुठार गहिकीनौ उतपात है कहैकविकृष्णसबै याकेअतिबलकरि नेकनघटतत्यौंत्यौं दृढहोतजात है ३२३॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० करतजातजेतिकघटनिबढ़िरससरितासोतु। 295
आलबालउरप्रेमतरुतितौतितौदृढ़होतु॥३२४॥

यहसनेहकेअंगमें दृढ़तानायकाकी अथवा नायकको वचन सखीसों सखीनायकाहूसों कहैतोमभवहै॥ कवित्त॥ आलबाल उरमें मनोज वयौनेहबीजजातेभयोआलीप्रेमअंकुरउदोतहै। सुरतिसलिलसींच्योयाही नेउमंगउठीफूल मेंनभेदरह्योदुहुनके प्रेमबढ़मेकछोन परतहै। पलक मेंआयइतपलकमें जायउतपलक नचायनटविद्यासीधरतहै॥ रजाराम मेरेजानदुहूतन एकप्राणकागहग पूतरीनाफिरबो करतहै॥ ३२४॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

दो० वियसौतिनदेखतदईअपनेहियसोंलाल। again 316
फिरतसबनमेंडहडहीउहोंमरगजीमाल॥३२५॥

यहनायकाकीमाला प्रायबहुतप्रसन्नभईहै सोसखीनायकसों कहतिहै प्रेमगरबिताहोय॥ कवित्त॥ सौतिकेलखत मनभावन मयाकेदीनी उरतेंउतारिपरगट कीनीरतिहै। तबहीतेरहसति बिहसति हुलसतिखिल-

सतलसतगुमानभरी अति है ॥ मनमेंमुदितफूलीतनमें समातनाहिंचलचित व्रतअनुराग उफलति है। मरगजीमाला वहीउरधरै बालावह डहडही आलिनकेझुंडमें फिरतिहै ॥ ३२५ ॥ मराल अक्षर३४ गुरु १४ लघु २०॥

554 दो० अपनेकरगहिआपहीहियपहराईलाल।
नीलसिरीऔरैचढ़ीबोलसिरीकीमाल ॥ ३२६ ॥

यहनायकनेअपने हाथबनाय बोलसरीकी मालापहिराई ताहिपाइ याकीशोभाअधिक भईसोसखीनायक सोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ आपने हाथनवीनके फूलबनाईगुही मनलायकन्हाई। मालसबोलसरीकोरसाल सुगंधभरीअतिही छबिछाई ॥ आलिनकेगनमें लसिकैहंसिकैहठिप्यारी हियेपहराई। ओपअनूपलही तरुणीवरणीनपरै अनुरागानिकाई ॥३२६॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

333 दो० तीजपरबसौतिनसजेभूषणबसनशरीर।
सबैमरगजैमुहकरीवहीमरगजेचीर ॥ ३२७ ॥

यह नायका प्रेमगर्बितामरगजे चीरताको गरब भयीताते सिंगार न कियौसो सखीको बचनसखीसो कहति है ॥ कवित्त ॥ सौतिन निरखे निरखेबिन चैनपरैनघरी है ॥ व्याकुलहै मुरझायपरी तलफै बिननीर मनौं सफरी है। मैनगहर बिथाचितही नितहीनित होतखरीये खरीहै जात मरीछिनुकेबिछुरे यहप्रीत जरीअरी कौनकरीहै ॥ ३२७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

185 दो० मोहदयोमेरोभयोरहतजुजियामिलसाथ।
सोमनबांधनसौंपियेपियसौंतिनकेहाथ ॥ ३२८॥

यहनायकाप्रौढ़ा उराहनौ नायका बचन ॥ सवैया ॥ जोमनमोहि मयाकैदियोतुममो जियसोमिलिकै रसभीजै। भेदरह्योनिस्वरूपसुभायनें प्रेमविषूषसदामिलपीजै। मैंअपनोकरजान्योंयहो अबअंतरहोतछिनैछिन छीजै। सोमनजोरावरीकरि मोहनसौतिनकेकर बांधनदीजै ॥ ३२८ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

INDIAN INSTITUTE

ल -apane kara guhi -āpa haṭhi hiya pahirā-ī lāla
naulàsirī -aurai ćaṛhī maulasirī kī māla
new charm

-apane kara gahi -āpa hī hiya pahirā-ī lāla,
nīla sirī -aurai ćaṛhī bola sirī kī māla.

nīla sirī ? bhedakātiśaya
chekānuprāsa

guhi gūṇṭh
-āpa hī seems better than -āpa haṭhi

ल tīja paraba santina saje bhūkhana basana sarīru
sabai maraqaje munha karī wahai maraqaje cīra

ल mohi diyau, moran bhayau, rahata ju nili jiyu sātha
so mana bāndhi na dījiye, piya, santina ke hātha

1

I bhaye baṭā-ū meha lāji, bāra bahati bekāja –
-eba, -ali, lela mahamau -ura -uṭhaiati -ali lāja.
Jaiī bo nāyaka ā ...ai

2

lāji nimeli, lagyau meli, yahai ...ā u
-ana -āye -āwai yahiṃ, -āye -āwala, -ā-u
my heart being attached to [illegible] with the same disposition

lalana se ...ā -ura yahaiṃ -ali ...eha yeṃ pāgi
lawala ...āwā deha ...ekha ...ivana ...a muṃha lāgi

...u - ...
...ana ...

3 ...ā ...ura mana phere lai palaṭai dini piṭhi
...auna ...ā ...yatia ...awai lala lukāwala dīṭhi

...

दो० भयेबटाऊनेहतजिबादबकतबेकाज।
अबअलिदेउराहनौंउरउपजतअतिलाज॥३२९॥ 140

यहनायकापरकीयाप्रौढ़ा उराहनौनायकके विद्यमानन।यका सखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ नैननसोंतनसों मनसोंरहनेईमिलेत्वहते सुखसाजनि। भूलिगईं सबबेबतियां हितपुंजनकोबहुभांतिविराजनि। येतजिनेह बटाऊभयेअब बादबकैंसजनीबिनकाजनि। देतउराहनौऐसेनको अपने उर हीचपियेअतिलाजनि॥ ३२९॥ मदकलअक्षर ३०गुरु ८ लघु २२

दो० तोहीनिर्मोहीलग्योमोहीयहैसुभाउ। 352
अनआयेआवैनहींआयेआवतआउ॥ ३३०॥

यहनायकापरकीयाप्रौढ़ाहै नायककोनिठुरताई अपनेहृदयकीआशक्ति उराहनीदेकरप्रगट करतहैनायकाकोबचननायकसों॥ कवित्त॥ नेहभरेनैननकीजबतेनजरमिलीतबहीतेचितकीलगायो अतिचावहै। मिलतमिलतमनहिलमिलएक भयेपरयोप्रेमफंदको अनोखोउरभावहै। कहनसकततेरोहियोनिरमोही अतिमेरोहियागह्योकछू ऐसोईसुभावहै॥ तेरेअनआयेअनआवैहूं रहतमहतेरेआयेआय जातप्यारोतनआवहै॥ ३३०॥ पयोधरअक्षर २६ गुरु १२ लघु २४

दो० ललनसलौनेअरुरहैंअतिसनेहसोंपागि। 186
तनककचाईदेतदुखसूरतलौंमुंहलागि॥ ३३१॥

यहनायकाप्रौढ़ा हैनायकअंतष्करणमैं कछूकपटजानि उराहन में प्रगटकरतहैनायकाको बचननायकसों॥ सवैया॥ नैकाचितैचितचोरतहौ उरजोरतहौअनुरागसचाई॥ रावरेप्रेमप्रबंधनकी जितहीतितही सुनियेचरचाई॥रूपसलोनेसोनेह पग्योहरिप्रीतकेरंगमेंबुडुरचाई॥ सूरनलौंमुंह लागितऊदुखदेतललायहनेककचाई॥३३१॥ नर अक्षर३३ गुरु१५ लघु १८

दो० आपदयौमनफेरलैपलटैंदीनीपीठि। 184
कौनचालयहरावरीलाललुकावतडीठि॥ ३३२॥

यहनायकाप्रौढ़ाउराहनी देतहैनायकाको बचननायकसों॥ सवैया॥ नंदललाउरझायहियो अबदेखवेकोतरसावतहौं॥ अबतौहमकोयहजानि

परीयहलाजइतैनहें आवतहौ ॥ तुम मोहिंदयोअपनोमनआपहो फेरलै क्योंसिरनावतहौ ॥ अबतौपलटेइतपीठिदई हरिकारेको दीठि लुकावत हौ ॥ ३३२ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२

398 दो० बिरहबिथाजलपरासिबिनुबसियतमोहियलाल ।
कछुजानतजलथंभविधिदुरयोधनलौंलाल ३३३॥

यह नायका प्रौढ़ा उराहनो नायकाको वचननायकसों ॥ सवैया ॥ हरिमोहिय प्रेमसरोवरमेंबसिवो निसबासरठानतहौ॥कबिकृष्णाकहै अपने उरकोहमसोंपियभेद न भानतहौ ॥ बिरहाकुबिथानाहिं नेकुतुम्हैंपै हमें अतिहीदुखदानतहौ ॥ कछु आनि परीदुर्योधन लौजलथंभनकी बिधि जानतहौ ॥ ३३३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

202. दो० दक्षिणपियहवैबामबसिबिसराईतियआन ।
ऐकैबासरकैबिरहलागेबरसबिहान ॥ ३३४ ॥

यह नायका प्रौढ़ा सुनायकको उराहनो देतहै दक्षिणपिययापदतें चतुर पिय संबोधन जानिये॥ जो दक्षिण नायक न बनै ॥ कबित्त ॥ रसरीत नागरहौ चातुरीके सागरहौ कोटिकाम कलानिधि उपमा न परसै ॥ सब सुखदेत हौ निकाई के निकेतहौ तुम्हैदेखतहीं प्रीतसबहीके उरमरसै ॥ दक्षिणसनेह हरिऐसे भयेबाम बसि बसिराई और तियदेखिबे कौंतरसै॥ कहैंकबिकृष्णा एकभौन बसिरहे हमध्यान लागोबिरह बिहानलागोबरसै॥ ३३४ ॥ सुरनअक्षर ४६ गुरु २ लघु ४४

189 दो० फिरतजुअटकतकटनबिनरसिकसरसनखियाल ।
अनतअनतानितानितहितनुचितसकुचतनाहिंलाल३३५॥

यह नायका प्रौढ़ा उरहानौं नायकाको वचननायकसों ॥ कबित्त ॥ कृष्णाप्राण प्यारेजग जानतातिहारे गुनगूढ़न उधारऐसी ढरनिढरतहौ॥ सब हीको भावतहौ रसिक कहावत पैरसनरसीलेलाल ख्यालसे करतहौ॥ अटकति फिरतजगन बिन ठौर ठौर प्रेमपन सांचोपैकबहुन उघरतहौ ॥ अनत अनत नितकी जतनबलनेहरंचकहू जियमें न सकुचधरतहौ॥ ३३५॥ सुजअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

Y

L biraha bithā jala parasi bina basiyata mohiyatāla
kaichu jānata jala thambha bidhi, duryodhana tum, tāla ?
Ground well in the depths of my heart without being touched by the water of my affliction
a letter -

L daichina piya huvai vāma basa bisarā-i tiya-āna
-ekai bāsara ke biraha lāge barakha bitāna

Y

L
thirata ju -atakata kaṭani bina, rasika, su rasa na khiyāla —
-anata-anata niti niti hitani kata sakuchāuta tāla

sakucata nahin seems better
it must be intentional since sakucāwata
would spoil the metre sense -

×

I ṣuṇara bhayaṅkara gurujanaṅku se cāyaru kulala kṛṣṇa
kyaṁ ākara bhāryaṁ' ani cāyaṁ ākarṣaṇa nalini nanda lāla

-aṣṇa ṣṇa bhāryaṁ ākarṣaṇa the c in bharya may be short
kṛṣṇaṁ - ṣṇ.

×

I saṅsāra sāgara se bhāvuka kī sakha na ćhuṭai hari rāya
kṛṣṇa ṭera bihārala phūṭa kala bihārala -ura -āya

kṛṣṇa ṭera
bihārala pā kṛṣṇa ke kaṭe lain

ćhiṅka ćalalī, khaḍakatī ćhuṅka, bhuja pāśa gala ḍārī
ćaḷhī -aṭā dekhati ghaṭā bijju ćhaṭā sī nārī

pāśa ḍāla
bāhuvalleṣṭana
veṣṭhana

'kuṅjā-ī' saba ṭola mana 'rāī' pa sāthī kahāya
ga kaṇa -eṇī bīja -ī, s tyaṁ karī -ākṛṣṭa -āya

[illegible]

दो० सुभरभर्‌योतुवअगुनकननुपक्यौंकुवतकुचाल। 196
क्यौंधौंदार्‌योजोहियोदरकतनाहिंनलाल ॥ ३३६ ॥

॥ सवैया ॥ मोटरमें अनुरागके फूलतेप्रीति प्रतीत कलीप्रगटीज्यों ॥ रावरे गुनके कानकाछलके बकुलासंग भूरिभरेत्यों ॥ बंचकताईकीबातन सोंकबिकृष्ण कहैंपरपक्व भयौयों ॥ आवतमोहिं परेखौयहै अबदाड़िमज्यौं दरकैनहियोक्यौं ॥ ३३६ ॥ कच्छअक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० सदनसदनकेफिरनकीसघनछुटैहरिराय। 195
रुचैतितैबिहरतफिरौकितबिहरतउरआइ ॥३३७॥

यह नायका प्रौढ़ा उरहनौं नायकाको वचननायकसों ॥ सवैया ॥ डोलतलाल घनेघनझांकत प्रेमकौ आंककहूंन उघ.रौ ॥ जानिपरे अबतौ बकसौटरहो करिहैंहम ध्यानतिहारौ ॥ बानपरी सुनक्यौंहूंछुटै मनुमानत हौ रुचमानपधारौ॥ भावतमेज बिहारबिहारीयौं कितयोंइत आयबिहारौ ॥ ३३० ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ स्वाधीनपतिका ॥

दो० छिनकुचलतठटकतछिनकुभुजपीतमगलडारि। 244
चढ़ीअटादेखतघटाबीजुछटासीनारि ॥ ३३८ ॥

यह संयोग शृंगारनायका स्वाधीनपतिका सखीको बचन सखीसों कहतिहै ॥ कबित्त ॥ सावनकेमास मनभावनके संगप्यारी अटा परठाढ़ी भईघटाअंधियारीमें ॥ दामिनीके धोखेचकचौंधे दृगकबिनाय छबिनसौं मुरिदुरैपियअंकवारिमें ॥ कोटिरतिवारौं ऐसीराधाजूके रूपपरंभारंककहा संकसचें कैनिहारीमें ॥ पागिरही रसनागिरही जोतिलाजनि मैनेहभीजोवे हमेह भीजीमेतसारीमें ॥ ३३८ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० दुनिहाईसबटोलमेंकहीजसौतिकहाय। 124
सुतेऔचिप्योंआपत्योंकरीअदोखिलआइ ३३९॥

यह नायका स्वाधीनपतिका सखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ रात दिनाछकियाहीके धामपग्यो रसमेंरहतौसुखदाई ॥ पासपरोसबके कहतीं यह बीसबिसेतियहै दुनिहाई ॥ तू जब तैंगुनरूपकी राशिसुशीलसुहागल

गौनेहीआई ॥ प्राणपती अपनेबासकै तें भलीकरीसौतिकी छोतिचहाई ॥ ३३९ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

323 दो० तोपरवारौंउरबसीसुनिराधिकेसुजान ।
तूमोहनकेउरबसीहवैउरबसीसमान ॥ ३४० ॥

यह नायका स्वाधीनपतिका सखीको वचननायकासों ॥ कवित्त ॥ रूपकी उजारीब्रषभानकी दुलरी राधे तेरीयेनिकाईहेरि सौतिसबहारीहै ॥ तेरेगुणगायवेकौ तेरेई रिझायवेकौ तेरोप्रीतिहीकौ पनुगह्यौ गिरधारी है ॥ तेरोनाम तेरोध्यान तेरीहीहियेमें धरेतेरेरसबस उनगायहू बिसारी है । तूहीउरबसी ह्वै कै उरबसीमोहन केतेरी छबिऊपरकी उरबसी वारी है ॥ ३४० ॥ मदकल अक्षर ३१ गुरु १३ लघु १८ ॥

324 दो० तूमोहनमनगड़िरहीगाड़गिढ़ीनिगुवालि ।
उठतसदानटसालसौंसौतिनकेउरसालि ॥३४१ ॥

यह नायका स्वाधीन पतिका सखीकौ वचन नायका सों ॥ सवैया ॥ खैनकरीकोटि पैनसेपैट कुटोरउठे कुचकोकिल बैनो ॥ कंबु सोकंठकजाधरसो मुखकोटि कटाक्षन कीअतिपैनो ॥ तूमनमोहन केमन उबालिरही गढ़ि कैलकला सुखदैनो ॥ सौतिनकेउर माफसदा नट साल ज्योंसालतहै मृगनैनो ॥ ३४१ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

152 दो० नभलालीचालीनिसाघटकालीधुनिकीन ।
रतिपालीबालीअनतआयेबनमालीन ॥ ३४२ ॥

यहनायका उतकंठितापरकीया नायकाकौ वचनसखीसों ॥ कवित्त ॥ आजमन मोहन कौ मगयनिरखत मेरेपलक न लागे प्रीति इरतैंन हालीहै ॥ भईनभलाली देखिफीकी परीनखतालो सुनि पतिधुनि चिट कालीनिसाचालीहै ॥ काहूरवनो कोलिखिमदगज चालीतासों जानिपति रीझिवनमाली रतिपालीहै ॥ कहाकहौं आलीइत मदनाबिपति घालीखालीसेजभई जैसीआली बिकरालीहै ॥ ३४२ ॥ वासक सज्या ॥

153 दो० झुकिझुकिझुपकोहैपलनफिरफिरजुरिजमुहाय ।
बींदापियागमनींदमिसिदीसबअलिनउठाय ॥ ३४३ ॥

Kalicha

to para vāraṃ, -urabasī, suna rādhike sujāna
tu mohana ke -ura basī huwai -urabasī samāna

-urabasī - dhuṣkegī indraki apsaia lakshmī

yamakāl.

tu mohana mana gaṛi rahī gāṛhī saṛani guvāli
-uṭhai sadā naṭasāla laṃ sautiṃ ke -ura sāli

-asaṅgati

nabha tāli, ćāli nisā, ćatakāli dhuni kina -
rati pāli, -āli, -anata -āye banamāli na.

ćāli - ćali banamāli sri krishna
-anata -aur thama vittyanuprāsa -utkaṇṭha banana

jhuki jhuki jhaṛakaṃ haiṃ palana phiri phiri juri jammhāi
jāni piyāgama nīṃda misa di saba sakhi -uṭhāya

juri jammhāya -aiṃṣāy jaṃbhāyi

vāsaka sajjā
bāsaka

pativāyakā

chala kari bāhira ā ghara jaba

nisi-andhiyarī, nila pata pahari, ćalī piya geha
kahau, dura-ī kyaun sarai dīpa sikhā sī deha?

[illegible]. the first line is addressed by sakhī to nāyikā & the second
to Nāyaka.
[illegible] = hī kyaun ćali kā-oth lījai, kahā hai
guru lughu laghu guru ko ta hai nija -iṅkhā -anusāra
-aslokoki an -ulaṅkālaṅkāra
śaśivadanī hai sabda
rūpa sahita nayaka

-arī, kharī adhapaka pari bichu -ache maga herī;
sanga lage māninā la-ī ghāgana gali -andherī

[illegible] = ghāgara

+ ulaṅkālaṅkāra

[illegible] = attitude
pacchimī -ora jahā sanga

ghaṭa ni pīara, ćhiti ghagau [illegible], sihara na, sambhāri
[illegible] ko -ī kahā [illegible], ni ūṭhi : ānćara fāri

[illegible]

[illegible]

यहनायका परकीया वासक सज्यासखीकोवचन सखीसों क्रियाविद-धाहू संभव है ॥ सवैया ॥ जानिसमीप्य आगमकोचतुराई करीचित चाहके चाहकै ॥ सैकरिआधिक मूंदिकै आंख झुकीसीकरी पलकैचप लायकै ॥ जोरिभुजा तनतोरितिया अंगिरानोखरो अरसाय जंभाइकै ॥ बैठीहुतीढिगआई अलीसुदई सबऊठमहीसों उठायकै ॥ ३४३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० निशअंधियारीनीलपटपहिरचलीपियगेह । 161
कहौंदुराईक्योंदुरैंदीपासिखासीदेह॥ ३४४ ॥

यहनायका कृष्णाभिसारिका सखीकी शिक्षाअंग दीप्तिआधिक्य अरुजो प्रत्युत्तरहोयतो नायकाकेवचन तैरूपगरबिता होय ॥ कवित्त ॥ हेरि हेरि अंगनलगावत अरारसूतफेरिफेरि येतो झेरकाहै तू करतिहै ॥ लाल केसंदेश रचिजातहिये भीजिभीजि आवत पसीजसुघराई उघरतिहै ॥ मंडन छबीलीयह छबितेरी छाजतिहैमेरीया अंधेरीमेंतू दियासीबरति है ॥ आपहीतें करचतुराई चल्योचाहत सुगातकी गुराईयों दुराईक्यों दुरत है ॥ ३४४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० अरीखरीसटपटपरीबिधआधेमगहेर । 162
संगलगेमधुपनलईभागुनगलीअंधेर ॥ ३४५ ॥

यहनायका कृलाभिसारिका अपनीरात कीबातसखी सखीसों कहति हैराहमेंचन्द्रोदय भईछायलीनीया पटतैरूपगरबिताहू भई ॥ सवैया ॥ श्यामनिशा सखितैसोईसाज सिंगारकहौं पतिपास चलीरी॥ त्योंअधगैल उदोतभयो शशिरेखत मोमतिसोचलगीरी ॥ पंकजछांड़ि सुगन्ध केलोभ लगो संगभौंरनकी अवलीरी ॥ ताहिसमै मगभागनि आयकै छायलई उनकुंजगलीरी ३४५ ॥ कच्छअक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० छिप्पौछिपाकरक्षितिछयौतमुसमहरनसम्हारि । 158
हंसतिहंसतिचलिशशिमुखीमुखतेंआंचरडारि॥ ३४६ ॥

यह नायका शुक्लाभिसारिका राहमें चन्द्रअस्तभयो देखिसकुचित भई तबसखी सपधान करतिहै ॥ सवैया ॥ तेरे कहे सजिसुभ्र सिंगार

चलीबलेहौ गहिकै गतिमंदहि ॥ अथयोसे म अली अधधीचही देखि-
छये छितपै तमबृन्दहि ॥ घूंघुट कोपटटारिकै प्यारी उघारिदेतू अपने
मुखचंदहि ॥ बारसनैमति ज्यौंन्हहंसीकरयौं चलिकैमिलरीनंद नन्दहि
॥ ३४७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

156 दो० उठिठकुठकुयेतौकहापावसकेंअभिसार ।
जानिपरैगीदेखियौदामिनिघनअंधियार ॥ ३४७

यहसखीनायकासों कहतहैकिअभिसारकोसहजहीसमयहैनायकापर-
कीय ॥ सवैया ॥ क्योंतननीलनिचैलसजैसखिक्यौंमृगमंदकोलेपकरैगो॥पाव-
सकैअभिसारकोयेतौबिचारकहाचितमाहिंधरैगी॥कुंजकेभौननिशंकह्वै क्यों
नचलैहरिकंतहि अंकभरैगो ॥ श्यामघटाकीअंधेरीमें तेरीछटासीतनद्युति
जानिपरैगो ॥३४७ ॥ नरअक्षर ३३ गुरू १५ लघु २८ शुक्लाभिसारिका ॥

160 दो0 जुवतिजोन्हमेंमिलगईनैननहोतलखाइ ॥
सौंधेकेडोरनलगीअलीचलीसंगजाइ ॥ ३४८ ॥

यहनायका शुक्लाभिसारिका सखी को बचन सखी सों कबित्त ॥
तनकोगुराई तरनाई की निकाईछाई जाको उजराईते उजारो उप-
मातिहै ॥ शरदनिशामेंप्यारो बिश्वदासिंगारसजै गजगमनीकी शोभा अति
सरसातिहै ॥ चलीअनुरागी मिलि मे हनकोमिलिबेकोचांदनीमें मिलगई
क्योंहूंनलखाति है ॥ सौंधेके डोरन लुलगी अलसंगचली मानोंपूनोचन्द
सहतारन लिखाति है ॥ ३४८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरू १४ लघु २० ॥

157 दो0 गोपअथाइनतेउठेगौरजछाईगैल ॥
चलिचलिअलिअभिसारकीभलीसंजेखसैल३४९

यहनायका संध्या बिसारिका सखीकोबचन नायका सोंकिसेसे समय
अभिसार ॥ सवैया ॥ छोडिअथाइनगोल्यबेकोउठी सबगोपनकीअव-
लीहै ॥ छीनभईसुखही रबिकीछबिगौरजधूरत गैलगलीहै ॥ चंदनकला
प्रगटीनअजौं चलिक्योंनकरै अलिरंगरलीहै ॥ मानिसुहागि मेरोकह्यौ
अभिसारकी सैलसझीखेभली है ॥ ३४९ ॥मरालअक्षर३४गुरु१४ लघु२० ॥

-uṭhi, ṭhaka ṭhaka -etau kahā? pāwasa ke -abhisāra
jāna paraigī dekhi yaun dāminī ghana -andhiyāra

dekhiyaun dikhā-ī dene se
bhrāntyālankāra
or dekhi, yaun

ṭhaka ṭhaka bakherā lit knocking or hammering 'tick tick'
pāwasa rainy season

juvatī jonha men milī ga-ī, naiken na hoti lakhā-ī
saundhe ke ḍore lagī -alī ćalī sanga jā-i

saundhe ornamika -unmīlit

gopa -athā-inā ten -uṭhe, go raja ćhā-ī gaila,
ćali, bali, -ali, -abhisāri ke bhalī sanjhokhe saila -

-abhisāra kī scandalous

-abhisara kī -acchī sānjha samaun ā-i jā-i ..

-athā-inā ćampāyon gae ..

sanjhokhā ? sanjhā - evening
what in the East part of ... country

saila apparently lit. corruption
of Arabic sair -

[illegible] selaiṃ [illegible] [illegible] raṃga, [illegible] [illegible] [illegible]

दो० पलसोहैंपगपीकरंगछलसोहैंसबबैन । 173
बलसोहैंकतकीजियतयेअलसोहैंनैन ॥ ३५० ॥

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडितानायका कोबचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ मोहतभ्रियल गातय रसमें पागे निशिजागेतातें आरसकेढार ढरियतहै ॥ बैनतुतरात अंगरातमुर बेर बेर फेरि फेरि हेरिहेरि हिये हेरियतुहै ॥ बैनसनेछलसोहै पीकपगेपलसोहै देखे छबिहगनि अनंद भरियतु है ॥ कहतन प्यारेयमका है कौकरत येतौअलसोहै नैनबल सोहैंकरियतु है ॥ ३५० ॥ मरालअक्षर३४गुरु ४ लघु २० । मदकलअक्षर३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कतलपटैयुतमोगरेसोनजुहीनिशिसैन ॥ 192
जिहिंचपकबरनीकियगुललालासेनैन ॥ ३५१ ॥

यहनायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिताफूलन के नामशबद को चमत कार है ॥ सवैया ॥ मोगरेभलिमलागिकै लालन सोनजुही निशि सैनमेंप्यारी ॥ जाकोलसैतन चंपकमें दसना वलिकुंद कलीछबिधारी ॥ लोचनलाल गुलालाकेरंगकरानिजरै निजगायबिहारी ॥ निंदत है अरविं-दनकी छबि प्रीतमिराग भरे भरभारी । ३५१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कतकहियतदुखदैंनकोराचिरचिबचनअलीक ॥ 179
सबैकहावरह्यौलखैंलालमहावरलीक ॥ ३५२ ॥

यह नायका प्रौढ़ा अधीराखंडिता नायकाकी वचन नायकसों ॥ सवैया॥ आजमयाकरमेरे पधारेलसी छबिरैनविहारबिहारे ॥ क्योंकहि येदुखदैन कोबैनबनाय बनाय सनेहसिहारे ॥ घूमत लोचननींदभरे उयरे उरमें नख चिन्ह निहारे ॥ और कहाव रह्यौसबलाल लिलार महाउर लीक निहारे ॥ ३५२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० पटसौंपूछिपरीकरौखरीभयानकभेष । 174
नागिनहवैलागीदृगननागबेलरसरेष ॥ ३५३ ॥

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायकाको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥आज मया कर मेरे पधारे खुलो वड़ भागिनि को सुघरो है प्रीतमये पटमों रसों पोंछि परी करमो मति हेर हरीहै ॥ लागत है मम नैनकोआहिसुभामनि सीमैभूरिभरो है। केलसमैंअहिबेलिके रंगको रेखनिमेखनि पैउघरीहै ॥ ३५३ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

175 दो० जिहींनामभूषणरच्योचरणमहाउरभाल।
उहींमनौंअंखियांरंगीवोठनकेरंगलाल ॥ ३५४ ॥

यहनायकाप्रौढाअधीरा खंडितानायकाको बचननायकसों॥ सवैया॥ वाहीकेनैनको काजरबोंठपैनीकोलाग्यो जनपोंछिकैखोऊ। वाहीकेपायको जावकरंगलिलार महाछबिदेतहै सोऊ। ऐसोबनाय सिंगारकरयो जिहहै वहवालबिचछनकोऊ। जानहुलालरंगी उनहीं अखियांअधरानके रंगमें दोऊ ॥ ३५४ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

165 दो० पलनपीकअंजनअधरधरैमहाउरभाल।
आजमिलेसभलीकरीभलेबनेहौलाल ॥ ३५५ ॥

यहनायकाप्रौढ़ाअधीरा खंडिता नायकाको बचननायकसों ॥ सवैया॥ आजबनेहौभलेनंदलाल भयेसबबानिकसोहतभारी। मंडनुआंखिन पीकलीकअरुलीकलगी कछुओठनकारी वांईतौवांहतिलीछरहो यहदाहनीवांहसिहातितिहारी। बैठोंखऐखगिलाग उठी यहकैसीबिराजत बीर सारी ॥ ३५५ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु१६ ॥

201 दो० वाहीकीचितचटपटीधरतअटपटेपाय।
लपटबुझावतबिरहकीकपटभरेऊआय ॥ ३५६ ॥

प्रौढ़ाधीरा नायकाकोबचननायकासों॥ कवित्त ॥ अनतबसेकौहैतौ चलगुनभानतहौ सबरसबसकीयो चाहिबहुनायकै ॥ ताकेभागजागेजाकेसंगनिशजागे मेरेभागभये आयेहिनु हियकोजनायकै। जानियतु वाहीकी लगी है चितचटपटी अटपटेचरन परत उगलायकै ॥ पैताटबुझावत हौ बिरहहुता सनिकीकपट भरेऊप्राण प्यारे तुम आयकै ॥ ३५६ मरालअक्षर ३४ गुरु १० लघु २० ॥

jihiṃ bhāmini bhukhana racyo ćarana mahā-ura bhāla,
-uhī, manauṃ, -ankhiyāṃ raṃgī -oṭhani kerauṃga, lāla.

palani pīka, -anjana -adhara, dhare mahāwara bhāla,
-āja mile su bhalī karī, bhale bane hau, lāla.

dhirā ćhīna

bhalī karī
360 (jaya)

wahi kī ćita ćaṭapaṭī dharata -aṭapaṭe pāya
lapaṭa bujhāvata birahakī kapaṭa bhare hī -āya

-usī nāyakā ke milne ko man meṃ -ālasa hai -isī se rakho
ho ṭeṛhe bakaće pāṃv

bakaće 2 for baka ćāl keroiswali

-aṭpaṭā = hesitating vacillating
agitated
-aipaṭi pāt = inconsistent talk
(jiving)

gahakei, gānsa turai gahai, rahe-ākhakahe baina
dekhè khisaunhaiṇ piṇa nayava, piṇe risaunhaiṇ naina

दो० गहिकंगासओरैंगहैरहैअधकहैबन। 200
देखिखिसौंहैपियनयनाकियेरिसौंहैनैन॥ ३५७॥

यह नायकाखंडिता नायकसुरतके चिन्हदुरायके याकेआये यहबात करनजावत रातमेंनायकके नेत्रदेखतेइनजानी सोबातछोड़िकोपके गांस गहैसखीको बचनसखीसों॥ सवैया॥ आवत प्रागपतोहि बिलोकिसुधा समनेहकीडोठसौंहेरे॥ धायकै आगेहूं आयलये हियमेंउमगी सुखपुंजघनेरे। आधेमे बैनकहैई रहैं सुखगांस भरेउरकोप करेरे॥ कान्हके नैनखिसात विलोकिरिसाइकै प्यारीतिहीदृगफेरे॥ ३१०॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० पावकसोनैननलग्योंजावकलग्योंजुभाल। 170
मुकरजाहुगेपलकमेंमुकरबिलोकोलाल॥ ३५८॥

यह नायका प्रौढ़ा आधीरा खंडिता नायकाको बचन नायकसों॥ कवित्त॥ मैंनछबिरनके उनीदे नैनमंदे आवैंनींदके उरसइन्दी बरन दरतहो पियरोबदन भयो हियरो छुवत मोहिंसियारो करत ज्यों ज्यों निहारो करतहो। आलसतुप्यारी जिय ऐसेकैपठाये प्रियताके उठिदिन प्रतिपायन परतहो। कचमुकराय मधुकरकोसो मालललाल मुकरविलो को कतपुकारकरतहो ३५८॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० तेहतरेरेत्योरकारिकतकारियहदृगलोल। 191
लोकनहींयहपीककीश्रुतिमनझलककपोल॥३५९॥

यहनायक सापराध जानिनायकानेत्र चंचल करतहै सोनायकासखी नायकाकेहितको भ्रमनिवारनकरतहै सखीकोबचन नायकोसों नायका सखीसोंकहैतो भूतसुरतगुप्ता परकीया होय॥ कवित्त॥ आजलखिप्रति कछू औरैभांति तेरोगतिआननपै उमगललाईललकति है। भृकुटीकुटिल अतिनेहसोंतनोनो भईनैननमेंरिसको तरंगछलकति है॥ कहैकबिकृष्ण यहधोखोहिहहौंतो करिपीकलोक जानतजबोलबलकति है। ललितकपो लपरनीकेकैबिलोकि श्रुतिभूषनकीमनको झलकझलकति है॥ ३५९॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

379 दो० आयेआपभलीकरीमेटनमानमरोर ।
दूरकरोयहदेखिहैंछलाछिनीयाछोर ॥ ३६० ॥

यहखंडिता नायकाकीसखी नायकसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ आप कृपाकरआयेभली करीआजकोवानिक मे मनमोहै । देखतरावरीमोहनी मूरतिमानमरोर धरेउरकोहै । काहूछबीलीको छोटोछलायहछोरछिगूनीकेछाजतछोहै । देखिरिसायगीदूर करोकछूजानतहौ अनआयलसोहै ॥ ३६० ॥ नरअक्षर ३३ गुरू १५ लघु १८ ॥

182 दो० लालनलहिपायेदुरैचौरीसोंहकरैन ।
शीसचढेपनिहांप्रगटकहैपुकारेनैन ॥ ३६१ ॥

यहनायका प्रौढ़ाधीराखंडिता नायकाकोवचन नायकसों ॥ सवैया॥ आयेउनोदेजंगात तऊकछूभेदनजान्यों हियेकीमैंभोरी । वाकुचकुंकुमके लगेचिन्हमिलाय हियेमसकेजिहगोरी ॥ लाललहीअबतो सबबातदुरेनहीं सोहकरौंकिनहोरी : सीसचढेपनिहाँ होउनैनपुकार कहैरतरंगकीचोरी ॥ ३६१ ॥ मदकल अक्षर ३७ गुरू १४ लघु २१ ॥

169 दो० तुरतसुरतकैसेदुरतमुरतनैनजुरिनीठि ।
डीढ़ीदैगुनरावरेकहैकनोड़ीदीठि ॥ ३६२ ॥

यहनायका प्रौढ़ाअधीरा खंडितासखीको वचनसखीसों ॥ कवित्त ॥ चिन्हअंगअंगके दुरायेचतुराईके पैअरसगमनगात दुरढहनातहै । प्रेम सुधापानके हुलासतें मुदितमनमैंनमुख सनेनबैंनतुतरातहै ॥ तुरतसुरत कहोकैसेके दुरतलाल नीठिजुरमुरतनैन जलजातहै ॥ कृष्णानाथारेयह डौंड़ीदे कनौंड़ीदीठि प्रगटकरत रातरति वारीबात है ३६२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरू १२ लघु २४ ॥

166 दो० मरकतभाजनसलिलगतइंदुकलाकेबेष ।
झीनझगामैंझलमलैश्यामगातनखरेष ॥ ३६३ ॥

यहनायका खंडितानायका कोवचननायकसों ॥ सवैया ॥ नाहकी छातीमें देखनखछत नारिनबोड़ा कह्योंपुनऐसे । सुंदरबागेकी चोलीमैं

have come yourhonour well done obliterating pride twist
far make this will see ring littlefingers joint

-āye -āpa, bhalī karī, meṭana māna marora
dūra karau yaha, dekhihai, ćhalā ćhiguniyāṉ ćhor

mān ke garb ke meṭne ke wāste
ćhiguniyāṉ ćhor ćhiguni ke ćhor meṉ on the joint of your
little finger. being too small to go the whole way down & therefore
evidently not his own but given by another woman. sakhi to nāyak

lālana lahapāye durai ćorī soṉha karai na
sīsa ćaṛhe panahā pragaṭa kahaiṉ pukāre naina.

~~kahissā~~ panihā kahaiṉ ćorī kī thāṉg laǥānewāle
although he gives panahā in the text
lahi pāye jāni lije .
haripiakāsa

panihā is the technical word in upper India for money extorted as compensation for the restoration to owners of their stolen property especially cattle.

Laha may be for lābhā gain
lahmāpā-ona = lucky advantage

turata surata kaiseṉ durata? murata naina juri nīṭhi
ḍaunḍī dai guna rāware kahai kanaunḍī dīṭhi

murata naina juri your eyes turn away when meeting mine

ḍaunḍī = ḍhanḍhorā
nīṭhi ko-i ṭarah saun joṛāwarī saun
pheri lāj saun
why not tū -apnī phirtī huī -āṉkhon ko kisī ṭarah se joṛ de
nīṭhi = 'for certain'

marakata bhājana salila gata -indukalā ke vekha
jhīna jhaṉgā meṉ jhalamalai syāma gāta nakha rekha

vekha simply means like

jhaṉgā upper garment (coat)
jhīna apparently thin fine - not worn or torn
bhājana dish ma...l at one ... coloured)
[translator in nīlamani which = ...

दो० प्राणपियाहियमेंबसीनखरेखाशशिभाल।
भलौदिखायौआनयहहरिहररूपरसाल॥३६७॥

यह प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायकाको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ पूरण प्रेमनों प्राणपिय री बसायहिये हियरो हुलसायो। भालनई नख रेख विराजत सोय मयंक लसे छबिछायो ॥ लोचन रागुर जोगुण राजत घूमत नैन तभांगुण पायो। पीतम प्रातही आनि यहै जुभलो हरि को घर रूप दिखयो ॥ ३६७ ॥ चल अक्षर ३८ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यहांनचलिबलिरावरीचतुराईकीचाल।
सनखहियेखिनखिननटतअनखबढ़ावतलाल ३६८॥

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायकाको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ यहां न चलै कछू रावरी लाल चलावत ये चतुराई की चाल। छाती नख छत पीक सुगाल धरैं अति रंग महाउर भाल ॥ खातइते परसोंह गुपाल हिये उमगावत क्यों रसजाल। भाग बड़े उहि भामिनी भाल हिये उमगी जिह भेट तमाल ॥ ३६८ ॥ नर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० वैसीयेजानीपरतिझगाऊजरेमाहं।
मृगनैनीलपटतजुयहबैनीउपटीबांह ३६९ ॥

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को बचन नायक के विद्यमान सखी हूं सों कहै ॥ सवैया ॥ काहे को करत चतुराई के चरित्र लाल सोचभरी मूरत प्रकट पेखियतु है। सोहैं जिन करौ नैन नेक सोहनीसी शोभा अतिही विराजै अंगअंग खेलियतु है कृष्ण प्राण प्यारे कुच कुंकुमकी छायरही छाती पै उधरि यह अब राखियतुहै ॥ मृगनैनी लपटति ऊपटी खयेपै बैनी ऊजर झगामेंअरटपी पैजियतु है ॥ ३६९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नकरुनडरुसबजगकहतकतबेकाजलजात।
सौंहेंकीजैनैनजोसांचीसौंहैंखात ॥ ३७० ॥

prāna priyā hiya meṃ basai, nakha rekhā sasi bhāla,
bhalau dikhāyau, -āni, yaha hari hara rūpa rasāla

rasāla ras kā ghar
hari because Lachmi dwells in Vishnu's heart
hara because the moon is a Shiva's crest.

yhāṃ na ćalai, bali, rāwarī ćaturā-ī kī ćāla
sanakha hiye khina khina naṭa na, -anakha barhāwata, lāla,

sa nakha (apparently expressing with hiye) sāth muhaṭṭe lagāye hiye
-anakha meri risko ćhāti par.

ćalai (ulaiṣi - is not ćali better. or naṭana maybe
for bali I translator ṣāhib infin. subject of barhāwata
& sanakha its epithet.?

waisī yai jānī parati jhaṃgā -ūjare māṃha
mriga nainī lapaṭī ju hiya benī -upaṭī bāṃha

waisī yai waisī hī
-ūjare -ujale -upaṭnā app. to leave a mark
or impression.

nakara, na ḍaira, saba jaga kahatā, kata bekāja lajāta
sonhaiṃ kījai naina, jo sāćī sonhaiṃ khāta.

Rahyau cakila cahmēkāṇcitai cita merau mati bhuli
sura-nari-āye. pahē dṛigana sāṇjha sī phūli

Ce'ita [illegible] citai? tu ci'ilātai.

hata kahāja calē-iyata caturā-ī kī cāla?
kahai deti guna rāwarē sabaguna nirguna māla

[illegible]'s explanation of the 2nd line in quite unintelligible

nirguna māla a necklace without a string is elsewhere explained as the
mark of a [illegible] renouncer's neck

1st guna
-deth

[illegible] sabaguna manyfold
[illegible] guna dauṇi a

[illegible]

durai niharadha dhaṇ ziye ye rāwarē kucāla
bisu sī lāgata hau burī hausī khisī sī lāla

durai na nighanaghatau tiye -e rāwarī kucāla
bīcha sī lāgati hai burī hausī khisī kī lāla.

kheṛā again
mattication

[illegible] nirā-ghaṭa tu dusahibo pi ubmen ghaṇiau [illegible] hain

[illegible] swat
orghanchiyawat
obligingsetting
entreating

hausi [illegible] bīca upamā [illegible] lauka burā lagnā dhaṇ

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ मोहनो लागत नीके महातुम आये प्रभात प्रभात रसोंहैं। जो करिये तौ हिये डरिये बिन कीये कितेडरिये डरसो हैं ॥ क्योंबिन काज संकोच भरौ उर काहे कों कीजत नैन लजोहैं। जो तुम सांची ये सोंह करौ हरितौ इतक्यौं न करौ मुखसोहैं ॥ ३७० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रहौचकितचहुधांचितैचितमेरौमतिभूलि। 163
सूरउदयआयेदृगनरहीसांझसीफूलि ॥ ३७१ ॥

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को बचन सखीसे होय नायक सों होय ॥ सवैया ॥ देखत रावरो मोहन मूरति मो हूं सबै सुधि भूलि रही है। आज महा छवि छाजत भोर निकाई सबै अनकूल रही है। चाहिरह्यो चहुधां चकिसों चित आचरजै मति डूलरहीहै ॥ आयेहो सूर उदोत भयेविष नैनन सांझसी फूल रहीहै ॥ ३७१ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कतबेकाजचलाइयतचतुराईकीचाल। 164
कहैदेतयेरावरेसबगुनबिनगुनमाल ॥ ३७२ ॥

यहनायकाप्रौढ़ाअधीरा खंडितानायकाकोबचननायकसों॥सवैया ॥ सौतकेधामबिराम कैआपुप्रभातयते पगधारतहौजब। मैनछकीछबिऐन दिखायअनंदहिये उपजावतहौतब ॥ क्योंबिनकाजचलावतहौ चतुराईकी चाललला हममोंअब। मालबिनागुनकीउरपै उपटीमुनराबरेदेतकहेसब ॥ ३७२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० दुरैनिधरधधोंदियेयेरावरीकुचाल ॥
बिसुसीलागतहैबुरीहंसीखिसीसीलाल ॥ ३७३ ॥ 13

यहनायकाप्रौढ़ा अधीराखंडिता नायकाको बचननायकसों ॥ सवैया जानतहौ हियकोहितसौं उनहीकेबसेसुखसोंनिमनासो। भोरकिहूभ्रमभूलि कैलालपधारेइतैकछू कीनीकृपासो ॥ ढीठयौदियोकहा कैसेदुरैइहआरही

तंजु कुचालप्रकासी। लागतबोसबिसे दिघसी सुखसापनके मुख आवत-हांसी ३०३ ॥ मराल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

176 दो० गड़बड़ेछबिछाकुछकिछिगुनीछोरेछवैन ॥
रहेसुरंगरंगरंगिउहींनुहदीमहदीनैन ॥ ३७४ ॥

यहमहदीको वर्णन है अरुजोमायकाको बचन नायकसों होय तोखंडिताहोयजोनायका कोवचनसखीसों होयतोगुणकथन ॥ सवैया ॥ बांकी छबीलीछिगूनीके छोरये खेरुचपुंजनयेईनयेहैं। तापरचारुलसैंनुहदी महदीदलबिद्रुमजीतलयेहैं ॥ ताकीमहाछबिके मदछाकिछुटैन अजौंगड़एसे गयेहैं ॥ येबियलोचनवाईकेरंगमें राचिकैमानोसुरंगभयेहैं ३०४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

19? दो0 कतसकुचतनिधरकफिरौरतिपोषोऋतुमैन ॥
कहाकरौजोजानियेलगैलगौहैनैन ॥ ३७५ ॥

यहनायकाप्रौढ़ाअधीरा खंडितानायका कोबचननायकसों ॥ कबित्त ॥ कृष्णप्राणप्यारे आजप्रीतके पधारेहोतेतनमन वारौंबहु हुलसिबधाइये। नेकनिरखिन लगेजाहिजोलगेहैं नैन ताकोतुमकहाकरौ ग्रीवननवाइये ॥ कैसेराख्यौजातमोरिमनु बंध्योप्रेमडोरितुमतन खोरिकहोरंचकोनपाइये। काहेको सकुचकीजे रुचै तितै सुखदीजै अलिह्वै निसंक रसलीजै जहां पाइये ॥ ३०५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

188 दो0 अनतबसेनिसिकीरिसनुउरबरहीबिशेखि ॥
तऊलाजआईझुकतखरेलजौहेंदेखि ॥ ३७६ ॥

यहनायकाप्रौढ़ा अधीरासखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ रातिकहौं अनतेबितई मनमोहनकेलिकलासुख सोंहैं। तातेंहिये अतिहीरिसछायरही अनखाय चढ़ायकै भौंहैं ॥ भौंरही आवत देखिजऊ कछिबे कैभईझुकवेन रुखौहैं ॥ आईतऊ अतिलाजहिये निरखेजब लालखरेई लजौहैं ॥ ३०६ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

117 दो0 बिलखीलखैखरीखरीभरीअनखवैराग ॥
मृगनैनीसैननभजैलखिबैनीकेदाग ॥ ३७७ ॥

gaṛe baṛe ćhabi ćhāki ćhaki ćhiguni ćhora, ćhuṭai na ?
rahe suraṅga raṅga raṅgi-uhī naha dī mahadī naina

kata sakućata ? nidharaka phirau, ratiyau khori tumhaiṅ na
kahā karau? jo jāhiṅ ye lageṅ lagaumhaiṅ naina

ratiyau = rati bhar khori qusūr

-anata base nisi kī risanī -ura bara rahiyau biselkhi
ta-ū lāja -ā-ī jhukata khare lajaumhaiṅ dekhi,
risanī ? L. translate -aur thaur rahā nāyak

bilakhī lakhai kharī kharī tharī -nakha bicirāga
mriganainī sainana bhajai -lakhibenī ke dāga

sainana sej 'bi-ā" berājī pauṛau 'kaiphiyat

कृष्णकहैंरूख रोत्तरलाहै। नेकइतैलखिये मनमोहनआज भलोहमपायो छलाहै ॥ ३८१ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

119 दो० गह्योअबोलोबोलप्योआपैपठैबसीठि।
दीठिचुराईदुहुनकीलखिसकुचौंहींडीठि॥ ३८१ ॥

यहनायकाअन्य संभोगदुखितासखीका बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ आपनीप्यारीअली कोपठैपियप्यारेकौं आपहीबोलिपठायो। आगेहवैआयलियौहितसोंहियरो हुलस्योनियरोजबआयो॥ येतेमेंकृष्णदुहून कोदीठिलजौहींलखी उरतेहतचायो। पोलैकोभारीमनोलौ भरयोजियकासों कहैअपनोडहकायो ॥ ३८१ ॥ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

121 दो० सुरंगमहावरसौतिपगनिरखिरहीअनखाय।
पियअंगुरिनलालीलखैउठीखरीलगिलाय३८२॥

यहनायकाअन्य संभोगदुखितासखी कोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ पेखिसुरंगमहावर सौतिकेपाइनबालरहीअनखानो। याहीबिलोकिबिकायगौमोहनबातयहैअपनेउरआनी॥ येतेमेंप्रीतमकी अंगुरीनललाई बिलोकिखरी बलखानी। पावकबालजगी उरमेंमुरझातमहारिसमेंअकुलानी॥ ३८२ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

115 दो० बिथरयोजावकसौतिपगनिरखहंसीगहिगांसु।
सलजहसौंहींलखिलियौआधीहंसीउसांसु॥३८४

यह नायकाअन्य संभोगदुखितासखी कोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ बालहंसी कछुगांस गहैलखिफैल्यो महावर सौतिके पायनि। जानियहै अपनेजियमेंयह जानितनाहिं सिंगारकेभायनि॥ येतेमेंमोदभरी मुसकात लजौंहींबिलोकनि देखिसुभायन। आधीयैहांसीउसास भरीअकुलातखड़ी बिसरीचितचायनि ॥ ३८३ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

120 दो० हठहितकरप्रीतमलियौकियोजुसौतासिंगार।
अपनेकरमोतिनगह्योभयोहराहरुहार ॥ ३८४ ॥

यहनायकाअन्य संभोगदुखितायाकोहारनायकने लैकैसौतकोपहरा-

gahyau -abolau bola pyau -āpai paṭhai basiṭhi
diṭhi ćurā-ī duhuna kī lakhi sakućamuhī diṭhi

bola bulāyke -abolau mam basiṭhi saṃdesa

suraṃga mahāwara sauti paga nirakhi, rahī -anakhāya,
piya -anguṛina lālī lakhai kharī -uṭhī lagi lāya

-anuguṇā lamkār

lāya flame- blaze lagi laske

bithuṛyau jāwaka sauti paga nirakhi, hansī, gahi gāṃsa,
salaja hansamuhiṃ lakhi, liyau -ādhī hansī -usāsa

sāṃsa liyā

pahle -is ne jānā thā ki yah phūhaṛ hai phir samujhi - ki yah
-iske hāth kī malāwar lagā-ī nahīṃ nāyak ke hāth ki lagā-ī hai

-ādhī ? halfway, or in the middle of her laughter bithuṛyau -asta vyasta gāṃs akhipāya

haṭhi hita kari prītama liyau kiyau ju sauti siṃgāra
-apane kara motina guhyau bhayau harāharā hāra

harāhara (kahai sāṭhsa mas)

pāṛyau ṣora ṣukhāga ṭau -una ṭuṇakī ṭiya neha

-una ṣ.kī -aṅkhiyāṅkakai ṭai -alasoṅhī deha

l ṭeha fe ṭeki ṭ.. ṭat ..u.. t muau

ṭ.. pāyāyakti

pāṛyau ṭāṇa

-una ṭeha -aṅkhiyaṅka kai kau -alasoṅhiṃ deha

un ne -uṇī āṅkhiṅkai kī -alasāṇī deha -is ṛpīti prasidh

ṇau ? n holisika ṣeuse ? ..es- how caukai ṣtoṇḍ ṭor kī

gunja.. ..i ..aya..a

ṣakhi ṣohala gopāla ke -una gunjana kī māla

bāhira ṭasala mana ṭriya ṭāṇāṇala kī jvāla

bāhara ṭiyemanau.

l ṭin-aṇi ṣaṇsāṇ meṇ p.aṛidh kaṃ bajaṇāṇal jaṭhaṇāṇal ṭāṇāṇale

aṇuṇ'a ṭi ās pef'ī ṇa baṇkī -āg -sk.amai ban meṇ ṭāṇ tagi kī so ṛī

l .. .. ..e -ṇki ṭal'ā ..asmast aṇch meṇ hai,

-ul ṭāṣpāṇaṇkī preksha

l -adhamā taman

muṇha miṭhāsa, driga ṭīkane, ..ṇṇṇhaṇ ṣaṇala ṣukhāga-

la-ī khare -ṭāṇara ṭhaṇau ṭhiṇaṭiṇa ṭiyau ṣaṇkāya

ṭibaṇa-ī ..ṇṇṇbeke. ṣiṇe miṭhās ṣubhāy

..e 'sk ṇ ..slaṇṭives-

योसुनायका सखीसोंकहै ॥ सवैया ॥ मांगिलियोहितके हठिप्यारेनेहारु सुचारुप्रभानसोंपाग्यो । ताहिलैलालची लालगछ्यौकाहू सौतिकेधामति-हींअनुराग्यो ॥ वाहीकीरीझि सिंगारकियोलखियाके हिये अनुखाहटजा-ग्यो । आपनेहाथ बनायगछ्यौमुकता कोहराहर हारसोलाग्यो ॥ ३८४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० प्यारोसोरसुहागकोइनबिनहींपियनेह । 16
उनदेहीआंखियांककैकैअलसौंहींदेह ॥ ३८५ ॥

यहनायका सौतिको आलसबल देखिअरुरसमसी आंखिदेखि सखी सोंकाकध्वनिकरि कहतुहै अन्यसंभोग दुखिता होयजोई सखीनायकसों कहैतोयाकीरिसको निवारनहोय ॥ सवैया ॥ सैंकरि आंखउनींदीकरी अधऊतरसोंमुख बोलउचारयो । बारहीवार जंभाय कयोहींखरौतनआरस केढरढारयो ॥ भूठीजतावतहै सुखमेन जगीयह जामिनि जामनिवारयो । देखितौ प्रीतमको बिनु प्रीति सुहागको मोरकितो यह पारयो ॥ ३८५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सखिसोहतगोपालकेउरगुंजनकीमाल । 8
बाहिरलसतमनोप्रियेदावानलकीज्वाल ॥३८६॥

यहनायकाप्रौढा अधीराखंडिता नायकाकोबचन सखीसों॥ सवैया॥ भागबड़ो निरख्यो यहबानकुआजुको हौंबलिजाऊं घरीकी । ऐनप्रभाल-खिलागतहैकछू मोहिंतो मैनको मूरतफीको ॥ देखरीमोहनके उरभा-वतीमालबिराजत गुंजकीनीको । पीवहुतोप्रगटो सुतौबाहिर ज्वालमनौं बड़वानलहीको ॥ ३८६ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मुहमिठासदृगचिकनईभौंहैंसरलसुभाव । 204
तऊखरेआदरखरौखिनखिनाहियौसकाय ॥३८७॥

यहनायका सादराधीराप्रौढा नायककोबचन नायकासों ॥ कबित्त ॥ बदन कमलतें अधिकहितसानें बैनमधुरेकढ़त अमीजिनमें चुचात है । भृकुटीसुभायहो सरललखियत कहूंरोसकोनरंच लवलेस दरसातुहै ॥ ने-हकीनिसानीरससानी चितवनित्योंहीं कैसेहूंनमोपैयह भेदलछ्यौजातुहै ॥

ज्योंज्यों अतिखरो आदर करत प्यारी त्यौंत्यौं मेरो हियो खरो खरोई सकातु है। ३८७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० खरे अदब इठलाहठी उर उपजावति त्रासु।
दुसह संक बिसकी करै जैसे सोंठ मिठासु ॥ ३८८ ॥

यह नायका सादरातधीरा प्रौढ़ा नायक को बचन सखा सों ॥ सवैया ॥ गांसगच्यो उर में जितनो कछू मैं तौन चूक इतो कि करी है। बानस जीइटलाह-टकी अवका हे सौंधों नाड जानि परी है ॥ त्रास हिये उपजावै खरो अति आदर सौं अभिमान भरी है। सोंठ चबात ज्यौं मीठो लगै सबको उकहै बिष ही को डरी है॥ ३८८ ॥ चल अक्षर ३० गुरु १६ लघु २६ ॥

दो० नाहिंन चायचितवत दृगनु नहिं बोलत मुसकाय।
ज्यौंज्यौं रुखरूखो करै त्यौंत्यौं चित चिकनाय॥३८९॥

यह नायका प्रौढ़ाधीरा अकृत गुप्ता नायका को बचन नायक सों ॥ कबित्त ॥ जो रतन लोचन नचाई नेह चाई भरे मुरि मुसकान कौन भाव दर-सातु है। बोलत न कछू मन मोहन मधुर बैन मोरि जिन भृकुटी मरोरत न गात है॥ कहै कबि कृष्ण वाको गरब लो वानि कछू सहज बसीकरको मंत्र जान्यो जातु है। ज्यों हों ज्यौं रहत प्यारी राधा रूखे रूखे करि त्यौं हों त्यौं खरोई खरो चित चिकनातु है ॥ ३८९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जोतियतु मजियभावती राखी हियेबसाय।
मोहिं झुकावत दृगनहू वैवहई उझकति आय॥ ३९०॥

यह मान भ्रमनायका की आंखिन में अपनो प्रतिबिंब देखि अरूखो जानि कहत है नायका ने ॥ सवैया ॥ नेकमनेकरौ पायपरौ हरि काहे सों मोसों रसीदति हौ राजकरो नितया हिलियेरहो यामें कहा कहनावति है। जो तुमा खीबसाय हियेपिय प्यारी तिहारी कहावति है। झांकतरावरी आंखिन आनव ती यमोहिं झुकावत है ॥ ३९० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चिरजीवो जोरी जुरै क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि है वृषभानुजा वे हलधर के बीर ॥ ३९१ ॥

यह परस्पर मानसखी को बचनसखी सों ॥ कवित्त ॥ अनगने औठ

-āpko -āp nahī bisaro

jaise śvān kāṇic ke mandir bhramī bhramī bhūṅkī maro
(lion) (image)
jyon Kesarī pratimā ke dekhat bar-bās krūp paro
(crystal)
taise hī gaj phaṭik śilā son daśanani -āni karo.
(monkey) (fist)
markaṭ mūṇṭhi chorī nahiṅ dīnhī gharghardwār phiro
śūrdās nalanī ke suvana kahu kanne pakaro

tau samudra bhava sūr ko śīp bhaye cakh lāl
hari mukutāhal parat hiṅ mūdī gayo tat-kāl.

Daśānan = śīwan

361

106

194

225

khare -adaba -iṭhalāhaṭī -ura -upajāvati trāsa
dusaha sanka vikha kī karai jaise saunṭha miṭhāsa

kaṭhin trās bisha kā karai hai jaise sonṭh ka miṭhās

nahiṃ naćāya ćitavati drigani nahiṃ bolati musakāya
jyauṃ jyauṃ rukha rūkhau karati tyauṃ tyauṃ ćita ćikani

jo tiya tuma mana bhāvatī rākhī hiye basāya,
mohi khijāvati drigani ṅvai waha-ī -njhakati -āya

nāyak kī āṃkhon mein apnī pratibiml dekh nāyakā kā
bacan nāyak se

ćirajīvau jorī, jurai, kyauṃ na saneha gaṃbhīr
ko ghaṭī? ye bisabhāgajā, we haladhara ke bīra

jurai jaune se ghaṭī ghāṭa inferiority haladhara barren
bīra bhā-ī. according to Haripurkar the last part of second line
is spoken by nāyakā according to [illegible] mein tej -ali
[illegible] nāg kalidan se [illegible] mahi m[illegible]

dou -ādhikā-i bhare -ekai gaun gaharāya
kanna manāsai, ho mano, māne mati ṭhaharāya

? [illegible] ?

māna kaiata barajata nahīṃ, -ulati diwāunati saṃjha.
karī risaṃchi jāhiṃgīṃ sahaja hausaṃchiṃ bhaṃjha
-ulati saṃjha = hausaṃ
barajata mana kania kaī jāṃgi
? [illegible] ?

Tasa ke se rukha sase mukhi hausi hausi belati baina
gūṭha māna mana kyaun rahai bhaye būṭha raṅga naina

[illegible]
rukha [illegible]

पायरावरे गनैनजाहि वेऊआहितमकिकरैया अतिमानकी । तुमजोईसोई कहोवेऊजायसोई सुनेतुमजोभपातरेवे पातरीहैं कानकी ॥ कैसोकैसो रायकाहिवरजोंमनाऊं काहि आपनेसयांकोधो सुनतसयानकी । केऊबड़वान लकोहूँहै सोई अहैबीचतुम बासुदेववेहैंबेटी वृषभानकी ॥ ३९१ मरकट अक्षर ३१ गुरु ० लघु २४ ॥

दो० दोऊअधिकाईभरेयेकैगौंगहराय । 362
कौनमनावेकोमनैमानैमतठहराय ॥ ३९२ ॥

यहपरस्पर मानहैदोऊ अधिकाई भरेसोनायकामानवती नायकरूपमानोअथवानायकाको मान देखिबेकीगौंहै सखीकोबचन सखी सोंअरू दोऊ अन्याशक्ति होहियहकहिबो संभवहै ॥ सवैया ॥ आजचलीरसही रसमेंकछुबात दुहूंनसों क्योंकहिआवै । लैअपनो अपनोरिसमें अरझायो हियो अबकोसुरझवै ॥ दोऊ खरेअधिकाई भरेगहे एकहो गौं कोउभेदन पावै ।। कौनमनावैमनै कहिको मनमानो दुहूंनकोमानहीं भावै ३९२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु१२ लघु २४ ॥

दो0 मानकरतबरजतनहींउलटिदबावतिसोंह । 364
करीरिसोंहींजाहिगीसहजहसोंहीभौंह ॥ ३९३॥

यह मानदृढ़ावतहै सोमानछुड़ायबो प्रयोजनहै सखीकोबचन नायकासों ॥ सवैया ॥ रूखीकरो रुखनैन चढ़ायकें बैनकहैं मुखनेअनखोहैं । मानकरोसुभलीकरी होनमनेकरो और दिवावतिसोंहैं ॥ मोहूं सोधूभेनऊतरदेतसु देखोगीमोहन कोमुखजो हैं करीहीमें हैंरिहैंयगी लालाये सहजही सुहसोंहीं येभौंहै ३९३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु१४ ॥

दो0 रसकेसेरुखशशिमुखीहांसिहांसिबोलतबैन । 198
गूढ़मानमनकचोंदुरैभयेबूढ़रंगनैन ॥ ३९४ ॥

यहनायकाअधीरा कोमानहैसोसखीनायक कोनायका सोंकहतहै ॥ सवैया ॥ ऊपरकोरसकोसौं करोरूखभावकियेहितके सरसातें ।सूधेचितै हंसबोलतबैनकढ़ै मुखमीठे सुभावसुधातें । नेहकोचिन्हजनाय सबै बिध स्वास दबाय कैतेहकी तातें ॥ मान हियेको दुरै कहिक्यों जु मजीठ के

रंग भये दृग रातें ॥ ३९४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

358 दो० चितवनरूखेदृगनकीहाँसीबिनमुसकान ।
मानजनायोमाननीजानिलियोपियजानि ३९५ ॥

यह नायका मानवती पैमानके लक्षण कुछप्रकटकरै नहीं पै प्रबीण नायकनेजानीसखीकोबचन सखीसों नायकाहूं सोहोय॥ कबित्त॥ बैसेही चितौनजैसेआगे चितवतही पैनेहूंचिकनाई कोनदृगन निसानीहै ॥ मधुर बचनत्योंहीबोलतबिहंसिपैसरसमुसकानकीनबानपहचानोहै ॥ ऐसो भांति भामिनोजनाई झूठमारीति जानिमन प्यारेभेष देखतहीजानीहै॥ साधकै रूखाईरिसठानीतें सयानी सोप्रबीनन कोडीठ तेरहतकैसे छानीहै ॥ ३९५ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

105 दो० कपटसतरभौंहैंकरीमुखअनखौंहैंबैन ।
सहजहसौंहैंजानिकैसोहैकरतेनैन ॥ ३९६ ॥

यहमान परिहासहै नायका प्रौढ़ा सखीको वचनसखीसों॥ कबित्त प्रेतमको प्रीतिके प्रतीत लखिबेकोप्राणप्यारीकछुकीनो परिहासझूठोमानठानि ॥ कहैकविकृष्ण उरऊपर रूखाई भरिबदन बिदोरिबैठिधरिकै कपोलपानि ॥ आपनोअलीनहूं सोंजोरतनु रूखमुखबैनअनखायकहिबेको ज्योंज्यों गहीबानि । भृकुटी सतरकीनी कपटसोंतानिऐपै सोहैंन करत दृगसहज हसौंहींजानि ॥ ३९६ मदकलअक्षर ३५गुरु १३ लघु २२ ॥

224 दो० मनुनमनावनकोकरैदेतरुठायरुठाय ॥
कौतिकलाग्योयोंपियाखिजहूरिझवतजाय३९७॥

यहनायकाको मनु देखिबो प्रयोजनहै सो सखीसखीसोंकहति है॥सवैया रोनभरीअंखियान हूं की अबिलोकन माफभरौ रसभारी । याहींतेंमान हुं कोरूख देखिबेकी नन्दनन्द हियेरुचिधारी ॥ होतमनोहो प्रज्ञासबहीं तबसें करिदेतरुसायबिहारी । कौतिकलाग्यो इहीरसके खिजहूके रिझावत राधिकाप्यारी ॥ ३९७ ॥ मरकटअक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४

360 दो० भलेपधारेरावरेहवैगुड़हलकोफूल ॥
ताहीदिनतेनामित्योमानकलहकोमूल ॥ ३९८ ॥

ćètawana rūkhe | dèganakī hāṃsī | bina musakāna
māna janāyau māninī jāna liyau piya jāna

prabīn I translate piya jān by nāyak ćatur ne - but
there can be little doubt that piya jān = dear husb

kapaṭa sabara bhaṃhaiṃ karī mukha sabaraiṃhaiṃ bh
sahaja haṃsaṃhaiṃ jāna karì saṃhaiṃ karatī na na

kapaṭa se mukha men jānkar sāmhne

mana na manāwana kaun karai deta ruṭhāya ruṭhāya
kautuka lāgyau piya priyā khija hū rijhawatī jāya

wāhī nisi teṃ nā miṭyau māna, kalaha kau mūla -
bhale padhāre pāhune ! huwai guḍahara kau phūla

pāhune aur guḍahai phūl kā rūpak kahna lokokti
pāhunā ghar ghar kā jamaicalne vāle - kuśal
puchnā

mohũ soṉ bālana lage lagē jīlēka jihiṉ nāya
so-ī lai-ura lō-iyaè ,lāla ,lāgiyata pāya –
aeeçh lom jihiṉ nāya – jiskā nām jōh-men lagē!
? jiske nam ko jilh lagē
lāgiyata pāya maiṉ lamāu jāne pailī hiṉ

vivoka hāva ...

kuchbēchē hai nikarai jarai nahī, parchū pāna
ēitai, kitaè taiṉ lai ēharyau -itau -ile lana māna
ēitai = ekah, kitai kahiṉ se
parchū pava ...
... tōchhi kanus
... dēnāe
... Mai nikaraè

-aise kar ... kāha ...yau le aya naèn kisora?
kaza dekē kaha kahi hui kare dsigna ke jora ?
...

यहनायकापरकीया उपपतिको बिरहदुरायबेको पतिसोमान कीनोंसो सखीसखीसोंकहति है जोसखीनायकसों कहै तो खंडिताहोय॥ कबित्त॥ जाहीरजनीके घरबसै आनघरबसै जानेकौन कहामंत्र कैसे पढ़िनायो है। वाहीरजनीतें अजौमिटयौ नऐनेसोमान सखी पचिहारीकाहू मरमनपायो है॥ कहैकविकण्ण ऐसोकठनोतुन्यों नदेख्योजैसोउहि लरिहार उरमेंदिढ़ायोहै। पाहुनैपधारे आछेफूलगुड़हरको ह्वै कलह को मूलवाबगर बगरयोहै ३९८ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० मोहूंसोंबातनलगेलगीजीभाजिहनाय॥ 199
सोईलैउरलाइयेलाललागियतपाय॥ ३९९॥

यहमध्यममा नायका सों बातकरत जानि नायका सों आशक्त होय नायकने ताहीकोनामलीनों सोनायका नायकसों कहतिहै॥ कबित्त॥ कैतौराखोगोयहो प्रगटहियेकोभाव जासोंरंगमगिमन रह्योअनुराग कै॥ उघरीरसिकरस रीतको प्रबीनवाकीभलैसुधिकीनी मोसोंबातनहू लागिकै॥ कृष्णप्राणप्यारे पूरीप्रीतिको धरमयहै पायेअबमरम भरमगयोभागिकै। पाहुनपरतिहरिवाहो उरलेपैजाहु रमनोकौनामरह्योरसनामैंपागिकै ३९९॥

दो० बिधिबिधिकौनकरैटरैनहींपरेहूपानु॥ 253
चितैकितैतेलैधरयौइतौइतेतनुमानु॥ ४००॥

यहमनायबो सखीकोवचन सखीसों॥ सवैया॥ खोयपरैमनमोहन हूं बहुभांतिहियेरस भायभरेतो। प्रीतिकीचोप चढ़ायअलीनि कहीसमझाय विनैकरिकेतौ॥ लोचन रेतऊनचले अनखायनचे अतिरोसरचेतौ। नेकचितैमृगनैन कितेतेधरयौभरि मानइतेतनयेतौ॥ ४००॥ मसालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० अहेकहैनकहाकह्योतोसोनंदकिशोर॥ 150
बड़बोलीकितहोतबलिबड़ेदृगनकेजोर॥ ४०१॥

यहमनायबोसखीको बचनसखीसों॥ कबित्त॥ सांचीकहि मोसों अहे काहेतेंकहतनाहिं तोसोंकहाकह्योमनमोहन कन्हाईरी। क्योंतूबड़ेबोल ऐसोबोलतगुमान भरयोतेतोरिसरासतें कहतैंगहिपाईरी॥ कृष्णप्राणप्यारो

अतिहितूकैमनावतहै करिमनुहार बहुबातमेंबनाईरी। मानकछौमेरा बलिउलटन करिजोपैतेही पाईबड़ीबड़ीआंख छबिछाईरी॥ ४०१ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

363 दो० हंसहसायउरलायउठिकहिनरुखोहैंबैन॥
जकितथकितहवैताकिरहेतकितविलोछेनैन४०२॥

यहमानकपरिहास नायक के विद्यमान सखी नायका सों कहति है जे॥ नायक को सुरतापराधदुरायबेको कहै तौ हूसंभवहै॥ कबित्त॥ मानकियोहो-हितो मनाबेप्यारोपायगहिरोसकेयतनकोविचारकहाकीजिये। रसिकरसाल तेरेलोचनतिनेाछे चाहिचकतहै रह्योऐसेना हक न पीजिये॥ हाहानेाहि सोंहैंअबसूधोकरि भौंहैंबैनकाहिन रूखोहैंलालछाती लायलीजिये। हंसिये हंसाइयेरीसुख सरसाइयेरीरस बरसायदुख सौतिनकोदीजिये॥ ४०२॥ करमअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

80 दो० येरीयहतेरीदईक्योंहूंप्रकृतनजाय।
नेहभरेईराखियेतूरूखीयलखाय॥ ४०३॥

यहमनायबौसखी कोबचनसखीसों॥ कबित्त। कौनपरीप्रकृतछुटा-येहूं छुटैनक्योंहूं ज्योंज्यों कीजेऊनीत्योंत्यों टुनपेखियतहै। कृष्णप्राणप्यारे कीदुहाईतेरीगतिदेखे मेरीमतिमोचमें सनीबिसेषियतहै॥ यद्यपिसनेहभरे उरमैंबसायप्यारे प्रीतसरसाई अनलेखेलेखियतहै। तऊतियभौंहनमेंबैनन मेंनैननमेंतेरेअंगअंगमें रूखाईदेखियतहै॥ ४०३॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

376 दो० क्योंहूंसहबातनलगैथाकेभेदउपाय।
हठुदृढ़गटुगढ़बैसुचालिलीजैसुरंगलगाय॥ ४०४॥

यहगुरुमानहैसखी नायकमोंकहत है किवाकोंमानचलि छुटैगोसखीको बचनसखीसों॥ सवैया॥ आजसज्योहठको गढ़प्यारीनदेखतधीरज कौन कोंदीजै। क्योंनहूं भांतिलगै सहबातनभेदउपाय यकेमतलीजै॥ लोचनदूत-नक्योंहूं मिलैहरिमालिये मंतुबिलंबनकीजै। आपनहींचलिये बलजानुसु-रंलगायजोलीजैतौलीजै॥ ४०४॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

haṃsi haṃsāya, -ura lāya, -uṭhi, kahi na rukhaṃhaiṃ bāi
jakita thakita se hvai rahe takata tiriche naina.

hvai rahe takata i.e nāyak tire tiriche naina ko-

-erī yaha terī, da-ī. ⅓ kyaṃhū prakriti na jāya
neha bhare hiya rākhiye tū rūkhiye lakhāya
rūkhī hī dikhā-ī deti hai.

kyaṃhūṃ saha-bāta na lagai, thāke bheda upāya;
haṭha dṛiṛha garha garhavai se ṭali tijai suraṃga lagāya

saha bāt bat hī bāt ⅄. he saha nāyaka kiwāṃ ko-ī
ṭarah sah (sang ṛṇ) or sahakāl = sīṛhī ⅄p.
garhavai ⅄ -ap gāṛhe ⅄

-anarasa hũ rasa jā-iye, rasika, rasīlī pāsa
jaise sāṭhe kī kaṭhina gāṇṭhaiṇ bharī miṭhāsa

sāṭhe -ūkh gaṇā

hama kārī, kai kai kahā pāyana pāryau pyauru
ūtha kahā -ajahũ kiye teha tarere tyauru
hama sabhiyāṇ hakā'bakā'kaiṇ pāryau ṣāla
kiya logī

rahīmana

ṇaṇhaiṇ hũ sā jaru ra laiṇ kete ā'jā-ī saṇha
-ebi kyaun baiṭhī kiye -aṇuṭhī guvāṇuṭhī bhaṇha

dyā'ī [illegible] [illegible]

nīra ra neha nayeṇ nī alikī kiyau jaṇa bhayabhīta,
yaha abalaṇa na kahũ suṇī, mana mā ye mīta.

[illegible] mā iye mīta [illegible]

दो० अनरसहूरसपाइयतुरासिकरसलिपास। 375
जैसेसाठेकीकठिनगांठ्योभरीमिठास ॥ ४०५ ॥

यहमानवतीकीशोभासखी नायकासोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ मानिनीतिहरीमनमोहन निहारिकछूमोपैनकह्यो परतुशोभाको बिलासुहै। नासिकासिकोरमोर भ्रकुटीअनखिबैठी लोचननुमांझअरुणोईकोप्रकाशहै। रसिकरमालवारसीली कीबिनोकिछुबि अनरसहूमैऐसे रसको निवासहै। कहै कविकृष्णजैसेसांठेकीसरस रीतगांठिहै कठिनभरी तऊपैमिठासहै ॥ ४०५ ॥ मरकट अक्षर ३४ गुरु १६ लघु १८

दो० हमहारीकैकैहहापाइनुपारतप्योरु। 658
लेहुकहाअजहोंकियेतेहतरेरेयोरु ॥ ४०६ ॥

यहनायका मानवतीसखी कोबचनसखीसों ॥ कवित्त ॥ नेहनातो तोरितिनुकालौ तूतनगिबैठी तिमईकेहठऐसे देखेसुनेहैंकहूं। केतिननछाई ब्रजबालाकलुगई परिगासीपैरिहाईन दुहाईदेखीमैंकहूं ॥ केतीमनुहारि ठानीपायपरे दधिदानीसतभायमानी मुखबानीआनीहैकहूं। लागीकाकेमतरानीसाझहोतैं सतरानीरन्योंपतिरानी बतरानीतूननैकहूं ॥ ४०६ ॥ भ्रमरअक्षर २० गुरु २२ लघु ५ 21. 6. 22.4

दो० सोहैहूहेरयोनतेंकेतौधाईसोंह। 366
येहौक्योंबैठीकियेऐंठिउबैठीभोंह ॥ ४०७ ॥

यहअतिगुरुमानहै सखीकोबचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ केतीमनुहारिकरिहारयो नंदलालब्रजयनिता निहालहेत जाकेनैनचाहैतैं। होतौ तूसयानीपरकहा चितआनयेरिस केसमाजबिनुकाज अवगाहैतैं ॥ सोंहहेरवेकोहमकेतिखाई सोंहैंतऊरोमनलाग्यौ क्योंनरसकेटमाहैतैं ॥ कियो कहाचाहतिहैसोहो क्योंनकहैबलिऐंठी बैठीभोंहकरि बैठी अबकाहैतैं ॥ ४०७ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० निरदइनेहुनयोनिरखिभयोजगतभैभीतु। 354
यहनकहूंअबलोंसुनीमारिमारियेजुमीतु ॥ ४०८ ॥

यहमानबिरहसखी कोबचननायकमें नायककेपक्षकी सखीहैजोपरकीयानायकाकहिये तोकहिये ॥ सवैया ॥ ऐसोअधीनभयो मनमोहन तोबिननेकनअंग समारहि । ताइतौतरसावत बावरीक्योंन करैमिलकुंज बिहारहि । तेरोनयो निरदेहित हेरिदुरौ जगुहोहि भरो भयभारहि । आजलौं ऐसोसुनीन कहूं गति आपमरै अरु मंतको मारहि ॥ ४०८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

574 दो० हठनुहठीलीकरिसकैयहपावसऋतुपाय ॥
आनिगांठज्योंघुटतत्योंमानगांठिछुटिजाय४०९॥

कवित्त ॥ दामिनीचपल गतिसोऊ श्यामघनहू सोंमिलि बिहरति अतिशोभा सरसाति है । तुमनिसोंलहलहीलतिका लिपटरही सबहीके उरप्रीतिरीति अधिकाति है ॥ कैसीयेहठीली कोऊरूठनो न ठानिसकै मनमदनमरूरि नसौंछाती अकुलाति है । देखोरतिपावस के नेहकीनिकाई माई अनिगांठ खूटैमानगांठ छूटजाति है ॥ ४०९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

98 दो० सतरभौंहरूखेबचनकरतकठिनमननीठि ।
कनाकरौंहवैजातहरिहेरिहसौंहीदीठि ॥४१० ॥

नायकाप्रौढ़ा उत्तमासखी सिखावतिहै कितूमान करियाके नायककी देखतहीं मानरहत नाहीं नायका कोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ तेरो कह्योरूखरूसनौं ठानतिहूं रूखरूखोकै तानतिभौंहैं । नीठिकठोरकरमनहूंमुखहूतें बखानतिबैन रूखोहैं ॥ ताकोकहाबसु मेरीअलीलचैलालचीजोअपनो तकिगोहैं । कैसीकरौं मनमोहनकोमुखदेखत लोचनहोत हंसोंहैं ॥ ४१० ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मिलेदुंहूकेदृगझमकिरुकेनझीनेचीर ।
हलकीफौजहरौलज्योंपरतगोलपरभीर ॥४११ ॥

मानमोचन सखीकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ बैठी अलीगनि में नवनागरि अचानकआयो तहांगिरिधारी । लालकोडीठिबचायबेकों मुख घूंघटओटकियेन निहारी । नैनसोंनैन टमींगमिले नरहिपट ओट कितौ

haṭṭha na haṭhīlī kara sakaiṃ -ihiṃ pāvasa ritu pā-i
-āna gāṇṭhi ghuṭi jāya tyaṃ māna ghāṇṭhi ṭhuṭi jā-i
ghuṭnā ? -āna = -aur

sakara bhaṃṇha, rūkhe bacana, karata kaṭhina mana nīṭhi
kahā karaṃ huvai jāti, hari heri, haṃsaṃṇhiṃ dīṭhi

both L & HP translate karata by karatī hiṃ although in the next line huvai jāti is made feminine agreeing with dīṭhi

karati is better nīṭhi to some extent

Y

mohī ko chuṭi māna gau dekhata hī hraja rāja
rahī gharika lauṃ māna sī māna kiye hī lāja

Lhar to hī kau chuṭa x he says it is sakhi kā bacana nāyakā se
the reading in text seems to be the preferable as nāyakā ka bacana to khī x

b p translates mānasī by manly [illegible] - surely the meaning
is that her resentment disappears, but that for the moment the shame at
having [illegible] prevents the same impression of shyness which would
[illegible]
or manasi mau mana [illegible]
L says mānke māna rahī abp. the appearance of resentment'.

Jaisau, jo chuṭa jo pagau hoṭha hī rahe sarhoca
[illegible] -aise hoṭa -aise bacana loca.
loca narnī par hoṭa (2 hoṭe) = lips

X

tu hīṃ kahata hau, -āpa hī samujhata sabai sayāna;
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

पचिहारी ॥ रोकसकेन हरोलकीफौज ज्योंगोलपै आनिपरैभरुभारी ॥ ४११ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० मोहीकोछुटिमानगौदेखतहीब्रजराज । 107
रहीघरिकलौंमानसीमानकियेकीलाज ॥ ४१२ ॥

मान मोचन सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ बोलेही बोले हंसैही हंसैअरुसैनकहैकछुबातहियेकी। अंकहू मांझनिसंकानिहैतसुसंक हिये पियपायछियेकी ॥ कैसबरायसौं डीठ छिपायेछिपैकहूं जोतिदिये की। मोहनकोमिलै मानछुटयो पैछुटो नखसीमनुमानकियेकी ॥ ४१२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चलौचलैंछुटजायगौहटरावरेसंकोच । 374
खरेचढ़ायेहेतअबआयेलोचनलोच ॥ ४१३ ॥

यहमानछुटायवेकों सखीकोप्रयोजन नायकको लैजायवेकोहै सखीको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ जानेकोकाल्हितिहारोपियारी कहांनियजानि महारिसठानी । कैतोमैंबातबनायमनायकरी मनुहारपैहैकनमानी ॥ क्यों हूंकेआजढरैंदृगभौंहकछूकनईजुहुतीअतितानी ॥ लालचलौअवलोकि तुम्हैं छुटिजायगोमानअबैहमजानी॥४१३॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु१३लघु २२ ॥

दो० तुहूकहतहौआपहूसमुझतसबैसयान । 99
लखिमोहनमनजोरहैतौमनराखोमान ॥ ४१४ ॥

यहनायकाप्रौढ़ा सखीकहतिहै तूमानकरि सो नायका सखीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ मानकियेरमनीजिनके बसप्रीतम होतमतौयह तेरो। होहुयहै अपनेचितआनति जानतुहौकरि स्यानुघनेरो ॥ तोकरोमानरी मोहनको लखिजोसखीहियरैहै मन मेरो । रूसिबोजीमें विचारतिहौ पै कहाकरौ त्यौरनहोततरेरो ॥ ४१४ ॥ मरालअक्षर३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मोहिंलजावनलाजयेहुलसमिलेसबगात । 101
भानउदैकोओसलौंमाननजानेजात ॥ ४१५ ॥

नायकाप्रौढ़ा मानमोचननायकाकोबचनसखीसों ॥ कबित्त ॥ तूतो

सिखवतिमनमे हनसों मानकरिमेरेहुडिये मेंतूविचारठहरातरी । निरखत कृष्णप्राणप्यारेकीछबि लीछबिआपहीतै हुलसिमिलतसबगातरी॥ कहाकरौं निलजयेमोहीकौंलजावतहैं कहूं जोपैहोयकछुकहिवेकी बातरी । भानके उदोतभयेओसकनकीसीभांति मानमनमेंतैहूं नजानतबिलातरी ॥ ४१५ ॥ आरभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० नैनानैकनमानहींकितौकह्योसमुझाय ।
तनमनहारेहूंहसैंतिनसोंकहाबसाय ॥ ४१६ ॥

नायकाप्रौढ़ानेचीयालंबनायकाकोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ सहियेजग केउपहासनतें गहियेगुरुलोगनमां रुगसैं। डरआनियहैअपनेटरहीं समझा-यरहीनहिंनेकचमैं ॥ अरुरंचकमेरो कह्योनकरै तनहूं मनहारे कहूं हुलसैं। यहनेमगह्यौ सजनीइन नयननु पैहरिहेरि हसैंईहमैं ॥ ४१० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० रहैंनिगोडैंनैनडिगगहैंनचेतअचेत ।
हौंकसुकारिरिसकोकरौंयेनिसखेहंसदेत ॥ ४१७ ॥

यहनेचीयालंबहै सखीनायकाको दृढावतिहै कि तूमानकरि नायका अपनेनेत्रन के स्नेहकी अधिक्यहै सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ हेतु अहेतुकछूनबिचारत क्योंहूं अचेतन चेतगहैरी । देखत वामनमोहन की छबिक्यौंहूं लगातनमेरेकहैरी ॥हूं कितनौकेसुकै रिसकौंकरौंयेन सिखेहंसिकै उनहैरी । कैसीकरौंयह नयननको यहबानपरीडिगिहूके डहैरी ॥ ४१० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १६ ॥

दो० सकुचनराहियेश्यामसुनियेसतरौंहैंबैन ।
देतरचौहौंचितकहैंनेहनचौहैंनैन ॥ ४१८ ॥

यहप्रथममागम नायका परकीयासखीकोबचननायकसों ॥ सवैया ॥ आगेह्वैलीबोयहै इनकोंउतचाइ इतें दृगखैलईहै । मानिबेकोंयहई प्रति उत्तरमानियेबात जुमौनमईहै ॥ रोसकीबातवहै रसको रुखकाहेको केशव छांड़दईहै। नाहींयहांतुमनाहींसुनी यहनारिनई न कीरीतिनईहै ॥४१८ ॥ मुहुक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२

dahaiṁ nigoṛe naina ye gahaiṁ na ćeta -aćeta
haṁ kasi kai risa kaṁ karaṁ ye nirakhaiṁ haṁsi deta

dahaiṁ jaleṁ pakarti nahiṁ haiṁ ćet -aisī -aćet haiṁ
why not they do not attend to me even ~~accidentally~~ by inadvertence

sakući na rakhiye, syāma, surmi ye sataraṁsaiṁ haṁ
deta raćaṁnhaiṁ ćita kahaiṁ neha raćaṁnhaiṁ naina
kahaiṁ deta

kahā lehuge khelamen̐ tajau -aṭapaṭī bāta
maiku hau-sauchiṃ̐ haiṃ̐ bha-īn bhaṃ̐uhaiṃ̐, saṃ̐uhaṃ̐ khāta

sakī nāyak se kaṭi
-aṭpaṭī -ūṭpaṭāṃg pīnab meṃ̐ -aṭpaṭāṃg
-aṃ̐uṭī kaṃ̐ā[illegible]

meṃ̐ saṃgaṃ̐ kī[illegible]

khūṭī māna -apa-ādha se ṭaṭige baṛhe -aṭaina
jeṃ̐ata dīṭhī, tajī risa khisī haṃ̐se ṭuhuna ke naina

pakaushālaukāra
[illegible]
[illegible]

-ajyaṃ̐ na-āye sahaja raṃ̐ga biraha dūbare gāta
-abahī kahā ṭalā-iyata talana ṭalana kī bāta

-aṭhairuṭī mṭal

tilakhī [illegible] gamana barāya
[illegible]

[illegible]

दो० कहालेहुमेखेलमेंतजौअटपटीबात। 373
नेकहसोंहींहैभईभौंहैंसौंहेंखात ॥ ४१९ ॥

यहनायका औरसों आशक्त जानिनायकाने मानकियो नायकमनावन आयोसोवाही नायकको नामपूछते निकस्योतो सखीनायक सों वाके मानछुड़ायवेकोपरिहासकोप्रसंगचलायोसखीकोबचननायकसों ॥ सवैया ॥ हाँसीतोकीजिये तासोंलालहजासोंमुखपायनयेतियेसो॥ बारहीबारलैओर कोनामभुकावोइन्हैतजोबानिअनैसो ॥ याविहासपैलेहीकहाकरियेतोइते कहिकोसुरवैसो। सोंहकिये भईनीठहाँहैं यहभौंहकमानमेंजकीऐसो ४२० ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० खिचेमानअपराधहूंचालिगेबढ़ैअचैन। 102
जुरतदीठितजरीसखीहंसेदुहुनकेनैन ॥ ४२० ॥

यहमानमोचन नायकाकेनेत्रनतो मानसोंखिचे नायकके नेत्रअपराध सोंखिचेहैं पै अचैनतबिनादेखे रह्योनजाय यातेंमअरुखिसो आपहीतें छोड़िकै दोउनकेनेत्र हंमेमखीको वचनमखीसों ॥ सवैया ॥ मानके भामिनऐंचरहीदृग रातकहूं हरिअंतनसेई। याहीतेमोहन नारिनबाढ़ रहै उरसोचसकोचगमेई ॥ कृपाकहैबिनदेखेदुहूंनके मैनअचैनहिये सरमेई। डीठजुरैतजिरीसखिसो बिबनयनमिलैंमुखपाइहंसेई ॥ ४२० ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० अजहूंनआयेसहजरंगाबिरहदूबरेगात। 130
अबहींकहाचलायतललनचलनकीबात ॥ ४२१ ॥

यहनायकाप्रवत्सपतिकासखीकोबचननायक सोनायकाहूको वचन नायकसों ॥ सवैया ॥ लेखतिमकहुंकान्हकह्योतुमकाल्हिहाजैहो चरावन गाई ॥ सोसुनिकेउनटीरघ स्वासभरीसबअंग परीपियराई॥ तादिनकी बानबेलीकेअंगनिआजहूं लदीमटीदुबराई ॥लालरहैअनबोलेकहाअबहीं चरचा चलिबेकी चलाई ॥ ४२१ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिलखी डबकोहैं चखनपियलखि गवनबराय। 134
पियगहि बरिआयौ गैरंराखीगैरलगाय॥ ४२२ ॥

यह नायका प्रवत्स्यत्पतिका मध्यावाकी यहदशा देखि नायक ने गवनवहरायकै गरेसोंलगाय सखीकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ पतिप्राण पियाबिछुरैनकहूं सुखमोर है प्रेमसुधापिये ॥ हितुमानिबिदेशको हौंनि विदाहरिआयौ प्रयानको आजुकिये ॥ निरखी डबकौहैसे नैनकिये बिलखी मृगलोचनि सांसलिये ॥ नकहीचलिबेकी कछूबतियां छतियांभरि लीनी लगायहिये ॥ ४२२ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ।

724 दो० ललन चलन सुन चुपरही बोली आपुन ईठि।
राख्यो गहि गाढ़े गरौ मनो गलगली डीठि ॥ ४२३

यह नायका प्रवत्स्यत्पतिका सखी को बचन सखी सों मध्या प्रवत्स्यत्पतिका ॥ कवित्त ॥ प्यारीकेभवन अतिहितकरि प्राणपति आयो बिदाहोन परदेश कोउमहिकै ॥ ललन चलन सुनिरही अनबोली तिय आलीनहूबचन सुनायोकछू कहिकै ॥ चकितसीभई चकचौंहटुमो छायो हिय आवत सलिलदोऊ नैननते बहिकै ॥ गलीगली डीठिकरि हेरी हेरि सनमुख मेरेजानि राख्योगेही गाढोगरों गहिकै ॥ ४२३ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

132 दो० ललन चलन सुनि पलनमें असुवांझरके आय।
भई लखाइनु सखिनहू झूठेही जमुहाय ॥ ४२४

यह नायका मध्या प्रवत्स्यत्पति का सखीका बचन सखीमों क्रिया बिदग्धा परकियाहू होय ॥ सवैया ॥ खेलतही सजनीगन में वृषभान कुमारि सखीप्रसों सानी ॥ कान्हर कालि करैगो पयान सुनीयह काहूके आननबानी ॥ आंखनमेंअंसुवा झलकें यहभेदको बातअलीहूनजानी ॥ यौंमुंहमोरि जंभायबेको करिऊठमुंह पोंछतिनैनसयानी ॥ ४२४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

129 दो० रहिहै चंचल प्राणये कहीकौनकी अरोट।
ललनचलनकोचितधरीकलनपलनकीओट ४२५

यह नायका प्रौढ़ा प्रवत्स्यत्पतिका नायका को बचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ मैनसुखसंगनमेंनेहकोतरंगनमें अंगअंगपागि रहेरंगमेंटमहिहैं।

lalana ćalana suna ćupa rahī, bolī -āpu na -īṭhi
rākhyo gahi gāṛhe garau mano galagalī ḍiṭhi

L sunī -āpa na -ītha rakhyau gaṛhaī manau diṭha
-īṭha-prītam se galagalī -ānsū bharī.
? bolī-āp nahiṁ, -iṭhī bolī

lalana ćalana sunī palana meṇ -anṣu-āṇ jhalake -āya
bha-ī lakhā-i na sakhina hūṁ jhūṭhaiṇ hī jamuhāya

vyājokti
bha-ī lakhā-i na ma-hūm nahiṁ hu-ī

rahi haiṁ ćaṁćala prāna ye, kahi, kauna kī -agoṭa ?
lalana ćalana kī ćita dharī kala na palana kī -oṭa

maraṇākṣheṣ kākūkti vṛttyanuprāsa
hint of death
-agoṭ roke se

palana kī -oṭa
ćal nahiṁ parī palaka -ol hone se nayak ko

is not palanes ki-ota as much as conveys the eyelids-

× cāha bharī, -atī risa bharī, -birahā bharī, saba bāta
kori sanēsc duhuma ke cale pauri laum jāta

×

mitī cali, cali mili, mili calala, -āugana ati.ayau bhāna
bhayau muhiuau bhora lau pauri prathama milāna

bhāu ō milāna ucumbetī muhiuat ō-phaṛī ℓ ?
-alhayau asta luia pauri lauṇī men
milau prashān tāṛī mil ā.a

bāna bhāna kāmanī kahi bolau prānesa
pi.i.ī kahaba lajāta mahiṁ? pānasa calata bidesa

kāminī ucumbetī ō-phaṛī bāna bhāna kāmini yi nām
ati.a.anshiyau ke hain.
ati.hālamka.
yaha bāta bhaṇaṇe kā ā.ma bapiyā.ī bhakaum aur mukha
pyāri ō-ṛī pauri vandhāyau pīhar pyā.i mahi

pi.yā pāna ati ha ā.ā, jai.d.a alo.i ī āpa
pi.i.ī duna.i ā.i ā.ā ā.ā.ā ā.ā.ā ā.

है ॥ कृष्णप्राण प्यारेतैंनछिनौभर न्यारेभये औरहीतें बसनभये ऐसोबान गहिहैं ॥ पलनकी ओटभये कलनकहत क्योंहूं जैसो गतिहोत सोधों आवत नकहिहैं ॥ ललनाबिचारी चितचलनको बातअब कौनकी अरोट ये चपल प्राणरहिहैं ॥ ४२५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० चाहभरी अतिरिस भरीबिरहभरीसबगात। 137
कोरिसंदेसे दुहुनकेचले पौरलौंजात ॥ ४२६ ॥

यह प्रदेशको गमन दोऊनके हितकी अधिकाई सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ कौनहूं काजको कान्हर कीन्हें पयान महूरतसाधभलेई। अंतरहोत दुहूनकोज्यों अकुलात बियोगके शूलसलेई ॥ चाहभरी अरु प्रीतिभरी रसरीति भरी बतियांनर लेई ॥ पौरलौं जात दुहूनको औरतें आलीरी कोरिसंदेश चलेई ॥ ४२६ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० मिलिचलिचलमिलिमिलिचलतआंगनअथयौभानु 136
भयौमहूरत भोरकोपौरी प्रथममिलानु ॥ ४२७ ॥

यह प्रदेश पयान को समय सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ सोहैं कियेदरकोहें से नैनटरैंनकहूं हियकोहिलिये। आगेहूं आयेनसूझे कछूकछौ न मुहस्मृतिसामलिये ॥ भोरसांझभई न अजौंघर भीतर बाहिरऔटलिये। रहेंगेहकी देहरी ठाढ़े ठाढ़े टलागीदुहून चलीचलिये ॥ ४२७ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० बामाभामाकामिनीकहिबोलौआवेस। 135
प्यारीकहतनलाजनाहिंपावसचलतविदेश४२८॥

यहनायकप्रोढ़ा प्रवत्सपतिकानायका कोवचननायकसों ॥ सवैया ॥ आयेहौमांगनमौंपै बिदाइतपावकमें घुमड़े घनकारे। कामिनी भामिनी बामकेबोलहूं प्यारो कहौजिन नंददुलारे ॥ रंचकहूनलजात हियेहितकै अबयेदुख दीजतुभारे। ऐसेमेंछांड़िबिदेश चलेकहामेरीकहा गतिप्राणपियारे ॥ ४२८ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० पियप्राणनकीपाहरू करतजतनअतिआप। 123
जाकीदुसहदशापरयौसोतिनहूंसंताप ॥ ४२९ ॥

यहनायकाप्रोषितपतिका सखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ तप तपोबिरहानल के बिलखीबह नागरिखीनानिहारी। आंखिनहीं निरहै अब आनिकै प्राणसबै सुधिआनिबिसारी ॥ सीतिसबै उपचार करैंगनकैप्रिय प्राणनकीरखवारी। दाहनुवाकोदसा निरखेंउनहूंकेपरयो जियसंकटभारी ॥ ४२९ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

387 दो० पावकझरतेमेहझरदाहकदुसहविशेषि।
दहैदेहवाकेपरसयाहिदृगनहींदेखि ॥ ४३० ॥

यहनायकाप्रोषित पतिकाबिरहनी नायकाकोबचनसखीसों उद्वेगतें नायकहूसखीसों कहैतोसंभवहै ॥ सवैया ॥ धूमधुरेधुरवागहरे अरुअंबर पूरमहीअवगाहै। देखरीपावककी झरतैंयहमेहकीज्वाला करालमहाहै। वाही भटूपरसैंही दहैयह नैननही निरखे तनदाहै। वागिरिधारी बिना बचिवे को तुही कहि और उपाव कहा है ॥ ४३० ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

394 दो० कहैजुबचनवियोगिनीबिरहबिकलअकुलाय।
कियेकोअंसुवासहितसुबातिबोलसुनाय॥४३१॥

यहनायकाप्रोषितपतिका सखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ प्राण पतीविनवातिय कोइकसाथसबैदुख आनपरेहैं। वाकोदसालखि पासके बासीउमास भरेगहरेगहरेहैं ॥ जेकहेंबैनबियोगनि नेअकुलायबियोग बियानभरेहैं। वेबतियांअबबोल सुवासबहीअसुवान समेतकरेहैं ॥ ४३१ ॥ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

393 दो० दुसहबिरहदारुनदसारहैनऔरउपाइ।
जतजानज्योंराखियतपियकोनामसुनाय ४३२॥

यहनायकाप्रोषित पतिकाबिरहनी सखीकोबचनसखीसोंदसअवस्थान केभेदमेंव्याधिजानिये ॥ सवैया ॥ प्राणपियाप्रदेश कियेतियअंग अनंगतरंगनिताये। सीरीहूजातजरै कबहूंउपचारविचार जितेसबछाये ॥ ईठ निधायखवासिहिनू मुरझायरहीन भयेमनभाये। ऐसेकहैंजोबचैतोबचैकहो गावोभावसे मोहनआये ॥ ४३२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

pāwaka jhara se mehajhara dāhaka dusaha bisekhi
dahai deha wāke parasa yāhi drisana hi dekhi
meha kanjhana drishṭi orisit vrishti (rain)

kahe ju bacana biyoginī, biraha bikula -akulāya,
kiye na ko ~~asuswāsahita~~ suwā sibola sunāya
kisko ~~ansuwa sahita~~ na kiyā ho suwā ne ~~unlaton~~ unh bāt sunāke

dusaha biraha, dāruna dasā, rahyau na aura upāya
jāta jāta jiya rākhiye, piya kī bāta sunāya

paryāyokti sakhi sakhi se
Dāruna bhayāwanī

दो० रह्योऐंचिअंतनुलहैअवधिदुसासनबीरु । 125
आलीबाढ़तबिरहज्योंपंचालीकोचीरु ॥ ४३३ ॥

यहनायकाप्रोषितपतिका प्रौढ़ानायका कोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ चैनपरैनहिंमैनदहै दिननैननमाँझ रहैजलछायो । भावैनभोजनभौनसुहाइनह्वायहिये परतापतचायौ ॥ ऐंचतिऔध दुसासनबीरु जऊबलकैतऊ अंतनपायो । वहकेबिछुरेबिरहासुबढ़्यो अबद्रोपदीकेपटज्यों अधिकायो ॥ ४३३ ॥ चिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० तियहियनियजुलगीचलतापियनखरेखखरोट । 291
सूखनदैतिनसरसईखोटिखोटितनखोट ॥ ४३४ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका सखीकोबचन सखी सों ॥ सवैया ॥ मैननेरंगरमीरसरंगअनंगतरङ्गउमंगसुहाई । कान्हरकेकरकीनखरेटकछूंतिय केउरमैं लगिआई ॥ पी परदेशगयो जबते तबतै लननीधनको धनपाई । देखत खोटखरोट खरोटिन सूकनदेतवहै सरसाई ॥ ४३४ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मरिबेकोसाह सुकैबढ़ेबिरहकीपीर । 434
दौरतिह्वैसमहींशशिहिसरसिजसुरभिसमीर॥ ४३५॥

यहनायका प्रोषितपतिका सखीकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ श्रीमनमोहनसों जबतेंबिछुरीतबतें नपलौकलपावति । नीरबिना सफरीज्यौं खरोपैपरीतलफैकभईदुबरीअति । दौरतसामुहैसीरसमीर सरोजनलैहियरा सोंलगावति । ऐसीभईरीं दशातनकीअबप्राण पयान की राहबतावति ॥ ४३५ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० बासिसकोचदसवदनबससांचदिखावतिबाल । 292
सियज्योंसोधततियतनहिंलगनअगनकीज्वाल ४३६॥

यहनायक नायकाकेलगनिके लगेतेंसनेहकी कधिकाईहै यतेंअगनि भईहैसोयाको दसासखीनायकसों निवेदनकरतिहै ॥ कबित्त ॥ जादिनतेंलग्योनवनेह मनभावनसों तादिनातेमैनकी मरुरिन मरतिहै । त्रास

गुरुलोगनिके सासनिसकति भरिएक आसलागी निसवासर भरति है ॥ बसतसकोचदस बदनकोबमयातें कछुनबसात ध्यानपतिको धरतिहै । लगनिकीअगनिकी ज्वालनिमेंबाल निजदेहकों सियालौंबहसोधन करतिहै ॥ ४३० ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

424 दो० करीबिरहऐसीतऊगैलनछांड़तनीचु ।
दीनेहूंचसमाधरैनचाहैलहैनमीचु ॥ ४३७॥

यहनायका प्रोषितपतिकासखीको बचननायकसों बिरहनिवेदन करि सखीनसखीहूंसोकहै॥ कवित्त ॥अतिहीकृशंगीखरीकृशहूतेंत्रस करिहरिके वियोगदुखदेह दहियतुहै । नैननिनिहारि नमैनेकहूमडीठि परेसे जतन बसनमैंमोग लहियतुहै ॥ बरुनीबयारी लागैजिनउड़िजाय सेखसखीके समाजअनमेष रहियतुहै । अतनसीभईसुतो बिसहैंके बेधबेकों मैनहूके नैनउपनैन चहियतुहै ॥ ४३० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

382 दो० औंधाईसीसीमलखिबिरहबिकलबिललात ।
बिचहीसूकिगुलाबगोछीटोछुईनगात ॥ ४३८

यहनायका प्रोषितपतिका सखीकोबचन नायकसोंसखी हीसोंकहै तोबनै ॥ सवैया ॥ बालबधूमन मोहनसोंबिछुरे बिलसींदुखदंददाई । नीरबिना सफरीज्यौं परीतलफै बहुभांति बियोगतचाई ॥ सीतल जानि सखीकरुणाकरि सीसतेंसे सगुलाबनिकाई । बीचहीनीरबिलाय गयोसब येकछूछीटन अंगलौंआई ॥ ४३८ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २९ ॥

383 दो० जिहिनदाघदुपहरभईरहितमाघकीराति ।
तिहउसीरकीरावटीखरीआवटीजाति ॥ ४३९ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका बिरहनिवेदन सखीकोबचन नायकसोंसखीकोबचन सखीहूसोंबनै ॥सवैया ॥ लालतिहारे बियोगतेबाल बिहाल खरीतरफै सफरीसी । बातनतापके त्रासनतैंसखि कोऊनलाय सकैनियरीसी॥ ह्वैरहेजेठकी ज्वालनि मेंजहांजाड़ेकीराति तुसारभरीसी । ताही उसीरकेधाममेंबासमुजाड़े कीरातिमेंजातबरीसी ॥ ४३९ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

karī biraha -aisī, ta-ū gaila na châ̱ratu nīca;
dīne hū̃ casamā cakhana, cāhai, lakhai na mīca

-aisī = -aisī dublī

-atyukti

-aṃdhā-ī sīsī su lakhi biraha barati bilalātā
bica hī sūkha gulōba gau chiṃtau chu-ī na gāta

biraha se jalli ko rote dekh kar
-ek chint bhi na lagē.
(? chintau for chinta hū̃)

jihiṃ nidāgha ḍupahara rahai bha-ī māha kī rāti
tihiṃ -usīra-kī rāvaṭī kharī -āvaṭī jāti

biraha ki gami se
-usīra khas

sire jatanani sisira ritu sahi biralini tana tapa
basabe kaun gulchiama oinani paryau parausini papa
-al.pukli-

gunati ganabe lain rahe chatahi -achata ca-mana
-ali, -aba ye lilhi -auma laun pare rahau tana prana

lilhi hani ki thauli

awama s. = a lunar day that exactly corresponds with
a solar one chata achala e. g. the month beginning with
bat Sayn rahe se thi anrahe samana

x

Sumata pathika munha maha nisi, lu-ain calati -uhi gra-
bina bujhe bina-hi .ane jiyali sitari bana

ie nawak ne an instance of a long sentence in which the
subject has to be inferred -

-aja dai-ale basana, jaje hu hi rati
sitasa hai hai, meha bara, sabe sabai thiga jati

-ali [illegible]

दो० सीरेयतननुशिशिरऋतुसहिबिरहनुतनताप। 380
बासिवेकोंग्रीषमदिननुपर्योपरौसिनपाप॥४४०॥

यहनायका प्रोषितपतिकासखी कोवचननायकसों बिरहनिवेदनअरु सखे कोवचन सखीहूसोंसंभवहै॥ कबित्त॥ जानबूझिफेर खात फेरन उतहिजातयेकबेरभयेजेबड़ोहीबाड़गरके ह्वैरह्यो अदाआवासुतेउतचलो आस पास उसतैं उसासतज्योंचाहत नगरके॥ जबजबस्वारकेसमीर इत आवतहैंकान्हजू तिहारीबिरहनकेबगरके। यचतनडरपान पेड़तेपरसजातु सोंधेभरि आलबालउघरेनगरके॥४४०॥ पयोधरअक्षर ३८गुरु १२ लघु २४॥

दो० गनती गनवेतेरही छतहू अछत समान। 431.
अबयेतिपिआमरन लोंपरेरहौतनप्रान॥४४१॥

यहनाका प्रौढ़ाप्रोषितपतिका सखीकोवचन सखी सों॥ सवैया॥ देखिरी कैसीकरीमनभावन ऐसीधौंबाहि कहावनि आई। कौधिहूबीति गई न लईसुधि येतीधरीघरमें निठुराई॥ तातिनतीगिनवेते रहेनभयेसभये दिन चासुखदाई। येतिय औमनोंव्योस के सोमलै प्राणपरे तन रहौमाई ४४१॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० सुनतपथिक मुहमाहनिसि लुवैचलतउहिगाम॥ 435
बिनपूछेबिनहीसुनेजियत बिचारीवाम॥४४२॥

यहनायका प्रोषितपतिका बिदेशमें पथिकके मुखकी बातसुननायकने अटकरतेयाकोदशाजानी सखी प्रतिवचनसखीसों॥ सवैया॥ सीतसमैहूं कीरातमें लूवें चलेंउहिदेश हुतासनमानी। आपसमें बतर तबडोहीं अचानकआनपरी यहबानी॥ छांड़ियेसब काजबिदेशीकी बुद्धितहीं घरकोअकुलानी। प्राणपियारीकी आयगईसुधि जीवतहैजियमें यहजानी॥ ४४२॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० आड़ैदैआलेबसनजाड़ेहूकीराति। 381.
साहसककैसनेहबस सखीसबैढिगजाति॥४४३॥

यहबिरहनिवेदन प्रोषितपतिका सखीकोबचननायकसोंसखी सखीहूसों

कहै ॥ कबित्त ॥ लालबनमाली बिछुरेतेब्रजबालभई निपटबिहालबिथा उरमरमातिहै। अतनसताई वाकेतनकी ततार्ईदेखेब्रषकेतरणिहूं कीकर-णिमिरातहै ॥करतउपाय हाय तहियारवारमीड़िरकर करनिनिपटअकुला-तहै। आड़ेदेवसन आलेजाड़ेहू कीरातमांझ साहसकेहि नासखी ढिगजातिहै ॥ ४४३ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

388 दो० मारसुमारकरीडरीमरीमरीहिनमारि।
सींचिगुलाब घरीघरीबरीबरीहिनबारि॥ ४४४ ॥

यहनायकाप्रोषितपतिका उद्वेग दशानायककी बचनसखीसों अन तरंगसखीसखीहूं सों कहैतो बनै ॥ कबित्त ॥ बालमबियोगतै बिकल अतिप्राणकछू सूझतनआन बन्यै दुखहीकोदावरी। और उपचार करिमारि-न मरेको जोहितूहै तौतूक्रष्णप्राणप्यारे कौमिलावरी ॥ घरीघरी सींचत गुलाबकेसलिलसोंतू कियौकहावाहतिहै माहूधौंबावरी। भरतघरीपैमारी मारकीडरीहै बिरहागिनि बरियेअबबारि जिनवावरी ॥ ४४४ ॥ मच्छ अक्षर ॥ ४१ गुरु १० लघु २४

426 दो० पलनुप्रकटबरनीतबढ़िनाहिंकपोलठहरात।
असवापरिछतियांछिनकुछनुछनायछपिजात ४४५

यहनायका प्रोषितपतिका मध्यसखीकोबचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ बालनन्दलाल के बियोगतेबिकल यातेंपलपल विधकैसेबासर बिहातहैं। विरहतताकीबढ़न बरनीनजात येतेमानतचेवाके कुसुमसेगातहैं ॥ पलनु तेंप्रगट बढ़तबरनीनहू तेपरतकपोल पैठुरतढरिजातहैं। सलिलकी बूंद तातीछतियांवै परतऐसेछातीपर अमुवाछनकि छपिजातहैं ॥ ४४५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

391 दो0 फिरिसुधिदेसुधिधायय्यौइहनिरदईनिरास।
नईनईबहुरचोदईदईउसासउसास ॥ ४४६ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका याकोअवस्था सखीसखीं सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ आलीबियोग भयोबनमालीको ब्याकुलबालखरी अकुलाई। पाहन को पुतरी ह्वै परी उपचार बिचार कछू न बसाई ॥ ऐसेमैंवाहि

māra su māra karī kharī, -arī marī hi na mārī –
sīṇća gulāba ghaṛī ghaṛī, -arī baṛī hi na bārī.

māra kāmana
ghaṛi ghaṛī

jalīkona jalā

palami pragaṭī, baruṇīnī baṛhī, ćhana kapola ṭhaharāya
-aṇsu-ā parī ćhaṭiyā ćhaṇīka ćhanaćhanāya ćhapī jāy
pari-parke ćhāṭī par.

-alyukhī .

phiri sudhi ḍai suḍhi dyāya pyau -ihiṇ niraśa-ī nirāsa
na-ī na-ī bahuraun, da-ī! da-ī -usāso -usāsa

suḍhi suḍhi lōṭō, biṣasā na-ī na-ī paśa māṇhi
da-ī ḍa-ī paḍa-yanakaśai sankaṇ.baya-ihiṇ ṭhāṇhi

sudhi hosh yād nirāsa 'sakhi' piu' mey gāli . bahuraun ṭhi..
-usāso -u/ōs dī o-uksā di

biraha jarī lahi jiṅgani kahī su bahiahai bāra
-arī -āva -uṭhi bhīlarī barasata -āja -aṅgāra

śhabdyot dekh -angār kia bhrama hu-ā nāyakā ko

-ita -āvati ćali jāti -ula ćalī śhasātika hāthia
ćaṛhī hiṅḍore se rahai lagī -usāsani sātha

sāṅs choṛne se baṛhai hai -au tane se haṭai hai.
hiṅḍole ćarkhā -upamāna se bāeak -ānajāna dharm

naiku na jhurasī biraha jhara nehalatā kumhilāti
nīli nīli śhete harī harī khiarī jhālarati jāti

su e nīli -birahāgni śhwasnā -hai au kumhilānā
hāj nahu śhete

दईसुधिदेसुध धायपिया दुखरासजगाई ॥ वानिरदैसोंकहा कहिये जिन प्रेम मरुरकी पीरन पाई ॥ ४४६ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिरह जरी लखि जीगननु कह्योनउहिकैबार । 385
अहेआवभजि भीतरीबरसतआजअंगार ४४७॥

यह नायका प्रोषितपतिका उद्वेग दशा सखी को बचन सखी सों नायकहूसों बिरह निवेदन बनै ॥ काबत्त ॥बैसकोकिशोरी गोरीशोभा वरनीनजात गातकोनिकाईछवि नाहींकाहूजानमें ॥ बासरुगंबायो खोलि जियेबियोगबेलि सांझसमयबिथाबाढ़ी बैठिपियभौनमें ॥ कैधिकैबितीत भयेरंचकैन कलपरीव्याकुलसी भईजातसीरे मंदयोनमें ॥ नीचेतेउठाय नारिडीठिपरे जागनासुआंग आगिआगि कैकैभाजगई भौनमें ॥ ४४७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० इतआवत चलिजातउतचलीछसातक हाथ । 418
चढ़ी हिंडोरेसैंरहेलगीउसासनसाथ ४४८ ॥

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको बचन बिरह निवेदन नायक सों औरसखीको बचन सखीसों दुर्बलता अधिक है उसासनतें मुकरता नसंभवहै ॥ सवैया ॥ मोहनलाल चलोचलिदेखिये आपहीजाय बियोगनकेढंग ॥ थोरेहीद्यौसनतें लखियेसबदेहभई जरदीहरटी रंग ॥ बैसहूकेभरमें यहभांति परेबरहैन खरेदुबरे अंग ॥ पैंड़छसात हिंडोरेमें बैठो जुआवतजाति उसासनके संग ॥ ४४८ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नेकन झरसीबिरहझर नेहलताकुमलाति । 293
छिनछिनहोतखरीखरीखरीफैलतीजाति ४४९ ॥

यह नायका प्रोषितपतिका नायकाको बचन सखीसों अथनायकको बचनसखीसों ॥ कबित्त ॥ नंदकेदुलारे प्यारेन्यारेभये जबहीते तबहींते तातीहवैकै छातीअकुलातिहै ॥ सुधिआयेघरीघरी सूलमे मलतरर प्रा परेपरबसकछुन बसातिहै ॥ दारुनबिरहझर यद्यपिसनेहलता झरसीतद्यपि नेकहूनकुंभिलातिहै ॥ दिनदिन छिनछिन उमंगिअधिक होत हरीहरी खरीखरी कालरतिजातिहै ॥ ४४९ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

290 दो० याके उरऔरै कछू लगी बिरहकी लाय।
प्रजरैनीर गुलाबको पीकी बात बुझाय ॥ ४५०

यहनायका प्रोषितपतिका नायकाकी अवस्थासखी सखीसों कहत है ॥ सवैया ॥ ऐसीदशा लखिहूअकुलाति कितै उपचार बिचारतकोरी ॥ आनन बोलैन खोलैविलोचनि ढुबरी ढोत छिन छिनपोरी ॥ याके हियेकछु पैर अनोखीवियोग हुत मनज्वाल जगोरी ॥ नीरगुलाबके टूनी बरैपिय प्यारेकी बातही ढोतहै सीरी ॥ ४५० ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

305 दो० होमत सुखकरि कामना तुमहिं मिलनकी लाल।
ज्वालमुखीसीजरतलखिलगानिअगानिकीज्वाल ४५१

यह नायकाकी लगनकी ज्वालकी अधिकाई सखीनायकसों कहति है ॥ कवित्त ॥ कृष्णप्राणप्यारे लालजबहींते भयेन्यारे तबहींते प्यारी पलकनधरति है ॥ समकिससकिअति उरमेंउसासेंलेत तलफितलफि सुध बुध बिसरति है ॥ बिरहहुतासनकी निरखि प्रचंडज्वालनिहचै हियेमेंज्वल मुखीकोधरति है ॥ मिलवेकी कामना हियेमेंकरिइंदुमुखी अबसबसुखनिकोहोमतो करति है ॥ ४५१ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

425 दो० नितसं सोहं सोबचनु मनोसुयह उनमान।
बिरहअगनिलपटनसकैझपटनसींचसिचान ४५२

यहनायका प्रोषितपतिका सखीको बचन सखीसों कहै तो बिरह निवटन होय। सवैया ॥ बिछुरेपियऊसन कोबिषयो वहकौन कथा जुकहावतिहै तुमसोंतुकहौ तिहयोगजिये जिनजानहुबात बनावतिहै ॥ उहिनागरकी तनतापजुहै हितहूबैकरि सोदरसावतिहै ॥ डरदाहनिवा बिरहानलके बलिवायहमीच न आवतिहै ॥ ४५२ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

37 सो० बिरह सुकाई देहनेह कियौ अति डहडहो।
जैसे बरसै मेहजरै जवासो जोजमै ॥ ४५३ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका बिरहकीअरु सनेहकीअधिकाई सखीसों

yā ke -ura -aurai kāchu lagī biraha kī lāya;
pajarai nīra gulāba ke piya kī bāta bujhāya -

bāt = bacan v pawani
pajarai bharaktī jaltī.

homati sukha kari kāmanā tumahi milana kī, lāla
jwāla mukhī si jarati lakhi lagani-agani kī jwāla

lakhi for lakhī main ne homati hai nayaka sukha se
homati from homnā
tana su havya kari jani

niti sansau, hansau baiatu mānau -ihi-anumāna
biraha-agani lapaṭani sakai jhapaṭa na mīca sicāna

sicān bāz pakshi ko kahte hain
sansau sanśaya hansau hansa rūpī jīva (hāṃs)

biraha sukhā-ī deha, neha kiyau -ati ḍahaḍahiyau;
jaisen barakhe meha, jarai jawāsau, jyau jamen

jamai bete.
jīwatī jīv kahain jar bikhchi i jamti hai.

kyamki deha-lakhiyat jarati neha jamalu na lakheya
tyamsu jawāse kī dasā drishtant su ihin bhiya

biraha bipati dina parala hī, taje sukhani saba-anga
ralahi-abalaun bāsukhiau bhaye calā calī jiya sanga

ā bhaye agwanā ban ka ā chanā hue jiyā ki sangh
rah kar ~~tah~~ ab tak dukh bhī ca hunāle hue jiyā ki sangh
what is the ba before dukhau ?
talaiālī moving to & fro settingout on a journey

chatau neha kāgaā likiye, bha-ī lakhi-i na ṭāṅka
biraha tāc-ugharyau ca-ala sanhura kau sau-āṅka
chalau wa tank Bhrikuti chij
sanhura, bhrikura also sehuṇ sihur & sij
Euphorbia neriifolia L. Antiquorum Platts,
kāc bāsi jaun likhai kāgā par pāni tapāwai tab-āṅk (akshai
-uṣharai (jāhir hoye)

prayaliyau āga biyoga ki ā jau bilocana nīra
-āṭhau-u jāna liyau ralai -uṣyau -usāsa samīra
ā to & ā ā ā ā nīra biyo ā ā se
& -uṣyau usā liyau -usā ā samī se

कहैअरु नायकहू सखीसों अपनीअवस्था कहै तोसंभवहै ॥ सवैया ॥ देखो वियोगन नेह सुखायकरी दुबरीरह्यो मांसनमासो। नेहलताउल झायहरीकरी हेरिसखीनहूं कैपरयोमासो। आवतहै जियमें उपमाकवि कृष्ण कहैदेखिये तमासो ॥ ज्योंबरसेघनपावसके सबओरजमैजरैआकजवासो ॥ ४५४ ॥ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० बिरहबिथादिनपरैहीं तजैसुखनसबअंग । 432
रहिअबलौंबटुखौभयौचलाचलौजियसंग ४५५॥

यहनायका प्रोषितपतिका नायकाकोबचनसखीसों अरुसखीसखीसों कहैतौहूसंभवहै ॥ कबित्त ॥ जौलौं प्राणनाथकेसमीपरहीतौलौंअंगअंग सरसाने सुख उमंगिउमंगिकै । न्यारेहोत प्यारेकोवियोग बिथा बाढ़तही नातौ करिहातौवेअगाऊ गयेभगिकै ॥ दुखकीनिकाई कछूबरनी न जात माईयेतौदुखसह्योतऊ रह्योप्रेमपगिकै । पैनभयौहीनोरीयहांलौंसाथदीनो अबचलिबोबिचारतौ संगप्रान न केलागिकै ॥ ४५५ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० छतौनेहकागरहिये भयौलखाइनटांकु । 127
बिरहतचैउघर्योसुअब सेंहडकोसोआंकु ४५६॥

यहनायका प्रोषितपतिका सखीकोबचन सखीहूसों नायकहूकोबचन सखीसोंसंभवहै ॥ सवैया ॥ जौलोंसमीप रहयोहरितौलगमें अपनोमन भायोकयोंई । काहूलह्यो यहभेद नजीयको यद्यपिहौ सबभौनभरयोंई ॥ नेहछतौई हुतौ हियकागर कौनहूंभात नजानिपरयोंई । सोंहडिको सो लिखाव अलो बिरहा गितचै अबतौ उघरयोंई ॥ ४५६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० प्रजर्योआगिवियोगकी बह्योबिलोचननीर । 427
आठौंजामहियेरहै उड़्योउसाससमीर ४५७॥

यह अवस्था बिरहकी नायक अथवा नायका अपनी अवस्थासखी सों कहतहै ॥ कबित्त ॥ सबहीतें कठिन सनेहकी हिलगयह किन-सुखपायौ मनप्रेम पंथ ढारिकै । जाके तनलागे सोही जानतहै भेदयह

बेइन विषमकोन सकत सम्हारिकै ॥ कहै कविकृष्ण यह चोर अद्भुत गतिप्रजरयो वियोग आगिबच्यो द्रगबारिकै। तऊदेखो आगेजामु उठयोई रहतदीयो दीरघउसासन की प्रबल बयारिकै ॥ ४५७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

395 सो० मैं लखिनारीज्ञानकररास्योनिरधारयह।
वहईरोगनिदानवहैवयदऔषधिवहै॥ ४५८ ॥

यह लान सखीको बचनसखीसों। अनतरंग सखीको कहिबो है अरुनायकाहू अपनी अवस्था सखीसों कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ काहेको घोरघनो घनसारबृथा उपचारनु कैतनुवारो। भोलखिनारकरयो निरधारलै यहभेद नवेदबिचारो ॥ जाकोस्वरूप खुल्यो उरमेंकिनताहि दिखाय बिया यहटारो। औषधिवैद बहै उपचारबहै पुनरोग निदाननिहारो ॥ ४५८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

428 दो० तच्योआंचअतिबिरहकी रह्योप्रेमरसभीजि।
नैननकेमगजलबहै हियौपसीजिपसीजि ४५९ ॥

already p. 208

यह नायका की अथवा नायक की विरहकी अवस्था सखी सखी सों कहतहै ॥ सवैया ॥ जादिनतें बृजनागरिको मननंदकिशोरके नेह नह्यो। तादिनतें दिनरैनडरै असुवातिनको यहभेदलह्यो ॥ आंचतच्यो बिरहानल की हितकेरसमें अतिभीजरह्यो। ताहीते अंगपसीज हियो बियनैननके मगनीरबच्यो ॥ ४५९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पावकझरतेंमेहझरदाहकदुसहाविशेखि ॥
दहैंदेहवाकेपरसयाहिदृगनहींदेखि ॥ ४६० ॥

यहउद्वेगदाहा नायककोअथवा नायककोबचनसखीसों ॥ सवैया धूमधुरेधुरबागहरे अरु अंबरपूर महीअवगाहै। देखरीपावककी झरतें नेहमेहकी ज्वालकरालमहाहै ॥ वाहिभटूपरसेही दहैयहनैननहीं निरखे तनदाहै। वागिरधारीबिना बपुवेकोतुहीकहि कैरउपावकचाहै ४६० ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

maiṇ lakhi nārī gyāna kara rākhyo niradhār yaha
waha-ī roga nidāna wahai baida, -aukhadhi wahai,

if this is correct the pāsi is after the 14th moment and the verse ends with e –

main lakhi nārī gyāna kari rākhyau niradhāra yaha
waha-ī roga nidāna wahai baida -aukhadhi wahai

nārī strī or nāṛī (vein pulse)
nidān ādi kāran

tajyo -āṇéa -ati biraha kī rahyo premarasa bhīji
nainana ke maga jala bahai hiyau pasīji pasīji

L tajyau -āṇéa -aba biraha kī rahyau prema rasa bhīja
nainani ke maga jala bahai hiyau pasīja pasīja.

biraha hī -āṇé se kā (? nāyak) he says nāyak or nāyakā
hiyaṇ pasīj kar jal-bahtā hai. but it is better to take hiyau
as the subject of all the verbs
samāsokti brief speech modal metaphor and jala as jal hokar
or
samās ukti prastuti vishai -aprastuti phurai -ā-i
biraha manuṣi -arakahi ṇuwana rīti bhānti darasa-i

prem ke ras men bhīji rahā hiyā, -ab biraha ā-āṇé se
tala hai, so pasij pasij ke nainani kī rāh se jal hoke
bahtā hai.

kauna sunai kāsan kuhaun surata bisarī nāha
kaīlabadī jyun ka a hai ye bisarā badnāha

kaīsanē [illegible] (sune) surati bistarī | jiya lela hain |
[illegible]
surati dūla-ī mere nāth ne or [illegible]
haṭa hoṭī kar meā jiv lelaun ye -sāth ke sāal kuśali.

syāma surati kaun rāsīlī lakali karanijā tīra
-? sunanī karali karesakan chineka kharaunchaun nīra

[illegible] karanijā sammā
kesakan kajala karesa mukhekalle[illegible]
karaunkaun [illegible]

sawala jīgala supana basara sarisa saina kuśaina
[illegible] syāma ghar ā surata bisarai hi bisarai na.
[illegible]
[illegible]

Kau[illegible]a sisau [illegible] jalan sukhāa dukha deta
ekila [illegible] ke sunanī kīraī kiye -ācta

दो० कौनसुनैकासोंकहौंसुरतबिसारीनाह ॥ 390
बदाबदीज्योंलेतहैयेबदराबदराह ॥ ४६१ ॥

यहनायकाप्रोषितपतिकाविरहकीदशा अथवाभेदमेंचिंता नायकाकी बचनसखीसों ॥ कबित्त ॥ कासोंकहौं कौनयह जानेउर अंतरकी सुस्त बिसारीसुखकारी हरिनाहरी। येनेपरबरज्यौनमानै क्योंहूं प्राणलेतबदाबदी बदरानिपट बदराहरी ॥ अंगहोतबिकल अनंगतनतावत है कौनहरैवेदन रहतचितचाहरी । कृष्णप्राणप्यारेकी दुहाईनसुहाईकछू बरसत नैननतें सलिलप्रवाहरी ॥ ४६१ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० श्यामसुरतिकरराधिकातकतितरनिजातीर ॥ 656
अंसुवानिकरतितरोसकोखिनकखरोहौनीर॥४६२॥

यहनायकाप्रोषितपतिका दसअवस्था केभेदसमस्तसखीकी बचनसखी सों ॥ सवैया॥ ॥ श्रीमनभावनके बिछुरेवृषभानसुता अतिहीअकुलानी। भोजनभोनसखेन सुहायसुहाइरटै निसबासरबानी ॥ सरसुताहि निहारि रहीउनहारकछू हरिकीपहिचानी । आंसुनकेपरवाह करयौखिनयेकखरो ह्वैतरोसकोपानी ॥ ४६२ ॥ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० सोवतजागतसुपनबसरसरिसचैनकुचैन ॥ 413
सुरतश्यामघनकीसुरतबिसरैहूबिसरैन ॥ ४६३ ॥

यहअपनेचितकी प्रीतिसखीसों कहत है दसअवस्थाकेभेद मेंस्मृतिजानिये ॥ सवैया ॥ बाहरजाउंतौबाहर हीघरआउंतौ आवत संगलगेहो भौनकेकोनमेंबैठि रहौहरिपैठिरहै हियमें पहलेही ॥ नींदहूं मेंनकबानी करैछिनछूछिन आवतहैसपनेही । सोवतजागतरैनदिना मनमोहनमोहन चैननदेही ॥ ४६३ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० भोयहऐसोईसमोजहांसुखदुखदेत ॥ 720
चैतचांदकीचांदनीडारतकियेअचेत ॥ ४६४ ॥

यहनायकाप्रोषितपतिका दशअवस्थानमें उद्वेगनायकको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ व्यालभईअब मालतीमाल समीरतेंपीर हियेसरसाई ।

पावकपुंजमों चंपक चंदनचंद्रकुचंद लख्योनसुहाई ॥ चैतहरैचितचैतकी चांदनी बेधतबानन कामकसाई। आनिबन्यो अबऐसो समौदुख देतसबै जुहुतेसुखदाई ॥ ४६४ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

416 दो० हौंहींबौरीबिरहबस कैबौरोसबगांव ।
कहाजानियेकहतहैशशिहिसीतकरनांव ॥ ४६५॥

यह नायका प्रोषितपतिका नायकाको वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ कुंभजहूअचयौ सुपचयौनयाहीते उगडारयौतमहू डरपिबिषकदसों। देखो अबलिनकोकलको लैचढ़ायेसोसईस कहाजानिहित कीनोमतिमंदसो ॥ कैधौंसबहीकी मतिहीन भईमेरी आली कैधौंहूंहो बौरीभई मैनदुख दुंदसों ॥ ४६५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

415 दो० औरभांतिभईवयेतौसरचंदनचंद ।
पातिबिनअतिपारतबिपतिमारुतमारुतमंद॥४६६॥

प्रोषितपतिका ॥ कवित्त ॥ जेईजेईसुखददुखद अबतेईभयेकबिटदुर बिछुरतयदुपतिय । सीतलमंदसुगंध है जोईहुतोसोई भईअनिल अनिल हतेततिय ॥ तरुभयेतोरव्याल भईबल्लियजगुभई यमुनकुसुमभयेकतियों । जिनबनहमबिहरति श्रीपतिसंगतिन बनअबबिहरन लगिछतिय ॥ ४६६ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० इतआवतचलिजातउतचलीछसातकहाथ ।
चढ़ीहिंडोरेसेरहेलगीउसासनसाथ ॥ ४६७ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका कृष्णताको अधिक्यसखीको बचन नायकसों सखीसखीहूं सोक हैतो होय जसअवस्थानमें व्याधिस्वाससंचारी सुकमारतानसंभवहै ॥ सवैया ॥ मोहनलाल चलो चलिदेखिये आपहीजायवियोगनकेढंग । थोरेईद्योसनतें लखियेसबदेहचढ़ी जरदीहरदीरंग ॥ वैसहूकेभरमेहूभांति परेपरहीनखरे दुबरेअंग । पैडछसातहि डोरेसेबैठीजुआवत जात उसासनके संग ॥ ४६७ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

299 दो० हरिहरिकरिबरबरिउठतिकरिकरिथकीउपाय ।
वाकोजुरबलिबेदज्योंतौरसजाइतोजाय ४६८ ॥

haun hiṉ bauri biraha basa kai bauro saba gāṉw
kahā jāniye kahata haiṉ śaśi hi sītakara nāṉw

I gām nām Kuhā jāni ye
kya samajhkar yih kahte hain
sandehālankār

-awrai bhāṉti bha-e ba-e ćausara ćandana ćanda
pati bina -ati pāralā bipati, māratā māruta manda
ćausara ćār laṛ kā hār
ba-e ? translate -ab ? bha-ī aba ye

hari hari bari bai kari -usali, karikari thaki -upāya,
wākau jwara, bali, baidajyaun, ta rasa jāya, tu jāya.
bari bari "jali jali" [illegible]
rasa pāe ćauki [illegible] au ghata
[illegible]

marī ḍarī ki ṭarī bithā ? kahā kharī ? ćali ćāhi
rahī ḳarāḷi karahi -ati, -aba mukha -āhi na -āhi
mariḍaīde willyampāsāl. ki bhrāṃti karāḷi k. vīpsāl.
-āhi -āhi namahāl.
ṭari ḍaḷī iṃ ṣāḷi ga-ī ie. paṣi khy not paī

marana bhalau baru biraha teṃ ẏaha bićāra ćita joi
marana ekhaṇai dukha-eka ḳau biraha dukhūṃ dukha hoi

kavake mīde kusuma laṃṣ ga-ī biraha kumhilāya
ie ī samīpini sakhinī -hiṃ nīṭhi ṕićhānī jāya

nīṭhi bre must n can scarcely

यहनायका प्रोषितपतिका व्याधिअवस्था बिरहनिवेदन सखीकोबचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ हरिहरिरटत बढ़तबिथाछिनु छिनु बरिबरिउठतवाकेनेरेजात जरिये। करिकरि थकीहैउपाय सबआलीअबकछुनबसायउरसोच भारभरिये ॥ येहैबलि बैद अबरावरेसुरसही बचैतोबचै बाल बलिवाकोपीरहरिये ॥ तोखातापटारिये धर्मउरधारिये निवारिये गहरु करुणाकेडारढरिये ॥ ४६८ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० मरीडरीकिटरीबिथाकहाघरीचलिचाहि। 430
रहीकराहिकराहिअतिअबमुखआहिनआहि४६९

यहनायका प्रोषितपतिकादस अवस्थाभेदमें जड़तासखीकोबचन सखीसों॥सवैया॥ ऐसीकोछाँड़ि बिदेशगयो हरिजोकबहूं बिछुरीनघरीहै। हाय यहैरटलाय रहीगतियाकी लखैमतिमेरी हरीहै। बालबियोबरजागि भरी वेकराहनिक्यों अबहीबिसरीहै ॥ पीरटरीकि परीहै मरीचलि देखिअरी कहाटूरखरीहै ॥ ४६९ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० मरनभलोबरबिरहतेयहबिचारचितजोय। 433
मरनमिटैदुखयेककोविरहदुहूंदुखहोय॥ ४७० ॥

यहनायका प्रोषित पतिकानायका कोबचनसखीसों अरुनायक हूको बचनसखीसोंसंभवहै ॥ सवैया ॥ नैकहूं कोबिछुरे सबही सुखमाज भयेदुख दायकभारे। नैननीर झरीबरसैं तरसैंछतियां बिनप्राण पियारे ॥ आलीबियोगबिथा हरिवेतेभलो मरिबो मनमान्यो हमारे ॥ येककोदुःख मरेमिट जातबियोगमेंहोतहैं दोऊदुखारे ॥ ४७० मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ बिरहनिवेदन ॥

दो० करकेमींड़ेकुसमलौंगईविरहकुमलाय। 422
सदासमीपनसखिनहूंनीठपिछानीजाय ४७१ ॥

यहनायका प्रोषतपतिका सखीकोबचन नायकसों अरुसखीकोबचन सखीसोंहोय ॥ कबित्त ॥ प्यारेनदनंदन तिहारेबिछुरेतेमोपै कहतबनैन जैसीभई वाकीगतिहै ॥ आलीजेरहत निसबासर समीप तिनहूं पैपहचानी वहनीठही परतहै ॥ त्रासदेखि पासजेवौ छोड़योपासवाननेहयेतेमानमद-

नहुतासन बरातहै। कोमल कुसम मानोमीड़योकरबरकरिऐसे कुंभिलाय मुरझायगई अतिहै ॥ ४७१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

423 दो० नेकनजानीपरतयौंपरयोविरहतनछाम।
उठतदियेलौंनादिहरिलियेतिहारोनाम ४७२॥

यहनायका प्रोषितपतिका बिरहनिवेदन सखीकोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ लालतिहारेबियोगतें बाकोबिहातघर बिधिबासर कीसो। छांह भयोअतिही तनबामकोकाम दहैसुधबुद्धि हरीसी ॥ सेजमेंनेकहूजानीपरै नहिंदेखिये कंचनरेखलिखी सी ॥ रावरोनामसुनै इकबारही नांदि उठै दुतिदीप गहीसी ४७२ ॥ मरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

308 दो0 जोवाकेतनकीदशादेख्योचाहतआप।
तौबलिनेकविलोकियेचलिअचकाचुपचाप ४७३॥

यहनायका प्रोषितपतिका व्याधिअवस्था सखीकोबचनसखीमों नायक कोलै चलिबो प्रयोजनहै ॥ सवैया ॥ पाहनकी पुतरीहवैपरी बरसैंअसु बासरसें तनतावैं ॥ ज्योंज्योंकरै उपचारवरै त्योंपरौहम लोगनको अति पावैं ॥ बाकीदशाअब ऐसीभई हरिज्योंअबलोक्योंई चाहत आवैं॥ तोवह सोधलहैन बलायल्यौयोंअबका चलियेउपचावैं ॥ ४७३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

717 दो० तजतअठाननहठपरयोसठिमतिआठौयाम।
भयोबामवाबामकोरहतबामकेकाम ॥ ४७४ ॥

यहनायका प्रोषितपतिका बिरहनिवेदन सखीकोबचन नायकसोंसखी सखीहूमों कहैतोसंभवहै ॥ कबित्त ॥ लालमन भावन तिहारे बिछुरेतें बालबिरह अगनि नेबरत नेहनाधेहैं ॥ वेहीकामकाम बामदेवके भरमभू-लिदत्योवाही बामसोंबिषम बैरबांधेहैं ॥ शठमतिहठिभरि दयाघरपरहरि आठोंयाम रहतसरोसरससाधेहै ॥ कोजेधोंकहाउपाव छोड़तनऔटपाउतकै हनिबेको दाउलग्यो इहधांधेहै ४७४ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

296 दो० बालबेलिसखिसुखदईरहीरूठिरुखधाम।
फेरडहडहीकीजियेसुरससींचघनश्याम॥४७५॥

neka na jāni paratī, yauṃ paryau boraha tana ćhāma
-uṭhatī diyā lauṃ nādi hari liye tihārau nāma.

ćhāṃ kshīṇ ko kahte haiṃ
nādi ḍahḍahā kar

jau wāke tana kī ḍasā dekhyau ćāhata -āpa,
tau, balī, naiku bilokiye ćalī -aućaka ćupa ćāpa
-aućaka -aćānak

tātparyā ki tinnhaiṃ dekh ke moṭī hogī.

tajatā -aṭhāna na, haṭha paryau saṭha matī -āṭhauṃ jāma
rahai bāma wā bāma kau bhayau kāma be kāma -
-aṭhāna -ankarnī bāt saṭhamatī kūṛhamatī
bāma bairī aur strī

bālabeli sūkhī sukhaća -ihi nīkhe rukha ghāma
pheri ḍahaḍahī kījiye surasa sīṃći ghana syāma

tāla tihāri biraha kī -agini -anūpa -apāra
sarasai barasai nīra hiyaṃ jiarahiṃ mite na jhāra

sarasai barṣai bai in -agini

dekhata cure kapūra jiyeṃ -upai jāya jina, tāla;
china china hoti kharī khari chūna chabīlī bāla

cure kajara kopi ke cīre -upai bilāya na jā-e
ni na ko-e

hasi -utāri hiye tai da-i tuma ju tihiṃ dina, tāla,
rākhai jiāna ke sīra jiyeṃ -nakai calutinī mālā
tihiṃ ... s calutini ganjai gini ghuci rakhne se
-urtā

यह अनुराग निवेदन सखीको बचन नायकसों पुरुषमानहूके प्रसंगहू मेंसंभव है ॥ कबित्त ॥ हितकरजाकोहरि लीज्योचितलाल यह कित हैंउचितताहि येतोदुखदीजिये ॥ जानतहौं कै प्रीतरीतिको प्रबीणपनु कीजे नगहर सुखदैकै सुखलीजिये ॥ रावरेदुमहयेहं रूखेरूखधामहीं सो बाल बेलिपकीजाहि निरखतसुछीजिये ॥ प्यारेघनश्यामजग जरनिनिवारतहौ सींचिकैसुरसफिरडहडहीकीजिये ॥ ४७५ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० लालतिहारेबिरहकीआगिनिअनूपअपार । 307
सरसैंबरसैंनीरहूझरहूमिटैनझार ॥ ४७६ ॥

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको बचननायकसों बिरह निबेदन ॥ कबित्त ॥ कृष्णप्राणप्यारेलाल बिछुरेतिहारे बाल अतिही बिकल मिलवेको तरसतिहै ॥ सारीहीतसीरे उपचारतातैंताती छिनछिन अकुलात छातीपीर परमतहै॥ वाकेतनरावरे बियोगकी अगनि ऐसीअद्भुत गतिसों अपारदरसतिहै ॥ महाझरहूते झारसीरीनपरतपरिजरत ज्योंज्योंनीरकी झरनिबरसतहै ॥ ४७६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० देखतदुरैकपूरलोंउपैजायजिनलाल । 297
छिनछिनजातखरीखरीछीनछबीलीबाल॥४७७॥

यह नायकाको अनुरागनिवेदन सखीकोबचन नायकसों बिरह निबेनहू होय ॥ कबित्त ॥ बिछुरे तिहारेलाल बिलखी बिकलबाल परी बललात क्योंहूंधीरनधरातहै ॥ येतेमानकसभई परेपरयंकपर नीठिनिठ निरख्योपरत वाकोगातहै ॥ काल्हही सुआजनाहिं आजुहीसु अबनाहिं यातेपरजननको जीवअकुलातहै ॥ ऐसीछिनछीजनि बिलायजिनजायबाल ज्योंकपूरदानोमें कपूरउड़जातहै ॥ ४७७ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० हांसिउतारहियेतेदईतुमजतिहींदिनलाल । 304
राखतप्राणकपूरज्योंवहैचुहटनीमाल ॥ ४७८ ॥

यह अनुराग निवेदनहै सखीको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ दूबरी सिमई बिछुरतिय सेजहूमेंनलखी परैसोतौ ॥ आलीविलोकिकै मंडित हाथगयेहूकसाथ सबैसुखजातौ ॥ बीसबिसेउड़जाते कपूरलौंराखौतोप्यारी

केप्राणनकोतो ॥ जोबहलालतिहारोदयो घुंघचीकोहराउरमांझनहोतो॥ ४८० ॥ मरान अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

298 दो० कहाकहौंवाकीदशाहरिप्राणनकेईश ।
बिरहज्वालजरिबोलखैमरिबोभयौअशीश४७९॥

यह नायका प्रोषितपतिका लखीको बचन नायकसों ॥ कवित्त॥ प्यारेमनमोहनतिहारेबिछुरेतें वृषभानकीकुमरिभई खरीकलिकान है॥ जल बिनमीनज्यौं बिकलतलफतअति कहौकविकृष्णऐसी होतआन वान है ॥ ज्योंज्योंकरियत उपचारन कीभीर त्योंबढ़तदूनी प्रीरर है आंखिनहींप्राण है ॥ बिरहकी ज्वालनिमें जरिबेके लेखे वाकोंमरिबेको बचन अशीसके समान है ॥ ४७९ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु९ लघु २० ॥

300 दो० यहबिनसननगरीखिकैजगतबड़ोयशलेहु ।
जरीबिषमजुरिजाइयैआयसुदरशनदेहु॥४८०॥

यह नायका प्रोषितपतिका व्याधिअवस्था सखी को बचननायकमें ॥ कबित्त॥ जरीहैबिषमजुरि गिरीहैअचेत वहघिरीहैचहूंधांआधि बृन्दन मेंखरिये ॥ कंचनमेतनको अतनवृथाबारतहै रतनउबारिये यतनहरिकरिये ॥ ऐसीगतिदेखीहोतो मरतपरखैंअब कछुन बसातछिन छिनजातबरिये॥ लीजियेजगतयश कीजियेधरमयह दीजियेसुदरशन वाकोतापुहरिये ४८०॥ मदकल अक्षर ३१ गुरु १३ लघु २२

302 दो० मैलैदयौलयौसुकरछुवतछिनकगौनीरु ।
लालतुम्हारौअरगजाउरहवैलग्यौअबीरु ॥४८१॥

यह नायका प्रोषितपतिका सखी को बचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारेलाल बिछुरेतिहारेअब हियेब्रजबालको अनंगदुखदाग्यो है॥ कोंबरीनिपट कुंभिलायगईफलजिमि दुखअनकूलभौंस मूलसुखभाग्यो है ॥ तुमपैगयोसोमैंने दीनोजायवाही उनिलीनी अतिहितकरि चितअनुराग्यो है ॥ कर परसतही छिनकगयो नीरअरु अरगजाउरके उरमेंअबीर ह्वैके लाग्योहै ॥ ४८१ ॥ मदकल अक्षर ३१ गुरु १३ लघु २२ ॥

kahā kahaun wākī dasā, hari prānani ke -īsa
biraha jwāla jarabau lakhai maribau bhayau -asa

-asīs -āsirbād if maribau why jarabau ?

leśālankāra

yaha binasata naga rākhikai jagatā barau jasa lehu,
jarī bishama jwara jā-i yai -āya sudarasana dehu

sudarasana - slesh sudarasana čūrana

nīra
main lai dayau, layau sukara chuwata chanaki gau
lāla tihārau aragajā -ura huvai lagyau -abīra

-aragajā

thākī yatana aneka kari, naiku na chārati gaila,
kari kiari dubarī se lagi terī cāha curaila.

noreason to get angry with her she left

x piya he dhyāna gahī gahī rahī wahī huvai nāri
-ipa -īpa hī -ārasī lakhi rijhati rijhawāri

Liya here you go, you got it, now you can
enjoy it, that is why she left. Liya also means
to take

-ure pure sa karai, piyau khare jare parajāra
lāvata, ghori, gulāb sanu milai, malai ghanasāra

I translate to mean don't take away but explains that
the perfumes increase the heat - if so he should translate will you
not take away? meaning 'take away'
Jaise sa hue liya se prajarak lāta hai, malai ghanasar
gulab se sath milaka ghorke

rangarāī tīle tiye prītama tikhī banāya
phūlī kalī ura ura ati thāti rahī lagāya

दो थाकीयतनअनेककरिनेकनछांड़तगैल। 306
करीखरीदुबरीसुलखितेरीचाहचुरैल॥ ४८२॥

यह नायकाको लगन सखीकोबचन नायकसों॥ सवैया। रोमनि रोमनिमोय गई हियमेंधसि प्राणनमांझखगी है॥ हौंकरिथाकीउपायसबै हरियंत्रन मंत्रनहूनजगी है॥ देहसुखायकरीदुबरी तबबावरीज्यौं सुधबुद्धि भगी है॥ येतेपैवाकी नछाड़तगैल चुरैलह्वै रावरीचाह लगी है॥ ४८२॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० पियकेध्यानगहीगहीरहीबहीवहनारि॥ 349
आपआपहीआरसीलखिरीझतिरिझवारि॥४८३

यह नायकाको लगनतनमें तासखीको बचन सखीसों॥ सवैया॥ नेहलग्योमनभावनसों उहितोअंगईयहबाननई है॥ ध्यानहीध्यानमें आज कछूवृषभानसुता भईकान्हमई है॥ आरसीमेंलखि आपनीमूरतिआपही रीझनिहालभई है॥ पूरनप्रेमकोजोतिजगी उरआनिसबै सुधभूलि गई है॥ ४८३॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० अरैपरैनकरैहियोखरेजरेपरजार। 389
लावतघीरगुलाबमेंमलैमिलैघनसार॥ ४८४॥

यह नायका प्रोषितपतिका नायकको बचन सखीसों॥ सवैया॥ काहेकोतू घनसारगुलाबमें घोरि घनोघसि चंदन लावै॥ काहेकोसियरे नीरभिगाय उसीरपखान समीर डुलावै॥ तोहीकहाजक ऐसीपरीप्रजरी उरआगि खरी प्रजरावै॥ ये उपचार करैन परै कलजातिपरै किन ताहि मिलावै॥ ४८४। मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४॥

दो रंगरातीरातैहियेपातीलिखीबनाय। 406
पातीकातीबिरहकीछातीरहीलगाय॥ ४८५॥

यह पातीसखीको बचन सखीसों॥ कबित्त॥ जबते बियोग भयो लालमनभावनसों तबहीते यारी तलफतमुरझायकै॥ नैनजलबरषतिमलबे कोतरसति सरसतिमदनमरुर बहुभायकै॥ अतिअनुरागगस्योबनायेलिखि प्राण पति ऐसे में अचानकहो दानो काहू आयकै॥ हित अकुलातो

सोतो बिरह को काती जानि राती पाती रही तातो छाती सों लगा यकैं ॥ ४८५ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

397 दो० कहाभयोजोबिछुरेमोमनतोमनसाथ ।
उहींजाहुकितहींगुड़ीतऊउड़ायकहाथ ॥ ४८६

यहनायककी पत्रीनायका को ॥ सवैया ॥ जोकरतार रचीमसही बिधिकैरबिचार अकारयहीहै । बेदपुराणपुरानैसुनी सबकोऊकहै यह गाथहीहै ॥ अंतरबीचपरयो तोकहाभयोमेमन तोतुषसाथहीहै ॥ जाहु गुड़ीकितहूंउड़िडोर उड़ावनहार के हाथहीहै ॥ ४८६ ॥ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

405 दो० करलैचूमिचढ़ायसिरउरलगायभुजभेटि ।
लहिपातीपियकीलखतिबाचतिधरतिसमेटि ४८७ ॥

यह नायककी पत्री आई तहि देखि नायका की जो दशा भई मुसखीसखीसों कहतिहै ॥ कबित्त ॥ नैननीरघरसत देखिबेकोतरसत लागेकामसरसतपीर उरअतिकी । पायेनसंदेसे तातेअधिक अंदेसेबढ़ेसोचे सुकुमारपैनकहैमनगतिकी ॥ ताहीसमयकाहूओच कहीआनिचिट्ठीनी देखतहीसेनापति पाईप्रीतिरतिकी । माथेलैचढ़ाई दोऊदृगनलगाईचूम छातीलैलटायराखी पातीप्राणपतिकी ॥ ४८७ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

402 दो० कागदपरलिखतनबनतकहतसंदेसलजात ।
कहिहैसबतेरोहियोमेरेहियकीबात ॥ ४८८

यहपत्रीनायककी अथवानायकाकी परकीया ॥ कबित्त ॥ पतोमें लिखतकैसे बनतजितोहै चाहसागरको सलिलचुरूमेकैनकीजिये । कहत संदेस दरआवत है लाजकरति अधिकसंदेसे येही छिनाछिन छीजिये ॥ मनऐसोमानसमिलैन कोऊ मधिमातोजासों सब कार्यजियको भेदकहि दीजिये ॥ यातेप्रीतिरीति अवदातमेरे हियेकीबात आपनेहियतेंकीभांति जानिलीजिये ॥ ४८८ ॥ पयोधरअक्षर २६ गुरु १२ लघु २४ ॥

403 दो० तरझुरसीऊपरागिरीकज्जलजलछिरकाय ।
पियपातीबिनुहीलिखीबांचीबिरहबलाय ४८९ ॥

kahā bhayau jo bichure, mo mana tomana sāth.
-uhiṇ jāhu kita hī gurī ta-ū -uṛāyaka hāth

? -uṛiṇ L has -uṛī jāti kitahūṇ

gurī nāyakā sūtr man -uṛāyaka nāyak hāth māna dor aur hāth sang
pitu gehādi ćali tiyā kihuṇ -utsava vidhi pāya
tahaṇ nāyak ke bacan haiṇ nirakhi kahtu samjhāya.

kara lai ćūmi ćaṛhāya sira, -ura lagāya, bhuja bheṭi,
lahi pātī piya kī lakhatī bāćatī, dharatī sameṭī.

L has bāṇćatī

bhuja se milāikar.

×

kāgada para likhata na banata kahata saṇdesa lajāta
kahi hai saba terau hiyau mere hiya kī bāta

L has bane for banata.

parisaṅkhyājaćanakāra

ćhirakā-e se

gari
tara jhurasī, -ūpara ~~sirī~~, kajjala jala ćūiraṅgī —
piya, pātī binu hī likhī, bāći biraha ka bāya

gari for giri = gatī kajal samet ānsu ka pāni se chirkī hui

piya ne bāṇei ("nidaan kitthī na likhī. rāheṭ, thej ōī

biraha bikala bina hi likhī pāli da-ī pathāya -
-anka bihānī yaun su čila sūne bāṇčatu jāya

bihānī Sirkhina

? -anka bihānī Sirdhī čitki ka čit sekhali hue nanak
parhlā jata'au kya pachhā hai, yaun ki biraha bikala se
or sine čila men in his mind
blanketh astonishment

čalata čalata laun lai čale saba sukha sanga lagāya
grīshama bāsara šišira nisa piya mo pāsa basāya

I explains that nayaka is pranalya patikā. He secondline means
he leaves with a relyitu ing sayya summer the long nights of winter
or hemanta like summer days [illegible] resemble each other.

geina ke -anusuvani bhari -sreā -asesa -abāra
[illegible] bagara bagara ke bāra

[illegible] bagara ke bāra gi ar ke bāhar - 2
nai [illegible]

[illegible]

यह नायकाप्रोषपतिका बिरहकीअधिकाई पत्रीलिखबेतेजानीगई ॥ कबित्त ॥ प्यारेकोसंदेश लिखिबेको बैठीसाहसुकै लिखतबन्योना अति बिरहमलीनीहै ॥ सरतातेपानिके परसपरजरी और ऊपरतेगिरीअसुवनि जलभीनीहै ॥ ऐसीपैलपेटिउनससौंपीजनीकेहाथ उनजायत्यौंहीप्राणनाथ हाथदीनीहै ॥ खोलतहीपाती पियुतातीकी सुरतिकरि छाती गहबरि आई आंखभरलीनीहै ॥ ४८९ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० बिरहबिकलबिनहीलिखीपातीदईपठाय। 404
आंकबिहूनीयौंसुचितसूनैबांचतजाय ॥ ४९० ॥

यहनायका प्रोषितपतिकी पत्रीआईयातें दोउनके बिरह की अधिकाईतेसुन्यतीजा निपरी ॥ कबित्त ॥ बिरहमकर तैनतनकी तनक सुधि बालअतिव्याकुल अचेतऐसी ह्वै गई ॥ लिखिबेकोलई पातीलिखतबन्योंन कछूनैनीयेलपटि प्राणपतपै पटैदई ॥ वाकीबिकलाईको कहांलौंअधिकाईकहौं एकमें दूकीगति एकबेरह्वै भई। चपरीप्रवीनी वहजऊअंकहीनीतऊबांचिसुनि हियलैलगाय छतीमें लई ॥ ४९० ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० चलतचलतलौंलैचलेसबसुखसंगलगाय। 733
ग्रीषमबासरशिशिरनिशापियमोपासबसाय ४९१

यहपत्रे नायकाकी नायकनों ॥ सवैया ॥ रैनदिनारहतेईमिलेरसरंग उमंगनमेंमनढारे। ऐसोसनेहबढ़ायगेदेखरी कैसोकरीउन कान्हपियारे ॥ लैगयेसंग लगायबैसुख दैगयोसोचटरैनीहंटारे ॥ पूसकीयामिनी जेठकेद्योसबसाय गये अबपासहमारे ॥ ४९१ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० गोपिनकेअसुवनभरीसदाअसोसअपार ॥ 655
डगरडगरनैहवैरहीबगरबगरकेबार ॥ ४९२ ॥

यहब्रजके बिरहनिवेदन ऊधोंबचन कृष्णमों सखीकोबचनसखीसों कबित्त ॥ जोगदैनगयो हौ बियोगबारिबारिधिमें बूड़तबचैहौनाथ मोरी नैनयोंबहै। गंगहूसहस्रधार अधिकसुधारजानि बरषानहोहिजोरहोगिरधूगहै ॥ येतौजलउनैहन बारिधिसमैहैकछू सुनपरअचौनजैहै कानखो-

लिकैकहै । कविप्रहलादज्योंमिलाप पारिवांधिहैनबहुकिबटा केपात्रावरे भलेरहै ॥ ४९२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

144 दो० कियौसयानसखीनसोंनाहिंसयानवहभूल ।
दुरेदुराईफूललोंक्योंपियआगमफूल ॥ ४९३ ॥

आगमोत्सव नायकासखीसों सखीकोवचन ॥ कवित्त ॥ ललितकपोल आजुमंदमुकुलन लागेआननपैभईकछूऔरैअरुणाईरी। मैंतौपूछीसुखमानितैं कछूरूखाईठानि घूंघटमेंढांकिमुख डीठक्योंदुराईरी॥ नाहींनैसयानपनुबीसबिसे भूलिहैसयानी सजननमोंकरी जोचतुराईरी । फूलकीसुबास लौं बिकासपहली होत फूलहरआगमकी क्योंदुरेदुराईरी ॥ ४९३ ॥ त्रिकल अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

149 दो० आयोमित्रविदेशतेंकाहूकहीपुकार ।
सुनहुलसीबिकसीहसीदोऊदुहुननहुनिहार४९४॥

यहनायकापरकोया इकनायकउपतमें दोउनकोसनेहहूं गयोआगम मेंदोउनकेहरषभयो याहीतेंपरस्परजानिपरी सखीकोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ कान्हरकेबिछुरे व्रजबालदुवौमन हामनमेंमुरझानी । कृष्णकहैं बहरायबेको मनुबैठदुहूं मिलि चौपड़ठानी ॥ मोहनमीतविदेशतें आयो पुकारिकैकाहू कहीजबबानी । सोसुनिदोउदुहून विलोकलसीबिलसीहुलसीमुसक्यानी ॥ ४९४ ॥ त्रिकलअक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०

141 दो० मृगनैनीदृगकीफरकउरउछाहतनफूल ।
बिनहीपियआगमउमगिपलटनलगीदुकुल ॥४९५ ॥

यहआगमस्वप्नपतका सखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ बालखरी अकुलात हियेनंदलालबियोग बिथाउरजागी । ऐसेमेंआन अचानकही हुलसीछतियां सुघरीअनुरागी ॥ बामबिलोचनके फरकेमृगलोचन जैसे उछाहनपागी । फूलभरीबिनहीं पियआगमचारु दुकूलचुवावनलागी ॥ ४९५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

143 दो० मलिनदेहबेइवसनमलिनबिरहकेरूप ।
पियआगमऔरैउठीआननओपअनूप ॥ ४९६ ॥

kiyau sayānī sakhina saun nahi sayāna yaha bhūla
durai durā-ī phūla laun kyaun piya-āgama phūla

"-āyau mīta bidesa teṉ" kāhū kahyau pukāri -
suni hulasī, bihasī, hansī, do-ū duhuna nihāri

this must be said of two women, each rejoices, each smiles at the others rejoicing, each laughs to see the other smile, believing that she alone is entitled to rejoice - L is particularly important in her explanation -

mriga nainī driga kī pharaka -ura -uchāha, tana phūla,
bina hī piya-āgama -umagi palaṭana lagī dukūla

malina deha we-ī basana malina biraha ke rūpa
piya-āgama -aurai barhī -ānana -ōpa -anūpa,

rahe barauṭhe mora milala piya prāṇanī ke īsu
-āwata -āwala kī bha-ī -bīthi kī gharī gharī su
bīthi bīdala ī ghaṛī ī.e. -ati barī.

Lahi paṭha-ī manabhāwatī piya -āwana kī bāta
phīrī -aṅgana mora phirai -āṅga na-aṅga samāta
-āṅga na-aṅga samā[illegible] Lalit lokokti and translate
sārī nāḍī -ī mora samata, boiyo ni en tained in body instead
of [illegible]

nāḍī -sānaka hī -uṭhe bina pāwasa bana mora
jānatī kāmu naṇḍita karī yaha ōisa nanda kisōra

यहआगमस्यत्पतिकासखीको वचनसखीसेां ॥ कवित्त ॥ लालमनभावनकोबिछुरे मयंकमुखी अतिही बिकलचित परयोचिंताकूपहै। अधिकअनगप्रीतिर सोखगतहिय चांदनोलगतजैसो ग्रीषमकी धूपहै ॥ कीनोनसिंगारुचारु वैसीयेमलिनदेह वसनमलिनउही बिरहकेरूपहै। कहैकविकृष्णपिय आगमसुनतबाढ़ी चैरआपआननपै दमंगि अनूपहै ॥ ४९६ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रहेबरोठेमेंमिलेपियप्राणनकेईश। 145
आवतआवतकीभईविधिकीघरीघरीश ॥४९७॥

आगमोत्सवनायकाकोबचनसखीसेां संचारीके भेदमेंऔत्सुक्यजानिये। सवैया ॥ आये बिदेशतेंप्राण पतीयेांतिया कीसुनैं छतियां सियराई। नैननलागिरही दिखसाध मनोजडुमंग हियेभरिआई ॥ कृष्णकहैं मिलवे कहैकाहूसों पैरिमें जौलौंरह्यो सुखदाई। आवतआवतकी सुघरी बिधिवासरहू ते खरोसरसाई ४९७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु२० ॥

दो0 कहिपठायजियभावतीपियआवनकीबात। 95
फूलीआंगनमेंफिरैआंगनअंगमात ॥ ४९८ ॥ ? स

आगमोत्सव सखीकोबचनसखीसों सचारहरष ॥ सवैया ॥ यालबियेागमलीनमहा बिसरीसुधिहासबिलासहू भूलैं ॥ येतेपैऔधबितीतभईउरमेंकहीसाथसबै दुखऊलै ॥ आवनत्योंमनभावनकी सुनिकैउमहैसुख पुंजसमूलै ॥ आंगनमेंहुलसी फिरैसुंदरआंगन अंगसमातनफूलै ॥ ४९८ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो0 नाचअनाचकहीउठेबिनपावसबनमोर ॥ ? -ācānakahi
जानतहीनंदितकरीयहादिसनंदकिशोर ४९९ ॥ 407

यहआगमोत्सवनायका कोबचनसखी सोंसखीहूकोबचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ राधायों बिशाखासों कहतिजाको रूप मोहिंचारुचित्र पट अवरेखतेदिखायोरी ॥ जानियतवहचित चोरनटधूतधूतआली यहकानन कहूंतेआजआयोरी ॥ लहलहोहोतबहुकालको सुखभोबेलफूलतसुमनऐसोचनछबिछायोरी ॥ बिनउनएंहू घनमये हरषित मननाच नाचमोरन

कुलाहल मचायेरी ॥ ५९९ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

142 दो० बामबाहुफरकतामिलेजोहरिजीवनमूरि ॥
तोतोहीसोंभेटिहोंराखिदाहिनीदूरि ॥ ५०० ॥

आगमोत्सवभुज फरकतही नायका को बचन बाम भुजा प्रति ॥ ॥ सवैया ॥ कान्हबिसामीविदेशरह्यो बसिमैनदहीबहुभांतिहियेहौं ॥ बामभुजाफरकतू भलेअबहौंहू यहैनिश्चैपनकोहौं ॥ कैसेउबामनभावनकोअबजोभरिआंखिन देखनपैहौं ॥ राखिहौं दूरियादाहिनी बामको तोहीसोंगाढ़िअलिंगन दैहौं ॥ ५०० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

147 दो० बिछुरैजियसंकोचयहबोलतबनैनबैन ।
दोउदौरिलागेहियेकियेनिचोहेनैन ॥ ५०१ ॥

यहपरदेशतेहनदोउनके हितकोआधिक्य सखीको बचन सखीसों ॥ ॥ सवैया ॥ दंपतिआपुसमैंकहतेपलुओटभयेपलप्राणरहैना ॥ आयोबिदेशबितैवह बासरनंदलालाअति चैनकोऐना ॥ येतोबिछोहभयेहू जियेयहलाजतेंबोलत बैनबनैना ॥ दौरिलगेलपटाय हियेपैमचैहैं कियेसकुचौंहैंनैना ॥ ५०१ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

151 दो० यद्यपितेजरोहालबलपलकौलगीनबार ।
तउग्वेंड़ैघरकोभयोपैंड़ोकोसहजार ॥ ५०२ ॥

यहपरदेशतेआगमआगतिपतिकोनायका औत्सुक्यसंचार ॥ सवैया ॥ कौनहूं काजकोप्राण पियापरदेशसमोबहुतै बितयोहै ॥ राधिकाकोसुधकैकविकृष्णतिहीं छिनभौनकोगोनु टयोहै ॥ यद्यपितेजतुरी नियरोघर तद्यपिकोसहजार भयोहै ॥ ग्वेड़ेको पैंडोनिकटको कटैअभिलाषसमूहहियेउनयोहै ॥ ५०२ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २२

554 दो० छिरकेनाहनवोढ़दृगकरसपिचकीजलजोर ।
रोचनरंगलालीभईबियतियलोचनकोर ॥ ५०३

यहजेष्ठाकनिष्ठाकोभेदअन्यसंभोगदुखितोहूहीयसखीकोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ नंदलला ललनागणमेंजलकेलि रचीरसरीतिरलाई ॥ झूमकनेऊरेबहुभांतिदुरे भरिअंककरीतिरलाई ॥ भावतलोचन कोछिरके

bāma bāhu, pharakata milai jo hari jīvana mūrì
tau tohī saun̐ bheṇṭì haun̐ rākhì dāhanī dūrì

bheṇṭì haun̐ ālingan karūngī

bichure jiye, saṅkoca yaha mukhaten̐ kahata na bain
do-ū dauri lage hiye kiye nicauhain̐ naina

ashamed of having survived when parted.

yadapi tej rohāla bala palaṭkau lagī na bāra
ta-u gwenḍau ghara kaun bhayau paiṇḍo kosa hajār

1 jadapi – bara – lagī napalakau – kau-paiṇḍau

bār na lagī nāyakā ko

chiraki nāha naboḍhi chiṇa kara picaki jalajoi
rocana ranga lali chhi-ī biṇa chiṇa locana kora

hora ? ege maṇi... yes nain ke koyon̐ men̐
biya dusrī ie saut

misahī nisa, ātapa ūsaha, dai auri bahakāya
ćale bīrana manabhāvatihiṃ tanakī ćhaṇḍa ćhipāya
auri ie rāthini ho bahkā ōiṇa ki sumgharjā-o

tāja gahau, ie kāja kata ghera rahe? ghara jāhiṃ
gorasa ćāhata ūnirata hau gorasa cāhata nāhiṃ

tāj gahau ie tum ghara jāhiṃ tumghar jā-ṃ L
gorasa bātaṃ hāsibāra bānī rasa
nehakau ras kimvā -inēriyani kerasa HP
nāhi nel gorasa - anyene nāhi is fair. ćāhata = ockhta

jamunā kanara
praphulā bāra kiṃ tasai tanakī baiṃdī bhāla
tākhali khela khari khari khare urojani bāla

ie ghara ekavacan tai sambhutva - ie sameul au kuj (?) kahte hain
tum de ke tū ni bane

khe nakhia ekai mārnāma au kahi ćirakhvali hamā

lāj ie ćhi ćhenati ćapakāli mukhia joti
tasara rasai ie bagara jaga amagana ōni kāi
ćhati khilasata
ćhenati ćhati

खरकीपिचकी जलधारचलाई ॥ सौतिकेलेचनकोरन मांझतहौंभईरोचनरंगललाई ॥ ५०३ ॥ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० मिसहीमिसआतपदुसहदईओरबहराय ।
चलतललनमनभावतिहतनकीछांड़छिपाय॥५०४॥

यहजेष्ठाकानिष्ठाकेभेदमेंसंभवै सखीकोबच सखीसों॥ सवैया कान्ह सुजानकेमोपैकछू रसरीतकेभेदकहैनाहिंजाहीं । आतपकीमिसकै बहरय दईसंगऔर जितीबनतहीं ॥ छैलगही वह लंभटू यमुनातट कोलिनिकुंज जहांहीं । राधिकाप्यारीकेलैचल्यो संगकियेअपनेतनकोपरछाहीं ॥ ५०४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० लाजगहौंबेकाजकतघेरेरहेघरजाहिं ।
गोरसचाहतफिरतहोंगोरसचाहनाहिं ॥ ५०५ ॥

यहनायका प्रौढादानसमौं॥ कवित्त ॥ लाजक्योंनगहौंबिनकाजमगघेररहै इतरइबोल कहतअनैसेहै । गोरसनचाहतहौं गोरसकोचाहतहैभलीभांति जानतहौंकान्ह तुमजैसेहै ॥ कृष्णप्राणप्यारे ब्रजबिटततिहारे गुणमाखन केचोरबेकोघरघरपैसहौं । अबयहबनयेम चलनचलावतहोमोहैलाख इसनलसतमन लेसेहौं॥५०५॥नरअक्षर३३गुरु १५लघु १८

दो० पहलाहारहियेलसेसनकीबेंदीभाल ।
राखतखेतखरीखरीखरोउरोजनबाल ॥ ५०६ ॥

यह नायका जातवर्णन नायकाको बचन ॥ सवैया ॥ पातरीलंक कटोरखरेकुचगोरो अंगेठलुनाईभरीहै । मेचकपोनगरेबड़ेदृगचोटनुमैंअरुणाईधरीहै ॥ हारहियेपहुलाको लसैबिलहीसन को प्रसुरी कोवरीहै । राखतखेतखरी ब्रजनागरि योवनजोति खरी निखरी है ॥ ५०६ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० टटकीधोईधोवतीचटकीलीमुखजोति ।
लसतरसोईकेबगरजगरमगरदुतिहोति ॥५०७॥

यहजात वर्णनसखी नायकके रूपकीनिकाई नायकसों निवेदनकरत

है ॥कवित्त ॥ बैठीअपरसब्रज नागरसरबस बेपपेखिमन मोहनकीसुध बुधडगरी। कृष्ण प्राणप्यारेकी दुहाईबैसतैसी दईविधि नेसकेल शोभा कीन्हीमानोंसगरी ॥ दमकेबदन ज्योतिबिदसबरनधौतिपहिरे लसतसौति रूपगुण आगरी। ह्वैरह्योप्रकाश अतिजगरमगर तिहिवगररसोईके अपार औपवगरी ॥ ५०७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

T21 already done

दो० यदपिनाहिंनाहींनहींबदनलगीजगजाति।
तदपिभौंहहांसीभरिनुहांसीपैठहराति ॥ ५०८ ॥

यह जातवर्णन नायकाप्रौढा सुरतारंभ॥ सवैया ॥ बैठि सिंगारसबै बृजनारिअचानक मोहनआयो तहांहीं। पानिगह्यो अविलोकि अकेलि अलौकिककेल कलाचितचाहीं ॥ यद्यपिप्रानवनागरके मुंहलागी यहैजकनाननानाहीं। तद्यपिहांसिभरी भृकुटीनमैबोस बिसे ठहरातहैनाहीं ॥ ५०८ ॥ चलअक्षर ३० गुरू ११ लघु २६ ॥

542

दो० दृगथरकाहेअधखुलेदेहथकोहैडार।
सुरतसुखदसीदेखियतदुखितगरभकेभार ॥५०९॥

यहजात वर्णनगरभनिकी शोभा सखो नायकसों कहैसखी सखीसों कहै नायक सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ बोलत बैन हरेईहरेभई छबिआननकी पियरीहै। आधेखुले अलसौहैमे लोचन देहथकोहैसेढार ढरी है॥ गरबकोभारधरै सुकुमारजऊ दुखितोनवनारिखरीहै। नीकीतऊ अतिलागतहैमनौ केलिकलोलके रंगभरीहै ॥ ५०९ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरू १३ लघु २२ ॥

541

दो० ज्योंकरत्योंचुटकीचलतिज्योंचुटकीत्योंनारि।
छबिसोंगतसीलैचलतिचातुरकातनहारि॥५१०॥

जातवर्णन नायकको वचनसखीसों ॥ सवैया ॥ ज्योंकरत्योंहीं चले चुटकीउघरे भुजमूलघढ़ी छबिभारी। चारुकलाईकी मोरमणीवकीठीरन जो टरैनहींटारी ॥ भौंह उचेतिरछैकर लोचन लेतकिधौं गतिहूपटजारी। मातुरमानोमनोज पकीअतिचातुर कातनहारि निहारी ॥ ५१० ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु ९० लघु २८ ॥

jadapi nāhiṃ nāhiṃ nahiṃ badana lagī jaka jātī
tadapi bhaṃmha hāṃsī bharinu hāṃ sī yai ṭhaharātī

mukhse rat lagi hai nahī 3.

tumbhi hansī bhare bhaṃmhon se hāṃsī hai thahartī hai

kriyā akriyā viśeṣālaṃkār

driga thirakaṃmhaiṃ -adhakhule deha thakaṃmhaiṃ ḍhāra
surata sukhita sī dekhiyata dukhita garabha ke bhiara

jyoṃ kara tyoṃ cuṭakī calatī jyoṃ cuṭakī lyoṃ nāri
chabi soṃ gata sī tai calatī cātura hātana hāri

2 jyaṃ tyaṃ cuhaṃṭī cutai

jyaṃ kara tyaṃ cunaṃṭī caiai jyaṃ cuhaṃṭī lyaṃ nāri
chabi saṃ gati sī tai calatī cātura hātana hāri

gati lenā accent
206 (38)

cuhaṃṭī cuṭakī in lomi nari gardan

v512 (53)
cuhuṭyau

gati = motion – movement

munha -ughāri, pyau lakhi rahata, rahyau na gau misa sāra
phāraki -ōlha, -uṭhi pulaka, gaye -ughara jiga naina.

nahi -anhāya nahi jāya ghara cita cihuṭyau laki tīra
phirasi phirakhiri lai phirati bihasati dhasati na nīra
cihuṭyau lagā hai
sēt ke chal rau bari ber ichinā -iṣṭ sāthnā.
cuhuṭyau pācāntaram

mukha pakhā.i muṇahara bhijai sisa sajala kar chwā-i
mauri -uṭhi ghuṇṭoni rai nāri sarolara rhā-i
muṇahara sujai jau
mauri jūṭā ghuṇṭevi nai ghuṭhyau se jhukhai

bihasati sakuci hi hiya kuca-anchura bica bāṇha
bhije ṭaṭa ghara ḍaṇḍa cali nhāya sarobara māṇha

दो० मुखउघारिप्योलखिरहतरह्योनगोमिससैन । 215
फुरकेओठउठैपुलकगयेउघरिजुरनैन ॥ ५११ ॥

यहजात वर्णन परिहास सखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ पौरिते बोलिसुन्योपियको ढिठपौढ़िरह्यो पटचौटसयानी । झीनेदुकूलमेंलाललखो बडरेअंखियांझलकैंसरसानी ॥ शिरोमणिऐचलियोअचराबहरायकै कान्हर त्यौंतिरछानी । ओठसोंओठ लगायरहोदृगदाबि अमोलनहीं मुसकानी ॥ ५११ ॥ मत्तअक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

53
2
दो० नहिंअन्हायनहिंजायघरचितचहुट्योतकितीर ।
परसफुरहरीलौफिरतबिहसतिधसतननीर ५१२ ॥

यहजात वर्णन नायका परकीयाक्रिया बिदग्धासखी को बचनसखी सों ॥ सवैया ॥ न्हायबेको जमुनागई बालतहांबनितानकोहै अतभीरो त्योंहीं अचानक कृष्णकहैंकहुंडोठ परोनट नागरनीरो । चाहचुभ्योचित न्हाहिसुकौनगयो नहिंजातु कंपातुशरीरो ॥ अंजुलनीर भरैंगहिडारतनाक सकोरिकहैयहसोरो ॥ ५१२ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

553
दो० मुहपखारिमुडहरभिजैशीषसजलकरछवाय ।
मोरउचैघूंटनुनैनारसरोवरन्हाय ॥ ५१३ ॥

यहजातबर्णन कबिकीउक्ति ॥ सवैया ॥ बैठिकेतीर पखारिकै आननहाथभिजैजलकेशन छ्वैकै । कृष्णकहैंकरसोंटसराइकधोंधरोशीषको चोर भिजैकै ॥ दूकर पंकज दोऊखये धरिमोर उचैकटिखीन लचैकै । योंब्रजबालसरोवर न्हातमहाछबिमां घरुवानतेनैकै ५१३ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

552
दो० बिहसतिसकुचतिसीदियेकुचआंचरबिचबांह ।
भीजेपटतटकोचलीन्हायसरोवरमांह ॥ ५१४ ॥

यहजातबर्णन कबिकीउक्तिसखी नायकाकोशोभा नायकको दिखायबेको कहैतोहूसंभवहै ॥ सवैया ॥ देवदिवाकरको करिवंदन कृष्णकहै मनहीमेंमनावति । बांहदियेकुचअंचल बीचलजायहिये हंसिनैननचावति भीजेदुकूलरहै लपटायमहाछबि कंचनमे तनछावति । योंब्रजनागरिरूप

उजागरि न्हायमरोवर तीरकोआवति ॥ ५१४ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

52 दो0 मुहधोवतयेड़ीघसतिहंसतिअनगवततीर।
धसतनइंदीवरनयनकालिंदीकेनीर ॥ ५१५ ॥

यहजातवर्णन नायकाकीचेष्टा सखीसखीसों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ न्हायगेकोंआई अतिरीझिमंडराय हियेकृष्णप्रानप्यारे कोस्वरूपदरसतहै इंदीवरनैनी अनगावतिअनेकभांति पैवहकालिंदीके नसलिल धसतिहै ॥ परसिबिसारैकरकोरिकोरिशोभानिधनासिकासकोरि मुहमोरिबिहसतिहै बदनपखारतिहै वाकेढगढारतिहै गुलफघसतिअतिरंगवरसतिहै ॥ ५१५ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

282 दो० ओठउचैहांसीभरीदृगमोहनकीचाल ।
मोहनकहीसुचालियोपियततमाखूलाल ॥५१६॥

यहजातवर्णन नायकाको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ मैनिरख्यो जब तेंतबतेंजियकीगति जानतकौनबियेारी । जोकछुरूपकीरीझ सुभीचितआनतहो इकमेरोहियेारो ॥ हांसीभरीचख भौंहनकीछबिओठ उचेइकभाव कियेारी पावतलालतमखू केघूटकहीउन मोमनपीन लियेारी ॥ ५१६ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

206 दो० अंगुरिनउचभरिभीतिदैउलमाचितैचखलोल ।
रुचिसोंदुहुनदुहूनकेचूमेचारुकपोल॥ ५१७॥

यहजातवर्णनदोउनकोहितकीसी रसाईसखीकोबचन सखीसों परकीया ॥ सवैया ॥ आजभटूब्रजनागर नागरिकीनोविलास महारसमान्यौ॥ चाहकीचौपसोंचाहिचहूंघा बियोजबकोऊइतौतनजान्यौ ॥ देभरू अंतर भीतिदुोउलमेंअंगुरी उचिकौतिकठान्यौ ॥ चारुकपोल दुहूनके दोउन चुंबनकैअतिहीसुख मान्यौ ॥ ५१७ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

114 दो० हांसिओठनबिचकरउचैकियेनिचोहेनैन ।
खरेअरेपियकेपियालगीबिरीमुंहदैन ॥ ५१८ ॥

mool

munha dhowati - eṛī ghasatī hansatī -anaṇgawatī ta
dhasatī na -indībara nayanī kālindī ke nīra
-aṇgawatī = kāmawatī -anagawatī (another reading)
plained bilamb kartī hai.
-indībara nayanī syamakamalanainī L.

-oṭha -ucai hāṇsī bharī driga bhaṃhana kī cāl
mo mana kahā na pī liyau piyata tamākhū tāl

-anguvinā -uci, bharu bhiṇṭa dai, -ulami, citai cakha-
ruci saṃ duhuṃ duhuna ke cume cārū kapola

-ulami latakī

ruci saṃ -abhilāshe s

hansi -oṭhani bicakura -ucai kiye nicaṃhaiṃ naina
khare -are piya ke priyā lagī birī muṃha daina

-are hatt

nāhi nahī nāhī ka kai nāri nihore leya
chuvala oṭhabīca aṅgurina biri badana pyau deya

kuṇḍamila kāva

nāka more nāhī kakai ili pāṭhāntaram

nāyakā nihore se le hai aur nāyak pānki biri munh men dete -ungliyon se hoṭh chūtā hai. I.

kakai for karke why not naka mori nāhi kara kai

nihore se as a favour - or with humility

batārasa tālaca lāla ki murali dhari lukāya
janma karai, bhaumhana hansai, dena kahai, nati jāya.

lalita lāva

batarase bātamka sabai

gaōrāṅg una goraṭī -aipana āṇa lilāra
kuṇḍiyan dai, aliāṇa, driga karai gaṇwāri su māra

kuṇḍiyan

piyau āṇar -aur bairī jāniyau se-aipan gaōrāṅga lalgipe
kuṇḍiyan āru miṭī bāni bahi men bol le jāya

[illegible] mūrchita kartī hai

[illegible]

यहजातवर्णन नायककीशोभासखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ कान्हकही अतिहीहठकैतबराधिका केजियमेंयहआई ॥ ग्रीवनवायदुराय कपोलकियेनत नैनकछू मुसकाई ॥ बीरीबनायलईकरकंज खवैबेकोमंजु भुजाउकसाई ॥ यौंहितकीसरसाई बिलोकि भई मनमोहन केमनभाई ॥ ५१८ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नांकमोरिनाहींकैनारिनिहोरेलेय । 247
छुवतओठबियआंगुरिनबिरीबदनप्योंदेय ॥ ५१९ ॥

यहजातवर्णनसखी कीबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ आजुदुहूको बिलास अलीमें दुरैदरत्योंकहते नहिआवत ॥ नंदलला अतिहीं हठकै वृषभान कुमारिको पानखवावत ॥ ओठनसों बियअंगलिछ्वै मुसकायकैनैनसोंनैन मिलावत ॥ नासिकामोरिमरोरिकै भौंह करैतियनाहि त्योंत्योंसुखपावत ५२९ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बतरसलालचलालकीमुरलीधरीलुकाय । 254
सौंहकरैभौंहनहसैदैनकहैनटजाय ॥ ५२० ॥

यहनायका परकीया प्रौढ़ाजाति बर्णन सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ आजलखीबृषभाननललीमनमोहनसोंरसखेल टरीहै ॥ बातन केचसकैसुरलीमुरली हरिकैदबकाय धरीहै ॥ ज्योंज्योंहहाकरिमांगेलला वहत्योंत्योंकछू इठलातखरीहै ॥ दैनकहै मुकरैहंस भौंहनुसौंहकरैरस भायभरीहैं ॥ ५२० ॥ मदकलअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० गदरानैतनगोरटीऐपनआडलिलार । 248
हूठ्योदईचलायदृगकरतिगवारिसंवारि ॥ ५२१ ॥

यहजाति बर्णननायका कीशोभानायक सखीसोंकहतहै ॥ कवित्त शोभाकेरतभरी रूपकेसे सांचेढारी बिनहूंसिंगारछबिकही न परति है । ललित लुनाईसने गातमें सरसभरेतरुणाई आनभरी औरहू भरतिहै ॥ बदुरारे बदनपै ऐपनकीसोहै आडतैसीये चिबुकगाड मनको हरतिहै । सहजसुभाय इठलायकै गंवारीगोरीहूठयो दै चलायनैनघायल करतिहैं ॥ ५२१ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

234 दो० नाकचढैसीवीकरैजितेछबीलेछैल ।
फिरिफिरिजानवहैगहैप्योकेकरीलैगैल ॥५२२॥

यह जातवर्णन सखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ सखि जात चले दोउतीरथपंथ उराहने पायनरंगढरैं । वहप्यारेकी रीझि रिझावन प्यारी को मोपै न ओहूवखानिपरैं ॥ अतिनाजुकछैल छबीलीतिया जितनाक मकोरिकै सीवीकरै ॥ कविकृष्णकहैयहचाह पर्यौतितजानिकैपीतमपाय धरै ॥ ५२२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

326 दो० जालरंध्रमगअगनुकौकछुउजाससौपाय ।
पीठदियेजगत्यौरह्योडीठझरोखालाय ॥ ५२३ ॥

यहजातवर्णन नायकाकीअंगदीप्तिदेखि नायककोऔर बातसबभूलगई हैसोसखीसखीसोंकहतिहै॥ कबित्त ॥ यारीखण्डतीसरेरसीलोरंगसवटीमें तक्तिताकीओरछकि रह्योनंदनंदहै ॥ कालदासवीचिन दरीचिनुहूँछल-कतिछबिकीमरीचिनको झलकअमंदहै ॥ लोगदेखि भरमेंकहा धोंहैया घरमेंसुरंगमग्यो जगमगीजोतिनकोकंदहै ॥ लालनकोजाल हैकिज्वालनि कोभालहैकिचामिकरू चपलाकिरबिहैकिचंदहै ॥ ५२३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

216 दो० दोऊचोरमिहींचनखिलानिखेलअघात ।
दुरतहियेलपटायकैंछुवतहियेलपटात ॥ ५२४ ॥

यह जातवर्णन चोर महींचनाखेलत दोउनकोविलात सखीसखीसों कहतिहै ॥ कबित्त ॥ बेपुकैकुमारिकाको बृजकीकुमारिकानि मांझमांझ केशवदासत्रास पगपेलिकैं । कामकीलतासी चलियेमयासिसो अमलबुधि वलराधिकाके कंठभुजमेलिकैं ॥ दुरदुरदूरिदूरि पूरिपूरिअभिलाषलाखलाख भांतिको अनूपरूपकेलिकैं । जनीकेअजिरआजि रजनीमेसजनीरी सांची कोनीश्यामचोर मिहचनीखेलिकैं ॥ ५२४ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

213 दो० दृगमिहचतमृगलोचनीभरेउलटभुजबाथ ।
जानगईतियनाथकेहाथपरसहीहाथ ॥ ५२५ ॥

nāka caṛhai sīvī karai jitai chabīlī chaila
phiri phiri bhūli uhai gahai piya kaṅkarīlī gaila

kisī tīrath meṃ nāyak nāyakā naṃge pā-oṃ jāte haiṃ

sīvī karai. sisakī bhare } chaila in masculine
orisit here used as an adjective + made
fem with chalīlī

jāla raṅdhra maga aṃgani kau kuchu ujāsa saw pā-i
piṭha diye jaga saṃṃ rahai dīṭhi jharokhā lā-i

do-ū cora mihīcanī khelṇa khela aghāta
durata hiye lapaṭāyakai chuwata hiye lapaṭāta

aṇkh micanlī

aghāta aghānā to be surprised or astonished.
aghāt a blow

driga mīṃcata mriga locanī bharyau ulaṭi bhuja bātha
jāni ga-ī tiya nātha kau hātha parasa hī hātha.

bātha meṃ aṇkawāra meṃ

prītama ehiga mihicata priyā bāṇiparasa sukha pāya
jāni pichāni -ajāna lagu naiku na hoti janāya

janā-ī apparently for janā-o a sign or hint.

dhīṭa parausini -itha huvai kahai jiu gahai sayāna
sabai sanēsu kahi kahiyau musakāhaṭa meṇ māna

musakāhaṭa meṇ māna ?akukhi

ēita la.asala, milata na lavata, basa parausa ke bāsa
chāli phāṭī jati sunī ṭaṭī -ōṭa -usāsa

ne basa = baske surely besī in Delhi

यहजातवर्णनसखी कोबचनसखीसों । सवैया ॥ बैठी हुतीवृषभान कुमारि अचानकआयो तहांगिरधारी । प्यारेकेलोचनमोचु लयेउनहूं भुज लौटभरैअंकवारी ॥ प्रीतमकेकरके परसेउमग्योउर आनंदपुंजबिचारी याहीतेंश्यामनभावन कोपहिचानहंसी सुविचक्षण प्यारी ॥ ५२५ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० पीतमद्दगमिहचतपियापानिपरससुखपाय । 211
जानिपिछानिअजानलौंनेकनहोतजनाय ॥ ५२६ ॥

यहजात बर्णन सखीकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ खेलतमकहूं पाछलोघातें अचानकहीचलि आयेबिहारी। मूंदकेप्यानपियारी केनैन चह्यौवपहूवे रसरीतिसंचारी ॥ यद्यपिश्यामनमोहन कोकरलाघहीउम ग्योसुखभारी । तद्यपिज्ञानिकें आपनोंयोंहि अजानभई बृषभानदुलारी ॥ ५२६ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० ढीठिपरोसनईठहवैकहैजुगहेसयान । 118
सबैसंदेसेकहिकह्योमुसकाहटमेंमान ॥ ५२७ ॥

यहपरकीयाप्रौढ़ा सखीकोबचनसखीसों ॥ सवैया ॥ जाइपरोसनकें दुखपीसों झुकीललनारि सजोमेडिठाई । सोहोपरोसिन ढीठयहांलगईठ हवैयाहिमनावनआई ॥ पीतमकेसंदेशे हुतेवेकहेसबही करिकैचतुराई येतेपैमानकह्यो मुसकायय कहिप्यारोखरो कैरिसाई ॥ ५२० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० चिततरसतमिलतनबनतबासिपरोसकेबास । 128
छातीफाटीजातसुनिटाटीओठउसास ॥ ५२८ ॥

यहपरकीया अनुराग नायक को अथवानायकाको बचनसखीसों ॥ कवित्त ॥ नीचोडीठिआपन पैकोलगचितैयै बालकैसेहूनदेखे जाहुजेतो सोचकरिये । मुरलीकीधुनिसुनि द्वारेझकीनेसे खमनकेडरेते तनहीमें कांपडरिये ॥ लाजनकी मोरपलपैडोहूनपावै नैनधीरैधीरैमकुच बचाई पांवधरिये । कीजैकहांकन्दर कनोडेभये जीवों नाहिंनातोयेक बासमे उसासलेजेमरिये ॥ ५२८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

28 दो० दीठ्योदैबोलतहसतप्रौढबिलासअपोढ ।
त्यौंत्यौंचलतनापियनयनछकियेछकीनवोढ ॥५२९॥

यहमदपानसमय सखीकोंबचनसखीसों ॥ कवित्त ॥ आजबरतीकी बारनीकीमैं बिलोकीवहशोभा मेरेनैननमेंअब लौंबसतिहै । ज्योंज्योंवह ढीठयोदैकैबोलत मरमबैननागर नवेलीहेरिहेरि कहसतिहै ॥ कहैकवि कृष्ण रजागिबे कोललक्षितप्रौढ़ा केसकलबिलास बिलसतिहै । त्यौंत्यौं छकियेछकाई ऐसेपीकेनैन पलकनिहूकीभूली गतिदरसतिहै ॥ ५२९ अहिवर अक्षर ३८ गुरु ५ लघु ३३

217 दो0 हंसिहंसिहेरतनवलतियमदकेमदउमदाति ।
बलकिबलकिबोलतबचनललकिललकिलपटाति।५३०

॥ कवित्त ॥ क्षिनकमेंहंसे क्षिनरोवैक्षिनदेखि रहै क्षिनकमेंबैठि क्षिनलेटि लेटिजातहैं । क्षिनकमेंठाढी ह्वैकै सखिनसोंबातैकरै क्षिनकमें भूमिझूमिउर मुसकातहै ॥ गातकीनसुधिन सम्हारकछू अंचरकी क्षिनक हूमें आलीहूकेअंग लपटातहै । क्षिनकमें रीझिरीझि बारको बदन चूमै क्षिनकमेंकेरि फेरिबूझैवहीबातहै ५३० ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

450 दो० मिलिचंदनबेंदीरहीगोरेमुहनलखाय ।
ज्योंज्योंमनलालीचढैत्यौंत्यौंउघरतजाय ॥ ५३१ ॥

यह मदपानसमय नायकाकीशोभा नायककोकहैअथवा सखीसखी सोकहै ॥ सवैया ॥ कछु आजुलखी मदपानसमयललना किप्रभाजियतेंन टरै । कविकृष्ण कहैं बलकैंललकैं मनमोहनको हंसिअंकभरै ॥ दुतिचंदन कीबिंदुलीकी रहीमिलि गोरोललार नजानिपरै । अरुणाईचढ़ैमद की मुखज्योंही ज्यौं त्योंहीं त्यों जात खरो उघरै ॥ ५३१ । नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

218 दो०निपटलजीलीनवलातियवहकिबारुनीसेय ।
त्यौंत्यौंअतिमीठीलगेज्योंज्योंडीठ्योदेय ॥ ५३२ ॥

यहमदपानसमयसखीकोबचननायकमें ॥ सवैया ॥ लाजभरीअतिही नवनागरिजाकी सुधाईसुधाईकैगाई । ताहिबकीछबि देखिबेकोपियप्यारे

ḍhīṭhau dai bolatī hansatī praudha bilāsa -aprodha
tyaun tyaun ćalata na piya nayana ćhaka-e ćhakī naboḍh

bisrabdha navoḍhā vamana

hansi hansi herati navala tiya madake mada-unmādati
balaki balaki bolatī baćana lalaki lalaki lapaṭālī

balaki -uphana lalaki barḥke

mili ćandana baindī rahī gore mukha na lakhāya
jyon jyon madalālī ćaṛhai tyon tyon -ugharatī jāya

rahī = rahi thī

nipaṭa lajīlī navala tiya bahaki barunī se-i
tyaun tyaun -ati mīṭhī lagai jyaun jyaun ḍhīṭhyau
ḍe-i

so bahakī māna pan.i.ra

ḍhīṭhyau ḍe-i ḍhīṭhā-i karti hai

bāma hamāse kara rahī bibasa bārumī se-i
jhukatī hasatī hasi hasi, jhukatī jhukī jhukī hasi hasi de-i
bārumī se-i mōhinī bīhe

rūpa ochā āsava chakhyau -āsava jiyatu banai na
pyāle -ōṭha, priyā bacanā rahyau lagā-e naina

-āsava kṛita mādirā tulya nojhālaulā
mdasse-rum- dharma ika ..riya avamyāchi ho-i

khilita bacana -ādha khulala ēriga lalita swedakana joti
-aruna -bacana, chabi mādu ēhakī, ēhari chabīli hoti

भुरायकै बारुनिछाई ॥ ज्योंज्योंउमंग उठैमदकोतिय त्योंत्यों निशंकह्वै देतढिठाई। ढीठयौढोलागत नीकोमहावह मानौभरोवहु भांतिमिठाई ५३२ ॥ मच्छअक्षर ४१ गुरु ० लघु ३४

719

दो० मानतमासोकररहीबिवसबारुनीसेय।
झुकातिहंसतिहंसहंसझुकातिझुकझुकहंसहंसदेय५३३॥

यहमदपान नायकाकी शोभानायकसोंकहतिहैं सखीसखी हूंसोंकहै कबित्त ॥ बारुनीविवस मनमोहनसो मानठानआज मृगलोचनतमासे कोलसतिहै। चारुतनगाईमें निकाईछबिछाई त्योंत्योंगोरेमुखपर अरुणाई सरसतिहै ॥ कबहूंबदन पटघूंघटके ढांकलेत कबहूंउघारिदेत रंगबरसति है। झुकातिहंसति हंसझुकति झुकझुक हसतिहंसी हांसि झुकै झुकझुकै हसतिहै ॥ ५३३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

220

दो० रूपसुधाआसवछक्योआसवपियतवनैन।
प्यालेवोठपियाबदनरह्योलगायेनैन ॥५३४ ॥

यह मदपानसमय नायका की शोभादेखि नायक छकरह्यो सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ बारुनीको बनिआयो समोंकहते न बनै कछुकौतिक भारो। प्यावत रंगभरो मृगनैनानि रह्यो दुतिकोभरि भौन उजारो ॥ आसव रूपसुधाकै छक्यो मदपीवेकी भूलिगयो सुधि प्यारो ॥ प्यालेसो ओठपियामुख नैनलगाये रह्यो छबिको मतवारो ॥ ५३४ ॥ मच्छ अक्षर ५१ गुरु ० लघु ३४ ॥

219

दो० खलितबचनअधखुलितदृगललितस्वेदकनजोति।
अरुणबदनछबिमदछकीखरीछबीलीहोति५३५॥

यह मदपान समय नायका की शोभा सखीसखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नैनकछू उघरेसे मुंदेअरुबैननमें सिथलाई रसीली। स्वेदके बूंदनसों झलकै अरुणद्युति आनन पै चटकीलो ॥ तैसोयेरूप उजागर नागरि मोहतशोभसनो गरबीलो। चारुजगोतन योबनजोति छकै मद होतखरीये छबीलो ॥ ५३५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छकिरसालसौरभसनैमधुपमाधुवीगंध।
ठौरठौरझोरतझपतभौरभौरमधुअंध ॥ ५३६ ॥

यह बसंतऋतु समयजोमानवती नायकसों सखी कहैतो मनायबो होयजोनायका नायक सोंकहै स्वयंदूतहोय ऐसे नायकहू को कहियो संभवहै जोनायकसखी सोंकहैतोअपनो अवस्थाप्रयोजन नायका मिलाप सवैया॥ फूलनकेरसके चसकेअवगाहि थकेसबवेलि जितावन। माधुरी केमृदुगंधसने अरविंदपराग सोपागिरहैतन॥ मंजुरसालके सौरभसों मल मतभयेसुरत्यौन रहीमन। ठौरनिठौरनि झोरनि झूमिझुके मधुअंधमधू व्रतकेगन ॥ ५३६ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० फिरघरकोनूतनपथिकचलेचकिताचितभागि।
फूल्योदेखपलासबनसमुहीसमुझदवागि ॥ ५३७॥

यहवसंत समयनायकाको बचननायका सोहेायतो प्रोषित पतिका सखीकोवचन नायकसोंहोय ॥ कवित्त॥ देखोऋतु राजको समाजबन बागनमेंप्रफुलित सुमनरहे हैंजोतिजागिकै। कुसुमपलाशके अंगारजानि चहूंवेर चोचुनसों चापतचकोर अनुरागिकै॥ आगैतें बिलोकि फूलेमैन मदचिंतऊलें नूतन पथिकभूले भरमद वागिकै। परीउरझेल परदेशको बिसारोगैललौटि चलेघरकोचकित चितभागिकै॥ ५३७॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२

दो० बनवीटनपिकबटपरालखिबिरहानिमातिमैन।
कुहोकुहोकरिकरिउठतकरकरिरातेनैन ॥ ५३८ ॥

यहबसंत समयसखीको बचनसखीसों होयतोअपनी अवस्थाजनाय बोहय ॥ सवैया॥ मैनमहीपको मानिमतौ द्रुमडारि चढ़ेचहुं ओरनि टूकत। देखतहीबिरही जनकोकरि लोचनलाल कुहोकुहे कूकत॥ बीस बिसेबनबाटन मेंबटपारबसेपिक भूलतकूकत। प्राणपतीबिनक्यों बचिबो अबदांवपरे रिपुक्योंटकचूकत ५३८ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० दिशिदिशिकुसमितदेखियतउपबनाबिपिनसमाज।
मनोबियोगिनकोकियोशरपंजर ऋतुराज ॥ ५३९॥

basant ritu varnana

ćhaki rasāla saurabha sane madhura mādhuri gandha

ṭhaura ṭhaura jhaṃrata jhaṃpata bhaṃra jhaṃra madhu -andhu

saurabha fragrance the mango tree (apparently = maura here)

(sane ? sang)

mādhurī the Arabian jasmine (cf. zambac)

jhāṃpnā also = jhaṛatnā gūṃjate jhukte L. but jhuṭle may mean being hanging or bending low.

(jhāṃpnā to screen) jhaṃrata ? buzzing or humming - jhaṃṛ altercation tumult

jhūṃḍa a [illegible] mīṭha-anēna bliss with honey

phiri ghara kauṃ nūtana pathika ćale ćakitaćita bhāgi

phūlyau dekhi palāsa bana samuhaiṃ samujhi dawāgi

nūtana new

bana bāṭani pika baṭapurā taki birahini mata maina

kuhau kuhau kahi kahi -uṭhaiṃ kari kari rāte naina.

mata maina kāma ki salāh son h.p. mate se kāmdeoke L.

kuhau kuhau = mār mar L.

disa disa kusamita dekhiye -upabana bipina samāja

manahu biyogini kauṃ ćiyau sarapanjara rituraja

sarapanjara cage made [illegible]

hija -mwai ye kwai ga-ī tare -awadhi ke nāma
dūjai, kai dēnī hisai bauri baure -āma.

यहवसंत समय सखीको वचननायकसों होयतोमनायो नायकसों होयतो प्रवत्स्यपतिका ॥ कवित्त ॥ आयोहै मदन जितपालको हुकम पाइ आमलप्रबल ऐसो अमल चलायोहै। मानगढ़तोरिबेको अधिकप्रचंड वहदेखो सबहीके उरअनुराग उमगायोहै ॥ बनउपबन जितततित अबलोकियतदिशिदिशि कुसुमसमूह छबिछायोहै। वैरबांधि बिषम बियोगिन के रोकिबेकोमानों रतिराज घरपंजर बनायोहै ॥ ५३९ ॥ करभ अक्षर २८ गुरु २० लघु ८ ॥

दो० हौंऔरैंसीहवैरहीटरीअवधिकेनाम। 126
दूजेकरडारीखरीबोरीबारेआम ॥ ५४० ॥

यहवसंत समय नायकाको अवस्थासखी नायकसों कहतहै सखी सखीहूं सोंकहै ॥ सवैया ॥ मोहनसोंबिछुरी जबतेतबते न लही कलबेकघरी है ॥ नैननिरंतर दै निशिवासर व्याकुलबालअचेत खरी है ॥ ऐसीदशा यहनेहींहुती पुनऔरैं भईसुधि औधिटरी है। तापरबोर रसाल न देख्यो बसंतकेमोर बोरीकरीहै ॥ ५४० ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० कहिलोनेयकतबसतअहिमयूरमृगबाघ। 569
जगतेतपोबनसौंकियोदीरघदाघनिदाघ ॥ ५४१ ॥

यहग्रीष्मसमय नायकाकोवचन नायकसोंहठ अतो प्रवत्स्यतपतिका सखीकोवचन नायकसों नायकहू सों होय ॥ कवित्त ॥ एकभूतमय जातभूतलखि पंचभूत भ्रमि अनिलअंबु आकाशअवनि हूजात आगिसम। पंथथकित मदमुकति सुखितसिंधु रसजोवत। काकोदर करिबासउदर तर केहरि सोवत ॥ पियबल जिय यहबिधिअबल सकल बिकल जल थल रहत। तानिकेथबदास उदासमतिजेठ मासजेठे कहत ॥ ५४१ ॥ पयोधर अक्षर ३८ गुरु १२ लघु २६ ॥

दो० बैठरहीअतिसघनबनपैठसदनतनमाह। 570
देखदुपहरीजेठकीछाहौंचाहतछाह ॥ ५४२ ॥

यहग्रीष्मसमय नायकाको वचननायकसों अथवूतएसनायकको वचन नायकासों जोन यकाकीसखी नायकसों कहैतो प्रवेशको निधारनहोय ॥

कबित्त ॥ तरवरलतावन ऐसेमुरझायगये जैसेकामनीको मुखकांतिबिन भयो है । सरिताभई है छीन ऐसेसरजलहीन प्यारी दीनहोतीजो बिदेश पतिगयो है ॥ अवनिअकाशपानी नाहबिनऐसेजैसे नाहकोबियोग भामिनी कोतनतयो है । जेठकोजरनिमांह छांहछुतिकति छांहयेहोरिझवारपर-देशकोगयो है ॥ ५४२ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

5665 दो० नाहिनयेपावकप्रबललुवैचलतचहुंपास ।
मानहुबिरहबसंतकेग्रीषमलेतउसास ॥ ५४३ ॥

यहग्रीषमसमय नायकाप्रोषित पतिनायकाको बचनसखीसों ॥ कबित्त चंदकरमंडलते मंडकेअखंडधार बरषतपावक प्रचंडकिधौंयहरी । कृष्ण प्राणप्यारेकोदुहाईकिधौं आयबड़वानलकी लूयें गातेतचतिदुपहरी । चंडकर मंडलीते पावकनबरषत लूवैनचलतजिन्हैं देखमतहहरी ॥ मेरेजानिपीतम बसंतके वियोगभयें ग्रीषमबिरहनि उसासेलेतगहरी ॥ ५४३ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

551 दो० लैचुभकीचलजातजितततितजलकेलिअधीर ।
कीजतकेशरनीरसेततितकेशरनीर ॥ ५४४ ॥

यहजलकेलि सखीकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ मोहनसोंजल केलि रची ब्रषभानसुताहि तरंगमबोरी । कृष्णकहैकबिताछबिपै रतिकामकी वोरकरोरिकेजोरी ॥ चूभकलैगहरै जलहूचलिकै जितहीजितजातकिशोरी केशरिकेजलकेशरिकेशर नीरकरैतितहीतितगोरी ॥ ५४४ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

571 दो० पावसघनअंधियारमहिरह्योभेदनहिआन ।
रातद्योसजान्योपरतलखिचकईचकवान ॥ ५४५ ॥

यहवरषासमय स्वयंदूत नायककोबचन नायकाप्रति नायकाकोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ अंबरआनिदिशा विदिशासगरे तमहैकोवितान सोतान्यो । मेचकरंग बसैजगमेंअतिमोदहिये निशिचारनमान्यो ॥ पावस केघनकेअंधियरमेंभेदकछूनपरैपहिचान्यो । द्योसनिशाकोंबिढेकसुतौ चकई चकवानकेबोलतेजान्यों ॥ ५४५ ॥ चिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

rāhi, na ye pāwaka prabala lu-aiṃ ćalatī ćahuṃ pā
mānau biraha basanta ke grīkhama letī -usāsa.

lai ćubhakī ćalī jātī tita jita jala keli -adhīra
kijata kesara nīra se tita tita ke sara nīra

kesaranira se like saffron water
-adhīra ? impatient
ćubhakī plunge

I says jiehar jalkeli kā -adhīr nāyak
pai. but there is no reason why -adhīr
I say should not refer to nayakā, who
plunges in to where the jalkeli is
going on.

pāwasa ghana -anīdhiyāre meṃ rahyau bheda nahiṃ -āna
rātī dyausa jānyau parai lakhi ćaka-ī ćakawāna

kuḍhaṅga kopa taji, ṅaṅgarali karati javati jaga jo-i
pāwasa bāla na gūṛha yaṅa biḍhani hū ṅaṅga ho-i
biṭh paṅa ilak biṛhā au, bīra bahuṭṭi

koda

dhuraṅā haṃlhiṃ na,-ali, -uthai ōhuwāṃ dharini ēkhu
jāratu -āvatu ingala kaṃ pawasa t.thama payoda

ēni-āpahuli
koda

ōhuwā . laḷal

payōra elaṅā-giṅṅhatar

we-i ēnajīvī,-ṅmara niḷa-aṅa phīrau kahāṅgi
ēhina biḷhure jiṅahi na-ihiṃ pāwasa āyu eirā-i

-ayuerā i

ale lai- ṅma-upāyaṅau āyau jīwana māsa
jiṅa-ṅ ṅ-au ihiṅaṭiṃ ēṅakiṅma kī bāsa

ōhuṅ

दो० कुढंगकोतजिरंगरलीकरातिजुवतिजगजोय। 573
पावसगूढनिबातयहबूढ़नहूरंगहोय ॥ ५४६ ॥

यहबरषासमय सखीकोबचन नायकामें मनायबो ॥ सवैया ॥ पावस आवतहींखग पुंजनि मोदसोकुंकुम चायदईहै। चायभरोबहु भायभरो मिलिरंगरलीबनितानठईहै ॥ कोपप्रसंगकुढंग निवार निहारि घटाउनई जुनईहै। गूढ़नहू यहबातगुपायन बूढ़नहूदेखि सुरंग भईहै ॥ ५४६ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० धुरबोहोंहिनलखिउठेधुवांधरनचहुंकोद। 386
जारतआवतजगतकोपावसप्रथमपयोद ५४७॥

यहबरषासमय नायका प्रोषितपतिका नायका को बचन सखीमें ॥ कवित्त। मेरोकह्योमानि जियनेहचौके जानिआलीप्रथमही पावसके चलबघरतहै। शीतलसमीरमिल्यो तैसोईसहायकरुचि रहीबिचारे कहि कैसेउबरतहै ॥ जगहि जरावत येआवत उमड़घनताही त्रासखग कुलसोरये करतहै ॥ चपलान चपलझरप ज्वालजालनिकीतेई धूमधारये न धुरवा परत है ॥ ५४७ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो0 वेऊचिरजीवीअमरनिधरकफिरोकहाय। 575
छिनबिछुरेजनकीनहिनपावसआवसराय ५४८॥

यह बरषा समय सखीको बचन नायकामें नायकाको बचन सखीसों कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ घोरघटाघुमड़ी चहुंओरकरैं बहुभांतिन सोरबिरावो ॥ भूमिहरी वहशीत समीरगहेंगति मंदसुगंधसुभावो ॥ ऐसे समयछिनएकबिछोह भईजिनकीगई छूटनआवो ॥ वेचिरजीवीं भयेजगमें अजरामरक्यों न निशंककहावो ॥ ५४८ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अबतजिनाउउपावकोआयोश्रावनमास। 576
खेलनरहिवोखेमसोंकेमकुसुमकीबास ॥ ५४९ ॥

यहबरषासमय प्रोषितपतिका नायकाको बचनसखीसों ॥ कवित्त ॥ जोलौमन रह्योहाथ तौलौंन उसासीगाय आगयोबिरहदुख खलनकोसहिवो ॥ प्यारेनंदनंदनकी आवनअवधिआस जैसेतैसे रह्योजीव अब कहा

कहिबो॥ आयोसखी श्रावनऋाये मनभावनरो अबतू उपायनकोंछोड़ि वृथावहिबो। कदम कुसुमको सुवासको प्रकाश भयो खेलुहै नप्राननको कुशल मों रहिबो॥ ५४९॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

572 दो० तियतरसोंहैंमुनिकियेकरसरसोंहैं नेह।
धरपरसोंहैंहवेरहेझरबरसोंहैं मेह॥ ५५०॥

यह वर्षा समयहै कविकी उक्ति औस्वयंदूती नायकाकोबचनन यक्त मों॥ कवित्त॥ हरितेपुहुमिजन भरेनटपवम चहुओरसोरभके उमगिरदयरहैं॥ हमहो लतोलहलही छवि छायरही कुंज कुंज खगकुल कोलाहल कैरहै॥ रमड़िघुमड़ि परसतमे पुहुमियन मोहवरसो हैभूमि हूरहै॥ हेरिहेरि मुनिमन तियतरसो है होत इतघनवृंद अनुराग के टरैरहै॥ ५५०॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ६ लघु ३०॥

555 दो० चलितचलितश्रमस्वेदकणकलितअरुणमुखतैन।
बनबिहारथाकीतरुणिखरेथकायेनैन॥ ५५१॥

यह वनबिहार नायकाकीशोभा नायककीस्तुति सखीसखीसोंकहति है॥ कवित्त॥ सुखमाकलित तरुणाईकी गुराई मांझटमगि प्रकास अरुणाईकेसहायेहैं॥ तैसेईल लतरम स्वेदकणझलकत जगमगजोतिकस-मेहसरमायेहैं॥ कहैकविद्रुवा देखिरहेअनमेघहू के चालत न क्योंहूंपगऐसे शिक्षिधायेहैं॥ बिपिनबिहारी रसछाकी ब्रजबाल बांकीथकित प्रमानखरे लोचनथकायेहैं॥ ५५१॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

550 दो० बरजैदनीहठचढ़ैनासकुचैनसकाय।
टूटतकटितुमबीमचकिलचकलचकबचजाय५५२॥

यहमखी समय हिंडोरकी शोभानायकसों कहतिहै॥ सवैया॥ गहेप्यासुरंग पतेसारसुरंगसम्हारनहीं चकजूटतिहै॥ छलसोंअवलोकति नंदजलाहिलगोरहेरन अहूटतिहै॥ उछरैकवरी छलकैछवि पीठमेंडीठि महाबलखूटतहै॥ चमकैमृगलोचनकोलभरी लचकैकटयजनुटूटतिहै॥ ५५२॥ चल अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

tiyatarasaṃhaiṃ ćita kiye kari sarasaṃhaiṃ ne
dhara parasaṃhaiṃ hwai rahe kara barasaṃhaiṃ me
ghara parasaṃhaiṃ & jhari barasaṃhaiṃ are different read

ćalata lalita srama swedakana kalita-aruna mukha
bana bihāra thāki tarunī khare thakāye naina.

thakī nāyakā thakāye nāyak ke naina,

baraje dūnī hwai ćaṛhai nā sakući na saṃkā-i
tiṭaki kaṭi du māćī maćaka laćaki lućaki baći jā-i

hiṃḍola varnana

dumaći ? dhumći P. crupper
maćakna to creak lućaki yielding

ghana ghiran ēhuṣi yan, karakhi ēali ēahiṇḍiva rāha
kiyan suvāṇaun rāya ivya sarāba sūra naranāha

-anna sa'o'u'i kara raiana ēiyakhanjana mukha ēaṇḍ
jamaiṇ rāya sa'o'u'i sarāba ēāni na karai -ananda

kiyan sabai iya kāma kase, jēte jili -aje·i
kusumasara liṇ sera, ēhaṇukha, jara -aṣahana gahana na
de-i

kusumasara kaṇ· jēte jilne se ?or jēte kuc
kara meṇ galne na ōiṇa

ēhaṇuche gahana śrama ēitu nalu kāmalu -aṣahana dāra

[illegible] barhali bibhāvarī kyaṇ kyaṇ karhaiba -ananda
[illegible], seha seha hemanta.
[illegible]
[illegible]
[illegible]

दो० घनघेरेछुटिगोहरपिचलीचहूंदिशराह।
कियोसुचैनोआइजगशरदसरनरनाह॥ ५५३॥

यहशरद समयराजनीति प्रसंगकविकोउक्ति॥ कवित्त॥ छूटेगयोत्रि-
जनचलन अपमारगको अपनेअपनसत मारगमेंलिहै॥ सोहतपरमहंस
सरशुभकलानिधि गाहेद्विजदेवतान पूजिबेकोप्रीतिहै॥ केशवरायसबही
केहृदयकमल फूलेमोहतशरद कियोआछो राजनीतिहै॥ ५५३॥ कच्छ
अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० अरुणसरोरुहकरचरनदृगखंजनमुखचंद।
समयआयसुंदरशरदकाहिनकरतअमंद ५५४॥

यहशरदसमयकविकोउक्तिहै॥ कवित्त॥ सोहतअरुणसरोरुहचरण
कारजिनाहचगतिलय तनमनावई। कलापरिपूरन सुधानिधिवदनलसै
जाकीअमृत कविकहत नआवई॥ खिंजत खंजन तरलकजरारे नैन
कहैंकविकृपा देखिजोमनभावई। समय सुखपुंजमनो सुंदरशरदआई।
कोनकेनहरमें आनन्दसरसावई॥ ५५४॥ कच्छअक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० कियोसबैजगकामबसजातोजेतेअजेय।
कुसमसरहिसरधनुषकरिअगहनुगहननदेय ५५५

यहहेमंतसमय कामोद्दीपन अधिक होताहै सनायक अथवानायका
सखीसोंकहै ऐसेहीसखीको बचनसंभवहै कविकोउक्तिहोय॥ कवित्त॥
अङ्गीसमुनोष मितुईप्रमत्तक तुकेमे केतेकीने चिकलगनेये कहो काहि-
काहि॥ मानियतनाकोनउखंड में अखंडधाकुनीं महिमंडलके अंचित
जितोकाहि॥ कहेकवि कृपा जन फूलहीकेआयुधमों कैसेकैन बली
भेदेसाहसुईते कुचाहि। जीतेनिहतीन्योंलोक ऐसेबलीमनमथअगहन
नगहनदेतसरचापताहि॥ ५५५॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० ज्योंज्योंबढ़तबिभावरीत्योंत्योंबढ़तअनन्त।
ओकओकसबलोकसुखकोसकोसहेमंत॥ ५५६॥

यहहेमंतसमय कविकउक्ति मुख्यहै संयोगशृंगार में बनै विप्रलंभहू मं

कोककोशकोप्रसंगअन्योक्ति हूजानिये ॥ कवित्त ॥ हिमऋतुआइभईसीत सरमायुदेखिभाजिगई गरमउरोज अचलनिमें । बासरकोलघुता बिलोकि मुरझ्यौतकौल मुछिमह्वै रह्यो तेजतपनकेतनमें ॥ कहैकबि कृष्ण ज्यों ज्यों रजनीबढ़ंत त्यौंत्यौंउमगत मोदअनुरागिन केमनमें ॥ लोकलोक बाढ़त अपारसुख देखयत सोकहै बियोगीकेकिकोकनकेगणमें ५५६ ॥ मदकल अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

580 दो० मिलिबिहरतिबिछुरतमरतदंपतिअतिसरलीन ।
नूतनबिधिहेमंतसबजबैजुराफाकीन ॥ ५५७ ॥

यहहेमंतसमय सखीकोबचनन्यकासोहोय तोमानवतीअरकाबकी उक्तिहोय ॥ कबित्त ॥ दोऊयेकैदेखियेदुहुनधीचयेकैं प्राणहितकीटमंग नईनईयेगहतहैं । अतिरसलीन दोऊमिलैंहोबिहारकरैंकहैं कबिकृष्णचित अति उमगतहै बिछुरैन नेकहूतो जीबेको भरोसो नाहि अति अकुलाय मैन बिथान सहत है ॥ और येकदेखो हिमऋतुकीनबलरीति जगतमें सबही जुराफाहूरहतहै ॥ ५५० ॥ पयोधरअक्ष ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

582 दो० आवतजातनजानियततेजहितजिसिवरान ।
घरहिजमाईलौंघट्योखरोपूषदिनमान ॥ ५५८ ॥

यहशिशिरसमय दोउनकोहितकाई है सुरात्रिहीआछोलगतिहैसासखो दिनकोलघुताकहतिहै बिरहीहूदिनकी निन्दाकरै ॥ कबित्त ॥ बावन कीडगह्वै बिभावरीबढतज्योंहीत्यौं बियोगिनकोहियो अकुलातहै । दम्पति उमंगअनुरागनि भिलतबरषएकह्वै रहतामिल दुहुनकोगातहै ॥ पूषकोदि-वसलघुमानभयो ऐसेजैसेससुरकेघरमेंजमाईसकुचातहै । तेजकोनलेषरह्यो शीतल सुभाव गह्योजानतसकोउ कबह्योयो कयजातहै ५५८ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३०

585 दो० रहनसकीसबजगतमेंशिशिरशीतकेत्रास ।
गरमभाजिगढ़बैभईतियकुचअचलमवास५५९ ॥

कबित्त ॥ मूरतांजभाजो बातकातिकमें जबसुनोहिमकोहिमाचलतेंच-मूउतरतिहै । आयेअगहनकोनोगहन दहनहूकोतितहूतें चलीकहूधीर

mili biharata, bichurata marata, dampati ati rasa līn
nūtana bidhi hemanta kā jagata jurāphā kīna

jurāphā A zurāfat. giraffe

tejahin taji seems better
-āwata jāta na jāniye taji tejahiṉ siyarāna
gharahi jamā-ī lauṉ ghaṭyau kharau pūsa dina māne

jamā-ī a son in law māṉ is taken in two senses
measure & pride.

(? is siyarān for sherāna)
The pride or conceit of the day is greatly reduced humbled in Pūs - like the pride of a husband man in his
father in laws house now that the fierce fellow has lost his heat one does not
know when he comes or goes -

sīr siyar sīl ∝ = dampness or cold but what
is siyar āna ∝ how can cold be said to have
abandoned heat

rahi ṉa saki sāba jagala meṉ sisira sīta ke trāsa
garami bhāja garha wai bha-ī tiyakuca-ācala mawāsa

bhāja jarh meṉ baiṭhi hai ∠.
which a wāi -

tapana tēja tapatā tapana tūla tulā-ī māha
sīsira sīta kyaṃhuṃ na ghaṭai bina lapaṭai tiya nāha

tapana tej heat, sun
tapana m. = sun tapani f. heat
? is tapatā for tāpala (tāpta?)

tūl cotton
tulā-ī apparently for dulā-ī P.
a cloth of two folds (lā-ī)

I have sirajke tej se -āg ke tāpne se rū-i ki rajā-ī -orhne se

lagatī subhaga śītala kirana nisi dina sukha-avagāhi
māha sasī bhrama sūra tyaṃ rahati cakorī cāhi

rāt ā-i bhāṃti din men sukh bicā-ke. if so the words should
be dina nisi sukha, or nisi sukha dina.

tiyan ju piya lākhi cakhanā mey ā bolala ṭhāga khiyāla
kāṭhaiā lii -ali pīra sona kāṭhata banala gulāla

gulāl kaṭhala nahiṃ banatā ai.

ṭha diye hā, nainu mukī. hera ghuṃghaṭa paṭa ṭārī
hasi gulāla kī mūṃṭhi sī ga-ī mūṃṭhi sī māri

fest

mūṃṭhi sī māri casting
a spell - or clutchingat.

नधरतहै ॥ हिय नेपरहै हूलटोरि गहितजितूल अबनिजमूलमेनापतिमुमि रतिहै। घरघमैं तियाके कुचऊंचेकनकाचल नगरमगढौईभई शीतसोंर-तिहै ॥ ५५६ ॥ बारणअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तपनतेजतपतातपतिअतुलतुलाईमाह। 583
शिशिरशीतक्योंहुनघटैविनलपटोतियनाह ॥ ५६० ॥

यह शिशिरऋतु सखीकोबचन नायकामें नायक कोबचन सखीसों ॥ सवैया ॥ मोलबिशालकी ओढ़हुलाम दिनेशको तेज हुतेपरहोऊ। राख हुळाहनिहालिनुमें तनपावकपुंज अगीठीसंजोऊ ॥ माहकोशीतविहात न कैसेहूकोटिउपायकरो किनकोऊ। जौलगपीवप्यास चुपायरहै लपटायन येकहूदोहै ॥ ५६० ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० लगतसुभगशीतलकिरानिनिशिसुखदिनअवगाहि। 584
माहशशीभ्रमसूरत्यौंरहतचकोरैचाहि ॥ ५६१ ॥

यह शिशिर ऋतु कविकविकी उक्तिमुख्य है ॥ कवित्त ॥ शिशिरमे शशिकोस्वरूप पावैसविसुघामहूं मेंचांदनीकी दुतिदमकतिहै। सेनापति हातशीतलता है सहसगुनीरजनीकीबासर मेंझाईझलकतिहै ॥ चाहतचकोर सूरओरहूग छोरकरि चकवाकी बातीतजिघार धसकतिहै। चंदके भरम होनुमे.दहैकमोदनी कों शशि शंक पंकजनी फूलीपै रहतिहै ॥ ५६१ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० दियोजुपियलखिचखनमेंखेलतफागखियाल। 560
बाढ़तहूअतिपीरसुनिकाटतबनतगुलाल ॥ ५६२ ॥

सवैया ॥ हरिखेलतफाग बधूगणमेंघसवासवकेशरिरंगसनै। इतचाह भरीवृषभानसुता उमग्यो हरिके उतमोदमनै ॥ जबनैननमें तकि डारयो लला अपने करसों वहरायघनैं। अतिबाढतहै जऊ पीरतऊबह बाढ़तपैन गुलालबनैं ॥ ५६६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० पीठदियेहीनेकमुरिकरिघूंघटपटटारि। 559
भरिगुलालकीमूठसोंगईमूठिसीमारि ॥ ५६३ ॥

यहहोरीखेलनेको समयनायकाकी शोभानायक सखीसों कहतहै ॥

सवैया ॥ मोपैकछूकहते न बनैकरिजैनादिश वृजनारिगईहै ॥ पीठदिये होमुरि मनले वहफागन खेलि खिलार गईहै ॥ घूंघटकोपट टारिकैभौंह उसारिकैनैक निहरिगईहै । योंभरि मूठिगुलाल सोंन्याहीअचानक मूठि मीमारिगईहै ॥ ५६३ ॥

563 दो० ज्योंज्योंपटझटकतिहसतिहठतिनचावतनैन ।
त्योंत्योंनिपटउदारहूफगवादेतबनैन ॥ ५६४ ॥

यहनायका प्रौढ़ाहोरी खेलको समाजनायककीशोभादेखिवेको लोभ लाग्योहैसोसखी सखीसों कहति है ॥ कवित्त ॥ फागुनकेखेलको समाज बनिआयोजेसों तसोवेकारमनामों कहतबनैनहैं ॥ सांकरीगलीमें नंदलाल कोयकरीबाल समझायेकरत बड़ायेचित चैनहैं ॥ ज्योंज्योंनेहचाह भरे लोचननचाय परु करिकरत हसिहंसिमृदु बैनहैं । त्योंत्योंचितलालन कोनिपटउदारतऊ फगयाको दबोक्योंहू मानतमनैनहै ॥ ५६४ ॥ चिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

561 दो० छुटतमुठिनसंगहीछुटेलोकलाजकुलचाल ।
लगतदुहुनइकबेरहीचलाचितुनैनगुलाल॥ ५६५ ॥

यहहोरीखेलको समयसखीसखीसों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ होरिको समाजघरमानेको बगरआजुकहा कहौंचालिनि आयोमीको ख्यालरी । इतयुवतिगणमें राधिकाकिशोरी उतमहितसखान घेन्योमदन गुपालरी ॥ छुटतमुठिके संगछुटतहियेके त्रेरगुरुजनटर लोकलाजकुल चालरी । कहै कविठाकुरत्योंहीं लगतदुहुकेतन येकेसाथ चावचित लोचन गुलालरी ॥ ५६५ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

558 दो० ज्योंज्योंझुकिझांपतवदनविहंसतअतिसतराय ।
त्योंत्योंगुलालमुठीझुठीझिझकावतप्यौजाय ५६६

यह होरी खेलत नायकाकी चेष्टा देखि नायक रीझ्योहै सोनायक युक्ति करतहै सो सखी सखीसों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ आजब्रजदेख्यो होरी खेलको समाज वह शोभामेरे नयनमें रहीहैविहरिकै ॥ राधावन मालीको तिलासलोनेलालो सचमचेवाके केरिक गुमान जातगरिकै ॥

twitch (?)

jyaṃ jyaṃ paṭā jhaṭakatī haṭhatī, hansatī, naćāvatī nai
tyaṃ tyaṃ nipaṭa -udāra hū phagu-ā deta banai na-

-udāra liberal (generous) forward - gallant.

viśeshokti -udāratā kāranhai denā kāj nahī hot.

ćhuṭata muṭhi saṃga hī ćhuṭī lokalāja kula ćāla
lagai duhuṃ -ika saṃga hī ćali ćita naina gulāla

sahoktī

starting
-ujhaki covering ni hunti khijlāti
jiu jyaṃ -ujhaki jhāṃpatī baćana jhukatī bihasi salarā-i
tu tyaṃ gulāla muṭhī jhuṭhī jhajhakāvala piya jā-i

jhijhakāna caus of jhujhakna which is
the same as -ujhakna

jiu & tu for jyaṃ tyaṃ

jhuṭhī ?

rasa bhijaye do-ū dubunni ta-u ṭikka rahaiṃ, ṭaraiṃ na
chabi saṃ chirakala prema raṃga bhara picakārī naina
rasa ṛīli aṃ jaī.
naiṃoṃ kī kriya boli se ripaki,

gira kampi kachu, kachu rahai kara pasīji lapaṭā-i,
ṭārala muṭhī gulāla kī, chuṭata jhuṭhī huai jā-i.

kampa aur sweda - viśeshokti muṭhī gulāl bhar chornā
kāran aur lagnā kāj nahī huta, L.

"rahyau, rukyau, kyaṃ hūṃ su cali, -āichika rāli padhāri,
haralu lāpa saba ḍyausa kau, -ura lagi, "yāra? biyāri?"
pichārnā to arrive,
lagi - nāyaka bacan -itnā pani sakhi bacan yār
nāyaka bacan pavan. (mukarnī)
Ekokāpahnuti
ekokāpahnuti sabki-sunāiṃ bāta mājhi duravata dhāri
yāra - piyau pani mukarnā bāta ḍya-artha biyāri

ज्योंज्यों प्यारीझुकिझुकि झांपत बदन बिहंसति सतरातरिसकोसो रुख करिकै ॥ त्योंत्योंछबि देखिछक्यो कृष्णप्राणप्यारोलाल झिझकाबतगुलाल मूठीझूठीभरिभरिकै ॥ ५६६ ॥ चल अक्षर ३० गुरु १५ लघु २६ ॥

दो० रिसभिजयेदोऊदुहुनतौटिकरहेटरैन। 564
छबिसोंछिरकतप्रेमरंगभरिपिचकारीनैन ॥ ५६७

यह दोउनकी परस्परावलोकनहै सोसखीसखीसों हेरीके ख्यालकी समतादैकरि कहतिहै ॥ कवित्त ॥ आजबृषभानकी कुंवारी मनमोहन कोनैननुमेराख्यौ हेरीकोसे ख्याल करिकै ॥ भरेहितचायकोऊ चूकतन दाइटिकरहेटकलाय कोऊजानत न टरिकै ॥ भिजयेबनाय अतिरसमेंपरस पागेअनुरागके गुलालरंगढरिकै ॥ कृष्णकहैं छिरकत छबिसोंछबीलेदोऊ नैनपिचकारी प्रेमरंगभरिभरिकै ॥ ५६७ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० गिरेकंपकछुकछुरहैंकरुपसीजलपटाय। 562
लैयोंमुठीगुलालभरिछुटतझुठीहवैजाय॥ ५६८ ॥

यहहोरी खेलको समय सखीसखीसों कहतिहै दोउनकेसात्विकभाव बपनहै ॥ कवित्त ॥ मेरीकच्योमानरी उताली चलिदेखिनेकु आजब्रज धूमहोरिखेलकी अनूठीहै ॥ केशरिसनेरसिकरसीले जहांबरषातहांई सब सुखनकोबूढतिहै ॥ यद्यपिपरसपरदोऊमुखमांढिबेकों लेइ अतिचायसों गुलालभरिमूंठीहै ॥ कछूकरपंकजयसोजै लपटातकछू कांपैगिरो जाततातें खेलेहातकूठीहै ॥ ५६८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रहीरुकीक्योंहूंसुचलिआधिकरातिपधारि। 569
हरितितापसबधोसकोउरलगियारिबयारि ५६९॥

यह वायु वर्णन कवि उक्ति ॥ कवित्त ॥ ऐसीरही रुकि क्योंहौं आवनेन पायीजाके बिनमिले प्राननकी गति अकुलातीहै ॥ लोचनचकित जाकोआगमविलोकबेको चहूं ओरचितवत छातीहाततातीहै॥क्योंहूं क्योंहूं चलिकैअचानकही आधीराति आयगईव्यार जैसे पारिआयीजातिहै॥ हरितितपतिसब दोसकोहियेसों लागिकहैकविकृष्ण सुखसिंधुसरसातिहै ॥ ५६९ ॥ चल अक्षर ३० गुरु १५ लघु २६ ॥

588 दो० चुवतस्वेदमकरंदकणतरुतरुतरबिरमाय।
आवतदक्षिणतेंचल्योंथक्योबटोहीबाय॥ ५७०॥

यह पवन वर्णन कवि की युक्ति॥ कवित्त॥ नीझरतड़ाग जल यंत्रनकेबिमलसलिल परसतऐसेढार सोंढरेंढरें॥ कृष्णकहैजहां तहांसीरी छांहदेखिदेखि बिरमिरहततरुतरु के तरेंतरें॥ सुमनपराग रजपागिरह्यौ अंगअंगस्वेदकण बूंदमकरंदके धरेंधरें॥ सुरभिसमूहछाक्यो दक्षिणादिशातें वायुथाक्योंसो घटोही चल्यो आवत हरें हरें॥ ५७०॥ अच्छ अक्षर ४१ गुरु ० लघु ३४॥

384 दो० बिकसतनवमल्लीकुसुमनिकसतपरमलपाय।
परसियजारतबिरहहियबरसरहेकीवाय ५७१॥

यह पवन बर्णन बिरहके प्रसंगमें नायका अथवा नायक सखी सों कहै मानके प्रसंगमें सखीनायकसों कहै॥ कवित्त॥ मंजुलता बेलिनुके सघननिकुंजनितें हरेहरेनिकसत सबहीसुहातहैं॥ सुमनकदंबनिकेसुखद पसरागसान जांहिमिलिभौंरनकी पांतिहुलसातिहै। मुकुलितमालिकाके कुसुमसनिवीननुतेनिकसतिसुरभि सहितसरसातिहै॥ बरसिरहेकी सीरी आवतबयार देखो परसहियेजरतबियोगिनकी छातिहै॥ ५७१॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

587 दो० रुक्योसांकरेकुंजमगकरतझांझिझुकरात।
मंदमंदमारुततुरंगखूदिनआवतजातु॥ ५७२॥

यहबायु बर्णन॥ कवित्त॥ सोहतसिंगार बहु भांतिन जरावसाज रंगरंगकुसुम तरलअति अंगुहै। करिका ललित भ्रमरावली लसतिमुख पुहपपरागढक्यों उमंगअनंगुहै॥ झकझकत सांकरेनिकुंज मग निरखतु झांझसोकरत करातभरयोरंगु है। खुदीसो करत मंदमंद मलयाचलते आवतपवन कामदेवको तुरंगुहै॥ ५७२॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६॥

590 दो० लपटीपुहुपपरागपटसनीस्वेदमकरंद।
आवतनारिनवोढ़लोंसुखदबायगतिमंद ५७३॥

ćuwatu sweda makarandakana taru taru tara biramāy
-āwatu dakshina desa teṇ thakyau baṭohī bāya
lćh

niće ṭhaharata – ? birāma karta

bikasata nava ballī kusuma nikasata parimala pāya
parasi pajārati birahi hiya barasa rahe kī bāya

parimala fragrance (arising from trituration of fragrant substances
lit. powder) or rubbed- ? why not nikasatī

barasa rahe kī bāya –
case inflection of verbal phrase.

ukyau sāṇkare kuṇja maga karatu jhāṇjha jhukarāla
manda manda māruta turaṇga khūṇdana āwata jāta.

jamatā āta jātaṇi.

lapatī puṇpa parāga paṭa sanī sweda makaranda
-āwatī nāri naboḍha lauṇ sukhada bāyu gati manda

vāyu – upameya naboḍha – upamāna mandagati dharm
lauṇ vācaka

Runita bhringa ghaṇṭāvali jharata dāna mādhu nīra
manda manda āvati calyau kunjara kunja samīra

Runita
(rauna to give sound)

kunjara a kind of elephant
dāna the juice from an elephant's forehead

ghaṇṭā ki katār /
mādhunir shul dāras /
pavanarūpī hāthī kunjmen /

dīchili cameli

dwaija sudhādīchili kalā yaha lakhi dīthi lagāya
nirmal-akāsa-agastiya -ekai kali lakhāya-

dīchili light a navy light (Hall)

-agastiya Asterism name of a star - also the star Canopus and its regent -

dhani 'yaha dwaija' jahan lakhiyau, tajyau dirgani dukha dawana
tura thāgani pīyala-nyau -ahe -apīraba canda-

Rohini = lalitwarupina bandyanpūrnan canda
yoni-upīralata yehin sahu bacaf ek nandananda

[illegible]

यहबनबर्णन कविकीउक्ति ॥ सवैया ॥ फूलनकीरज अंबरमेंनखते सिखलोंलपटी छबिछावति । खेद लमे मकरंदफुहीलगि नयनन सोछति याहिसिरावति ॥ कृष्णकहैं बहूभांतिनुकै तनसो रस चौहूदिशामहकावति मंदगहैंगति नारिनवोढलोंव्यारिनि कुंजगलीतन आवति ॥ ५७३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० रणितभृंगघंटावलीझरतदानमधुनीर । 586.
मंदमंदआवतचल्योकुंजरकुंजसमीर ॥ ५७४ ॥

यहवायु वर्णनकविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ घंटनकेशबद अखंडतेई सुनियतगुंजत अनंदभरयो अलिनकोबृंदहैं । सुमनममूहनकी धूरसोंधुरेटे गातमदजल उमगिझरत मकरंदहैं ॥ रंगरंग फूलनकीझूलमें झपायेतन जगतविरनियाकोबिबिक्रम अमंदहैं । मानतरुतोरि केकाआवत गुमानभरयो मंदगतिपावनु मनोज कोगयंदहैं॥५७४॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४लघु २० 250

दो चंद्रोदयद्वैजसुधाब्दीधतिकलावहलाखिडीठिलगाय
मनोअकाशअगस्तियायेकैंकलीलखाय ५७५ ॥

यहचन्द्रोदय वर्णन सखीकोबचन नायकासों अगस्तियाके तरुतेंसंकेत स्थलगूचनाद्विजतेमिलबेकी अवधिगूचनुमाधारे कविकीउक्ति ॥ सवैया ॥ देखतवैदुतिया कैसयंककी कैसीकला नभजोति जगीहै । सोछविचाहि चकोरनको अवलोकूलसी हियमोदपगीहै ॥ यौंनिरखीअरुनाईलिये उपमा कविकेउरमें उनगीहै । मानहुव्योम अगस्तिके रुपहियेककली पहलेहीं लगीहै ॥५७५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।।

दो० घनयहद्वैजजहांलख्योतज्योदृगनदुखदंद । 79
तोभागनपूरबउयौंअहेअपूरबचंद ॥ ५७६ ॥

यह चन्द्रोदय सखीकोबचन नायकसों प्रयोजन नायका दिखायबो अन्योक्तहूयाहो प्रसंगमें संभवहै ॥ कवित्त ॥ सकलकलानि परिपूरण पियूषनिधिसोहै अकलंक सबसुखनिको कंदहै । जाहिदेखिवारिज बदन और तियनके सकुचिमुदित ऐसी प्रभाको अमंदहै ॥ धनयहद्वैज जहां नीकेकै निरखपायो देखतहीदृगन कोगयो दुखदंदहै । पूरबकीओर तुव

पूरब सुकृतफलु निरखअपूरब उदितभयोचंदहै ॥ ५०६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

2 दो० शीशमुकुटकटिकाछनीकरमुरलीउरमाल।
यहिंबानिकमोमनसदाबसौविहारीलाल ॥५७७॥

यहश्रीकृष्णजूको ध्यानहै क्रियाबानिकसोंमेरेहृदयमें बसो ॥ सवैया छबिसों कविशीष किरीटबन्यो सुविशाल हियेवनमालसैं। करकंजहि मंजुरलीमुरली काछनीकटि चरुप्रभाव बसैं ॥ कवि कृष्णकहैलखसुंदर मूरतियोंअभिलाषि हियेसरसैं। यहनंदकिशोर विहार सदायहबानिक मोहिय माझबसैं ॥ ५०० ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १०लघु २८

3 दो० मोरमुकटकीचंद्रकनियोंराजतनंदनंद।
मनुशशिशेषरकीअकसाकियेशेषरशतचंद ५७८॥

यहश्रीकृष्ण जूकोमुकटकीशोभासखीकोवचन नायकासोंभक्तकोवचन हूसंभवहै ॥ सवैया ॥ आजलख्योब्रजराजकुमार सुदेषसिंगारबनेसिगरेहैं ॥ रूपकीरीझकहोनपरै अवलोकविलोचन मोदभरेहैं ॥ कविकृष्णकहैसिर सोहतमोरकिरीट चन्द्राछविपुंजभरेहैं ॥ मानोंअकसशशिशेषरसोहरशेषर चंदअनेककरेहैं ॥ ५०८ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

hirot = kavita Rahem

6 already at 159

दो० अधरधरतहरिकेपरतओठदीठिपटजोति।
हरितबांसकीबांसुरीइंद्रधनुषरंगहोति ॥ ५७९ ॥

यहश्रीकृष्णजूकीमुरलीबजावतिशोभाहोतहै सोसखीनायकसोंकहतिहै नायकासखीसोंकहै ॥ सवैया ॥ चलिदेखिरीबानिकसों यनिकैं ब्रजराज कोलाड़िलोआवतहै। मुखचंदकी चारुमरीचनसों बलिनैनचकोरसिरावतहै ॥ जबडीठिकोओठनको पटकोमुसकान को रंगमिलावतहै ॥ तबबांसुरी बांसहरेकीललासुरचापकेरंगदिखावतहै५०९॥पयोधरअक्षर३६ गुरु१२लघु२४

4 दो० मकराकृतगोपालकेशोभितकुंडलकान।
मनोधर्योहियघरसमरुड्योढीलसतानिसान ॥ ५८० ॥

यहकृष्णजूकोध्यानहै तरुणाई आईहृदय में कंदर्प प्रवेश भयो यह

bānika varṇana

śīśa mukuṭa, kaṭi kāchanī, kara muralī, -ura mā
yahiṅ bānika mo mana sadā basau bihārī lāla.

śīsa | kaṅchanī | -ihi | basau sadā | VV

bānika kahaiṅ banāwa.

jāti -alaṅkāra.

the first line may be taken purely as descriptive, or each phrase a
a simile denoting constancy. i.e. I dwell in my heart in that form
or dwell in my heart like a crown on the head &c —

mukuṭa varṇana

moramukuṭa kī ćandrakani yoṅ rājata naṅdanandana
manu śaśi śeshara kī -akasa kiya śeshara śata ćanda

mukuṭa | ćandrikana | yauṅ | sasisekhara | sekhara | sata | VV. kiya
śaśisekhara kahaiṅ śivaji -akasa kahaiṅ dwesha
kaba mīṭha

-akasa ? -akas. accdg to Platts jealousy is -ikkas. -akas is M.'

-asiddhāspadahetūtpreksha poetic fancy caused by imaginary
occasion —

makarākrita gopālaka śobhita kuṇḍalakāna
mano dhasyau hiya ghara samaru ḍyoṛhī lasata nisāna

kuṇḍala sohata | dhasyau manau | samara | ḍyauḍhī VV

uktāspadavastūtpreksha

×

śohaṭa -oṛhe pīta paṭa śyāma salone gāta
mano nīla maṇi śaila para -ātapa paryo prabhāta

'śyāma sa'aune' manau 'saila' -ātapa paryau
śaila pahāṛa

bhorkī dhūp
-uddīpaka vastūtprekṣha

kabaka ḷerala dīna raṭa? hola na śyāma sahāya?
tumaliiṇ lāgī jagatagurū! jaga nāyaka! jagabāya?

jīna raṭa? i.e. dīna raṭana śumbāsuppīcatun

parikaṛānku se śubhiṭāya nam haiṇ.
bā-i miṭe.

nīlī da-i -anākanī, phīkī ḍarī guhārī
manau ḍajyau tāraṇa biṛāva, bārika śāraṇa tāri.

-anākanī guhārī shout for help-
biṛāva ḍaka vakya kahi
śaila-abhiṣeka

śa'alani ani -āśraya 'anajāni beelhipati
bhaṇḍāra

प्रयोजन ॥ सवैया ॥ मैनिरख्योब्रजराजलला दुतिपुंजहियेहितसाजिरहे है ॥ कृष्णकहैदृगदीरघदेखि प्रभात केपंकजलाजिरहैहैं ॥ मंजुलकानन मेंमकराकृतकुंडलयों छविछाजिरहैहैं ॥ मानोमनोजधर्योहियमंदिरद्वार निसानविराजरहैहैं ॥ ५८० मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० सोहतवोढ़ेपीतपटश्यामसलोनेगात । 5/158
मनोनीलमणिशैलपरआतपुपर्योप्रभात ५८१ ॥

यह श्रीकृष्णजूकोध्यान पीतांबर कोशोभा नायकाको बचनसखीसों सखीको बचननायकासों भक्तकोबचन ॥ सवैया ॥ बनिजा छविसोंहरि मनन संग्रहयानमेंअबरोहतहै ॥ सखिसुंदर श्यामकलेवरपै पटपीतलसैमनमोहतहैं ॥ समताकहताछबि कोकहियेसबियोतिहु लोकमें कोहतुहै ॥ मणिनीलकेशैलकेऊपर मानोप्रभातकोआतप सोहतुहै ॥ ५८१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ भक्तकोवचन ॥ उपालंभ ॥

दो० कबकोटिरतदीनरटहोतनश्यामसहाय । 691
तुमहूंलागीजगतगुरुजगनायकजगवाय ॥५८२॥

यहभक्तबचन भगवानसों ॥ सवैया ॥ हौंकबकोटिलागिरह्यो गहि दीनसुभावमनोवचकायक । दीनकेबंधुकहावतहौ हरिकाहेतेंहोतनआनि सहायक ॥ काहेनेढील करोकरुणामय कृष्णकहै प्रभु हैसबलायक ॥ जानिपरी तुमहूंको कछू अबव्यारलगीजगकी जगनायक ॥ ५८२ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० नीकीदई अनाकनीफीकीपरीगुहारि । 687
मनोतज्योतारनबिरदबारकबारनतारि ॥ ५८३ ॥

यहभक्तकोबचन भगवानसों ॥ कबित्त ॥ सेवककी संकटनिवारिबे कोसावधानकृत तिहारोवेद बिरदपुकारिकै । कहैंकविकृष्णत्योंहींदेख परतिखसाखदीननुको दीनेहैंअनेकदुख टारिकै । आनाकानीनीकीकरि मेरीरटफीकी परीलगे नगुहारिरहैनहुरायधारिकै । जानियतुतारिबेको पन अबछाड्योतुम जसजीत्यो येक वेरवाण कोतारिकै ॥ ५८३ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १० लघु १४ ॥

jasa jityo eka bera viranako tari hai

689 दो० बंधुभयेकादीनकेकोतार्योरघुराय।
तूठेतूठेफिरतहौंझूठेबिरदकहाय ॥ ५८४ ॥

यह भक्तकोबचन भगवानसों ॥ सवैया ॥ कौनसेदीनपै कीनीदया अपाराधीकहो जग कौन उधारयो। कौन अनाथकेबंधु भयेप्रभुको तुम दासभये विनतारयो ॥ ऐसेईकैसे प्रतीत करौंकविकृष्ण कहैहौं पुकारि कै हारयो। तूठेईतूठे निसांकफिरौतुम झूठेईधाकुअना कहपारयो ॥५८० ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

690 दो० थोरेईगुनरीझतेबिसराईवहबानि।
तुमहूकान्हमनोभयेआजकाल्हिकेदानि ॥ ५८५ ॥

यहभक्तको बचनभगवानसों ॥ सवैया ॥ ह्वै अतिआरतमें विनतीबहु वारकरी करुणा रसभीनी। कृष्ण कृपानिधि दीनकेबंधुसनी अमनीतुम काहेकीकीनी ॥ रीझतेरंचकही गुनसोंवहबानि बिसारिमनो अबदीनी। जानिपरीतुमहूं प्रभुजू कलिकालिके दानिनकी गतिलीनी ॥ ५८५ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

692 दो० ज्योंह्वैहोत्योंहोयगौहोहरिअपनीचाल।
हठिनकरौअतिकठिनहैमोतारिबोगुपाल ॥ ५८६

यहभक्तको बचन है अपनी पापकरिबेको पनु उपालंबसों करतहै ॥ सवैया ॥ हौंउनकी गिनतीनमें हौंप्रभुजेतुमतारते आपनीगीहौं। कृष्ण कहैगिनतेनबनैकछुपापिनकीपरमाविधहैहौं ॥ हौंनीहैजोकछूह्वै हैवहैगति मेरीयेचाल कुचालनसोहौं। खेलन हैप्रभुमेरोउधारिबो भूलन कीजैबृथा हठयोंहौं ॥ ५८६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

694 दो० मोहितुमेबाढीबेहसकोजतैब्रजराज।
अपनेअपनेबिरदकीदुहूनिबाहनलाज ॥ ५८७ ॥

यहभक्तको बचन भगवानसों ॥ कबित्त ॥ तुमजेते तारे तेतेमोतेन पतितभारे मोसौ पूरौपापीकोऊ दूसरोनपेखिये। तुम्हैवानपरो प्रभु अधम उधारिबेको मेरेयेकपापही टेकअबरेखिये ॥ दुहूनकोंलाज आपआपने बिरदकीहैपूरी पैजपारिकै निवाहनीविशेषिये। कहैंकविकृष्ण मोसोंतुम

bandhu bhaye kā dīnā ke? ko tāryau raghurāya?
ṭuṭhe ṭuṭhe phirata hau jhūṭe birada kahāya.

kākukti L. vakrokti.

thore ī guna rījhate bisarā ī waha bānī
tumahūṃ, kānha, manau bhaye ājakāla kedāni
kedāni kahaiṃ naṭ kā ḍholī L anacrobats drummer.
"jaise naṭ kisī rīt se bājī kare au wuh ḍhol bajā kahe ki yah bhī kalā na
badī taise tum bhī koī kalā nahīṃ māṃte" L.

jyauṃ huvai hauṃ, tyauṃ hauṃhuṃgau hauṃ hari apani cāl
haṭha na karau ati haṭhīna hai motāribau gopāla
jyauṃ hīṃgā tyauṃ ho-iṃgā nisheṣābhās

bahs
mohi tumhaiṃ bāṛhī bahasa, ko jītai jadurāja?
apane apane birada kī duhūṃ ~~nibāha nai~~ lāja
nibāhani

tātparya yaha ki maiṃ batāta hūṃ apnī patalā ī na choṛūṃgā
tum patito tāraṇa hau bin tāre na rahaugo
nindā ī jās

ākhibaṁ

Kauna biāṅti rahi hau bīraca -aba ākhibī murāri,
bīra nāma -āya hau giāhe giāhaki lāri.

? bīraca is masculine why ākhibī. is it a mistrust for ākhibaṁ.

bīra ? gīta ma to be greedy - to be attracted. to become familiar with

Liparaāe ho. paraēnā to become familiar or domesticated

L evidently gives an absolutely wrong explanation by no means to the credit of the religion what it meant is - why should you not save me when you saved a million - and must know the worst!
mujha se ākhe bīra ho, giāhe ko tarke ta gīthe na hu e ho

mohī dīje mokha jyaṁ aneka ādhamani diyaṁ
jau bāṁdhe hī lokha tau bāṁdhaṁ apane gunani.

Hesh guna sabda rawī au aneh - L

?
Nija karani sakucaṁ ho kala sakucāvate ihi cāla ?
Mohī se ati bimukha jaṁ sanamukha rahi gopāla

sakucāvata

Lparaāe ho - to become familiar

सोंवहसबाढ़ी कोनचलिजाय अबजीतैकौनदेखिये ॥ ५८७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कौनभांतिरहिहैबिरवअबदेखिबीमुरारि । 688
बीधेमोसोंआनिकैगीधेगीधहितारि ॥ ५८८ ॥

यहभक्तको बचनभगवानसों ॥ कबित्त ॥ पतितउधारन कहतसब कोऊसोऊसांच झूंठ अबठहराय गौबनायकै । कहैंकबिकृष्ण जिनओरके भरमभूलौहौं गरूपापीमन बचअरुकायकै ॥ तारयोहै पखेरू येकगीधतातें गीधे तुमसोही यसराख्यो हैजगत बगरायकै । कौनभांतिराखिहौ बिहारि अबदेखियेजू कठिन बनीहैअबगीधे मोसोंआयकै ॥ ५८८ ॥ मरकट अक्षर ३६ गुरु १० लघु १४ ॥

सो० मोहूंदीजेमोक्षज्योंअनेकअधमनदयौ । 701-
ज्योंबांधेहीतोपत्योंबांधेअपनेगुनन ॥ ५८९ ॥

यहभक्तको बचनभगवानसों किमुक्तकरो बांध राखोतो अपनो करि राखो ॥ कबित्त ॥ भांतिभांतिआरतिकी आरतनिवारतहौप्रगट पुकारत निगमगणसाखिये । तातेंकबिकृष्ण दीनबंधुदयासिंधुजुसों बारबार बिनती पुकारयहभाखिये ॥ अधमअनेकन को ज्योंहोंदीनो मुखलूमत्योंहीमोहूं मोक्षदेबोचितअभिलाषिये । बांध बोईजोपै मनमान्यो महाराज तो जू आपनेहीगुननबनायबांधिराखिये ॥५८९॥ बारण अक्षर३८ गुरु१०लघु२८ ॥

दो० निजकरनीसकुचेहिकतसकुचावतइहचाल । 698
मोहूंसेनितबिमुखत्योंसनमुखरहिगोपाल॥ ५९० ॥

यहभक्तको बचनअपनी बिमुखता भगवानकीभक्तिनसोंसन्मुख रहिबे कोपनुसु प्रगटकरतहै ॥ सवैया ॥ जानिपरैनतिहारी प्रभूगति बेदहूनीके भेदनपावत । संगफिरेव्रज गबालनिकेमुनि पावैनध्यान समाधिलगावत ॥ येकतोहौ अपनीकरतूतनहीं सकुच्योबहुरयो सकुचावत । हूंतुमसो नितही बिमुखे तुम दीनदयालहौ सन्मुख आवत ॥ ५९० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

660 दो० नाहगरजनाहरगरजबोलसुनायोटेरि ।
फंसीफौजमेंबंदबिचहंसीसबनतनुहेरि ॥ ५९१ ॥

यह द्रौपदी को समय कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ आयुध अघट साजै भटनकी भीर भारीझोरोवीर बिकटलियेईं जातियेरिकै । नाहर कोगरजगरूरमें गरजियततादी समैपाछेतेसुनायो बोलटेरिकै ॥ याकेअतिबिक्रमकोभाव जियजान्योयह जीतेगोसमर एकएककी निबेरिकै । प्रबलचमूकबीचबंदमें फसीहैतऊउमगि उछाहसी सब तन हेरिकै ॥५९१॥ याच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

639 दो० नहिपावसऋतुराजयहतजितरवरमतिभूल ।
अपतभयेबिनपाइहैकोनवदलफलफूल ॥ ५९२ ॥

यह अन्योक्त काहू दाताके धोखें सूमपै कछूकोऊ चाहै तहां कहिये झगरेके प्रसंगमेंगढ़हूके प्रसंगमें ॥ कवित्त ॥ मघवाकेजलसोंउमगिअधिकानीबहु पंछिनकोराख्योते बसायसमुदाईहै । छेाड़िचित भूलिबाभरोसेमतभूलैअब बैसीतोबनिकनीठि नीठिबनिआईहै ॥ पावसनजानिऋतुराजकोसमाजयह योंहीकैसे हरित भरितछबिछाईहै । सुनितरवरजौलौं ह्वै हैनअयततौलौं नवदलफूलफलसंपति नपाईहै ॥ ५९२ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

638 दो० कोछूट्योयहजालपरिकतकुलंगअकुलात ।
ज्योंज्योंसुराझिभज्योचहतत्योंत्योंउरझतजात५९३

यह अन्योक्त संसार जाल अथवा प्रेम जाल के बंधन सों कहिये ॥ कवित्त ॥ तबतोनजान्योलगि लालचभुलानोचित अबपरबसपरकाहेपछितातहै ॥ कहैंकबिकृपणयाके बंधनकोयहैरीतिनेक अटकत अंगअंगबंधिजात है ॥ देख्योतेपखेरूकोऊ छूटनोइहजाल परिकाहै कोतेबाथरे कुलंग अकुलातहै ॥ ज्योंहीज्योंसुरझि भज्यो चाहतसयानकरि त्योंहीत्यों खरोईखरो उरझतजातुहै ॥ ५९३ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

474 दो० यहदेहीमोतीसुगथतूनथगरबिनिसांक ।
जेहिपहिरेजगदृगग्रसतिलसतहसतसीनांक५९४॥

nāha garaja nāhara garaja bacana sunāyau ṭerī
phasī phanja meṃ banda bica hansī sabani mukha heri

nāhar tiger mat garaje nāhar kī garaj se L.
bacana sunāyau (pralhū ne)
prahārshālankāra

nahi pāwasa ritu rāja yaha taja tarawara mati bhūla
-apata bhaye bina pā-i hai kyaṃ nava dala phala phūl

jahāṃ koi rājā kī sewā meṃ ati dukh pāwai tahāṃ
kahiye -

ko chūṭyau -ihiṃ jāla pari mata kuranga -akulaya
jyaṃ jyaṃ surajhi bhajyau cahai tyaṃ tyaṃ lijaṃ
-urujhata jāya -

kuranga hiran ghabrā mat.

-ihiṃ dwai hī moti sugatha tū natha garaba nisāṃka
jihiṃ pahire jagadiga grasati hansati lasati sī nāṃka

sugatha -acche dravyase kai guthne se
jagadiga = syāma
natha sambodhan -

bezarimoti dhani kuhi! ko bujiai kula jāti?
pīwau kari liya ekka dau rasa nicharaka sina rāti

hi-i kumi kuca -ucca basa, ciramī thagyau saba gāmwa -
chuta thaurapahi hai waha ju hai molachabi nāmwa

ghūmgi-i

ciramī

यहअन्योक्त कोऊ थोरेहूसेधनसों अथवा गुनसोंअधिक सोहत होय तहां कहिये ॥ कबित्त ॥ सुरनिसमेत नाकयाहीते कहतमुकतनि युत मुकतिपुरीसी दरसतिहै ॥ कहैकबिकृष्णमनमोहनके मोहिबेकौं मोहनी कौमिचामानोंशोभा सरसतिहै ॥ तोहिपहिरते जगनयनग्रसतअति छवि बरसतमानौ नाशिका हंसतिहै ॥ अहेनाथउरमें निसांक तूगरबकरिह्वेही मुकताकेगथ सहितलसतिहै ॥ ५९४ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु ११ लघु २४

दो० वेसरमोतीधरतितुहिकोपूछैकुलजाति । 575
पीबोकरितियअधरकोरसनिधरकदिनराति ५९५ ॥ 475

यह अन्योक्त कोऊअच्छेकुलते भयो लघु मानसअरु बड़ो ठौर जाय पहुंच्यो तहांकहिये॥सवैया ॥ कौनबिनानकरैकुल जातिकोजीवनआपनोंईजगमेंगनि ॥ हैसबलेबड़भागीतुहीं अरु आईहै तेरीही बातभवीबनि ॥ तैहींलच्योकृत पूरबको फलहैतुही वेसरिके मुकताधनि ॥ द्यौसनिशातियको अधरामृत नीकेनिसांकह्वै पीबोकरै किनि ॥ ५९५ ॥ चल अक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० पाइतरुनिकुचउच्चपदाचिरमिठग्योसबगांउ । 644
छुटेठौररहिहैवहैजुहोमोलछबिनांउ ॥ ५९६ ॥

यहअन्योक्त लघु मानसमें बड़ेठिकाने पहुंच्यौ तहांकहिये ॥ सवैया सुसिममोखरठे लघुनामभई उतपतिन उत्तमथानो ॥ कौनेहू भागलच्यो घुंघची नवनागरिकैकुच उच्चठिकानो । याहीतेमोच्योसबै जगकोमनवोही गुमानखरो अधिकानो ॥ ठौर छुटे रहिजैहै वहीमुखकालिमारंग बजार बिकानो ॥ ५९६ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० मोरचंद्रिकाश्यामसिरचढ़िकतकरातिगुमान । 628
लखवीपायनपरलुटतिसुनियतराधामान ॥ ५९७॥

यह अन्योक्त कोऊलघुमानससों बढ़ीठौरपायगर्व करेताकोमानभंग ह्वैतोजानियेतहांकहिये ॥ सवैया ॥ घनश्यामने आपनेशीशपै राखी बनायकैचायनसोंधरिहै ॥ जिनयाकोतूजीमें गुमानकरै अबतोसब जोम लखीपरिहै ॥ काहिकाहिकौमोरकी चन्द्रिका एंडिढिढाई केढाररहीढरिहैं

॥ ब्रषभानकुमारिके मानसमैंतरवान तरेलुटिबौकरि हैं ॥ ५९० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

631 दो० जिनदिनदेखेवेकुसमगईसुबीतबहारि ।
अबअलिरहीगुलाबमेंअपतकटीलीडारि ॥ ५९८ ॥

यहअन्योक्त कोऊधनवान निर्धनभयोहोहि तहांधनकेलोभी जाकनु कोऊ हैतोभ्रमरके संगकरि गतियौवनहूंको कहिबोसंभवहै ॥ कबित्त ॥ जबहोउदितऋतुराज कोप्रतापतीखोऊ है कबि कृष्णजाको बिक्रम अति अपार । तबइतबाटिकानदेखे हैसुखदमृदुमरस कुसुमभरेअतुल सुगंधभार ॥ उहीआशलाग्योइतआवत चल्योक्यों अलिवहतो बितीतभई और सर वहीबहार ॥ गंधमधु मृदुता पराग कोन लेघ रह्योअंबर अपतगुलाबको कटीलीडार ॥ ५९८ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

370 दो० बहकिबड़ाईआपनीकतराचतमतिभूल ।
बिनमधुमधुकरकोहियेगड़ेनगुड़हरफूल ॥ ५९९ ॥

यहकोऊगुणहीन हैअरुगर्वअधिक करतहैतासोंगुड़हर केफूलकोप्रसंग करिअन्योक्तसंभवहै ॥ कबित्त ॥ कहाभयोजोपै पायोसहज अरुणरंग उमंगललितछबिरही तनछाइ है । बहकिबहकि चितआपनोबड़ाई में तू काहेकोरचतगुरुवाई यौंनपाइ है । जाहि रसलेवेहीकोचसकौ लग्योहैसो क्योंसुमनसुगंधतजि तोपैमड़राइ है ॥ गुड़हरफूलइतरात क्यो तूफूलिफूलि बिनमकरंदअलिभूलिहून भांइ है ॥५९९॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु१३ लघु २२

630 दो० स्वारथसुकृतश्रमवृथादेखिबिहंगबिचारि ।
बाजपरायेपाणिपरतूपंछीहिनमारि ॥ ६०० ॥

यहअन्योक्तकाऊ पराईखुशामद करिअपनेकोबुरोकहै तहांकहिये ॥ ॥ कबित्त ॥ काहेक्योंबिरानेबुरेकरत परायेकाजऐसोखोटो करमबिचारत हैंकाको । येतोभ्रमनाहक शरीरकोतूदेतअरु दोऊलोकआपनेबिगारतहैका हेको ॥ यामेंकछूसुकृत न स्वारथसमुझिदेखि पातकको भारसिरधारतहै काहेको ॥ कहाभयोजोपै आनिबैठयोईपराये पाणिबाजनिज पंछिनतू मारतहैकाहेको ॥ ६०० ॥ चलअक्षर ३० गुरु११ लघु २६

? bīti

jina dina dekhe we kusuma gaī su bīta bahāra
-aba,-ali, rahī gulāba meṃ apata katīlī ḍāra

katīlī kāṇṭon bharī

bahaki barā-ī āpanī kata rācata matī bhūli
bina madhu madhukara'ke hiye gaḍai na gurāhara phūla

L sayo mānavalī nāyakā kī sakhī kā bacan nayakā kī
santi se. but iso why rācata for rācati.

swāratha sukrita na, srama vritthā, dekhi, bihanga, bicāra;
bāja parāye pāni para tū paichī hi na māra

dusht nar ke cākar pa. samyokti L.

swāratt apnā kām sukrita punya. surely na should
come between the two as bekri ōjhak.

bihanga विहंग sky goer

bāja here apparently means bird

दो० जनमजलधिपानिपुबिमलभौजगआधुअपार। 641
रहैगुनीहूवैगरपरयौभलेनमुक्ताहार ॥ ६०१ ॥

यहअन्योक्त कोऊ भयातुरहैभली ठौररहबेलायकअरु छोटीठौर अनादरसोंरहै तहांकहिये ॥ कबित्त ॥ जनम जलधिकुलपानिपुबिमल अतितेरीशुभ्रशोभा जगमतिहिसुहाईहै। सबकोऊ जगतमें चौंपकरिचाहै तोहि तैहो वेश कीकत जवाहिर में पाई है ॥ तेरोसंगपाय क्षितपाल औरबालनिकोकैसीनीकी देखियतरूपको निकाई है ॥ ऐसोतूगुनीहूै गरे परिकै रहतसुनिमुकता केहारयामेकहाधौं भलाईहै ॥ ६०१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० गहैननेकौगुणगरबहंसोसबैसंसार। 642
कुचउचपदलालचिरहैंगरेपरेहूहार ॥ ६०२ ॥

यह अन्योक्त कोऊ आछो गुणीअथवा भलोमानसआपनी गंवजानि छोटीहूजगै अनादर सोंरहैताको कहिबो संभवहै ॥ सवैया ॥ छोड़ी बड़ेकुलकीपदवी गुणकीगरुवाई नजीमेधरै। क्यौंन सबैहंसबोई करौजग पानिपहूनिहूतेनडरै ॥ हाठिनहाठबिकेइहआश बिधायौहियोपनतेनटरै उच्चउरोजनकोसुख लाभर हैहमयातेगरेहूपरै ॥ ६०२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० अतिअगाधअतिऔथरोनदीकूपसरबाय। 603
सोताकोसागरजहांजाकीप्यासबुझाय ॥ ६०३

यहअन्योक्त अपनोकार्य्य छोटेहूंतेहोय तहांकहिये ॥ सवैया ॥ कूपतड़ागसरोवर बापीकितीमहिमेंनहीजात बखानी। छोटीनदीरू बड़ीसरिता नद जो रचना जगदीशनेठानी ॥ उत्तममध्यम कोऊजलाशयहोहुअगाधिक औथरोपानी। वाकोवहीकबिकृष्णसमुद्रहै जाकीतृषा जिहि ठौर सिरानी ॥ ६०३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बिषमब्रषादिककीतृषारहैसबैजलसोधि। 602
मरुधरपायमतीरहूमारूकहतपयोधि ॥ ६०४ ॥

यहअन्योक्तअपनो प्रयोजनकाहूछोटेते सिद्धभयेअरु बड़ेकेबहुतसमृद्धि

है अरु अपनेकाम आवै नाहीं तहांकहिये ॥ कवित्त ॥ बृषकोतनजित-चैबिषमकरनि सबसलिल सुखातकहूं ओडेईरहत है ॥ जीवजंतुथल थल प्रबलअबल सबअकलपकल होतकलनलहत है ॥ आतपकेताये अतिप्यास केसतायेजल सोधतफिरत प्रागराखिबो कहत है । ऐसेसमैंपायो काहूभाग तेंमतीरातामें माहलोगजल निधिन्यायहीकहत है ६०४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

601 दो० प्यासदुपहरीजेठकेजीयमतीरनुसोधि ।
अमितअपारअगाधजलमारौमूड़पयोधि ॥ ६०५ ॥

यहअन्योक्त अपनो कार्य्यसिद्धभये जैसेतैसेसिद्ध भयेपाछेसर्ब संपति मिलैतहांकहिये ॥ कवित्त ॥ कौनकामजगतमें तासकी बड़ाईभाई जातें कछूगरज सरैनकाहूपनमें । छोटेहोतेंआपनो सफलहोय काहुतौपै वाको पटतरऔर कौनत्रिभुवनमें ॥ जाकेप्राण दारुणनिदाघकी तृषामेंबास तीरे पायबिचैसिय राईभईतनमें ॥ ताकेआगेकहो कोऊसागरकी बातऔंडो सलिलअधार कैसेआवैंताकेमनमें ॥ ६०५ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु१६ लघु १६

619 दो० कोकहिसकैबड़ेनसोंलखेबड़ीयेभूल ।
दीनेदई गुलाबकीविनडारनयेफूल ॥ ६०६ ॥

यहअन्योक्त कोऊबीन महाजन अनजाने अबिबेक कोकामकरै तहांकहिये ॥ सवैया ॥ कोयहबात सकैकहिभूलि कैकामकरै करतारनजैसे । येतीकरीतगकी रचनापैबिचार बिनानकरै नहिंतैसे ॥ देखि हूंकोनवशामन सासबड़ेजुकरै कछुकामअनैसे ॥ वैसीसकांष्टक डारगुलाब कीफूलसुगंध दयेमृदुऐसे ६०६ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

635 दो0 दिनदसआदरपायकैकरिलेआपबखान ।
जौलगकागसराधपखतौलगतौसनमान ॥ ६०७ ॥

यह अन्योक्तकोऊ थोडेदिननु को बड़बार गर्बकरै तहां कहिये ॥ सवैया ॥ धूसरकंठकठोरमहा सखरयेकही लोचनरंगुहैकारो ॥ नीच कहावतपांछिनमें अरुभक्षको साजुकुचालनिहारो ॥ आदर पाय दिना दसकोअभिमान निसांकघनोचित धारो ॥ बायसजोलो सराध को पाख

does māraumūṇḍa mean
on the head of a Mārwāri

pyāse ḍupahara jeṭha ke thake sabai jala soḍhi
maru ḍhara pāya matīra hī māru kahata paṛoḍhi_

māru māṛavāṛiyoṇ se kahte haiṇ baṭohī ki yah kahīṇ samu
hai-L.

Three two dohas seem to have been made out of different readings of one.
pathika thake jala soḍ

ko kahi sakai baṛena saṇ bakhai baṛī yaṇ bhūla
dīne da-ī gulāba kaṇ -ini ḍārani we phūla.

dina dasa -ādara pāya kai kura lai āpa bakhāna
jaulagi, kāga, sarāḍha paṭha taulagi to sanamāna

bakhān here = praise

kanāgat the dark half
of the month Kūār during which
religious ceremonies are performed
in honor of deceased ancestors.

kanyā gata (a planet) passed
into the sign Virgo

maratu pyāsa pinjarā paryau su-ā samaiṃ ke phera
-ādara ḍai ḍai bolijaṭa bāyasa bala kī bera.

? kāga vāsa kāgabali kī biriyāṃ
allows kāḍaur oblations make crows in a śrāddh.

-ihiṃ -āsa -aṭakyau rahai -ali gulāba ke mūla
huvai haiṃ phiri vasanta ritu -ini ṭārani ve phūla

-ali bhaunrā bākibli

ḍala ḍālihaiṃ, bhakha kāṃkarai, saphara pare -ī sanga
sukhī [illegible] jyaṭa mei -ekai lu hī bihanga

saphara safar
pareṛā lurki dere

kara ai sīṃghi, ḍarāhi ḍai, sui rahe gahi mauna -
ḍaiki -ai, gulai- -au ga-wa-ī gāhaka kauna

हैतोलगिहै जगआघतिहारो ॥६०७॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दा० मरतप्यासपिंजरापरयौसुवासमयकेफेर। 637
आयसुदैदैबोलियतबायसबलकीबेर ॥ ६०८ ॥

यहअन्योक्त भलेमानस कोदुखदीजैअरुनीच को आदरहोय तहाँ कहिये ॥ सवैया ॥ दोषसमैके प्रभावकोभाव भयोजगकोगुनहीं को रिझोवा। बूझगई गुण वृंदन की प्रगटे अब क्रूर कुरूप अगोवा ॥ प्यासो मरैपिंजरामें परयोसुकहैमृदु बैननिकोज कहोवा। आदरकै बलिदेवै की बेरबुलैयतचाहकेचायनों कोवा ॥६०८॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० यहैआसअटक्योरहैअलिगुलाबकेमूल। 632
ऐहैंफेरबसंतऋतुइनडारनवेफूल ॥ ६०९ ॥

यहअन्योक्त जानैजहांकछू पायोहै तहांवैसाई आसालायोरहै तहां कहियेकाकध्वनितैं यहहोय किवाहीभरोसे क्योंरहै ॥ सवैया ॥ वेइन डारन फूलहुनैजिनकैरसनै सबदुक्खभुलानो। बीतिबहार गई तिनकी कुसमावलि चित्रहुमैनहि आनो ॥ ऐहैबसंतबहार तबैयहवांमुख सौरभ हीकोठिकानो। आसयहैजियमेंधरि भौरगुलाबके मूलरहैमड़रानो॥६०९॥ नरअक्षर ३१ गुरु १४ लघु १८

दो० पटपाखेंभखुकाकरैंसपरसराईसंग। 634
सुखीपरेवापुहिमिमेयेहैतुहीबिहंग ॥ ६१० ॥

यहअन्योक्त जोकोऊपराधीनअरुपरदेशीनाहीतहांकहिये॥ सवैया ॥ भोजनकांकर बीनकरैनकरै जोअधीनहुकाहूकीसेवा। पाखनहीकेबनेपटु चारुबिसारुको जानतभाव न भेवा ॥ नीकेरहैं गृहिनीक सदासंगपूरब पुन्यनको फललेवा। कौनहू भांतिनआसपराई सुखीअबनीपै तुहीहैपरेवा॥ ६१० नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० करिलैसूंघिसराहिहूंसबैरहैगहिमौन। 646
गंधीगंधगुलाबकोगवईगाहककौन ॥ ६११ ॥

यहअन्योक्तकोंगुनकोबूझनकरैतहांकहिये॥कबित्त ॥ राख्योहैबयार

तेंअमोलिकअतर आगेजाकेमृदु गंधमें महकिरह्योभीनहै । ओड़ओड़ हाथमबहीनै लियो देखिबेको मूंधिनूंघिसबनि सराहगह्योमौनिहै ॥ मोलसुनैमबही नै हंसिहंसिमचाईकूक पंथगहि अवतू करतक्योनगौन है अरेगंधीआंधरेहियेमें वेतोचेतकर गाहकगुलाबकोगबेलेगांवकोनहै ॥ ६११ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

646 दो० वेनयहांनागरबढ़ेजिनआदरतोआव ।
फूल्योअनफूल्योभयोगवईगांवगुलाब ॥ ६१२ ॥

यह अन्योक्त अप्रतिनलोगनको समुदाय होय गुणकोबूझ कोऊनकरै तहांकहिये ॥ सवैया ॥ चायनोंआयरु तेरो करोअरु तोहीसौंराखेहियो अनुकूल्यो । तोमृदुसौरभकोसुरलै जिनके मनमोद रहैअतिफूल्यो ॥ कीमत तेरी बढावै धनी रिझावन वही जिनकोतुक भूल्यो । ऐसे गंवारनुके बसि वाममैफूलगुलाबभयौ अनफूल्यो ॥ ६१२ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

629 दो० गोधनतूहरष्योहियेनिधरकलेहुपुजाय ।
समझपरैगीशीपपरपरतपशुनकेपाय ॥ ६१३ ॥

यहअन्योक्तकोऊकाहूकोद्रव्यखातहोयअरुपीछे देवोआवैतहों कहिये ॥सवैया॥ सुनिकोलमुखीकलिगावतगीत जेकोकिलकंठ सुभायनसों ॥ बहुभांतिनके पकवान बनाय मनावैंसबैसत भायनसों ॥ अबगोधन तूमृदु मनिहियेबहु भांतिपुजायले चायनुसों । परिहैसुधि तोहि सबैतबहीपशु खूबहिगेतन पायनसों ॥ ६१३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

331 दो० नागरिबिबिधिविलासतजिबसीगवेलिनमाह ।
मूढ़नमेंगनबीकितूहूठ्यौदैइठलाह ॥ ६१४ ॥

यहअन्योक्तजहां सबएकसेहोहितिन मेंयेकऔरभांति चलैतहांकहिये॥ कवित्त ॥ रूपगुन आगरी बेनागरी होहिइहां आदरुलहत बहुभांजि जिनतीनुमें ॥ चारुचतुराईके बिलासवेदुरावे रहिपरगटकाहे कोकरतइन तीनुमें ॥ अबतोभयोहै वासक्षांगवारनुमें याहीतै सिखावत होकरिबिन तीनमें । हूढयोदैकै इनकोसी भांति इटलाहनातौ मूढ़निमें अबगनियो गोनिनतीनमें ॥ ६१५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४लघु २० ॥

we na-ihāṃ nāgara bare jina ādara to -āba
phūlyau, -anaphūlyau, bhayau gaṃwa-ī gaṃwa gulāba
-āb pānipa -ijjatī (haraprakāśe)

godhana tū harakhyau hiye ghari -ika lehu pujā-e
samujha paraigī sīsa para parala pasunī ke pā-i
godhana gobar sambāhan -

nāgarī bibidhī bilāsa taji basī gawelinī māhi
mūrhaṃ meṃ ganibī kitū hūṇhyau dai -iṭhalāhī
mūrakhen ki tū
kahe tū mūrkh ki maiṃ

cale jahu yhāṇ ko karai hāthina kau byaupāra
nahiṁ jāṇata -chiṁtana basaiṁ dhebī -aṇḍa kumhāra

-ihā yehāṁ aralaṁbī ghaṭahī hai,

-aṇḍa kiśāra L. but below - distance confuse - aura seems better
? -aura pannier mon.
-orā = pannier ?

kari phulela kau -ācamana mīṭhau kahatu sarāhi ——
ćupa rahi re, ganihī mugharā, alara bikhāvata kāhi ?

phulel seuled oil -ācamana S. rinsing the mouth.
he likes it by tasting instead of smelling & pronounces it sweet to taste
ćup rahiu i gamila

pratibimbita jaya sāhi dulī dīpali ṭarapana dhāma
saba jaga jīvana kaṁu kiyau kāya byūha manu kāma

ćaturaṅgiṇī sēnā sajī hai kāma kāmini
byūha racanā hai sainya racanā
vyūha distribution
arrangement
a military host

calata, pāya, nigunī gunī, bīna, mani, motī māla -
bheṭa bhaye jaya sāhi kaṁu līnā kāhiyata bhāla
kahāṇī
jaise sahe bhūpa bhaye ihi bhāṁ kyā ćāhiye

दो० चल्योजाहुह्यांकोकरैहाथनकोव्यापार । 622
नहिजानतइहपुरबसतधोबीऔरकुंभार ॥ ६१५॥

यहअन्योक्तकोऊनीचनकेबासमें कोऊभलाईकीबात कहैतहांकहिये॥ कबित्त ॥ जानिबूझिकाहे कोतूचरचाकरत इत बनकदली कीनबिकट थरीनकी। रचिपाच बंदन सों कहेकोबनाये कुंभकाहेकोये झूल झल कायेहैं जरीनकी ॥ चल्योकिनजायवृथा वासरगवा है जिनगाहकी करै कोमद मोकलकरीनकी। बसतकुंभार ओड़धोबीइहगाइयेतोकरतखरी-दखासा खरबोखरीनकी ॥ ६१५ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० चपकरिरेगंधीचतुरअतरदिखावतकाहि । 647
करिफुलेलकोआचमनमीठोकहतसराहि ॥ ६१६ ॥

यहअन्योक्तमूर्ख जानिवासोंचतुराई जितावेतासोंकहिये॥ कबित्त ॥ नगरके बगरतें तेरीऊचीटेरसुनि चौंपसोबुलाय लीनों कहीआगें आवरे। बैठारयो निकट अतिप्रीतसों हुकमकीनोसौंधे वेसकीमती को हमाहिंदि-खावरे ॥ आचनकरिकै फूलेलकों कहत मीठोतैन अजौंजान्यो सुघराईको प्रभावरे। काहे कौं उघारत गुलावको अतर गंधीकहां गईतेरी चतुराई अबबावरे ॥ ६१६ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

॥ राजाजयसिंहकोबचनबर्णन ॥ 704

दो० प्रतिबिंबतिजयसाहिदुतिदीपतिदरपणधाम ।
सबजगजीतनकोकियोकायव्यूहमनकाम॥६१७॥

यह राजाकी सुंदरतावर्णन कबिकी उक्ति सखीको बचन नायकसों नायकाकोबचन सखीहूसोंहोय ॥सवैया ॥ राजतदरपण मंदिरमें महि मंडनु श्रीजयसिंहसवाई। त्यौंप्रतिबिंबनिकी अवलीचहूंवोरलसें अतिही छबिछाई ॥ कैधौं अनेक सरूपधरे रबिराजतमंडली मंडसुहाई। मानहु जीतवेको जगमें रचना बपुव्यूहकीकाम बनाई॥ ६१७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चलतपायानिगुनीगुनीधनमनमुतियनमाल । 702
भेटभयेजयशाहसोंभागचाहियतुभाल ॥ ६१८ ॥

यह राजाकी दानकविउक्ति॥ कबित्त॥ दीजतमंगायकै तुरंगरंग रंगनकेतुरतभंडार सिरपायनसौंभरिये। किम्मतबिशाल शालसुरवनमाल लालहीरामुकताहनवकसढार ढरिये॥ गुनीअनगुनी सबहीकीचितनिहाल हालयांचिकनकीविपति अनेकभांतिहरिये। भेंटभयेनृपति सवाईजयसाहजूसों हेतबड़भागफलभाग कहाकरिये॥६१८॥पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

703 दो० रहतनरणजयसाहिमुखलखिलाखनुकीफौज।
यांचिनिराखरहूचलैलैलाखनकीमौज॥ ६१९॥

यहराजाकी सुरतादान कविकीउक्ति॥ कबित्त॥ कूरम सवाईजय सिंहकैअभंग जगमगतदिनेश कोसोतेज अंगअंगमें। लाग्योहरहत नित सरमतिजैको चावदानकरिबे कोचितरहत उमंगमें॥ परदल लाखनको नृपकोबदनलखि सनमुख रहिनसकतरणरंगमें। अखरनजानेसोऊलाखन लहतसबयांवैं सौअयाचीहोत मौजकेप्रसंगमें॥ ६१९॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

706 दो० सामासैनसयानसुखसबैसाहिकेसाथ।
बाहुबलीजयशाहजूफतेतिहारेहाथ॥ ६२०॥

यहराजाकी जयसिद्धिवर्णन कविकीउक्ति॥कबित्त॥ जगमग्योदल छत्रपतिकोप्रताप नवखंडमंअखंड दाबेअरिनुकेमाथहै॥ तेरेईउदंडभुज दंडकेभरोसेसोऊ रहतनिशंकअब दातयहगाथहै॥ सुभटसमाजसामासयन सयान सुख संचैसबभांतिनु कोसाहिजूकेसाथहै। रहत सवाईजयसिंह महाराज सदासमर विजयकी सिद्धिरावरेई हाथहै॥ ६२०॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु१३ लघु २२।

659 दो० अनीबड़ीउमड़ीलखेअसिवाहकभटभूप।
मंगलकरिमान्योहियेभौमहिमंगलरूप॥ ६२१॥

यह राजाकी शूरताअरु बीररसकविकीउक्ति॥ कबित्त॥ सांभर केखेतआये उमड़िअमितदल सैंपदसुभट महाविक्रम निधानहै॥ गरजे गरूरगहैं निपट आपविकट कुबड़े सांधि बरखतबान है। साहसीसवाई जयसाहिभूप ऐसे समय बीररसाच्यो थिरभयो तिहिथान है॥ उमगि

phauj

rahatī na rana jaya sāhi mukha lakhi tākhana kī
jāī nirākhara hū ćalain lai lākhana kī mauj

nirākhara unlettered

mauj wave is used in the sense of "heaps" "a quantity".

sāmā saina sayāna kī sabai sāhi ke sāth
bāhubalī jaya sāhi jū! phate tihāre hāth —

phate فتے

-anī barī -umaḍī lakhai, -asi bāhaka bhaṭa bhūpa
mangala kari mānyau hiye, Shau mukha mangala rūpa

-anī senā -asi tarwār maugai kā rang lālhai

-asi bāhaka carrying a sword

bīra rasa vibhāvānā'anubhāva

bībhatsa rasa
rāja jaya sāhi-mahā kavi

yaiṃ dala kāṛhe balakha tiṃ taiṃ jaya sāhi bhuvāla
-udara-agiāsura ke pare jyaṃ hari gāya guvāla

ghara ghara hiṃcuṃ turakāṇī deti -asīsa sarāhi
patiṃu rākhī, cādara curī taiṃ rākhī jaya sāhi

cāda a curī paṛaō fir au suhāga. 1.
-ek samai ballī bahi kā kaṭak nāsvai ke rājā-ajit singh par caṛhi-āyā
-au -idhar se rāja tī kesariṃ bāge rauṃ caṛh kharā hu-ā jab donauṃ dal
se mulkher heneke hu-ī tab rāja jaya sāi ne -ā bicā-o kar diyā
au ladne na diya. tenau kalah jile jāṇe pahuṃce-apne-apne sthān
par, tin hī singh-ā ha-ā.

rahi bandau kara jori ke` sumata sujasa ke baina
bhaya bhanjaṇ gaṇ nāyaka sakal-ali-anakhaiṃ-kaiṃ naina

śrī ha-ana lālā ha bhasang.
bina bala pana se dhipāte hue -ā-ī ṇiṃ tab kahā `kara joṛī

उछाह महामंगलके मान्योहिये बदनकोरंगभयो मगलसमानहै ६२१ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु१३ लघु २२ ॥

दो० योंदलकाढ़ेबलकतैंतैंजयसिंहभुवाल । 663
बदरअघासुरकैपरैज्योंहरिगायगुवाल ॥ ६२२ ॥

यहराजाकी शूरतापराक्रम । कबित्त ॥ येकरसनासोसोपै कैसेकहै परैजैसेजेतेबिक्रम अमितकीने नृपति सवाईतें। केशव अघासुरतें राख्यो ब्रजजैसेऐसेंहसन अलीकीदिली बंगलाईतें ॥ जेजिया निवारयो दावानल सो प्रबल दुखबलके बिपति हिंदुवान कीबहाईतें ॥ कीली ज्योंकुचाली काटिदूरकीनोंमुहकमा कीरति प्रकाश जग आप्यो उजराईतें ॥ ६२२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० घरघरतुरकनहिंदनीदेतअशीषसराहि । 705
पतिनुराखिचादरचुरीकैराखीजैशाहि ॥ ६२३ ॥

यहराजाकेपराक्रम सबपैउपकार कबिकीउक्ति ॥ कबित्त ॥ आयो इतउमड़ि अजीतसिंह ऐडायलसंगलै बिकट सुभटन के समाजको । कहैकबिकृष्ण इतदिल्लीके प्रबलदल निकसेसकलसजैं समरके साजको ॥ ऐसेसमैंबीर विष्णुनेश्रकेअजिनबाहु राखेतेंदुहुनको लाजकरिबेइलाजको । घरघरतुरकनि हिंदुनीदुनीमेंसबदेत हैं अशीषयजशाह महाराज को ॥ ६२३ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

हास्यरसबर्णन ॥

दो० रबिबंदौंकरजोरिकैंसुनेश्यामकेबैन । 650
भयेहंसोहैसबनकेअतिअनखोहैंनैन ॥ ६२४ ॥

यहहास्यरस चीरहरण कोसमयसखीको बचनसखीसों ॥ सवैया ॥ गोपबधूनके चीरचुरायकदंब पैधायचढ्यो हरिज्योंहीं। हाथमें गातछिपाय कैवेसकुचींसतरय कैंमागतत्योंहीं ॥ देवदिवाकर कोकरजोरि प्रणाम करौं कहीबातरसोंहीं। योंसुनिकैबिहसी सोंहींभईसबकी अखियांजहुती अनखोहीं ॥ ६२६ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

652 दो० परतियदोषपरानसुनिमुलकिहंसीसुखदानि ।
कसुकरिराखीमिश्रहूमुहआईमुसकानि ॥ ६२५ ॥

यहहास्यरसपौराणिक कीपरिहासकबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ पंडित राजसमाजमें बैठिकथा योप्रसंगपुराणमें भाषी । जातनिरैपदबीस विसेपर दारसोंजोहितको अभिलाषी ॥ सोसुनिकैमुलकी मृगलोचनि आमोंहींडीठ मिलायकैराषी ॥ भइभुवाहिविनोकतही उमगीमुसुकानि मरुकरिराखी ॥ ६२५ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

653 दो०चितपितमारकयोगगुनिभयोभयैसुतसोग ॥
फिरहुलस्योजियजोतगीसमइयोजारतजागे ॥ ६२६ ॥

यहहास्य रसजोतिजाके परिहास्यकबिउक्ति ॥ सवैया ॥ पूतभयो इकजोतिषि केगृह शोधतसोचितमें हुलसानों ॥ डीठपरयोपितघातक योग बिचारहियेअति होअकुलानों ॥ जारजयोगलख्यो तबही मुलक्यौवरमानि हुलासमयानों ॥ भूलिगयोदुखफूल उठयोमुख आनदपुंजहियेअधिकानों ॥ ६२६ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

654 दो०बहुधनलैअहिसानकैपारोदेतसराहि ।
बैदबधूहंसभेदसोंरहीनाहमुखचाहि ॥ ६२७ ॥

हास्यरसबैद्यकेपति हासुकबिकीउक्ति ॥ सवैया ॥ विज्ञचिकित्साकेभेदन मेंइकबैदहुतौं पुरुषारथहीनों ॥ काहुनपुंसककी बहुकायधनोंधन लैबहुतें यशदीनों ॥ पारोप्रचंडबडावतहै चितकोलि कलोलको चावनवीनों । एक तियासुनिवाकीतिया पतिकेमुख बोरचितैहसिदीनों ॥ ६२७ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

46 दो0 देवरफूलहनैजुसुसुउठेहरषअंगफूलि ।
हंसीकरतऔषधिअलिनुदेहबदोरनभूलि ॥ ६२८॥

यहनायका सुरताद्देवरसों आशक्तिहैसखीको बचनसखीमें हर्ष अरु हास्यसंचारी ॥ सवैया ॥ खेलमैंदेवरके करकेवेजहींजहीं फूललगेनवला तन ॥ आनंदपुंजउमंग तहँतहींफूलउठे अतिकोमलगातन ॥ देहददोरन

paratiya dokha purāna suni haṃsa mulakī mulakhī sukhadāna
kasikarī rākhī misra hū mukha ā-ī musakānī

I translates misra hu by misra ne bhī

ćita pitṛghātaka joga lakhi bhayau bhaye suta soga
phira hulasyau jija joyasī samajhau jāraja joga

joyasī yotashī jār paramour jāraja bastard

(joya = wife) I says joyasī kā arth dekh sī, solhā but he
translates by jotishī and what the meaning of ćekhsī sobhā is
heaven only knows.

bahu dhana lai alisān kai pārau deta sarāhi
baida badhū haṃsi bheda sauṃ rahī nāha mukha cāhi

dewara phūla hane ju sisu uṭhī harakhi aṃga phūla
haṃsī karata ankhadi sakhini deha dadorani bhūla

dadorā swelling caused by the bite of an insect

भूलिअलीउपचार, करैजहैभेदकीबातन। जानतहोंजियकी, बतियंरसविज्ञ तियाहंस हेरतबातन ॥ ६२८ ॥ मरलअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० औरसबैहरषीहसतिगावतभरीउछाह। 76
तूहीबहुबिलषीफिरैक्योंदेवरकेब्याह ॥ ६२९ ॥

यहनायका परकीयागुरुजन कोबचनदेवरसों प्रीतियहव्यंग ॥ सवैया येसबसाजेअनेक सिंगारबनीठनी डोलैंहुलासउमाहैं। गावैं हंसैंहरषैंदरपैं सुखकाहूकोशंक धरेचितनाहैं ॥ भोनमंगलसाजे भरेबहुमोईलहैं सब जोचितचाहैं। देवरकेइहब्याह बहूबिलखीसीतुही लखिये कहिकाहैं ॥ ६२९ ॥ वारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

दो० समैंपलटिपलटैप्रकृतिकोनतजैनिजुचाल। 695
भोअकूरकरनाकरोयहकुपूतकलिकाल ॥ ६३० ॥

यहपरमतावमेंसंभवहैकलि युगकोवर्णन ॥ सवैया ॥ कामोंपुकार करोंविनती इकसारभयो सगरोजगजोऊ। जातिसमैंपलटे प्रकृत्योंफिरक्यों नसुभावतजोसबकोऊ ॥ आरतसिंधुदया कोसमुद्रअनाथको नाथकहावत होऊ। ह्वैगयोदेखोमहानिरदै कलिकालकुपूतहि आवतसोऊ ॥ ६३० ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० दीरघसासनलेहिदुखसुखसाईनहिंभूल ॥ 685
दईदईक्योंकरतहैदईदईसकबूल ॥ ६३१ ॥

यहकरुणारस भक्तकोबचन अपनेमनसों ॥ कवित्त ॥ जोदुखलहै तोभूजिनअकुलाय लैलैदीरघउसासचितचिन्तामेंनडुलरे। सुखजोलहैतोसब भांतिसावधान रहिसंपति मगनह्वैकै हरषिफूलरे ॥ थिरनरहतयेतोसुख दुखहोतजात कृष्णकरुना मयीकी मूरति न भूलरे। काहेको करतअति आतुरहै दईदई जोदईदईसोभली भांतिसोंकबूलरे ॥ ६३१ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० दयोसशीशचढायलैआछीभांतिअबेर। 686
जापैसुखचाहतलह्योताकेदुखाहिनफेर ॥ ६३२ ॥

यहभक्तकोवचन अपनेमनमें ॥ सवैया ॥ राखतुम्हाको बिश्वासहिये अतिजाहिसदा परिपूरणटेरै । रंक रावकरै पलयेकमेंजोवह नैकक्रपाकर फेरै ॥ जोकछुतोहिदयो जगदीशमुधीस चढायकेक्योंनअयेरै । जोपैलये सुखचाहतहै अवताकेदये दुखकोंजिनफेरै ॥ ६३२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

699 दो० कीजेचितसोईतिरौजेहपातितिनकेसाथ ।
मेरेगुणऔगुणसबैगिनोनगोपीनाथ ॥ ६३३ ॥

भक्तकोवचन भगवानसों ॥ कवित्त ॥ तोमोंयेकतुही औरदूसरोन राजाराम तेरेहीरचेहैंलोक सुरनरनागरे । सोईबीतरागजिन कीनेतपजप जाप सोईबड़भागजाको तोसोंअनुरागरे ॥ आपतनुदेखिये न देखौकरतूत मेरीअधमउधारबे कीतेरेसिरपागरे । मोसे अपराधी हैंनतोमेंहैंसहनहार मोमेंनिरगुणहैंन तोमेंगुनआगरे ॥ ६३३ ॥ मरकटअक्षर ३१ गुरु १० लघु १४

671 दो० भजनकह्योतातेभज्योभज्योनयेकोबार ।
दूरभजनतातेंकह्योसोतौंभज्योगंवार ॥ ६३४ ॥

यहभक्तकोवचन अपनेमनमें ॥सवैया ॥ मेरीतोसीखसुनो असुनो करितेमनचैरे मतौउनियेरे । मैंकहोवाहिभलो बिधिमोंभजिनतिहतें भजटूरभयेरे ॥ जातेकहीअतिदूरिभज्योरहिसोतौभज्योहितसाजनयेरे ॥ कृपाकहैंयहस्यानपतैं सबयेकहीबेरकहावितयोरे ॥३४॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

666 सो० मैंसमइयोनिरधारयहजगकाचौकाचसौ ।
येकैंरूपअपारप्रतिबिंबितलखियेजहां ॥ ६३५ ॥

कबित्त ॥ निपटअसारदुख दुंदकोअगार अरुभांतिभांतिभरयो भय भ्रमनिकेभारहै ॥ साँचेकोमोढारयोताते सांचोसोनिहारियतु जोलौंलखि यतसोसोनहिंथिरनारहै ॥ मैतोमनमांझमेंतो समझ्योविचारकरि यहजग काचऐसोकाचौनिरधारहै ॥ जितततितपररह्योपूरन पुरुषवहयेकैरूपतहांप्रति बिंबतअपारहै ॥ ६३५ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

kījai ćita so-ī, taraun jihiṅ patitana ke sātha
mere guna-avaguna ganani ganau na gopīnātha

jis ćit se patitan ke sath taraun uski ćita kijiye.

ganani samūha

"bhajana" kahyau, tā teṅ bhajau, bhajau na -ekai bāra;
"dūra bhajana" jā teṅ kahyau, so taiṅ bhajau, ganwāra!

bhajyau "better"

I makes the 2nd & 3rd bhajau past participles (as if bhajyau) from bhajnā = japnā
but the 1st bhajau from bhāgnā bhajyau is better in all three places -

I told you to sing praises you ran away from that (or from him whose praises were to be sung) you did not sing even once (or you ran away not once only)
what I told you to run away from - that, oh boorish one, you sing the praises of -

maiṅ samajhyau niradhāra yaha jaga kāćau kāća sau
-ekai rūpa -apāra pratibimbita lakhiyata jahāṅ

virāṭswarūpa

virāj (evolution?) splendour
the consciousness which perceives aggregates
? apprehension of the manifold
in intuition.

main tapāya traya tāpa saṃ rākhyau hiya hamāma
mati kabahūṃ -āye -ihāṃ pulaka pasījahiṃ syāma
traya tāp. -āthidaivak -ādhibhautik -ādhyātmik tāp-dukh.
pasījahiṃ pīrasaṃ hauṃ rūpak hridaya -aur hamām ce.
mati -āsaṃkā bāsai

traja bāsina kau -ucita ṇama sodhana rucita na ko-i
rucita na āyo, rucita-i kahauṃ kahāṃ teṃ ho-i

-ucita ihana ere krishn ke ṇama or sodhanarucita icsiros'ruking
? sodhana rucita nahi ucita kasires to seek
or ihana rucita icsiros'wealth
rucita-i ni'seen prema rutu, or' hedefulness

lope kope -indra saṃ rope pralai -abāla
girdhāri rākhe -sabai go aspī rojāta -

lopa mutidhāṃ askrsima hoja rope rel planting raising
rope pūja mitre se L. he translates saṃ
hojā-iṃ ihe L. ? Kus pemibba?

L. alaya kaṇana barakhana daya juri jaladhara -ika sātha
rope sarba ka yau kavatiṃ girdhara giri dhari hātha

दो० मैंतपायत्रैतापसोंराख्योहियोहमाम । 193
मतकबहूंआहैयहांपलकपसीजैश्याम ॥ ६३६ ॥

यह भक्तको बचन॥ कवित्त॥ गावेंगुणशेषजाकोध्यावत महेशमुनि साधतसमाधिबहु भांतिचितलायकै ॥ ऐसोकोऊ विधिमे पै आवतनबनि जातेंबसकरो त्रिभुवनपतिको रिझायकै ॥ येकबात उरधरिअपने हियेमें करिराख्योखेहमामतिहु तापमोतचायकै ॥ वहकरुणामयी कहावतहैदीन बंधुमतिकहूंपुलकि पसीजैइतआयकै ॥ ६३६॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० व्रजबासिनकोउचितधनुजोधनरुचितनकोइ । 677
सुचितनआयोसुचितईकहोकहातैंहोइ ॥ ६३७

यह भक्तको बचन प्रयोजनयहै कि बिना श्रीकृष्णध्यान सुचिताई नाहीं ॥ कबित्त॥ जाकोतनशोभनवनीरद सोदेखियतपीतपट दामिनि दमकिछबिछाई है॥ लोचनललितलसैं रसभरेतामर सकुचित अलकअलि-अवलिसुहाई है ॥ ऐसोव्रजबासिनकों उचितहैधनतामें दीनेतें न गनुमति विषपरचाई है॥ कौनभांतिहोतसुचिताईजियतोलोंजोलों रूपकीनिकाईवह जीयमेंनआई है ॥ ६३० ॥ करभ अक्षर २८ गुरु २० लघु ८ ॥

दो० लोपैंकोपैंइंदुलोंरोपैंप्रलयअकाल । 657
गिरिधारीराखेंसबैगोगोपीगोपाल ॥ ६३८ ॥

यहवीररस श्रीकृष्णने गोवरधनधरिकै व्रजवासीसबराखे॥ कबित्त॥ लोप्योबलिभाग सुनिकोप्योअति सुरपतिप्रभु ताके उमगि गुमानमनुआये हैं। आहिकरि कहोबारिवह सबयेकतहै व्रजको बहावो ऐसो चलनचला येहैं ॥ मंढ़िगोराधार बरषतबिकराल घनमानों महा प्रलयकेसाथ चलि आयेहैं। ऐसेसमयनंदके सुवनकरगिरि धरि गोपीग्वाल गाय वच्छसबही बचायेहैं ॥ ६३८ ॥ चलअक्षर ४१ गुरु ३ लघु ४२ ॥

दो० प्रलयकरनबरसनलगैजुरिजलधरइकसाथ । 662
सुरपतिगरबहरयोहरषिगिरधरिगिरिधरहाथ ६३९

यहवीररस गोवरधनकोसमय॥ कबित्त ॥ प्रलयघुमंडि घनआये व्रजमंडलपैमंडिकै अखंड धारलायोझरअतिको ॥ निरखिबिकलभये गोपी

गायग्वालसबकाहूके हियेमेंरह्योधीरजनरतिको ॥ ताहीसमय यशुदाको लालऐसोहालदेख हरषिहरैयाभये व्रजकी विपतिको ॥ पातलों उठाय राख्योगिरिवरपाणिपर दूरकीनोंसरवगरवमुरपतिको ॥ ६३९ ॥ त्रिकलअक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०

385

दो० कहतनिदेवरकीकुमतिकुलतियकलहडराय ।
पंजरगतिमंजारढिगसुकलौंसूकतजाय ॥ ६४०॥

यह भंवर मुदेवरकी धृष्टता सखीको वचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ देवरचपलचितउरमें कुभावधरिकहत अनैसीबात यासोंदिनरातहै ॥ कहैं कविकृष्णयहपरमसुशीलबाल सकुचिसकुचिमनमेंहीं अकुलातहै ॥ कहिन सकतकाहू आनसोंहियेको भेदकुमतियकुटुंबकेकलहडरातिहै । निकट बिलाव केपखेकपिंजरा को जैसेतैसे यह बालनिशिदिन सूकी जातहै ॥ ६४० ॥ त्रिकलअक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०

664

दो० मोहनमूरतिश्यामकीअतिअद्भुतगतिजोय ।
बसतसुचतअंतरतऊप्रतिबिंबितजगहोय॥ ६४१

यहअद्भुतरस भगवानकी व्यापकताबर्णन भक्तकोवचन ॥ सवैया ॥ ऐसोनऔरातहूं पुरमेंछविजैसीवानंद किशोरमेंपेखी । ताहिविलोकिमनोज कीमूरतिकोबरनै अतिरूपविशेषी ॥ औरकहाकहौं सुंदरश्यामकीअद्भुत रीतिखरीअवरेखी । अंतरराखिबसाय हियेकेऊजगमे प्रतिबिंबितदेखी ॥ ६४१ ॥ बारणअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८

467

दो० तियकतकमनैतीपढीबिनजिहभौंहकमान ।
चलचितबेड़ोचुकतिनाहिबंकबिलोकनिवान६४२॥

यहअद्भुतरससखी और नायककोवचननायकासोंसखीहूसों संभव है ॥ कवित्त ॥ ऐसी तू कहातें अति अद्भुतगति यह तेरीकमनैतो दरनत नवनतिहैं । कहैं कविकृष्ण येतौप्रगट बिलोकियत भृकुटी कमानजिह बिनाईंतनतिहैं ॥ तिनतेंकढै अडोठिकुटिलकटाक्ष शरचूकत नचलचित बेझेकोहनतहै । तेरीया बिलोकनिकी निरखीअनोखीरीति मेरीमतिअति हित कौतिकसनतहै ॥ ६४२ ॥ कच्छअक्षर ४१ गुरु ० लघु ३४ ॥

kahati na
kahata ni dewara kī kumatī kulatiya kalaha ḍarāya
pañjara gatā gati manjāra ḍhiga suka lauṃ sukhati sūkata jāya

kahati nā. | kubata | ḍarāti | gatā | sūkhati jāti | V/

kumati seems better than kubata.

mohana mūrati syāma kī -ati -adbhuta gatī jo-i
basata su cita -antara ta-ū prati bimbita jaga ho-i

jaga meṃ. is reflected in the world
su-ācche man meṃ.

tāt parya yaha ki jo brahmarūpa man meṃ so-ī brahma maya
jagata dikhā-ī detā hai L.

P P? P
tiya, kata kamanaitī parhī? bina jiha bhaunha kamā
cita cala bejhe cukatī nahi banka bilokani bāna

jiha cille — kamanaitī archery from P. kamān
bejhe? — 'calki cita nisāne ko māre bin cukai nahiṃ' if so cala cita bejhe is
bejhā a mark — surely better than cita cala

ordocs citacala = fickleminded
unsteady
or the movable mark of
the mind.

driga-nayhala ṭiḷala kuḷuma jurati ćatura saṃga prīti
parati gāṇṭhi ćarajira liye, da-i, na-i yaha rīti

se-ćaṃgali ćnaḍiamkau ćama dhāma-ćnaṭhāṭha
ṛja ćakha-nayhala goiaḷa sākta saćana-ćigāḍha

te-ćakhi menana jo ćahi se gati kahi na jāti
ṭhoḍhī gāṛa gaṛyau, ṅa-ie -uṛyau rahai dina rāti

ćnećabhāsi'ćnta ćā nāyaka nayaka se ćaitahai.

ṛja-anurāgi ćita kī gati samujhai nahiṃ ko-i
jyaṃ ḍuaṃ-biḍai ṣyāma raṃga lyaṃṭyaṃ-ujala ho-i

ćisaśīla

je [illegible] mujha tarahaṃ paryau -ihiṃ ćaraćari ćita lā-i
[illegible] ṣyāmahi ṭhā [illegible] -a'yaṃ [illegible] hai ke ṣyāma gā-i
[illegible] ṣyāmaṃke
[illegible] ćāra hari parićita
[illegible] ćitraj kaake
[illegible]
[illegible] ćaṃch or nara! hari

दो० दृगउरझतटूटतकुटुंबजुरतचतुरचितप्रीति। 273
परतगांठदुरजनाहियेदईनईयहरीति ॥ ६४३ ॥

यह अद्भुतरसद्रष्टानुराग नायक अथवानायकाको वचनसखीसों ॥ सवैया ॥ लागीरहैमनमें दिखसाधटई यहरीतिनई दुहुघातें। लोचन प्रीतमकी छबिमोंउरझेसब टूटेकुटंबकोनातो ॥ कृष्णकहैंकति चौंपकेचाय जुरे हियको हितुहैतनहांतो। बैरिनके उरमेपरै गांठिअनोखौ निहारयौ सनेहकोनातो ६४३ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो0 तोलखिमोमनजोलहीसोगतिकहीनजाति। 486
ठोडीगाडगड्योतऊउड्योरहेदिनराति ॥ ६४४॥

यह अद्भुतरस है द्रष्टानुरागनायकाकोबचननायकासों ॥ कवित्त ॥ तेरे तनराजै व्रषभानकी कुंवरिजे ऐसे छबिपुंजतिहूं पुरमेनहतहै। तामें और अद्भुतरीतिअबरेखो ताहीसुमरिसुमरि अचरज उमहतहै ॥ येक रसनामोमो पै कहतबनैन क्योंहूं ताहि लखिमेरोमन जोगति लहतहै। यद्यपि अगम ओडीठोडी गाड़गड्यो मन तऊदेखो आठौयाम उड्योई रहतुहै ॥ ६४४ । मरालअक्षर ३४ गुरु १५ लघु २० ॥

दो० याअनुरागीचित्तकीगतिसमझेनाहिंकोय। 665
ज्योंज्योंबूडेश्यामरंगत्योंत्योंउज्जलहोय ॥६४५॥

यहअद्भुतरस भक्तकोबचनसखी सखीहूमोंकहै तामंभवहै ॥ सवैया ॥ नैननमांझरही खुमिकैवहनंदकिशोर कीऊठीसुहाई। प्राननमेंतऊसालत हैकबिकृष्णकहै सुधिआनभुलाई ॥ याअनुरागपगे चितकीकछुअद्भुतरीति कहीनाहिजाई। बूडतीरहैरंगश्याममें ज्योंहींज्योंत्यों त्योंगहैकति उज्जल ताई ॥ ६४५ ॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु २६ ॥

दो० जमकरिमुहतरहरपर्योयहधरिहरिचितलाय। 668
बिषयतृषापरहरिअज्योनरहरिकेगुणगाय॥६४६॥

यहशांतरसभक्तकोबचनमनमें भयसंचारी ॥ कवित्त ॥ दसहूदिशान मांझथापिरह्यो जाकोधाकुकहो बाकोबिक्रमको कहालौंबखानिये। तिनू कालोंरेतीनों लोककेसकलबलि कोऊपैनबचैहुकीयेहू उपायरे ॥

ऐसे कालकरिकै परयोतुमुहतरहरि कृष्णकहैं यहथारे हरिचितलावरे।
हारिम.निशिषय चिखानपरिहरि मननरहरिदेवके समुझिगुणगावरे॥ ६४६
मरालअक्षर३४ गुरु १४ लघु २० ॥

667 दो० कोऊकोरिकसंग्रहैकोऊलाखहजार।
मोसम्पतियदुपतिसदाबिपतिबिडारनहार॥ ६४७

यहशांतरस भक्तकोवचन ॥ सवैया ॥ संग्रहकोऊकरोरिकरोरिभरो कोऊलाखके लक्षभंडारो। कोऊहजारक जोरिधरो बहुभांतिलहैमन मेमृदुभारो॥ कृष्ण कृपानिधि दीनकेबंधु सुरद्रुमदानि प्रताप उज्यारो। संपतिमेरेवहीयदुपति विपतिसदाजु बिदारनवारो॥ ६४७॥ मरकटअक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ।

676 दो० जातजाताचितहोतहैज्योंचितमेंसंतोष।
होतहोतज्योंहोयतोहोयघरीमेंमोष॥ ६४८॥

यहपरमतात्र कविकीउक्ति ॥ कवित्त ॥ सुरतकेअंतसमैं जैसोयाको मनसबठौरते सिमिटिरहेज्ञानही कीटेकमें। ऐसोमनसदा जोपैरहैयेकसर तौपैकाहेकोभ्रमत फिरै चौरासी अनेकमें॥ संपतिकेजातु जात जैसो याको चितढारि आवतहै समझि संतोषके बिवेकमें। कहैंकविकृष्ण ऐसीहोत हैइहोपैहोय अनयाहीनहीं मुक्तिघरीयेकयेकमें॥ ६४८॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

673 दो० यहबिरयोंनहिऔरकोतूकरियावहिसोधि।
पाहननावचढ़ायजिहकीनैपारपयोधि॥ ६४९॥

यहशांतरस भक्तकोवचन मनमें ॥ कवित्त ॥ जहांकामक्रोध मद दारुनतिमंगलहै सूझतनक्योंहूं परपरवेकोदाहरे। सोचभरयोसलिललहर तामे लोककी तृष्णा बिकराल भारीभौंरनको भावरे॥ कृष्णकहैं परयो तूविकटभवसागरमें अवकछू ओर न उपावचितलावरे। मेरोकह्योमानयाहि सुखहीतरीगोपत वारीकरिमाला हरिनावैंकरिनावरे॥ ६४९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

Kavivara's mālā ke Hindi translation of Sloka 6-12.

koū koriko saṅgrahaū ko-ū lākha hajāra
mo sampati jadupatī sadā bipatī bidāraṇahāra

jāta jāta bita hotu hai jyauṁ jiya meṁ santokha
hota hota jo hoya tau hoya gharī meṁ mokha.

santosh contentment bita wealth

yaha kiriyā nahiṁ -aura kī tū kiriyā -uhi sodhi
pāhana nāwa caṛhāya jinī kīnau pāra payodhi

kiriyā samay, kiriyā pār-utārnewāli māṁjhī, sodhi
dhuṁdh, "jisne apne nām se patthar par caṛhāya
kaṭak samudra pār kiyā"

hari, kijalu tuma saun̐ yahai binati bāra hajāra
jihin̐ tihin̐ bhānti ḍaryau rahaun̐ paryau rahaun̐ ḍarabāra
ḍaryau rahaun̐ yaha loka ki kahanāvata pahicān

manamohana saun̐ moha kari, tū ghana syāma sanbhāri,
kunja bihāri saun̐ bihari, giridhāri -ura dhāri,
pītapaṭa kīvaḍībhāsālaṅkāra

jēfa mālā, chāpe, tilaka, sarai na -ekau kāma
mana rāćai nāćai bithā sāun̐cai rāćai rāma

or sarai ra e kau ḍam jo narm ćiar tā kau kām sarai
ćaii
chāpā saun̐ bhe hai mau chāpe . o t mau marks.

-apane -apane mata lage bāda maćāvata sōra
jyaun̐ tyaun̐ sata kaun̐ se-ibe -ekai nanda kisora

दो० हरिकीजततुमसोंयहैबिनतीबारहजार। 697
जिहतिहभांतिडर्योरह्योपर्योरहोदरबार ६५०॥

यहशांतरस भक्तको बचनभगवानसों ॥ सवैया ॥ दीसतऔरनकोऊ दयानिधिनेरई एकभरोसोमगहीं। वेदपुराणनकी सुनिसाखिहिये धरिआप हुलासलहीं। दीनउधारन बारहीबारयहै बिनतीकरजोरकहीं। जैसेहूं तैसेहूं डरयोहूं परयो दरबार मुरारि तिहारे रहीं ॥ ६५० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मनमोहनसोंमोहकरितूघनश्यमनिहारि। 678
नेहाबिहारीसोंबिहरिगिरिधारीउरधारि ॥६५१॥

यहभक्तकोवचनमनसों अरुमानावतीनायकासों सखीकोबचन कहिये तासंभवहै ॥ कवित्त ॥ मेरोकह्योमानि मनमोहनसों मोहकरिसुंदररतन घनश्यामकोसम्हारिलै। ब्रजबनकुंजके बिहारसोंबिहारकरि गिरवरधारी सुखकारीउर धारिलै ॥ भूलिकहूंके चितवृथाबादमें रचावैमतिकहै कबि कृष्णयहसुमतिबिचारिलै ॥ थिरनरहतधनयौवनभवन तनजानिब्रजजीवन सोसाचोपनपारिलै ॥ ६५१ ॥ मंडूकअक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

दो0 जपमालाछापातिलकसरैनयेकोकाम। 669
मनकाचैनाचैवृथासांचेराचैराम ॥ ६५२ ॥

यहखरापरसतावीके ओलेांमनमें कचाईहैतालों ऊपरकोस्वांगकाम नाहीआवत ॥ सवैया ॥ टीकेमनोहर भालबनायकैमालधरी उरसोकिन सोंलौं। छापनसोंतनमंडितकै अरुध्यानलगायकहो किनकोलौं ॥ नाचत नाचबृथाकविकृष्ण कचाईरहीउरमें भरितोलौं। काजकछूयहभेषसहैनहि साचिरचीमतिनाहिन जौलौं ॥ ६५२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो0 अपनेअपनेमतलगेबादमचावतशोर। 683
ज्योंत्योंसबकोसेयबायेकैनन्दकिशोर ॥ ६५३ ॥

यह भक्तकोवचन अरुसर्वकोअधीश्वर येक श्रीकृष्णहै यहसिद्धांत ॥ सवैया ॥ जगमेंअपनेअपने मतलागिकरै बकवादबृथाभरमें। सबकोवह

सेयवेनंदको नंदनु व्यापकहै जुचराचरमें ॥ बरसौनभतेकिन नीरकहूंसब आनिसमातहै सागरमें । कबिकृष्णकहैं नकरोचित खेदधरो मुरलीधरको धरमें ॥ ६५३ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

674 दो० दूरभजतप्रभुपीठदैगुणबिसतारनकाल ।
प्रगटतनिर्गुणनिकटहीचंगरंगभूपाल ॥ ६५४ ॥

यहभक्तकोबचन जबयाकोगुण अभिमानहैतब यातेंप्रभू दूरिहैं अरु निर्गुण तत्वहै तहीं प्रगटहैं यहरीति कलिकालके राजानकी कहियेतो संभवहै ॥ सवैया ॥ कृष्णकहै कबि येकसीरीतिप्रभू अरचंग निवाहत सोऊ । पीठिदै दूरहीदूर भजैं गुनको बिस्तार करैं जबकोऊ ॥ नीकैहो क्योंनलह्यो गुणमुक्तह्वैसोच कैबाद पचैमतिकोऊ ॥ निर्गुणताप्रगटै जबहीं अतिहो निकटैप्रगटैंसबदोऊ ॥ ६५४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

684 दो० तोअनेकऔगुणभरीचाहैयाहिबलाय ।
जोपतिसंपतिहूबिनायदुपतिराखेंजाय ॥ ६५५॥

यहपरसतावीक संपतिबिना पति नाहीरहति यहव्यंग ॥ सवैया ॥ औगुण पुंजभरी अतिचंचल याहिकहो जियको अभिलाषै । नंदकिशोर कृपाकरिकेंवह संपतिहूबिनजो पतिराषै ॥ याबिनकाज कछूनसरैसबकोऊ यहै निहचैमतभाषै । जानियहैचित चाहि तियाहि उपायनु के बहुता कतपाषै ॥ ६५५ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

681 दो० याभवपाराबारकेउलंघिपारकोजाइ ।
तियछबिछायागाहणीगहैबीचहीआइ ॥ ६५६ ॥

यह परसतावीक संसार सागरके पारह्वैबे कोयेक स्त्री अवरोधहै ॥ कबित्त ॥ लोभमोहबासना भयानोभवरजहां असुरमनोज जाकोविक्रम महतहै । ऐसो भवसागर अपारबिकराल महाकहैंकबि कृष्ण कोउलंघ निवहतुहै ॥ साहस हियेमेंधरि यतनअनेककरिसबकोऊयाहि तरिपारभौ वहतु है ॥ तरुणीकी छबि छायाग्राहणी विकटगहि राखत प्रबलतातें बीचही रहतुहै ॥ ६५६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

654
443
211

dūri bhajata prabhū pīṭhi dai guna bistārana kāla
pragaṭata nirguna nikaṭa hī ćanga ranga bhūpāla

tau -aneka avaguna bharī ćāhai yāhi balāya
jau pati sampati hū binā jadupatī rākhai jāya

apparently this means

I don't care in the least for wealth (mero balā cāhe), which is full of defects anyhow, so long as Krikrishn preserves my husband even without wealth.

yā bhava pāvāvāra kaun -ulaghi pāra ko jāya
tuya ćhabi ćhāyāgrāhanī gahai bīća hi -āya

ćhāyāgrāhanī ek rākshasī hai jisne Hanumānjī ko pakṛā thā

pāvāvāra = samudra

jagata janāyau jihiṃ sakala so hari jānyau nāhiṃ
jyauṃ -āṃkhani sabā dekhiye -āṃkha na dekhī jāhiṃ

āṃkhani -āṃkhon se āṃkha āṃkhen
bṛishṭāntālaṅkāra
jānta"na"

lau lagi nyā mana sōcana meṃ hari āvahiṃ kihiṃ bāṭa
nipaṭa bikaṭa jaba lagi juṭai khuṭahi na kapaṭa kapāṭa
juṭe

karau kubala jaga kuṭilatā tajauṃ na dīna dayāla
dukhī hohuge sarala hiya basata tribhangī lāla

kuṭjā kā bacan bhagavān se
Dukhī se kahokhi ... ala jiā
tin jaun mon jaise bain ārahin pāyau tumhare gali se ais se
tribhangī lahā

kaha deun ankuyau sasura jahā thurahathī jāni;
nūpa ratiāsa lagi, lagyau māngana saba jaga -āni
māngo bhāi

दो० जगतजनायौजिहिंसकलसोहरिजान्योनाहिं । 670
ज्योंआंखिनसबदेखियेआंखिनदेखीजाहिं ॥६५७॥ 726.

यहशांतरसभक्त कोबचन ॥ कवित्त ॥ ताहितजिक्यों भूल्योभटक बहैरेमनजाते लहियतसब सुखनको गोतहै । मानि अनरुच हरिभजन पियूषछाड़नो जानिबूझिविषम विषहिडरभातुहै ॥ जिनसबजगत जनायो भलीभांतिबह प्रभूपैनजान्योऐसो मोहकोउदोतहै । देखोजिनआंखिनही सबदरसायौतिन आंखिनकोकाहूभांति देखिबोनहोतहै ॥ ६५७ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तोलगयामनसदनमेंहरिआवेंकिहवाट । 679
बिकटजटेजोलगनिपटखुलेनकपटकपाट ॥ ६५८॥

शांतरस भक्तको बचननिबेद स्याईभाव ॥ कवित्त ॥ सरलसुभाव गहिसंतनकेसंग रहिसंयहधरम लागिभगतकेघाटरे । छोड़वोटपाइगुणगाय करुणामयके यहसमझायवेसों कहैतूनिराटरे ॥ कहैंकविकृष्णतूहीदेखि धौंबिचारमन मंदिरमेंहरितो लोंआवैंकिहवाटरे । जड़ेहैंबिकट वृथाबाद कोजंजीरनसोंजो लोंयेखुलतनाहि कपटकपाटरे ॥ ६५८ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० करौकुबतजगकुटिलतातजौनदीनदयाल । 693
दुखीहोहुगेसरलहियबसतत्रिभंगीलाल ॥ ६५९ ॥

यहभक्तकोबचन भगवानसों ॥ सवैया ॥ चाहतहौंअपने हियमांझ बसायौतुम्हैंप्रभु जैसेहूतैसैं ॥ कौनकुबात करो सिगरोजग मोचित येकहू आवेनवैसैं ॥ हौंकुटिलाई तजौ न कृपानिधिजानत हौंअपनोजियऐसे ॥ दीनदयाल कहावतहो उरमूधोभये बसिहो तुमकैसैं ॥ ६५९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।

दो0 कनदेवोसौप्योसुरबहूथुरहथीजानि । 651
रूपरहचैंढलगलग्योमानतुसबजगआनि ॥ ६६० ॥

यहपरसतावीक सूमनैकोनीतो सरफाखेंखचर अधिकभयो कबिको उक्ति ॥ कवित्त ॥ सुंदरसुहाईसुकमार शशिबदनीकी शोभाकी निकाई

कविकहैकोबखानिकै ॥ ननदजिठानी सासनिरख सिहात सभयअतिहो सराहतहैं याकेबैसवानिकै ॥ ससुरनेसरफाविचार सुखमानिहिय कनदेबों सौंयोवहूयुरहथीजानिकै ॥ कहै कविकृष्णवाको रूप अवलोकबेको लोभ लगिमागनजगत लाग्योआनिकै ॥ ६६० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

447 दो० सबैसुहायेईलगतबैससुहायेठाम ।
गोरेमुखबेंदोलसैअरुणपीतसितश्याम ॥ ६६१ ॥

यहअन्योक्तआछो ठौरकोप्रभावजो आइ प्राप्तहोय सोआछोहो लगै ॥ ॥ सवैया ॥ नीकेकेसंगअनीकोउ नीकोलगै यहबात प्रतच्छनिहारो ॥ ठौरसुहायलमैतेंसुहायलगैं सबहीउमगैछबिभारो ॥ कैसे बढ़ावतमोदहिये नवनागरकेमुख व्याहमें गारी ॥ गोरे लिलार लसै बिंदुलीसितरातो हरी पियरी अरुकारी ॥ ६६१ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

718 दो० पाइलपायलगीरहैलगीअमोलिकलाल ।
भोरुरहूकभासिहैबेंदीभामिनिभाल ॥ ६६२ ॥

यहअन्योक्तनीचहै धनपैवहनीचीही ठौरहैगोअरु भलोमानसहैअरु निरधनहैतऊऊंचा ईरहैगो ॥ सवैया ॥ जोजिहठौरकेलायकहैतिहके वसुवानुतिहीयलहुहै ॥ देखो नहारिसिंगारकेभेदमें देखियेबातप्रत्यक्षयहै ॥ यद्यपिलालअमोललग्योतऊपायलपायनहींलगरहै ॥ हैवहभौंडरकीबिंदुली तऊ भामिनीभालहीपैछबिपैहै ॥ ६६२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

365 दो0 जोचाहैचटकनघटैमलोहोयनमित्त ।
रजराजसुनिछुवाइतोनेहचीकनोचित्त ॥ ६६३ ॥

यहप्रसतावोकिमित्रतामें रजोगुणनलाजैतो सुधहैमित्रको बचन ॥ कबित्त ॥ जगतमेंसबहीतें महगीहै प्रीतिएक मांचबिन कोऊताकोलेशहू नदरसै ॥ यहीहै यतन कविकृष्णयाके पालिबेको मानोंमति दीपजो तू आंखिनछूटरसै ॥ जोपैनेहचीकने हियेकोयेकरसाख्यो चाहतचटुकउजराई अतिसरसै ॥ तोपैकाहूभातियाहिमें लोमतिकरे मतऐसेराखिजैसे रजराज मुनिपरसै ॥ ६६३ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २६ ॥

sabai suhāye hī lagaiṁ base suhāye ṭhāma
gore muṁha baiṇḍī lasai -aruṇa pīta sita syāma

lāl rolī kī pīlī kesara kī dhaulī ćandan kī kālī kastūrī kī

pāyala pāya lagī rahai lage amolaka lāla
bhoḍara hū kī bhāsi hai baiṇḍī bhāminī bhāla

-anyokti
-anyākāta -aru prati kahai -aru kī bāta bikhyā
pāyala baiṇḍī prati kahī -ūṁća nīća kī bāt

jo ćāhai, ćaṭaka na ghaṭai, mailau hoya na mitta,
raja rājasa na ćhuwā-iye neha ćīkane ćitta—

-ajauṃ taryaunā hī rahyau śruti sevata -eka -anga
nāka bāsa besarī lahyau basi muktanī ke sanga

taryau nāhī, śruti veda naka baikunṭhe besarī
nahiṃ barabarī nāka je vāsa rahyau.
eka -anga -ekhaṇā muktanī vāsu (a pearl)
not worth purchasing anywhere

-anujāre dīrgha dṛigaṇī kiti na tarunī samāna
tvaha citavani -anvai kāruṇī jihiṃ basa hota sujāna

upatirek - Characteristic

je śiva ihare mālinīā mahī lahiyata rājā rā-u,
pragaṭata jaṭalā -āpanī muṇḍa supahirata pā-u

mahī jaṭā mer
ś. sā mūrakhatā

ćita ćai ehai ćahra jyauṃ tijai bhajai na bhūkha
ćinagī ćugai -ajaṇahī tijai hi ćanda mayūkha

tijai

दो० अजौंतरौंनाहींरहतश्रुतिसेवतइकरंग। 640
नाकबासबेसरलह्योबसिमुक्तनकेसंग ॥ ६६४ ॥

यहपरसतावोकि भक्त कोबचनप्रयोजन यहकिइकरंग श्रुतिसेवतरच्यो न तरयोनाहीं अरुबेसरजोकाहू केसमनाहीं तिननाकबास पायोकाहू ध्यानिक कहैतैं बंदको दोषदूरहोय श्रुतिकानहू काहियेतो संभवहै ॥ कबित्त ॥ संगलाग्योयेकरंग श्रुतहूको सेवतभरोसो धरिभारीजियऐसो नेमनच्योहै ॥ कहैंकबिकृष्णतासों सबकोऊ करोहित है अजहूलोतरयो नाहितरयोरच्योहै ॥ प्रेमकेप्रभावकी यहालेा अधिकाईजाके चितआई तिनहींपरम पदु गच्योहैं ॥ बिमलमुदार मुकतानिसंगबसि लालनाकको निवासु देखोबेसरिहू गच्योहै ॥ ६६४ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० अनियारेदीरघदृगनकितोनितरुणिसमान। 371
वहचितवनऔरैकछूजिहबसहोतसुजान ॥ ६६५ ॥

यहपरसतावोकिअन्योक्ति हूबनैकोबिकोउक्ति सखीको बचन नायकासों ॥ कबित्त ॥ कीजियेजुहेततो निबाहियेजु हितकीसीहितमें कहा है बड़ो हेतहैहितबेमैं ॥ जानिये सिंगारतोसिंगारियेसबै सम्हारिजोसिर कियेबिनु भेदतोनकैबेमैं। बोलियेजूबैन मनलैनका समातिहूजेबोलि रिसकीजैतोंन बोलियेबुलैबेमैं ॥ दीरघभोज येनैनातैरभएकहाभये प्रीतमकेमोहिबेकी चातुरी चितैबेमैं ॥ ६६५ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो0 जेसिरधरमहिमामहीलहियतराजाराय। 614
प्रगटतजड़ताआपनियसुमुकटपहिरतपाय ६६६ ॥

यहअन्योक्ति जोआछोमानसहै भलेआदरलायक ताहिताहिनिरादर सेांराखतईंकहिये ॥ सवैया ॥ जोबहुभांति जवाहिरलैबहुभांति रचयो अतिहीछबिछाई। जाकीजगामग दीतप्रभामति जाहिलखैसबकी लल-चाई ॥ जाहिधरैसिर भूषनकीमहिमंडल मेंप्रभुतासरसाई। तासुकटैपगमें पहिरैप्रगटैतब वाहिकीमूरखताई ॥ ६६६ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चितदैदेखिचकोरत्योंतोजैभजैनभूष। 621
चिनगीचुगैअंगारकीचुगैकिचंदमयूष ६६७ ॥

यहअन्योक्त जाकेएकआश्रयहोयकैवाकी मिलेकेवहीकोअंगीकार करै तहां कहिये ॥ सवैया ॥ जाकोजहांमनलागतताहि सबैतजिबाहीको देखबोभावै ॥ कृष्णकहै बिनु देखेसहै सुबियोग व्यथातऊमोद बढ़ावै ॥ देचितदेखिचकोरकी औरन तोजै उपाय क्षुधा बहरावै। कैतुगैपावकके कनका कै निशाकर की किरन्यो जबपावै ॥ ६६७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

78 दो० तूमतमानैमुकतईदियैकपटबितकोटि।
ज्योंगुनहीत्योंराखियेआंखिनमांहिअगोटि ६६८॥

यहपरसतावीक राजनीतिमें संभवहैअरुनायकाभेदमें सखीकोबचन नायकसोंकहिये तुयाहिछाड़िदै मत आंखिनमेंराखि ॥ कबित्त ॥ मुकतईनमानिये निदेईजो कपटबितु कबिकरैतऊछोछिबोन अभिलाषयै। कीजियेहमारोकह्यो दीजियेनजानकहूं बारबारबातसमझाय यहभाषिये कहैकविकृष्णयही कहतसयानेसब देखोराजनीतिहूंके ग्रंथनमेंसाखियै ॥ जानियैजोगुण हीतोआनियेन औरउर नीकेहो अंकोटकरि आंखिनमें राखियै ॥ ६६८ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

346 दो0 दुचितैौचितहलतनचलतहसतनझुकतविचार।
लखतचित्रपीऊचितैरहीचित्रलौंनारि ॥ ६६९ ॥

यहनायककोा चित्रदेखिचकित ह्वैरहीसोसखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ ठाढ़ीठगीसीहलैनचलै जियसोचगहैबहु भांतिविचारति। मेरो इहैकिधौंआनबधूको यहैनिरधारहिये निरधारति। योंचितमें दुचिताई गनैनहसैनझुकैसुनिमेष नटारति ॥ चित्रबिलोकतियों अबलोकि रहीतिय चित्रलखीसीनिहारति ॥ ६६९ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

320 दो0 देहलग्योढिगगेहपतितऊसनेहनिवाहि।
नीचीअखियनहींइतैगईकनखियनुचाहि ६७० ॥

यहनायकापरकोया को चेष्टानायक सखीसोंकहतुहै ॥ सवैया ॥ मोपैकछूकहतेन बनैचितचातुरी जैसीबिहारगईहै। मैंजबतें निरखी तबतें उरमेंनकशायक मारगईहै ॥ पासजऊपतिदेह लग्योतऊरीत सनेहकी

dujā-arth

kai ćinaji kai ćanda ćhabi piya ćakora jyauṃ ćāhi
kai tuva biraha sahārai kai tuva sonja hi -āhi-

tū mata māne mukata-ī kiye kapaṭa bata koṭi
jau gunahī tau rākhiyai -āṃkhani māhi -agoṭi
-agoṭi najarband- gunahi gunahgār

dućitai ćita halati na ćalati, hansati na jhukati bićāri.
likhāta ćitra piya lakhi ćitai rahī ćitra lauṃ nāri

sanśayālankār

jhukati kroḍh karti
nakāra doṇoṃ ṭhaur dekhī dīpak jāniyauṃ

dućite man tau -is liye hai ki merī mūrti likhai hai ki-aur/
halte calti nahm ki -āhaṭ pāwega ta na likhegā

deha lagyau ḍhiga gohapati ta-ū neha nirawāhi
ḍhīlī -ankhiyani hā-itai ga-ī kanakhiyani ćāhi

kaise chele naraṇi ke̱ṇ sarala baraṇi ke kāma ?

Marhyau damāma jāla ~~nahiṃ~~ kyaṇ̱ ṇai ćāhe ke ćāma

ḍamāmā -ṇuṃ ṭāṭī ṇa ṭā ṇaṇā - ḍrishtant

ḍarnā to move i.g. ćalnā -
ḍamāmā a large kettle drum that's

ṇampati ṇi ṇa sa nara navaṇi ṇaṇi -iṇa ṇāṇi

ṇa sala ṇa ṇā ṇa ṇaṇa naraṇa bibhau kāṇ hāṇi

naraṇa ṇaṇa ṇa ṇa ṇaṇi.

ṇampati = apparently mean the same thing viz prosperity

fortune (can good man) softening (with one fashion mode
prosperity hard breaks (our man) off prosperity's decline
instance of the unpredictability of human (or e.g. seeing thought clearly

bibhau or bibhūti = influence wealth prosperity navani apparently for navanī butter
naṇā = to be soft or tractable to bend.
sahaj generally means crochet -

ṭilalalā ṇu suganiṭa ṭī ghaṭai na mahimā mūra

ṭīnaṇuṇāre je lajjau sorā jāṇi haṭūra -

ṭīnas ćalanh

mūra = mūḷ kuch bhī
mūl = used adventially = really -

ṭaṭ na ṭīṇī gaṇaṇī ṇa ṇa ṭīṇaṇ ṇuṇā-ī pā-i

ṇa ṭa ṭīṇaṇ ṇa ṇa ṭa ṇaṇaṇaṇ garhyau naja-i

ṇaṭīṇa ṇa ṇaṇ

धारगईहै ॥ नीचीयेआंखिन सोंयहचोरकनोखी चितोननिहारगईहै ॥ ६७० ॥ करमअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

599

दो० कैसेछोटेनरनतेंसरतबडनकोकाम ।
मढ्योदमामोंजातक्योंकहिंचूहाकेचाम ॥ ६७१ ॥

यहपरसतावीक छोटेतेंबड़ेकी गरजनसरैकबिकोउक्ति ॥ सवैया ॥ जाकोजितेाजगदीश्वरचो बलताकेफबैसिरते तोईभारो । बातबिचारयहै अपनेजियकोऊ बृथामतसोचबिचारो ॥ छोटेवै कामबड़ेन सरैंवहके तोउ साहसकै पचिहारो । कोटिकरोपै चूहाकेचामसों क्योंहू मढ़योनाहिं दात नगारो ॥ ६७१ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२

598

दो० संपतकेशसुदेशनरनवतदुहुनइकवान ।
बिभवसतरकुचनीचनरनरमबिभौकीहान ॥ ६७२

यहपरसतावीक कबिको उक्ति ॥ कबित्त ॥ केशओ सुदेश नररहैं सदायेकरसकै कबिकृष्णगै येकसीयेवानहैं ॥ ज्योंज्योंबाढ़बार लहैंत्योंत्योंनवतदोऊसकलप्रबीण यहबातउरआनिहैं ॥ औरदेखोकठिनउरोज अरुनीचनर अकररहतकरैं काहूकीनकानहै ॥ संपत लहतत्योंत्योंरहत तनेनफेरआपुहीं नरमहोतभयेबिभौहानिहै ॥ ६७३ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु २६ ॥

620

दो० शीतलतारसबासकीघटेनमहिमामूर ।
पीनसबारेज्योंतज्योसोराजानिकपूर ॥ ६७३ ॥

यहअन्योक्त कोऊ आछोगुणीहै भलोमानसहै कोऊ क्रूरने वाकोसत-कार नकियो तहांकहिये ॥ सवैया ॥ जोसबभाँतितचयोगरवो बिध ताकोबढ़ेजगते सोईतोरा। कृष्णकहैबिन जानेअजाने कोपैवहआंघलहै नहिं थोरा ॥ पीनसरोगतेकाहूकपूतने छोड़याकपूरजोजानिकैसोरा। शीतलताई सुगंधघटैयहकोऊकरैंजियमेंजिनभोरा ॥ ६७३ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११लघु १६

649

दो० बड़ेनहूतेगुणनबिनबिरदबड़ाईपाय ।
कनकधतूरेसोंकहैगहनोगढ्योनजाय ॥ ६७४ ॥

यहपरसतावीक कविकोउक्ति ॥ कवित्त ॥ बड़ोजो बनायो जगदीश सोबडोईहै ताहिसबजगचाहै आदरबढ़ायकै। कहैकबिकृष्ण बहतैसोई लहतमोल कंचनकोदेखो क्योंनकईबेर तायकै ॥ छोटेजोपै बड़ेगुणबिन योंहीबड़ोहोत नावकोबड़ाईमहिमंडलमेंपाइकै। तोपै बहुकनकधतूरोऊ कहावत है क्योंनपहरतकोऊगहनो गढ़ायकै ६७४ ॥ मरकटअक्षर३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

626 दो० वहैसदापशुनरनकोप्रेमपयोधपगार।
गिरतेंऊंचेरसिकमनबूड़ेजहांहजार ॥ ६७५ ॥

यहपरसतावीक प्रेमसमुद्रको अधिकाई कविकोउक्ति ॥ सवैया ॥ जाकोप्रमाणकछूनेपरै कछुआजलों काहूनपारलहा है। कृष्णकहैसअगाध यहैलगिकैसहू कोऊनपावतथाहै ॥ मेरुतऊंचेरसज्जन के मनबूड़ेअनेक अचंभोमहा है ॥ सोपशुपामर लोगनकोवहप्रेमसमुद्र पगारसदा है ६७५ ॥ मदकलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

627 दो० संगतदोषलगैसबनुकहियतसांचेबैन।
कुटिलबंकभ्रुवसंगभयेकुटिलबंकगतिनैन ॥ ६७६

यहपरसतावीक संगतदोषलगेहदृष्टांत कविकोउक्ति ॥ सवैया ॥ औरत जैसेईसंगरहैजुगहैसुभलो बिधिबानि वहीहै ॥ संगतदोषलगै सबकोबिंध हैयहआदिअनादिसहीहै ॥ कृष्णकहैजगमें यहबातप्रत्यक्ष प्रबीणनअच्छ चहीहै ॥ बंकभृकुटीनकोपाय कैसंगमनैननहू गतिबंक गहीहै ॥ ६७६ ॥ मरकट अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

611 दो० संगतसुमतनपावईपरेकुमतिकेधंध।
राखोमेलकपूरमेंहींगनहोयसुगंध ॥ ६७७ ॥

यहपरसतावीक जेदुरबुद्धिकोढारमपरयो ताकोसंगतसबधनाहोंहोत ताकोदृष्टांत कविकोउक्ति ॥ सवैया ॥ औरहोतज कपड़ेचल्योवहसग तक्योंहूं सुबुद्धिनपावै ॥ संगबुरेके भलोऊरहतो भलाइसबैततकालकहावै आपनोवानतजैई तजैवहसंगतें क्योंहूंगहैनसमावै। राख्यो बसाय कपूरके मध्यमहींगहींक्योंहूं सुगन्धनआवै ॥ ६७७ ॥ शार्दूलअक्षर४२ गुरु ६ लघु३६ ॥

giri teṉ ūṉce rasika mana būḍe jahāṉ hajāra
wahai sadā pasu naraṉi kauṉ prema payodhi pagāra

~~par~~ wahai prema payodhi jahāṉ hazār rasika mana jo giri se ūṉce hain būḍte hain, pasunaraṉi ke waste pagāra hai.

pagār mud.

rasika full of feeling or passion.

Than mountain high impassioned soul sinks where thousand that always brute to men love ocean ditch.

saṉgati dokha lagai sabaṉi kahe ju sāṉce baina
kutila banka bhrū saṉga bhe kutila bankagati naina

bhaye bille
bhaṉhe

bhrū eyebrow.
bhṛikuṭī

-ullāsalaṉkāra

dukhadāi so kutilahai dīṉe bakra
se banka

saṉgati sumati na pāwahī pare kumati ke dhaṉdha
rākhau mela kapūra meṉ hiṉga na ho-i sugandha

-atadguṇālaṉkār

baṭhala baṭhala sampati salila mana saroja baṭhi jā-i
ghaṭala ghaṭala su na kuni ghaṭai, baru samula kumhilā-i

Tulsi

Samaiṃ samaiṃ sumera sabai, rūpa kurūpa na ko-i
mana kī ruci jeti jitai titai titi ruci ho-i

lila tī samsletter
pariarel ije i ...
chalala'r eji kiye Hala thahara-i
affermation le negation

māṇa ke jāye, ka ū rahai pare pīṭha, kaca bhāra
rahuan gare ke, tokuṇe ka-ū kiye para hāra

... ṭhi ...laja ku ki -us ce hel nahiṃ
... ...ṇa ...p ...ṭi ...ṇa ku prēlam ho
... ... pitka ... ... angeli

bhāṇuvā -i ...āṇuvā bhare ... ...rau heri kakabāda
-ojami ... ...ṭai na sahaja sawāda

... ... bhāṃti
... ... sawāda

624

दो० बढ़तचढ़तसंपतसलिलमनसरोजबढ़जाय।
घटतघटतसुनिकरघटैबरसमूलकुंभिलाय॥६७८॥

कबिको उक्ति ॥ सवैया ॥ सदनसरोवरमें सुखकोहिलोरन सोंसंपत सलिलज्योंही ज्योंहीसरसातहै ॥ यहतोप्रगट सबजगत बखानतहै मनहूं सरोजत्योंहीत्योंही अधकातहै ॥ जबआनिपरैकोऊ आपदाअदिनतबजल कोप्रमाणफिरनिघटतजातहै ॥ घटतघटतफिरनाहिंघटै गति यहबरु बह सहितसमूलकुंभिलातहै ॥ ६७८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

625

दो० समैंसमैंसुंदरसबैरूपकुरूपनकोय।
मनकीरुचिजेतीजितैतिततेतीरुचिहोय ॥६७९॥

यह परसतावीक कबिकीउक्ति नायकाभेदमें सखीकोबचन सखीसों॥ सवैया ॥ सुंदररूपकहौं किहकामहैजो अपने चितमेंनाहिंआवै ॥ जोचित मांझकुरूपअभ्योतो वहउरकोअतिमोद बढ़ावै ॥ होतसमैंई समैंसब सुंदरि रूपकुरूपनकोई लखावै ॥ जाकीजितीजिहिंठौरबढ़ै रुचिसोतिह ठौरतितो रुचिपावै ॥ ६७९ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

643

दो० मूड़चढ़ायैहूंरहैपरयोपीठकचभार।
रहैगरेपरराखिबोतऊहियेपरहार ॥ ६८० ॥

यह परसतावीक कबिकीउक्ति ॥ सवैया ॥ काहूकेमूड़चढ़ोरहियेन यहैगहिये चितमेंचतुराई ॥ नीकोमतो रहियेजुगरेहूपै तोलहियेअरुकी गरवाई ॥ मूड़चढ़ेहूपरेरहैपाछेकोबंधनकीगति कैअनपाई ॥ देखोरच्योजो गरेहूपरै औबहारकरै छतियांपहराई ॥ ६८० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

617

दो० भावआनभावरभैरैकरोकोटिबकबाद।
अपनीअपनीटेवकोछुटैनसहजसुबाद ॥ ६८१ ॥

॥ यहपरसतावीक कबिकी उक्ति ॥ सवैया॥ काहूबुरोलगोकाहूभलो लगोखोटोखरोजियमेंधरोसोऊ॥ लाखनक्योंनकरो बकबादअलौकिकलोक जोहोयसोहोऊ ॥ औरतेंजाको परयोउस्वभाव सुभावयहै निबहैजगजोऊ ॥

आपनीआपनी टेवकी सिद्ध सवादछुटैन कितौकरोकोऊ ॥ ६८१ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

593 दो० जेतीसंपतिकृपणकेतेतीसूमतिजोर।
बढ़तजातज्योंज्योंउरजत्योंत्योंहोतकठोर ६८२ ॥

यह परसतावीक कृपणकेजितनीसंपति तितनीये कृपणताताको दृष्टांत कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ कौनहूंभागप्रभाय के दायसोंसूमनेजोकहू संपति पाई ॥ त्योंवह होतखरोई कठोर विलोकियेतू मतिकीसरसाई ॥ ताहिनिहारिकछो चहियेकछुबातयहै कविकेजिय आई ॥ ज्योंज्योंउरोज बढ़ैतिय केउरत्योंत्योंगै अतिहीकठिनाई ॥ ६८२ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २४

35 दो० पियबिछुरनकोदुसहदुखहरषजातप्योसार।
दुरयोधनलोंदेखियततजैप्रानउहिबार ॥ ६८३॥

यह परसतावीक हरष दुख होययेकत्र कविकीउक्ति नायकाभेदमेंसखी कोवचन सखीसों ॥ सवैया ॥ नेह लग्योमनभावनसों बसिबोससुरारिको जीयमुहानों ॥ नैहरतेकोऊआयोचलावन ताहीसमैसुनि ज्योंअकुलानों ॥ योंबिछुरेदुख होतमहा सुखमायकेकौचित सोचसमानों ॥ प्रातको पंकज भोतियकोमुख फूल्यो कछूक कछू कुंभलानों ॥ ६८३ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

॥ लोभकीअधिकाईबर्णन ॥

606 दो० घरघरडोलतदीनह्वैजनजनयाचतजाय।
दियोलोभचस्माचखनुलघुपुनिबड़ोलखाय६८४॥

यह लोभकी अधिकाई परसतावीक कविकीउक्ति सवैया ॥ ठौरहो ठौरघिघात फिरैलघुता जितहीतित आपप्रकासै। यांचतहैसबही परजाय बड़ायहिये बहुभांतिदुरासै ॥ लोभकोऐसोधरै चसमानरनैननमेंभटकैचहुं पासै। यद्यपिहै अतिसूक्ष्ममहू वह याहितऊ अतिदीरघ भासै ॥ ६८४ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

jetī sampati kripana kai tetī tū mata jora
baṛhata jāta jyoṇ jyoṇ uraja tyoṇ tyoṇ hota kaṭhora

kripan amiser

piya bichurana kau dusaha dukha harakhi jāta pyausāra
durajodhana lauṇ dekhiyata tajata prāna ihi bāra

duryodhan ko śrāp thā ki tujhe śok harsh jab ek samay hoga
tab tū maregā

ihi bāra "this time" or "this girl"
bār for bāl

ghara ghara ḍolata dīna huvai, jana jana jācata jāi,
diye lobha ćasamā ćakhani laghu punī baṛau lakhāi

ćasamā ćashmak (rainak)

kālakūta duti binā jivai na-aura-upāya
ṭhiri iāke ṭara banai pāke premalacāya-
ṇilalai

bahaka na-ihiṇ bahamāṇane jaba lala, bira, bināsa
bacai na bari sakīla hiu ṭīlhaghaṇṇsu ā māsa
ghāṇṇsu-a

दो० कालबूतदूतीबिनाजुरैनआनउपाय । 322
फिरताकैटारैलसैयाकेप्रेमलगाय ॥ ६८५

यहपरसतावीक नित्यप्रेमकेकरिबेको उपायकबिकीउक्ति ॥ कबित्त॥ मंदिरलदावेकोवनायो चाहैकोऊसोनो बिनाकालबूतक्योंहूं बनतनबानिहै। त्योंहीप्रेममंदिरको कालबूतदूती ताहि बीचदियेविनुकहो कैसेठिकठानिहै। कहैकबिकृष्णपर पकहोहिहोऊ तबसकलप्रवीण यहबातउरआनिहै । कालबूतदूतीबिच राखियेनयेकआंक टारियेनजौलौंतौलौं सुखहीकिहानि है ॥ ६८५ । पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० वहकिनइहिवाहिनापुलीजबतबबीरबिनासु । 231.
बचैनबड़ीसबीलहूचीलहघोंसवामासु ॥ ६८६ ॥

यहपरसतावीकसखो कोबचननायकसों ॥ कबित्त ॥ अम्बरहैनित होलड़ाईयेकरत कहाअरुसंपतसों जवारोजातजान्योहै । पातकरीछूकोऊ आनतहै तापर रावरेसयाननु हमारेमनमान्योहै ॥ तेहीकरयोऐवेजबे को हरुवोपाउवादि वहिनायोया परोमिनसोंठान्योहै । काहेहोतमसो मंन तबहींकछुकहोहो यहैसेहीकोमोंकाटो वेहीलावकाजआन्योहै ॥ ६८६ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० पियमनरुचहवैबोकठिनतनरुचिहोतसिंगार । 325
लाखकरौआंखिनबढ़ैवढ़ैबढ़ायेवार ॥ ६८७ ॥ already at 250

यहपरसतावीक नायकाकोबचन सखीसोंसेतिको सिंगारदेखियाकैं गर्वभयो सोईषो सोंकहतहैऔरसखो याकेचितकोभ्रम निवारण कहै तो संभवहै॥ कबित्त ॥ बैठोकुंजसदन बिलोकतहैतुवमग तेरोनाममोहन रटतबारबारहो। उठिचलिहिलिमिलिमानिरंगरली मेरोकह्योमानि मान वतीहूं कहारहो॥ पियमनबसिकर वोईहैकठिनअरु तनदुतिरुरसति साजे हूं सिंगारहो । कहैकबिकृष्ण कीजैलाखनयतनतऊंलोचनबढ़ात न बढ़ायें बढ़बारहो ॥ ६८७ ॥ मंडूकअक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

दो० नीचहियेहुलस्योरहतगहैगेंदकोपोत ।
ज्योंज्योंमाथेमारियतत्योंत्योंऊंचोहोत ॥ ६८८ ॥

यहकविकीअन्योक्ति ॥ कवित्त ॥ जनमतेंकबहूं भलाईसोंनभेटभई जगतमें कोटिकधिक्कार धारियतहै । महजमुभायपर काजलैबिगारडारै अवगुणगहैनगुण पुंजटारियतहै ॥ नीचनरयेपै हियेमेंहुलस्योईरहै गेंद केसुभायगहैयों निहारियतहै । जितहीनिचाईदेखि तितहीदुरकिजाहि ऊचेहोतत्योंत्योंज्यों ज्यों माथेमारियतहै ॥ ६८८ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२

दो० कोटियतनकोऊकरौपरैनप्रकृतिहबीच ।
नलबलजलऊंचोचढ़ैअंतनीचकोनीच ॥ ६८९ ॥

यहअन्योक्तकविकी उक्तिजाकोस्वभाव नीचहोयताकी बटवारीहूहोय पैस्वभावनछूटै ॥ सवैया ॥ औरतेजैसोंसुभाव परोवहऔरप्रकार नकैसे हूहवैहै । कोटिकयोंनउपायकरौकविकृष्ण कहैं निरधारयहैहै ॥ सोजग मंलखियेप्रत्यक्ष करोंजलयंत्रन मो निहचैहै । केतोऊऊंचोचढ़ै नलके बल नीर तऊढरि नीचोई येहै ॥ ६८९ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० जाकेयेकतहीकहूंजगव्यवसायनकोय ।
सोनिदाघफूलेफलैआकडहडहोहोय ॥ ६९० ॥

यहअन्योक्काहूके धनबढवारबहुतहै औरकाहूकेकामनाहींआवैंतहां कहिये ॥ सवैया ॥ छांहनकाहूके बैठबेजोगन छीरअचैकोऊपेटभरै । फूलनतेफलतें दलतेंजगमेंनहीं काहूकोकाजसरै ॥ भौंरनमूलिभ्रमें उहि वोरपखेऊन कोऊविरामकरै । होतहरयोयह आकनिकाम निदाघसमैबहु फूलेफरै ॥ ६९० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० गुनीगुनीसबकोकहैनिगुनीगुनीनहोत ।
सुन्योंकहूंतरुअर्कतेंअर्कसमानउदोत ॥ ६९१ ॥

यहपरसंतायीक है कछूगुननाहीं अरुसबकोऊ वामेंभलैकहै तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ विनकरूतभूठी एदबोलहीतो बनहीकोन लगत

nīcá hiye hulase rahaiṃ gahaï gaiṇḍa ke pota
jyauṃ jyauṃ māthe māriye, tyauṃ tyauṃ -uṃce hota.

dṛishṭāntalankāra

mātha māranā
met for racking the brains

pot many mean
disposition or habit

kori jatana ko-ū karaï paraï na prakṛiti hi bīcá
nala bala jala -uṃce ćaṛhaï -anta nīcá kau nīcá

dṛishṭānta

bīc parnā farq āna

jāke -ekau -ekahū jaga byausāya na ko-ì,
so nidāgha phūlaï phalaï -āka ḍahaṭahyau ho-ì

byausāy adequacy sāmarth also lābh
nidāgh grishamki ritu men nidāgh great heat

kō-u kahata
'gunī gunī' saba ko kahaï nigunī gunī na hota
sunyau kahūṃ taru-arka teṃ -arka samāna -udota ?

Sun

arthāntaranyāsāl
confirmation of
generality
particular or vv.

mīta, na nili galila kwai je chariye dhana jori,
khaye khanāe jau jurai tau joriye karori

jau khāmāvalo kōra
galila apni kuvasa banaya
galila phali ... mai en mera

yadyapi sunaia sughala, buni sagmo dīpaka dekha,
tā-ī kakasa kā-ai tītau bhariye jitau sancha
gun ... sancha ... slesh. Igun bali ... ul,

... parabina ... ? tuhī bileki bicāra,
... nara ... ... khau barhe para pāra ?

... kaise
... kachha ... kachha ... .
... ... pāī ... naisē ... .

उपहासपेखियतहै। गुनीगुनी सबकोऊ कहतपुकारि काहूगुनीगुनीन मांझनेखेलेखियतहै॥ जगतबिदित जामेंमीठोकहियत माईनिपटविषम बिषअबरेखियतहै। जऊपेड आक को कहावतअरक तऊअरक समान को उदोतदेखियतहै॥ ६९१॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० मीतननीतगलीतहवैजोधरियेधनजोरि। 604
खायेखरचेजोजुरैतोजोरियेकरोरि॥ ६९२॥

यहपरसतावीक जोसुमहूकैधन जोगिरैतो उचितनाहीं यातेखायबो खरचबोमुख्यहै॥ सवैया॥ जोपैगलितभयेहो जुरैधनतो वहजोरिबो काहूनभावै। नाममुनेसब भीतहूं भाजतक्योंजगमें अतिसूमकहावै॥ sūma मीतमतो जियमेंधरिकैयह जोरिकरोरलो जोबनिआवै। खायेदियै खरचे जुजुरेकछु सोअतिमोद हियेउमगावै॥ ६९२॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० यद्यपिसुन्दरसुघरऊसगुनोदीपकदेह। 327
तउपरकाशकरैतितौभरियेजितौसनेह॥ ६९३॥

यहपरसतावीक नायकाभेदमें अकसखीकोभेद नायकमेंसखीकहेकि तेरो सुंदरतनहै गुनहसतहै पैनेहचाहियतुहै ऐसेंनायक हूमे सखीकोबचन संभवहै॥ सवैया॥ यद्यपिचारुगहै चिकनाइसुढार ढरयोसुघरोपुन होऊ। कृपाकहैबहुमंडितकै गुनजोतजगाय धरैकिनसोऊ॥ हैयहबात प्रसिद्धसबै जगएकसीरीत निबाहतदोऊ। नेहभरयोबिन दीपकदेहप्रकाश करैनकितोकरोकोऊ॥ ३९३॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० अरेपरेखोकोकरैतुहीबिलोकिबिचारि। 615
किहनरकिहसरराखियेखरेबढ़ेपरपारि॥ ६९४॥

यहपरमतावीक संसारव्योहारपै अतिबढ़तेमरयाद छूटेहोछूटैकविकी उक्ति॥ सवैया॥ केतेभयेनर केतेभयेसर जात कछूगणनानहिंभाषी। जोलोंबढ़ैउन मानगहैमरयादरहै तबहींलगपाषी॥ कौनकोकौनपरेखो करैपरमानकहा परतत्वकोसाषी। पैअतिकोबढ़वारभये अपनोपरपारिकहो किनराषी॥ ६९४॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

420 दो० जोन्हनहींयहतुमवहैकियेजुजगतनिकेतु ।
होतउदोशशिकोभयोमानोंशशिहरिसेतु ॥६९५॥

यहचन्द्रवर्णन वियोगीकोवचन कविहूकोउक्ति ॥ सवैया ॥ पूरिरह्यो अधऊरध बीचर अंबरजोजिनदेवठयो है । जाहिबिलोक वियोगीडरैं अनुरागन कोमनमोद पियो है ॥ होयनजोन्हयहैतमहै यहजानैमबैनगछायलयो है । होतउदोतलख्यो अधिको गहिसंकमनो तनस्वेतभयो है ॥ ६९५ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

591 दो० चटकनछोंड़तघटतहूसज्जननेहगभीर ।
फीकोपरैनबरफटैरंग्योबोलरंगचीर ॥ ६९६ ॥

यहपरसतावीक कविकोउक्ति ॥ सवैया ॥ सज्जन जेजगदीश्वरचेतिन कोइकबान दमानिघटै । शीलसुभावगहैंसहजे अनुरागसमूहहियेउघटै ॥ नेहकरै सुखरोगहरो उनहूंकेघटैसुनक्यों घटै ॥ चोलकेरंग निचोलरंग्यो सुनकोकोपरै फटनेहूघटै ॥ ६९६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

648 दो० कनककनकतेसौगुनोमादिकताअधिकाय ।
वहखायेबोराइयेवहपायेबौराय ॥ ६९७ ॥

यहपरसतावीक कविकोउक्ति ॥ कवित्त ॥ कनकधतूरोसोनों दोऊ येकहावनहैं सोनेकोधतूरे प्रभाव सरसतुहै ॥ कहैकविकृष्णवाहो चाहतुनकोईयाहि निरखि निरखि जोइसोइतरसतुहै ॥ सोनेमाँकसौगुनो धतूरेंमरसमद यहतोप्रतक्षमब कोऊदरसतुहै ॥ वाहि जवखायतबबौराय प्रकाश होत बावरो तुरतयाहि जोईपरसतुहै ॥ ६९७ मदकल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

609 दो० इकभीजेचहुलेपरबूड़ेबहैहजार ।
कितेनऔगुनजगतकरबैनेचढ़तीबार ॥ ६९८ ॥

यहपरसतावीक कविकोउक्तिअन्योक्तिहूसंभवहै ॥ सवैया ॥ एकपरत फंसे चहुले एकभीजि रहेएकबूड़िगये हैं । येकवहैतिनकीनलहीं सुधयेकन धैरज छोड़िदयेहैं ॥ बोरदईपहली मरयादबिलोक कितेभयभीतभयेहैं ॥

jaṇha nahiṁ yaha tama wahai kiyau ju jagata niketa
hota-ubai sasi ke bhayau mānau sasihara seta

sasihara with a shudder - saham ke.
niket ghar.

ćaṭaka na ćhāṁṛata ghaṭatahiṁ sajjana neha gaṁbhīra
phīkau parai na bara ghaṭai raṁgyau ćola raṁga ćīra

bar/bal ghaṭne se jīrna hone se
ćola majīṭh madder

arthāntaranyāsāl—

kanaka kanaka teṁ saugunī mādikatā -adhikā-i
-uhi khāye baurā-i jaga -iha pāye baurā-i

kanaka dhatūra
madakatā intoxication

-ika bhīje, ćahale pare | būḍe bahe hajāra,
kite na -auguna jaga karata naibai ćaṛhatī bāra ?

baisnupī nadī

ṭ naibai
fr naiya baya

ṭaiyala naiyā

ṭ take it/see with bhije - ćahle pare ṭ būḍe separately, it is better to take
with ćahale pare ṭ būḍe with take - objects wet ṭ sheke in
on the bank) thousands sink ṭ are

[illegible]

sukha saun bīti sara nisā mama saye'ka satha

mūkā nrii ga'ar sa, chūna hātha na chore hātta

mūkā ? Sanye mekhā a gestur

mūkā
grasp

jo na juguti piya milana'i chūra mubuti mukha dīna

jyan sakiya sange sajana tau bharaka na e'ha kī na

jyan e[illegible]
andha [illegible]

[illegible]
kīna [illegible] na kīna seem
mighāe.

gāja maria, barunī, calaka, sit mana, bhaunha, kamāna,

[illegible] Saruni, suranga, matāna.

[illegible] Suranganā tāna

[illegible]

tāna may mean
the peg in
pūlkī
or warp
It must have been,
in a reading 'pān'

बैसनदीचढ़ती बिरयांजगऔगुन कौनै किनेकनयेहैं ॥ ६९८ ॥ नर अक्षर ३३ गुरू १५ लघु १८ ॥

दो० सुखसौंबीतीसबनिसामानसोयेइकसाथ। 345
मूकामेलिगहेसुछिनुहाथनछोड़ेहाथ ॥ ६९९ ॥

यहपरसतावीक कबिकीउक्ति नायकाभेदमैं परकीयाको हाथस्परो कोसुमान्योंसाहिबो रात्रिवैनेहोबीती सखीसखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ रैनबितीतभई सिगरी अतिचायबढ़े चितपैनअहूटै ॥ दीऊनकेमन मोंद बढ़ै अभिलाखन केदृढ़बंधनखूटै ॥ सोयेमनोमिलकै इकसाथहीयों बहु भांतिहियेसुखलूटै ॥ मूकामेमेलगेइक वारनुहाथतैं हाथछिनों नहीं-छूटै ॥ ६९९ ॥ त्रिकलअक्षर ३९ गुरू ९ लघु ३०

दो० जोनयुगतपियामिलनकीदूरिमुक्तमुहदीन। 547
जोलहियेतौसजनसुखधरकनरकहूलीन ॥ ७०० ॥

यह परसतावीक अनुरागी को बचन ॥ कवित्त ॥ बहैठौरनी को जहांमिलवीहैपीको मातयहैमतठीक मेरेजीकोअवदातहै ॥ पयोजोमुक्त पदरत्योनप्राणप्यारो सरत्योअधिक दुखदेख्योन सुहातहै ॥ कहतबनैन क्योंहूंजातना अनेकभांतिजातैं भांतिभांतिनको त्रासअधिकातहै ॥ रहि-बोबनैजोमनभावन सौंमिलतोपैनरक निवासहूतौमनन सकातहै ॥ ७०० ॥ चलअक्षर ३० गुरू ११ लघु २६

दो० गढ़रचनाबरनीअलकाचितवनभौंहकमान। 596
आधबुकाईहीबढ़ैतरुनितरंगमतान ॥ ७०१ ॥

यहपरसतावीक कबिकीउक्ति ॥ कवित्त ॥ गढ़कोबनायबांको हैय तोबड़ाईपावै ग्रंथनमेंबातयहैबरनी प्रमानकी ॥ अधिकाईदेखिये निकाईकीयेकाईहैतें अलकाचितोनभौंह बरनैकमानकी ॥ कहैकवि कृष्णरीत जानतप्रवीनत्योंहीं तरुनी कीतुककीतुरंगम कीतानकी ॥ बांकीहीतैं पालकीकेबांसकोंबढ़त मोलबांकी रजपूतीलहै कीरति कृपानकी ७०१ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

607 दो० बसैबुराईजासतनताहीकोसनमान ।
भलोभलोकरछांड़ियेखोटेग्रहजपदान ॥ ७०२ ॥

यहपरमतावीक कविकीउक्ति ॥ सवैया ॥ जातनमांझबुराई बसै कछूसोजगमैंसनमानहीं पावै ॥ वाहीकोंजीमें सबैडरमानत देखोदुनीमें-प्रतच्छप्रभावै ॥ योतिषीजोग्रह भाषैभलोतोभलेहीभलेकाहकैं बहरावै ॥ जोपै वहै ग्रह खोटो सुनैतबदान करै असजाप करावै ॥ ७०२ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

354 दो० पतिऋतुओगुनगुनबढ़तमानमाहकोसीत ।
जातकठिनहवैअतिमृदौरवनमिनुनवनीत ॥ ७०३

यहपरमतावीक कविकीउक्ति नायकाभेदमैं सखीकोवचन नायककी सखीसोंकिनायकके औगुणतेंनायकाको मनकठिनहोतहीहै ॥ कवित्त ॥ ऐसेपतिऔगुणतें बढ़तहैमानजैसेऋतु गुणसिसिरकोसीत सरसातहै । मान कोभयेतें तियमनकठिनात त्योंहीसीतकेभयेतें नवनीतकठिनातहै ॥ दोउन कोजऊ अतिमृदुहैस्वभाव तऊ औरभांतिप्रकृति कोभावदरसातहै । कहै कविकृष्णरे तजानत प्रवीनयहबिनयततांई तेंतुरतपघिलातहै ॥ ७०३ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

608 दो० कहतसबैश्रुतिस्मृतिहूसबैपुरातनलोग ।
तनिदवावेनीसकैपातकुराजारोग ॥ ७०४ ॥

यहपरमतावीक कविकीउक्ति ॥ कवित्त ॥ कहैयहैश्रुतिअरु स्मृति पुरानेलोगसकल पुरानननेंसुनेयेईहेतहै । कहैकविकृष्णयह जगतबिदित बात जानतसकल जेतेसुमतिनिकेतहै ॥ जहांदेखेबलुतहां करेनुअमलजहां देखेनिबलाईये तहांईदुखदेतहै । पातकरेराजारोग दानमें बिचारियेन करतबलाईकरैं मंगलअचेतहै ॥ ७०४ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

600 दो० ओछेबड़ेनहवैसकैंलग्योसतरहवैगैन ।
दीरघहोयननेकहूफारिनिहारेनैन ॥ ७०५ ॥

यहपरसतावीक कविकीउक्ति ॥ सवैया ॥ ॥ जेजगदीश्वरचौजाहिभाय

basai burā-ī jāsu tana, tāhī kau sanamāna:
bhalau, bhalau kahi, ihoṇiye, khoṭe graha japa dāna

lokokti

a b a b a b
pati ritu -avaguna guna barhatu māna, māha kau sīta
a b
jāta kaṭhina huvai -ati mridau ramanī mana navanīta

navanīta butter.
mridau soft

kramālankār
dṛishtānt navanīta kaṭhin hona sīl se
rūpaka pati ritu māna sīta

kahaiṇ -ihai sruti samriti. so yahai sayāne loga
tina ḍabāwata nisakahiṇ rājā pātaka roga

nisaka bal hīna
rājā parakrama bāla hīna
pāp gyāna bala hīna
roga ā bhaia hīna

oṣadhakāl.

-o ōdhe tare na huvai sakaiṇ lagi sataraṇiyaiṇ bāri
dīrgha hamukina naikahū phāri nihāri naina

drishtānta

mana nisedhā soyau samujhi munha cumyau ṭhiza jāya
hauyāu, khisāni, gara jaṇyau, rahi gaei lapaṭāya.

[illegible] bahānakarnewala

naya bisaṇiyai ati na, ye durajana ôusaha subhāva
-āute bina prāṇani harata kāuṇ lagi pāva

naya ihabahū bisaṇiyā bisvāsiṇiye
[illegible]

lautai nāca, kaṭiṭa rasa, garasa rasa rati ranga
-anabūjhe būḍe, tare je būḍe saba anga

वेतैसेईदीसैंघटैनबढ़ैना। धीरहियेधरिमंदगहैंगतिपैबगुहंस कोमोलल हैना ओछेसोकैमेहूंहोत बड़ेनवेकाइउंचाई गहैंकनिगैना। फारिनिहारोंकितौ करिहारौंपैदीरघ होहिंनकैसेहूंनैना ॥ १०५ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

दो० सोमिसहीसोंयोंसमझमुहचूम्योंढिगजाय ॥ 214
हंस्योखिसानीगलुगह्योरहीगरेलपटाय ॥ १०६ ॥

यहप्रस्तावीक कविकीउक्तिनायकाकी बचनसखीसों ॥ कवित्त ॥ कुंवरकन्हाईसुखदाई चतुराईकरिपैढ़ि रह्योमिसझूठीरिस कोबनायकै। हित अधिकाई कीहमंगबढ़िआईजियमैंतोसोंयोजानि मुंह चूम्योंढिगजायकै। आरसिमेंढारति नुरंचतिउघरिनैन नाइदीनोबांहगरेउहिमुसकायकै। कहाकहौंआलीहूतो हंसिहूं सिखाई तब औरनबसाय रहीगरेलपटायकै। ॥ १०६ ॥ चलअक्षर ३० गुरु ११ लघु २६

दो० नयेबिसासियेलखिनयेदुरजनदुसहसुभाय । 592
आंटेपरिप्राननुहरतकांटेलौंगाड़िजाय ॥ १०७ ॥

यहप्रस्तावीकि नायककोबचनसखीसों विरसनायकाअधीरा खंडिता नायकराजनीतके प्रसंगहूमैंसंभवहै ॥ कवित्त ॥ ऊपरतोदेखियतअधिक भलाईभरेअंतरकेदुसह बुराईकोनिकेतुहै । कहैकविकृपाबहु बातन बनाय कहूंदाउपरैजैसेबनै तैसेदुखदेतहै ॥ देखतहैनयेतऊ मानतबिरोधीनये भूलतनक्योंहू जे बिचारमेंसुचेतहै । कांटेकीसीरीतिदुरजन केसुभाइनकी आंटेपरैपायतहूं लागिप्रानहेतुहै ॥ १०७ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८

दो० तंत्रीनादकवित्तरससरसरागरतिरंग । 597
अनबूड़ेबूड़ेतिरेजेबूड़ेसबअंग ॥ १०८ ॥

यहप्रस्तावीक कविकीउक्ति ॥ कवित्त ॥ तंत्रीकीमधुरधुनि ताल केविविधभेदरागजामें सुरनकीबिबिधतरंगहै । बचनबिलासचतुराई केप्रकाशचारुकविता सदैप्रजहांबिरसकोटमंगहै ॥ बागकोबहारनव नागरीसोंहिल मिलिबिहरत अंतरितसुरतप्रसंगहै। जगतमैंबूजेड़े न बूड़ेइनबातनमैं तिरेतेई

? बूड़ेजे

जेईबूडे इते अंगअंगमैं ॥ ७०८ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०

612 दो० सबैहंसतकरतारिदैनागरिताकेनाउं ।
गयोगरबगुनरूपकोबसेगवांरेगाउं ॥ ७०९ ॥

यहअन्योक्ति प्रस्तावीकहू संभवहैकविकीउक्ति ॥ सवैया ॥ कोसम-झैरसरीतके भेदहिकौनसुनै नृपनीतिउचारै । ज्ञानकीकौनकरै चरचाजहं मूढ़ताकेहित सोंअतिप्यारै ॥ नागरताईकौनाम सुनैसबदैकरतार हंसैकिल कारै । दूरगुमानगयोगुनरूपकोबासभयो जबगांवगवांरै ॥ ७०९ बारनअक्षर ३८ गुरु १४ लघु १८

605 दो० दुसहदुराजप्रजानकोक्योंनबढ़ैदुखदुंद ।
अधिकअंधेरोजगकरतामिलिमावसराबिचंद ॥ ७१० ॥

यहप्रस्तावीक कविकीउक्ति ॥ सवैया ॥ येकरजाईसमैप्रभु हैसत मोगुनकोबहु भांतिबढ़ावत । हातमहादुखदुंद प्रजानकोऔर सबैशुभकाज थकावत ॥ कृष्णकहैदिननाथ निरंकरएकहो मंडलमैंजबआवत । देखोप्रतच्छ अमावसको अंधियारोकितौ जगमेंसरसावत ॥ ७१० ॥

दो० हूंबिनऊंसबकबिनुकेचरणाकमलशिरनाय ।
प्रगटकरीतिहुंलोकमैंकबिताबहुजिनभाय ॥ ७११ ॥

दो० सोकबिताद्वैभांतिकेआरषपौरषजानि ।
आरषसुरअरुमुनिनकृतनरकृतपौरषमान ॥ ७१२ ॥

दो० पौरषकबितात्रिबिधहैकबिसबकहतबखानि ।
प्रथमदेवबानीबहुरिप्राकृतभाषाजानि ॥ ७१३ ॥

दो० देशभेदसेहोतसोभाषाबहुतप्रकार ।
बरनतहैतिनसबनमैंग्वारपरीरससार ॥ ७१४ ॥

दो० व्रजभाषाभाषतसकलसुरबानीसमतूल ।
ताहिबखानतसकलकबिजानिमहारसमूल ॥ ७१५ ॥

sabai haṃsata kara lāla dai nāgarā ṭā ṭe ṭāṃwa
gayau garaba guna kau sabai basu gaṃwāre gāṃwa

guna su ōsha ākāra kaha leśālaṅkār
leśa "unerfected result"

dusaha durāja prajānikaun kyaṃ na karai -atî dandi
-adhika -andheraṃ jaga karata milî māwasa rabi cándi

prastāvik Drishṭānta

दो० व्रजभाषाबरनीकाबिनबहुबिधिबुद्धिबिलास।
सबकोभूषनसतसयाकरीबिहारीदास ॥ ७१६ ॥

दो० जोकोऊरसरीतिकोसमझ्योचाहैसार।
पढ़ैबिहारीसतसईकबिताकोइंटगार ॥ ७१७ ॥

दो० उदैअस्तलौंअवनियेसबकोयाकीचाह ॥
सुनतबिहारीसतसईसबहीकरतसराह ॥ ७१८ ॥

दो० भांतिभांतिकेअरथबहुयामेंगूढ़अगूढ़।
जाहिसुनैरसरीतिकोमगसमझतअतिमूढ़ ॥ ७१९ ॥

दो० बिबिधनायकाभेदअरुअलंकारनृपनीति।
पढ़ैबिहारीसतसईजानैकाबिरसरीति ॥ ७२० ॥

दो० रघुबंशीराजाप्रगटउहिमेंधर्म्मअवतार।
बिक्रमबिधिजयसायरिपुदंडाबिहंडनहार ॥ ७२१

दो० सुकबिबिहारीदाससोंतिनकीनोअतिप्यार।
बहुतभांतिसनमानकरिदौलतदईअपार ॥ ७२२

दो० राजाश्रीजयसिंहकेप्रगट्योतेजसमाज।
रामसिंहगुनरामसमनृपतिगरीबनिवाज ॥ ७२३

दो० कृष्णसिंहातिनकेभयेकेहरिराजकुमार।
बिष्णुसिंहातिनकेभयेसूरजकोअवतार ॥ ७२४ ॥

दो० महाराजबिश्नेशकेधर्मधुरन्धरधीर।
प्रगटभयेजयसाहनृपसुमतिसवाईबीर ॥ ७२५

दो० प्रगटसवाईभूपकेमंत्रीमानिसुखसार।
सागरगुनसतशीलकोनागरपरमउदार ७२६ ॥

दो० आयामल्लअखंडतपजगसोहतजसताहि ।
राजाकीनोकरिकृपामहाराजजैसाहि ॥ ७२७ ॥
दो० मनक्रमबचसांचोभगतहरिभक्तनकोदास ।
बेदबचनानिजधरमकौजाकेदृढ़बिश्वास ७२८ ॥
दो० क्षत्रीफलक्षितिपैभयेबैरीजगाबिख्यात ।
परदुखबैरीखंडनोखंडनगुनअवदात ॥ ७२९ ॥
दो० लालदासअतिललितगुनप्रगटभयेतिहबंश ।
रामचंद्रतिनकेभयेनिजकुलकेअवतंश ॥ ७३० ॥
दो० महाराजातिनकेभयेजिनकोयशअवदात ।
रायपंजाबसपूतमतिउपजेतिनकेतात ॥ ७३१ ॥
दो० तिनकेप्रगटेतीनसुतबिक्रमबुद्धिनिधान ॥
रक्षकब्राह्मनगायकेनिपुनदानकरबान ७३२ ॥
दो० राजाआयामल्लजगाबिदितरायशिवदास ।
लसतनरायनदासयशपूरनपुहमिप्रकास ॥ ७३३
दो० लीलायुगलकिशोरकीरसकोहोयनिकेतु ।
राजाआयामल्लकौताकबितासोंहेतु ॥ ७३४ ॥
दो० माथुरबिप्रककोरकुलकह्योकृष्णकबिनांउ ।
सेवकहौंसबकबिनकोबसतमधुपुरीगांउ ॥ ७३५
दो० राजामलकबिकृष्णपरिढ़योकृपाकेढार ।
भांतिभांतिबिपताहरीदीनीलक्षिअपार ॥ ७३६
दो० एकदिनाकबिसोंनृपातिकहीकहीकोजात ।
दोहादोहाप्रतिकहोकबितबुद्धिअवदात ॥ ७३७॥
दो० पहिलेहूमेरेयहैहियमेंहुतोबिचार ।

करौंनायकोभेदकाग्रंथसुबुधिअनुसार ॥७३८॥

दो० जेनीकेपूरबकबिनुसरसग्रंथसुखदाय ।
तिनहिछांडमेरेकबितकोपढ़िहैमनलाय ७३९ ॥

दो० जानियहैअपनेहियेकियोनग्रंथप्रकास ।
नृपकोआयसुपाइकैंहियमैंभयोहुलास॥ ७४० ॥

दो० करेसातसैंदोहरासुकबिबिहारीदास ।
सबकोऊतिनकोपढ़ैगुनैंसुनैंसबिलास ॥ ७४१

दो० बड़ोभरोसोजानिमैंगह्योआसरोआय ।
यातेइनदोहानसंगदीनोंकबितलगाय ॥ ७४२

दो० उक्तियुक्तिदोहानकीअक्षरजोरिनवीन ।
करेसातसैकबितमैंपढ़ैसुकबिपरवीन ॥ ७४३

दो० मैंअतिहीढीठ्योकरीकबिकुलसरलसुभाय ।
भूलचूककछुहोयसोलीज्योसमुझिबनाय ॥ ७४४

इति श्री बिहारीलाल कबि कृत सतसई सटीक उदाहरण सहित समाप्ता ॥

इति

INDIAN INSTITUTE

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
क़िस्सहुवंगैरह	ज्ञानखरोदय	पटवारियोंकी पुस्तक	संस्कृत भा-टी-स०
नानार्थीनी संग्रहवली	रमलसार	४ भाग	अमरकोश
ब्रह्मसार	इन्द्रजाल	संस्कृत की पुस्तकें	याज्ञ वल्क्य स्मृति
शिवसिंहसरोज	मुतफ़रक़ात	सिद्धान्त चन्द्रिका	सन्ध्या पद्धति
भक्तमाल	शनिश्चरकीकथा	लघु कौमुदी	व्रतार्क
रामाभिषेकनाटक	ज्ञानमाला	अमरकोशतीनोंकांड	भगवद्गीताटी-हरवंश
इन्द्रसभा	गोपीचंद भरतरी	पंचमहायज्ञ	भगवद्गीताटी-ज्ञा-गि-
विक्रमविलास	कथाश्रीगंगाजी	निर्णयसिन्धु	गीतगोविन्द
वैताल पच्चीसी	अवधयात्रा	संग्रहशिरोमणि	कथासत्यनारायण
सिंहासनबत्तीसी	भरतरीगीत	भगवद्गीतासटीक	परमार्थसार
पद्मावतीखंड	दानलीलाव्वागलीला	दुर्गापाठसटीक	शार्ङ्गधरसंहिता
शुकबहत्तरी	दोहावली वरत्नावली	विष्णुभागवत	पाराशरी स-
बकावली सुमन	गोकर्णमाहात्म्य	भविष्योत्तरपुराण	शिशुबोध
चहारदरवेश	श्रीगोपालसहस्रना०	अपराधभंजनस्तोत्र	लघुजातक
क़िस्साहातमताई	कथासत्यनारायण	दुर्गास्तोत्र	षट्पंचाशिका
अथूलेकथा	हनुमानबाहुक	कायस्थकुलभास्कर	सामुद्रिक
क़िस्सागुलबसनोवर	जनकपच्चीसी	कायस्थधर्मनिरूपण	सर्वप्रतेतालीमकी
सहस्ररजनीचरित्र	ज्ञानन्हा०मृतवर्षिणी	तथाकौटा	पुस्तकें
रविसन्कोमोकाकृति	बनयात्रा	मथुरासभा	संस्कृत
हास	कायस्थवर्णोनिर्णय	ज्योतिष	ऋजुपाठ १भाग
वैद्यक	बिहारविन्द्रावन	मुहूर्तगणपति	तथा२ तथा३भाग
अमृतसागर	कल्पभाष्य	मुहूर्तचन्द्रदीपिका	धात्वर्णाव
निघण्टभाषा	दरसी	मुहूर्तचिंतामणिस-	नागरी वकैथी महा-
अमरविनोद	अक्षरावली	मुहूर्तमार्त्तण्डस-	वर्णमाला
वैद्यजीवन	स्वयम्बोध	मुहूर्तदीपक	तथा कैथी फ़ारसी
औषधिसंग्रहकल्प	ज्ञानचालीसी	रहस्यज्ञातकस-	नागरी हरूफ़मुक़र-
वल्ली	दोहावली	ज्ञातकाभरणा	रात
वैद्यमनोत्सव	बालाबोध	होरामकरंद	अक्षरारम्भ
ज्योतिष	विद्यार्थीकीप्रथमपु०	संस्कृतउर्दूटीकास-	वर्णप्रकाशिका१भा-
जातकचन्द्रिका	किताबजंत्री	मनुस्मृति	तथा२भाग
जातकालंकार	गणितकामधेनु	विष्णुहारीत	सूरजपुरकीकहानी
देवज्ञाभरण	लीलावती	महिम्नस्तोत्र	धर्मसिंहकावृत्तांत

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
शिक्षावली	गणित क्रिया	१८५९ ई०	मग़रबी व शिमाली
शिशुबोध	क्षेत्र प्रकाश	कुंडियन पिनल-	१९ सन १८७३ ई०
पत्रहितैषिणी	क्षेत्र चंद्रिका २भा·	कोड	तरमीम मजमूआ
पत्रदीपिका	सकील्न दायरा	मजमूआ ज़ाबिता	ज़ाबिता फ़ौजदारी
विद्याचक्र	रेखागणित १भा·	फ़ौजदारी एक्ट २५	१२ सन १८७४ ई०
विद्याकुर	तथा २भाग	सन १८६० ई०	तक़ावी के क़ायदे
पदार्थविद्यासार	बीजगणित २भा·	ऐक्ट स्टाम्प १० स-	सरकूलर गवर्न्-
पदार्थविज्ञानविटप	तथा २भाग	न १८६२ ई०	मेण्ट नम्बर ८०
राजनीति	रामायण तुलसी	ऐक्ट रजिस्ट्री २०	(अलिफ़) सन
भोज प्रबंधसार	कृत सातों कांड	सन १८६६ ई०	१८७७ ई०
भाषाव्याकरण	बालकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प अदा-	सवाल व जवाब
१भाग तथा २भा·	अयोध्याकाण्ड	लत २६ सन १८६७	पुलिस
भाषातत्वदीपिका	आरण्यकांड	ई०	अवध रुहेलखंड
भाषाचंद्रोदय	किष्किन्धाकाण्ड	मजमूआ ऐक्ट अव-	रेलवे का दस्तूरु-
भूगोलतत्व	सुन्दरकाण्ड	ध स्लगान २६ सन	ल अमल
भूगोलदर्पण	लंकाकाण्ड	१८६८ ई० पुरत्ता-	कैथी
इतिहासतिमिरनाश	उत्तरकाण्ड	हारी २६ सन १८६६	पटवारियों के क़ा·
क १भाग २व ३ भा·	गुटका	ई० वग़ैरा	यदे
अवध देशीय भूगोल	हिदायत नामा मु·	ऐक्ट स्टाम्प दस्तावे	उर्दू कैथी महाजनी
इंग्लिस्तान का इति	हर्रिसान्	ज़ात १८ सन १८५६	टेक्त के लाइ सै-
हास	पशुचिकित्सा	ई०	न्स का ऐक्ट २
भारतवर्षीय इतिहास	पहाबर बत कैथी	ऐक्ट ताज्जुके हारा-	सन १८७८ ई०
हितोपदिका	क़बूलियत बख़त	न मक़रूज़ अवध	पंजाब मग़रबी
हाला भूषण	कैथी	२४ सन १८७० ई०	व शिमाली व
पद्य संग्रह	रजिस्टर हारिवल	ऐक्ट चौधायों की	अवध
भाषा काव्य संग्रह	खारिज	महारिवलत बेजा	
कवित्तरत्नाकर	रजिस्टरी हाज़िरी	का १ सन १८७१	इति
१भाग तथा २भाग	पाठशाला	ई०	
मंगलकोश	क़ानून	मजमूआ ज़ाबिता	
अंक प्रकाश	नागरी	फ़ौजदारी १० स-	
गणित प्रकाश १भा·	ऐक्ट स्लगान मग़रबी	न १८७२ ई०	
तथा २ न· ३ न· ४ भा·	व शिमाली १० सन	ऐक्ट माल गुज़ारी	

1
2
3
4
5
6
7
8
9 30
10 56
11
12 58
13
14
15
16
17 8
18 7
19 4
20 ~~9~~
21 17
22 16
23 ~~13~~
24 6
25 15
26 14
27 11
28
29 23
30
31
32 20
33
34 19
35
36
37
38
39 26
40

	G.	J.	
Jurana	2	44	46
bila	3	42	45
vāčhaka	4	40	44
-ahiśar	5	38	43
jārdiāl	6	36	42
maćha	7	34	41
kaćha	8	32	42
tićhala	9	30	39
bazara [illegible]	10	28	38
[illegible]	11	26	37
[illegible]	12	24	36
[illegible]	13	22	35
marāla	14	20	34
[illegible]	15	18	33
kazabia	16	16	32
[illegible]	17	14	31
[illegible] maṇićka	18	12	30
[illegible]	19	10	29
[illegible]	20	8	28
[illegible]	21	6	27
[illegible]	22	4	26

gorāṭī ʿorāṭī 102

2)210 105
92 92.
118 13
9

There are two MSS of Bihari Satsai at the
India Office Nos 1709 RR 9A
& 16 RR 2B.

also two of Kesava Dasa's Ramacandrika
Nos 2653 RR 9D. & 2724 RR 9A.